RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

DR. M. MOHAN RAO
IAS (Retd)
CHAIRMAN

M. ARUNA MOHAN RAO
IPS (Retd)
DIRECTOR (ACADEMICS)

अगस्त-2023

करेन्ट अफेयर्स मैगजीन

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

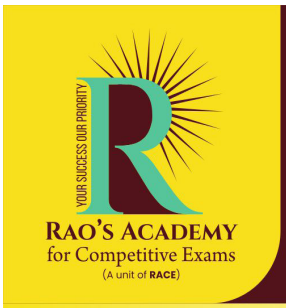

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)
YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

BHOPAL | INDORE

Offering UPSC & MPPSC Courses

Both in English & Hindi Medium

Best faculties in their field of expertise

In - house Content team

Daily News Review

Monthly Current Affairs Magazine

Officers Mentorship Program

Crash Course and Intensive Test Series for Prelims 2023

EMAIL: office@raosacademy.in | **WEBSITE:** www.raosacademy.in

Bhopal Branch: Plot No. 132, Near Pragati Petrol Pump, Zone II, M.P. Nagar, Bhopal(M.P.) 462011
95222 05553 , 95222 05554

Indore Branch: 10,Vishnupuri, A.B.Road, Near Medi-Square Hospital Bhawar Kuwar Square, Indore (M.P.)-452001
95222 05551, 95222 05552

अगस्त - 2023

करेंट अफेयर मैगज़ीन

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
Contents	**Page No.**
कला एवं संस्कृति	**1-7**
राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर	
हुल दिवस	
अल्लूरी सीताराम राजू	
भूमि सम्मान पुरस्कार	
हम्पी स्मारक समूह	
रुद्रगिरि पहाड़ी	
वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	
हम्पी	
नमदा कला	
चाविन डी हुंतार	
राजनीति और शासन	**8-14**
लिंचिंग	
CBIC	
ED निदेशक	
कुई भाषा	
अंतर-सेवा संगठन (कमांड, नियंत्रण और अनुशासन) विधेयक 2023	
डिजिटल टाइम वाउचर	
विश्व चुनाव निकाय (A-WEB)	
वन संशोधन विधेयक	
अविश्वास प्रस्ताव	
पर्यावरण और पारिस्थितिकी	**15-22**
GEF परिषद	
कार्बन क्रेडिट	
WHO	
फसल अवशेष प्रबंधन दिशानिर्देश	
विश्व संसाधन संस्थान	

सिंबिडियम लैंसिफोलियम
हूलॉक गिब्बन
फॉस्फेट चट्टानें
ट्यूनिकेट

अर्थव्यवस्था **23-35**

वस्तु एवं सेवा कर (GST)
CSR
FTA
युआन के मुकाबले रुपया
रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण
सॉवरेन ग्रीन बांड
सेबी
तुलन पत्र
GST परिषद
ट्राई
तेल व्यापार
लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक परियोजना
अप्रत्याशित कर
AT-1 बांड
वित्तीय स्थिरता बोर्ड
ग्लोबल टैक्स डील

विज्ञान और तकनीक **36-46**

प्रमाणपत्र
यूक्लिड
सोलर जियोइंजीनियरिंग
एक स्वास्थ्य
ब्रेविटी होल
गुरुत्वाकर्षण छिद्र
SARS-CoV-2
बेपिकोलम्बो
क्वांटम सुपरकंप्यूटर
चंद्रयान-3
एओलस पवन उपग्रह
कार्बन-आधारित पेरोव्स्काइट सौर सेल (CPSC)
अपूरणीय टोकन (NFT)
बार्ड चैटबॉट
दुर्लभ बीमारियों के लिए राष्ट्रीय नीति 2021
मध्यम रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर
लॉन्ग मार्च 10 रॉकेट

सामाजिक मुद्दे **47-54**

डेटा अधिनियम

डेटा स्क्रैपिंग

प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI)

सिंधु जल संधि

भारी वर्षा

बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2023

fibromyalgia

राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2023

आँख आना

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध **55-65**

23वां शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन

IAEA

काला सागर अनाज

ताइवान और भारत

IMO ग्रीनहाउस गैस रणनीति

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2023

यूरोपीय स्काई शील्ड पहल

डी-dollarisation

अप्रत्याशित घटना

सोलोमन इस्लैंडस

भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग

उत्तरी/इंटरैक्शन-2023

ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप के लिए व्यापक और प्रगतिशील समझौता (CPTPP)

भारत-अमेरिका

सरकारी योजना **66-72**

पीड़ित बालिकाओं के लिए योजना

अग्निशमन सेवाएँ

डिजिटल इंडिया

ऋण गारंटी योजना

अभ्रिम प्राधिकरण योजना

पीएम-मित्र योजना

उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना 2.0

भारत अभियान

अमृत भारत स्टेशन योजना (ABSS)

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

विविध **73-82**

गहरे समुद्र में खनन

जैविक नैनो जनरेटर
STAR-C पहल
क्रीमियन-कांगो रक्तस्रावी बुखार (CCHF)
पायलट व्हेल
अलास्का प्रायद्वीप
खानाबदोश हाथी
उमियम बांध
डचेन की मस्कुलर डिस्ट्रॉफी
लीजन ऑफ ऑनर का ब्रैंड क्रॉस
ह्वासोंग-18
कैनबिस मेडिसिन प्रोजेक्ट
भारत जलवायु ऊर्जा डैशबोर्ड (ICED) 3.0
मापुटो प्रोटोकॉल

योजना अगस्त 2023 **83-89**

अध्याय 1. सहकार से समृद्धि: योजना से कार्यान्वयन तक
अध्याय 2. डिजिटलीकरण के माध्यम से कृषि सहकारी समितियों को सशक्त बनाना
अध्याय 3. गैर-क्रेडिट सहकारी समितियों के लिए मार्ग विकसित करना
अध्याय 4. मत्स्य पालन सहकारी समितियाँ
अध्याय 5. वन पैक्स वन ड्रोन
अध्याय 6. पुनर्योजी कृषि-आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन
अध्याय 7. आर्थिक विकास के लिए सहकारी उद्यमिता

कुरुक्षेत्र अगस्त 2023 **90-97**

अध्याय 1. बाजरा: सतत कृषि का भविष्य
अध्याय 2. सतत कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकी
अध्याय 3. जलवायु टिकाऊ कृषि
अध्याय 4: सतत कृषि विकास में महिलाओं का योगदान
अध्याय 5. सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करना
अध्याय 6. शुष्क भूमि खेती
अध्याय 7. जैविक खेती: स्थिति और संभावनाएँ
अध्याय 8. सतत कृषि: चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

1 कला एवं संस्कृति

राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर

खबरों में क्यों?

सरकार लोथल, गुजरात में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर विकसित करेगी

महत्वपूर्ण बिंदु

- सरकार के सागरमाला कार्यक्रम के तहत 4,500 करोड़ रुपये की लागत से गुजरात में एक राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC) विकसित किया जाएगा।
- NMHC को लोथल में एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा, जहां प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक भारत की समुद्री विरासत को प्रदर्शित किया जाएगा और देश की समुद्री विरासत के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए नवीनतम तकनीक का उपयोग करके "एजुटेनमेंट दृष्टिकोण" अपनाया जाएगा।
- समुद्री परिसर में दुनिया का सबसे ऊंचा लाइट हाउस संग्रहालय, दुनिया की सबसे बड़ी खुली जलीय गैलरी, भारत का सबसे भव्य नौसैनिक संग्रहालय शामिल होगा और इसे दुनिया के सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थलों में से एक माना जाएगा।
- इस परियोजना के माध्यम से पर्यटन क्षमता को बढ़ावा मिलने से क्षेत्र के आर्थिक विकास में भी वृद्धि होगी।
- इसमें कई नवीन और अनूठी विशेषताएं होंगी जैसे हड़प्पा वास्तुकला और जीवनशैली को फिर से बनाने के लिए लोथल मिनी मनोरंजन; चार थीम पार्क मेमोरियल थीम पार्क, समुद्री और नौसेना थीम पार्क, जलवायु थीम पार्क और साहसिक और मनोरंजन थीम पार्क; हड़प्पा काल से लेकर अब तक भारत की समुद्री विरासत को उजागर करने वाली चौदह दीर्घाएँ; तटीय राज्यों का मंडप राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की विविध समुद्री विरासत को प्रदर्शित करता है।
- इसे MoPSW और संस्कृति मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय संस्कृति निधि के माध्यम से अनुदान के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है।

लोथल के बारे में

- सिंधु-घाटी सभ्यता (IVC) के प्रमुख शहर लोथल में 2400 ईसा पूर्व की सबसे पुरानी मानव निर्मित सूखी गोदी थी।
- यह खंबात की खाड़ी के पास भोगावो और साबरमती नदियों के बीच स्थित है।
- ऐसा कहा जाता है कि शहर का निर्माण लगभग 2200 ईसा पूर्व शुरू हुआ था।
- इसे 2014 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध करने के लिए नामांकित किया गया था और इसका आवेदन यूनेस्को की अस्थायी सूची में लंबित है।
- IVC उर्फ हड़प्पा सभ्यता मिस्र, मेसोपोटामिया, भारत और चीन की चार प्राचीन शहरी सभ्यताओं में से सबसे बड़ी सभ्यता का घर थी।
- यह लगभग 2,500 ईसा पूर्व पश्चिमी दक्षिण एशिया, जो अब पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत है, में फला-फूला।
- 1954-63 में, पुरातत्वविद् एस.आर. राव ने उन अभियानों का नेतृत्व किया जिसमें कई हड़प्पा स्थल मिले, विशेष रूप से लोथल का बंदरगाह शहर।
- लोथल हड़प्पा समुद्री वाणिज्य के केंद्र में था, और अर्ध-कीमती पत्थरों, टेराकोटा, सोने और अन्य सामग्रियों से बने मोती सुमेर (आधुनिक इराक), बहरीन और ईरान तक लोकप्रिय थे।
- लोथल एक हलचल भरा विनिर्माण केंद्र था जो शुद्ध तांबे का आयात करता था और कांस्य सेल्ट, छेनी, भाले और सजावट बनाता था।

सागरमाला कार्यक्रम के बारे में

- सागरमाला कार्यक्रम भारत की 7,500 किमी लंबी तटरेखा, 14,500 किमी संभावित नौगम्य जलमार्ग और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्गों पर रणनीतिक स्थान का उपयोग करके देश में बंदरगाह आधारित विकास को बढ़ावा देने के लिए जहाजरानी मंत्रालय का प्रमुख कार्यक्रम है।
- सागरमाला कार्यक्रम का मुख्य दृष्टिकोण न्यूनतम बुनियादी ढांचे के निवेश के साथ EXIM और घरेलू व्यापार के लिए रसद लागत को कम करना है।
- सागरमाला कार्यक्रम को मार्च 2015 में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था और शिपिंग मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना तैयार की गई थी जिसे 14 अप्रैल 2016 को जारी किया गया था।

सागरमाला के चार स्तंभ:

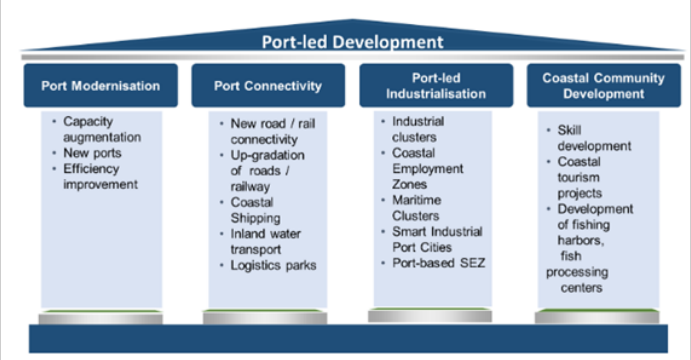

हुल दिवस

खबरों में क्यों?

झारखंड राज्य में 30 जून को हूल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- हूल दिवस पर, भारतीय प्रधान मंत्री ने एक ट्वीट के माध्यम से ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों के खिलाफ लड़ाई में आदिवासियों द्वारा किए गए संथाल विद्रोह और बलिदान को याद किया।
- हूल दिवस संथाल विद्रोह की शुरुआत का प्रतीक है।
- कुछ विशेषज्ञों द्वारा संथालों को संथाल भी कहा जाता है।
- झारखंड में मनाया गया हूल दिवस, राज्य भर में लोगों ने शहीद सिद्धू-कान्हू को याद किया।
- 1857 के सिपाही विद्रोह से पहले 30 जून 1855 को ब्रिटिश शासन और शोषण के खिलाफ सिद्धू कान्हू के नेतृत्व में संथाल हूल था।
- जिसमें हजारों वीर शहीद हुए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संथाल

- 18वीं सदी के अंत में, संथाल लोग पश्चिम बंगाल (बीरभूम और मानभूम) से संथाल परगना (वर्तमान में दुमका, पाकुड़, गोड्डा, साहिबगंज, देवघर और जामताड़ा के कुछ हिस्सों में) में चले गए।
- प्रवासन का मुख्य कारण 1770 में बंगाल में पड़ा अकाल था।
- अंग्रेजों ने कर वसूलने और राजस्व उत्पन्न करने के उद्देश्य से उन्हें दामिन-ए-कोह क्षेत्र में बसाया।
- साहूकारों और पुलिस द्वारा उनका और भी शोषण किया गया।
- आज, संताल समुदाय भारत का तीसरा सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है, जो झारखंड-बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में फैला हुआ है।
- कलकत्ता रिव्यू के अनुसार संथालों की प्रतिकूल सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ विद्रोह का मुख्य कारण थीं।
- दमनकारी जबरन वसूली, जमीन से जबरन बेदखली, जमींदारों, पुलिस, राजस्व और अदालत द्वारा दुर्व्यवहार और व्यक्तिगत हिंसा आम घटना थी।
- 1854 तक आदिवासी परिषदों और बैठकों में प्रतिकूल शोषण और विद्रोह के बारे में चर्चा अक्सर होती थी।
- अंततः 30 जून, 1855 को आयोजित एक सभा में 400 गाँवों से 6,000 संथाल एकत्र हुए और अंग्रेजों से स्वायत्तता की घोषणा की।
- पूरे क्षेत्र में संथाल लोगों को संगठित करने के लिए दो भाईयों सिद्धु और कान्हू को नेता बनाया गया।
- विद्रोह में संथालों की भागीदारी बड़े पैमाने पर थी, लगभग 60,000 संथाल, और उनमें से कई ने हथियार उठा लिए।
- कई गैर-आदिवासी हिंदू जातियों ने भी भाग लिया।
- साहूकारों और जमींदारों को मार दिया गया या क्षेत्र खाली करने के लिए मजबूर किया गया।
- कई पुलिस स्टेशनों, रेलवे स्टेशनों और डाकघरों पर हमला किया गया और उन्हें जला दिया गया।

अल्लूरी सीताराम राजू

खबरों में क्यों?

भारत के राष्ट्रपति ने अल्लूरी सीताराम राजू की 125वीं जयंती के समापन समारोह की शोभा बढ़ाई

महत्वपूर्ण बिंदु

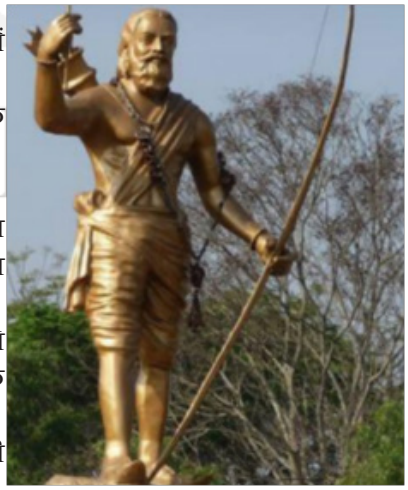

- 4 जुलाई 1897 को जन्मे अल्लूरी सीताराम राजू को पूर्वी घाट क्षेत्र (आंध्र प्रदेश में) में आदिवासी समुदायों के हितों की रक्षा के लिए अंग्रेजों के खिलाफ उनकी लड़ाई के लिए याद किया जाता है।
- उन्होंने रम्पा विद्रोह का नेतृत्व किया था, जो 1922 में शुरू किया गया था। स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें "मन्यम वीरुडु" (जंगलों का नायक) कहा जाता है।
- अगस्त 1922 में, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ रम्पा विद्रोह शुरू किया जिसे अब रम्पा विद्रोह के रूप में जाना जाता है।
- रम्पा प्रशासनिक क्षेत्र लगभग 28,000 जनजातियों का घर था।
- ये जनजातियाँ खेती की 'पोडु' प्रणाली का पालन करती थीं, जिसके तहत हर साल कुछ मात्रा में वन पथों को खेती के लिए साफ़ किया जाता था, क्योंकि यह उनके भोजन का एकमात्र स्रोत था।
- जंगलों को साफ़ करने के लिए, 'मद्रास वन अधिनियम, 1882' पारित किया गया, जिससे आदिवासी समुदायों के मुक्त आंदोलन को प्रतिबंधित कर दिया गया और उन्हें अपनी पारंपरिक पोडु कृषि प्रणाली में शामिल होने से रोक दिया गया।
- यह दमनकारी आदेश आदिवासी विद्रोह की शुरुआत थी, जिसे मान्यम विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है।
- आदिवासी लोगों ने पहाड़ी क्षेत्र में सड़कों और रेलवे लाइनों के निर्माण में बेगार के रूप में काम करने से इनकार कर दिया।
- सीताराम राजू ने उनके लिए न्याय की मांग की। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए गुरिल्ला युद्ध का इस्तेमाल किया।

- आदिवासी लोगों की अपनी सेना के साथ, उन्होंने कई पुलिस स्टेशनों पर हमले किए और छापे मारे, कई ब्रिटिश अधिकारियों को मार डाला और उनकी लड़ाई के लिए हथियार और गोला-बारूद चुरा लिया।
- उन्हें भरपूर स्थानीय समर्थन प्राप्त था और इसलिए वे लंबे समय तक सफलतापूर्वक अंग्रेजों से बचते रहे।
- अंग्रेजों के खिलाफ उनके दो साल के सशस्त्र संघर्ष (1922-24) ने अधिकारियों को इस हद तक निराश कर दिया कि उन्हें मृत या जीवित पकड़ने वाले को 10,000 रुपये का इनाम देने की घोषणा की गई।
- 07 मई 1924 को उन्हें धोखे से फंसाया गया, एक पेड़ से बांध दिया गया और गोली मारकर हत्या कर दी गई। 08 मई को उनका अंतिम संस्कार किया गया, इस प्रकार ब्रिटिश सरकार के खिलाफ उनकी शानदार लड़ाई का अंत हुआ।

भूमि सम्मान पुरस्कार

खबरों में क्यों?

हाल ही में, भारत के राष्ट्रपति ने नई दिल्ली में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित एक समारोह में "भूमि सम्मान" 2023 प्रदान किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- 9 राज्य सचिवों और 68 जिला कलेक्टरों को "भूमि सम्मान पुरस्कार" प्रदान किया गया, जिन्होंने डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड्स आधुनिकीकरण कार्यक्रम (DILRMP) के मुख्य घटकों की संतृप्ति प्राप्त करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

भूमि सम्मान पुरस्कार:

- इसका उद्देश्य डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड्स आधुनिकीकरण कार्यक्रम (DILRMP) के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन को स्वीकार करना और प्रोत्साहित करना है।
- डिजिटल इंडिया भू-अभिलेख आधुनिकीकरण के क्षेत्र में मध्य प्रदेश ने देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।
- डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड्स मैनेजमेंट प्रोग्राम के सभी घटकों में 100 प्रतिशत उपलब्धि के लिए मध्य प्रदेश के 15 जिलों को प्लेटिनम ब्रेडिंग से सम्मानित किया गया है।
- यह विश्वास और साझेदारी पर आधारित केंद्र-राज्य सहकारी संघवाद का एक अच्छा उदाहरण है, क्योंकि ब्रेडिंग प्रणाली काफी हद तक भूमि रिकॉर्ड के कम्प्यूटरीकरण और डिजिटलीकरण के मुख्य घटकों में राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों की रिपोर्ट और इनपुट पर आधारित है।

DILRMP के बारे में तथ्य

- यह एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत भूमि संसाधन विभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।
- उद्देश्य: यह पूरे देश में एक उपयुक्त एकीकृत भूमि सूचना प्रबंधन प्रणाली (ILIMS) विकसित करने के लिए विभिन्न राज्यों में भूमि रिकॉर्ड के क्षेत्र में मौजूद समानताओं का निर्माण करने का प्रयास करता है।
- ILIMS बैंकों, वित्तीय संस्थानों, सर्कल दरों, पंजीकरण कार्यालयों और अन्य क्षेत्रों के साथ सभी प्रक्रियाओं और भूमि रिकॉर्ड डेटाबेस को एकीकृत करता है।
- प्रमुख घटक: भूमि अभिलेखों का कम्प्यूटरीकरण, सर्वेक्षण/पुनः सर्वेक्षण, पंजीकरण का कम्प्यूटरीकरण।

हम्पी स्मारक समूह

खबरों में क्यों?

हाल ही में हम्पी समूह के स्मारकों को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित किया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- विश्व धरोहर स्थल वह स्थान है जो यूनेस्को द्वारा अपने विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के लिए सूचीबद्ध किया गया है। विश्व धरोहर स्थलों की सूची यूनेस्को विश्व धरोहर समिति द्वारा प्रशासित अंतर्राष्ट्रीय 'विश्व धरोहर कार्यक्रम' द्वारा बनाए रखी जाती है।
- यूनेस्को विश्व धरोहर समिति 21 यूनेस्को सदस्य देशों से बनी है, जो महासभा द्वारा चुने जाते हैं।

विश्व धरोहर स्थल का चयन कैसे किया जाता है?

- लिस्टिंग की दिशा में पहला कदम किसी देश की संबंधित सरकार द्वारा किसी साइट का नामांकन है।
- विश्व धरोहर नामांकन के लिए साइट का उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य (ओयूवी) होना चाहिए।
- विश्व धरोहर नामांकन के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य (OUV) निर्धारित करने के लिए, दस सूचीबद्ध मानदंड हैं।
- प्रस्तावित नामांकन को इन दस मानदंडों में से कम से कम एक को पूरा करना होगा।
- नामांकन फ़ाइल का मूल्यांकन तब अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद और विश्व संरक्षण संघ द्वारा किया जाता है।
- ये निकाय फिर विश्व धरोहर समिति को अपनी सिफारिशें देते हैं।
- समिति यह निर्धारित करने के लिए प्रति वर्ष एक बार बैठक करती है कि प्रत्येक नामांकित संपत्ति को विश्व विरासत सूची में शामिल किया जाए या नहीं और कभी-कभी साइट को नामांकित करने वाले देश से अधिक जानकारी का अनुरोध करने के निर्णय को स्थगित कर देती है।

हम्पी के बारे में

- हम्पी में मुख्य रूप से विजयनगर साम्राज्य (14वीं-16वीं शताब्दी) की राजधानी के अवशेष शामिल हैं।
- यह मध्य कर्नाटक, बेल्लारी जिले में तुंगभद्रा बेसिन में स्थित है।
- जीवित अवशेषों में किले, नदी के किनारे की विशेषताएं, शाही और पवित्र परिसर, मंदिर (द्रविड़ वास्तुकला), मंदिर, स्तंभ वाले हॉल, मंडप आदि शामिल हैं।
- प्रसिद्ध संरचना: विट्ठला मंदिर, विरुपाक्ष मंदिर, कृष्ण मंदिर परिसर, नरसिम्हा, गणेश, हेमकुटा मंदिर समूह आदि।
- मंदिरों की एक और अनूठी विशेषता खंभों वाले मंडपों की पंक्तियों से घिरी चौड़ी रथ सड़कें हैं।

रुद्रगिरि पहाड़ी

खबरों में क्यों?

हाल ही में, रुद्रगिरि पहाड़ी में मेसोलिथिक काल के प्रागैतिहासिक शैल चित्रों और काकतीय राजवंश की उत्कृष्ट कलाकृति का एक आकर्षक संयोजन खोजा गया था।

महत्वपूर्ण बिंदु

मुख्य निष्कर्ष:

- पहली गुफा वानर भाइयों, बाली और सुग्रीव के बीच तीव्र युद्ध को चित्रित करने वाली एक कथात्मक भित्तिचित्र प्रस्तुत करती है। दोनों आकृतियाँ युद्ध के मैदान में गदा लिए खड़ी हैं, उनके चेहरे पर भयंकर दृढ़ संकल्प प्रदर्शित हो रहा है। राम, सुग्रीव के पीछे खड़े होकर, बाली पर तीर चलाते हैं।

- एक रामायण भित्तिचित्र में हनुमान को अपने दाहिने हाथ से संजीवनी पहाड़ी उठाते हुए दिखाया गया है, उनके दाहिनी ओर एक शंख और अग्नि वेदियाँ देखी जा सकती हैं और बाईं ओर एक और प्रागैतिहासिक पेंटिंग देखी जा सकती है।
- मध्य गुफा में, शंख और अग्नि वेदी (यज्ञ वेदी) के पवित्र प्रतीकों के साथ हनुमान का एक भव्य रेखाचित्र, आगंतुकों का ध्यान आकर्षित करता है। हनुमान को अपने दाहिने हाथ में संजीवनी पहाड़ी ले जाते हुए दिखाया गया है, जो लक्ष्मण के जीवन को बचाने के उनके मिशन का प्रतीक है।
- तीसरी गुफा में मेसोलिथिक युग के प्रागैतिहासिक शैलचित्र हैं।
- दिलचस्प बात यह है कि, काकतीय कलाकार ने हनुमान की सुंदर आकृति को चित्रित करने के लिए उसी चट्टान आश्रय को चुना, जिसे एक अद्वितीय 'अंजलि' मुद्रा में चित्रित किया गया है, जो दिव्य भेंट में अपने हाथ जोड़ रहा है।

रुद्रगिरि गुफाओं के बारे में:

- रुद्रगिरि पहाड़ी आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के ओरवाकल्लू गांव में स्थित है।
- आश्रय पहाड़ी पर पाए जाते हैं जो पहले 5000 ईसा पूर्व मेसोलिथिक युग के दौरान लोगों के रहने के लिए क्वार्टर के रूप में काम करता था और वे उस युग के चमकदार शैल चित्रों के गवाह हैं।
- दिलचस्प बात यह है कि पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर दो प्राकृतिक गुफाएँ भी प्रसिद्ध काकतीय साम्राज्य के असाधारण भित्तिचित्रों को प्रदर्शित करती हैं।

काकतीय राजवंश:

- काकतीय आंध्र प्रदेश का एक राजवंश है जो 12वीं शताब्दी ईस्वी में फला-फूला। काकतीय राजवंश ने 1083-1323 ई. तक वारंगल (तेलंगाना) पर शासन किया।
- वे सिंचाई और पीने के पानी के लिए टैंकों के एक नेटवर्क के निर्माण के लिए जाने जाते थे और इससे क्षेत्र के समग्र विकास को बड़ा बढ़ावा मिला।
- दिल्ली सल्तनत के अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 में काकतीय क्षेत्र पर आक्रमण किया, जिसके परिणामस्वरूप तुर्कों के लिए तबाही हुई।
- काकतीय सेना ने 1323 में उलुग खान के दूसरे हमले के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी, लेकिन अंततः वे हार गए।
- वास्तुकला: काकतीय युग के दौरान एक विशिष्ट वास्तुकला शैली भी विकसित की गई थी; उल्लेखनीय उदाहरणों में वारंगल किला, हनमकोंडा में हजार स्तंभ मंदिर, पालमपेट में रामप्पा मंदिर और घनपुर में कोटा गुल्लू शामिल हैं।
- शिलालेख, जिनमें लगभग 1,000 पत्थर के शिलालेख और 12 ताम्र-प्लेट शिलालेख शामिल हैं, काकतीय युग के बारे में बहुत सारी जानकारी प्रदान करते हैं।

वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

खबरों में क्यों?

प्रधानमंत्री ने वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के नए एकीकृत टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रधान मंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, पोर्ट ब्लेयर के नए एकीकृत टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया।
- लगभग 710 करोड़ रुपये की निर्माण लागत के साथ, नया टर्मिनल भवन सालाना लगभग 50 लाख यात्रियों को संभालने में सक्षम है।
- यह भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का मुख्य हवाई अड्डा है।
- यह एक सीमा शुल्क हवाई अड्डा है जो पोर्ट ब्लेयर से 2 किमी (1.2 मील) दक्षिण में स्थित है।
- यह एक नागरिक हवाई अड्डा है, और इसकी सुविधाएं भारतीय नौसेना के साथ साझा की जाती हैं।
- टर्मिनल का प्रबंधन भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा किया जाता है, जबकि यातायात का प्रबंधन भारतीय नौसेना द्वारा किया जाता है।

वीर सावरकर के बारे में:

- सावरकर ने अपनी किशोरावस्था में राष्ट्रीय और क्रांतिकारी विचारों को लाने के लिए 'मित्र मेला' नामक एक युवा संगठन का गठन किया।
- लोकमान्य तिलक की ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार और 'स्वदेशी' के विचार का प्रचार करने की अपील से प्रेरित होकर, उन्होंने 1905 में दशहरे पर सभी विदेशी वस्तुओं को जला दिया।
- सावरकर ने नास्तिकता और तार्किकता को बढ़ावा दिया और गाय की पूजा को अंधविश्वास कहकर फैलाया। उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा, 'गायों की देखभाल करो लेकिन उनकी पूजा मत करो।'
- 1909 में, सावरकर को मोर्ले-मिंटो सुधार के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह की योजना बनाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उसने पानी में गोता लगाकर भागने का प्रयास किया लेकिन पकड़ा गया। 1911 में, उन्हें अंडमान की सेलुलर जेल, काला पानी में 50 साल की कैद की सजा सुनाई गई।
- जेल में बंद होने पर ब्रिटिश सरकार से दया की भीख मांगने के लिए सावरकर को अक्सर देशद्रोही कहा जाता है। लेकिन उनके समर्थकों ने दावा किया कि सावरकर ने सिर्फ अपने अनुयायियों को मुक्त करने के लिए कहा था।
- उन्हें पांच साल तक राजनीति में हिस्सा न लेने की सख्त शर्तों के तहत 1924 में जेल से रिहा कर दिया गया।
- ब्रिटिश सरकार ने सावरकर की 8 कृतियों पर प्रतिबंध लगा दिया, जिनमें 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, नाटक उषाप, श्रद्धानंद और माज़िनी जो मराठी में उनकी जीवनी थी।
- सावरकर ने अपनी पुस्तक हिंदुत्व में हिंदुओं और मुसलमानों के लिए दो अलग राष्ट्रों के विचार की वकालत की। इस सिद्धांत को बाद में 1937 में हिंदू महासभा द्वारा एक प्रस्ताव के रूप में पारित किया गया।
- महात्मा गांधी की हत्या के बाद सावरकर पर आरोप पत्र दायर किया गया था, लेकिन बाद में सबूतों की कमी के कारण अदालत ने उन्हें बरी कर दिया था।
- 1964 में, वीर सावरकर ने समाधि प्राप्त करने की इच्छा की क्योंकि भारत को पहले ही स्वतंत्रता मिल चुकी थी। उन्होंने 1 फरवरी 1966 को भूख हड़ताल शुरू की और 26 फरवरी 1966 को अंतिम सांस ली। 2002 में, अंडमान के पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे का नाम वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा रखा गया।

हम्पी

खबरों में क्यों?

भारत की G20 अध्यक्षता के तहत तीसरी शेरपा बैठक हाल ही में हम्पी में आयोजित की गई थी

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत के G20 शेरपा, अमिताभ कांत की अध्यक्षता में, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हम्पी के पास तुंगभद्रा नदी के तट पर तीन दिवसीय बैठक में विचार-विमर्श किया जाएगा और नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में G20 नेताओं द्वारा अपनाए जाने वाले नेताओं की घोषणा के सह-लेखन में भाग लिया जाएगा।
- जिन मुद्दों पर विचार किया जा रहा है उनमें हरित विकास, जलवायु वित्त, पर्यावरण के लिए जीवनशैली, त्वरित, समावेशी और लचीला विकास, सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति में तेजी, तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा, 21वीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थान और महिलाओं के नेतृत्व वाला विकास शामिल हैं।
- भारत के G20 शेरपा के नेतृत्व में G20 सदस्य देशों, आमंत्रितों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के 120 से अधिक प्रतिनिधि राष्ट्रपति पद की प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करने वाले पाठ पर बातचीत करेंगे।
- ग्लोबल साउथ समिट की आवाजों से मिले फीडबैक को शामिल करने के बाद ये प्राथमिकताएं तय की गईं।
- दिन में गहन विचार-विमर्श के बाद, प्रतिनिधि हम्पी के 4000 हेक्टेयर में फैले स्मारकों और पत्थरों के रहस्यमय परिदृश्य का पता लगाएंगे।
- वे 1336 से 1646 ईस्वी के बीच फले-फूले विजयनगर साम्राज्य के दौरान निर्मित शहर की योजना, जलमार्ग, मंदिरों और अन्य बुनियादी ढांचे को देखेंगे।
- वे कर्नाटक के स्थानीय शिल्प और हस्तशिल्प और सांस्कृतिक प्रदर्शन का भी अनुभव करेंगे।

हम्पी के बारे में:

- परंपरागत रूप से किष्किंधा के पंपक्षेत्र के रूप में जाना जाने वाला हम्पी मध्य कर्नाटक में तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।
- यह अपने ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, क्योंकि यह एक समय विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी, जो दक्षिण भारत के सबसे महान हिंदू साम्राज्यों में से एक था, जो 14वीं से 16वीं शताब्दी तक फला-फूला।
- नदी: तुंगभद्रा नदी हम्पी से होकर बहती है।

वास्तुकला:

- इस साइट में कई भव्य मंदिर, महल, बाज़ार और अन्य संरचनाएँ हैं।
- कुछ प्रमुख स्थलों में विरुपाक्ष मंदिर, विट्ठला मंदिर, लोटस महल, रानी का स्नानघर और हाथी अस्तबल शामिल हैं।
- इस शहर के मंदिर अपने बड़े आयामों, पुष्प अलंकरण, बोल्ड और नाजुक नक्काशी, आलीशान स्तंभों, शानदार मंडपों और प्रतीकात्मक और पारंपरिक चित्रणों की एक बड़ी संपत्ति के लिए प्रसिद्ध हैं जिनमें रामायण और महाभारत के विषय शामिल हैं।

विट्ठला मंदिर परिसर:

- यह हम्पी के भीतर एक प्रतिष्ठित संरचना है, जो अपनी असाधारण वास्तुकला और प्रसिद्ध पत्थर के रथ के लिए जानी जाती है।
- यह 15वीं शताब्दी का है। इसका निर्माण विजयनगर साम्राज्य के शासकों में से एक, राजा देवराय द्वितीय (1422 - 1446 ई.) के शासनकाल के दौरान किया गया था।
- विजयनगर राजवंश के सबसे प्रसिद्ध शासक कृष्णदेवराय (1509 - 1529 ई.) के शासनकाल के दौरान मंदिर के कई हिस्सों का विस्तार और संवर्द्धन किया गया।
- इसे श्री विजया विट्ठल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह भगवान विष्णु के अवतार भगवान विट्ठल को समर्पित है।

नमदा कला

खबरों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री ने यूनाइटेड किंगडम (UK) को निर्यात के लिए नमदा कला उत्पादों के पहले बैच को हरी झंडी दिखाई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के हिस्से के रूप में कौशल भारत के पायलट प्रोजेक्ट के तहत कश्मीर के नमदा शिल्प को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिसमें राज्य के छह जिलों के लगभग 2,200 उम्मीदवार विलुप्त हो रही कला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

नमदा कला के बारे में:

- ऐसा कहा जाता है कि इसकी शुरुआत 16वीं शताब्दी में हुई थी जब मुगल सम्राट अकबर अपने घोड़ों को ठंड से बचाने के लिए एक आवरण बनवाना चाहते थे।
- इसे शाह-ए-हमदान नामक सूफी संत ने कश्मीरियों से परिचित कराया था।
- नमदा एक प्रकार का पारंपरिक कश्मीरी फेल्टेड कालीन है जो भेड़ के ऊन का उपयोग करके बनाया जाता है और इसमें रंगीन हाथ की कढ़ाई होती है।
- इस कश्मीरी शिल्प की विशिष्ट विशेषता यह है कि ऊन को फेल्ट किया जाता है, बुना नहीं जाता।

यह कैसे बनाया जाता है?

- यह आमतौर पर एक दूसरे के ऊपर चपटी ऊन की कई परतों का सैंडविच होता है।
- एक परत फैलाने के बाद, इसे एक समान रूप से पानी के साथ छिड़का जाता है और 'पिंजरा' (बुनी हुई विलो विकर) नामक उपकरण से दबाया जाता है।
- अद्वितीय थीम और पुष्प पैटर्न इन उत्कृष्ट कृतियों के लिए थीम प्रदान करते हैं और फूल और पत्तियां, कलियाँ और फल डिज़ाइन का सार हैं।
- यह कई संस्कृतियों में एक शिल्प के रूप में प्रचलित है, विशेष रूप से पूरे एशिया के देशों में, जैसे ईरान, अफगानिस्तान और भारत में।

चाविन डी हुंतार

खबरों में क्यों?

हाल ही में, पेरू में काम करने वाले पुरातत्वविदों ने 3,000 साल पुराने एक सीलबंद गलियारे का पता लगाया है, जिसे "कॉन्डर्स पैसेजवे" कहा जाता है, जो संभवतः प्राचीन चाविन संस्कृति से संबंधित एक विशाल मंदिर परिसर के अंदर अन्य कक्षों की ओर जाता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- लीमा से लगभग 190 मील (306 किमी) उत्तर पूर्व में स्थित है।
- चाविन डी हुआनतार पुरातात्विक स्थल संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक है, जो लगभग 1,500-550 ईसा पूर्व से विकसित हुआ है।

- यह सबसे प्रारंभिक और सबसे प्रसिद्ध पूर्व-कोलंबियाई साइटों में से एक है।
- वे इंका साम्राज्य के सत्ता में आने से 2,000 साल से भी पहले पेरूवियन एंडीज़ के उत्तरी हाइलैंड्स में पहले गतिहीन कृषक समुदायों के समय के हैं।

- इसने एंडियन हाइलैंड्स में सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक गतिविधि के केंद्र के रूप में कार्य किया।
- चाविन लोगों ने एक जटिल धार्मिक पदानुक्रम और एक व्यापक व्यापार नेटवर्क के साथ सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज विकसित किया
- चाविन अपनी उन्नत कला के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसमें अक्सर पक्षियों और बिल्लियों का चित्रण होता है।
- यह अभी भी लुभावनी पत्थर की इमारतों, छतों और मानवाकार और ज़ूमोर्फिक बेस-रिलीफ नक्काशी से सजाए गए प्लाजा में स्पष्ट है।
- इसे 1985 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- नवीनतम चाविन खोजें मंदिर के दक्षिणी हिस्से के अंदर एक गलियारे पर केंद्रित हैं, जिसे पुरातत्वविदों का मानना है कि इसकी संरचनात्मक कमजोरी के कारण सील कर दिया गया था, लेकिन अब यह चाविन के शुरुआती दिनों की एक झलक पेश करता है।
- लगभग 37 पाउंड (17 किलोग्राम) वजन का एक बड़ा सिरेमिक टुकड़ा, जिसे कंडक्टर के सिर और पंखों से सजाया गया है, एक सिरेमिक कटोरे के साथ, मार्ग में पाया गया है, दोनों मई 2022 में पाए गए जब प्रवेश द्वार खुला था।
- कोंडोर, दुनिया के सबसे बड़े पक्षियों में से एक, प्राचीन एंडियन संस्कृतियों में शक्ति और समृद्धि से जुड़ा था।
- मंदिर परिसर में छतों के साथ-साथ मार्गों का एक नेटवर्क भी है, जिसे हाल ही में खोजा गया है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

2 राजनीति और शासन

लिंचिंग

खबरों में क्यों?

सुप्रीम कोर्ट ने लिंचिंग के खिलाफ की गई कार्रवाई का डेटा मांगा

महत्वपूर्ण बिंदु

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने जुलाई 2018 के फैसले के बाद से लिंचिंग की घटनाओं को संबोधित करने के लिए केंद्र और राज्यों द्वारा की गई कार्रवाइयों का आकलन करने का फैसला किया है, जिसमें इन कृत्यों को भीड़तंत्र के रूप में निंदा की गई है।
- अदालत ने राज्य सरकारों को भीड़ हिंसा और लिंचिंग की घटनाओं से संबंधित दर्ज की गई शिकायतों, दर्ज की गई FIR और अदालती कार्यवाही पर वर्ष-वार डेटा प्रदान करने का निर्देश दिया है।

पृष्ठभूमि

- 2018 सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने सतर्कता, मॉब लिंचिंग, सांप्रदायिक हिंसा और घृणा अपराधों के बढ़ते मुद्दों को संबोधित किया।
- अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि व्यक्तियों या मुख्य समूहों को कानून अपने हाथ में लेने से रोकना राज्यों का कर्तव्य है, इस बात पर जोर देते हुए कि प्रत्येक नागरिक को सतर्कता का सहारा लेने के बजाय पुलिस को कानून के उल्लंघन की रिपोर्ट करने का अधिकार है।
- अदालत ने घोषणा की कि लिंचिंग कानून के शासन और संवैधानिक मूल्यों को कमजोर करती है, जिससे समाज में अराजकता और हिंसा फैलती है।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियाँ

- अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को गौरक्षकों सहित अन्य सतर्कताओं को होने से रोकना चाहिए। सतर्कता की कार्रवाइयां राज्य की कानूनी संस्थाओं को नष्ट करती हैं और संवैधानिक व्यवस्था को बाधित करती हैं।
- अदालत ने भीड़ हिंसा की घटनाओं के कारण बढ़ती असहिष्णुता और बढ़ते ध्रुवीकरण पर चिंता व्यक्त की और इस बात पर जोर दिया कि इस तरह के कृत्य देश में कानून और व्यवस्था की सामान्य स्थिति नहीं बननी चाहिए।
- अदालत ने लिंचिंग और भीड़ की हिंसा से उत्पन्न खतरों पर प्रकाश डाला, जो असहिष्णुता, गलत सूचना और फर्जी खबरों के प्रसार से प्रभावित होकर व्यापक घटनाओं में बदल सकती है।

उपचारी उपाय

- भीड़ की हिंसा और पीट-पीटकर हत्या की घटनाओं को रोकने के लिए राज्य सरकारों को प्रत्येक जिले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को नोडल अधिकारी नियुक्त करना चाहिए।
- राज्य सरकारों को उन क्षेत्रों की पहचान करनी चाहिए जहां भीड़ द्वारा हिंसा और पीट-पीटकर हत्या की घटनाएं हुई हैं।
- पुलिस अधिकारियों को CRPC की धारा 129 के तहत अपने अधिकार का उपयोग करके भीड़ को तितर-बितर करना चाहिए और IPC की धारा 153A के तहत तुरंत FIR दर्ज की जानी चाहिए।
- नोडल अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे अपराधों की जांच की व्यक्तिगत रूप से निगरानी करें और प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करें।
- राज्य सरकारों को CRPC की धारा 357a के अनुरूप लिंचिंग और भीड़ हिंसा पीड़ितों के लिए पीड़ित मुआवजा योजना स्थापित करनी चाहिए।
- विशेष नामित अदालतों या फास्ट-ट्रैक अदालतों को लिंचिंग और भीड़ से संबंधित मामलों को संभालना चाहिए।

राज्य सरकारों की भूमिका

- न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति बेला M त्रिवेदी की खंडपीठ ने राज्य सरकारों को भीड़ हिंसा और पीट-पीटकर हत्या की घटनाओं पर व्यापक डेटा संकलित करने का निर्देश दिया है।
- डेटा में दर्ज की गई शिकायतों, दर्ज की गई FIR और अदालतों में जमा किए गए चालान की जानकारी शामिल होनी चाहिए, जिसमें प्रत्येक वर्ष की गई प्रगति पर प्रकाश डाला जाए।
- अदालत ने सुझाव दिया कि गृह मंत्रालय तहसीन पूनावाला मामले में अदालत के 2018 के फैसले के जवाब में किए गए उपायों पर अपडेट प्राप्त करने के लिए राज्य सरकारों के संबंधित विभाग प्रमुखों के साथ बैठकें करे।

- अदालत ने पहले नफरत भरे भाषणों, भीड़ हिंसा और लिंचिंग पर खुफिया जानकारी इकट्ठा करने के लिए राज्यों द्वारा विशेष कार्य बलों के गठन का निर्देश दिया था।

CBIC

खबरों में क्यों?

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) मतदाताओं को लुभाने के लिए मुफ्त वस्तुओं, शराब के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए एसओपी जारी करता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- राज्यों में विधानसभा चुनावों और अगले साल आम चुनावों से पहले चुनाव के दौरान तस्करी का सामान केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) ने संदिग्ध नकदी, अवैध शराब, ड्रग्स / नशीले पदार्थों, मुफ्त वस्तुओं के प्रवाह को रोकने के लिए निवारक सतर्कता तंत्र के लिए मानक संचालन प्रक्रिया जारी की है।
- चुनाव आयोग के निर्देशों के अनुरूप, जिसने चिंता व्यक्त की थी कि चुनाव प्रक्रिया के दौरान मतदाताओं को लुभाने के लिए तस्करी के सामान/प्रतिबंध और अन्य अवैध वस्तुओं का उपयोग किया जा सकता है, सीबीआईसी ने अपने क्षेत्रीय गठन को मौद्रिक और गैर दोनों के उपयोग की निगरानी करने का निर्देश दिया है। चुनाव के दौरान मतदाताओं को लुभाने के लिए मौद्रिक वस्तुएं।

SoP की मुख्य बातें

- GST और सीमा शुल्क अधिकारियों को नए SoP के तहत संभावित मतदाताओं को लुभाने के लिए कूपन-आधारित या मुफ्त ईंधन या नकदी के वितरण की निगरानी करने की आवश्यकता होगी।
- अधिकारी उम्मीदवारों और पार्टियों द्वारा ईंधन की खपत की भी निगरानी करेंगे और भोजन, होटल, पार्टियों, टेंट हाउस आदि पर खर्च पर नजर रखेंगे।
- GST अधिकारी चुनाव क्षेत्र में रेस्तरां/भोजनालयों, विवाह हॉल/फार्म हाउस/बूचड़खाना/मीट हाउस पर व्यापक जांच रखेंगे।
- विधानसभा से पहले जारी SoP के अनुसार, GST और सीमा शुल्क अधिकारी सड़क और वाहनों की पारगमन जांच के प्रभावी संचालन और अवैध और निषिद्ध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए गोदामों के सत्यापन के लिए "उड़न दस्ते और स्थैतिक निगरानी दल" भी स्थापित करेंगे। पांच राज्यों - राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और मिजोरम - में चुनाव और अगले साल लोकसभा चुनाव होने हैं।

मुफ्त

- मुफ्त बिजली, मुफ्त सार्वजनिक परिवहन, मुफ्त पानी और लंबित बिलों और ऋणों की माफी जैसे राजनीतिक दलों द्वारा किए गए वादों की एक श्रृंखला को अक्सर मुफ्त उपहार माना जाता है।
- रिपोर्ट के अनुसार, मुफ्त वस्तुओं पर व्यय विभिन्न राज्यों के लिए सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) का 0.1 से 2.7 प्रतिशत के बीच है, जो संभावित रूप से काफी हद तक ऋणग्रस्त राज्य हैं।

CBIC के बारे में

- यह वित्त मंत्रालय के तहत राजस्व विभाग का हिस्सा है।
- यह सीमा शुल्क और केंद्रीय उत्पाद शुल्क लगाने और संग्रहण, तस्करी की रोकथाम और सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क और नारकोटिक्स आदि से संबंधित मामलों से संबंधित नीति तैयार करने से संबंधित है।

ED निदेशक

खबरों में क्यों?

सुप्रीम कोर्ट ने ED निदेशक को टुकड़ों में दिए गए एक्सटेंशन को अवैध ठहराया

महत्वपूर्ण बिंदु

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा प्रवर्तन निदेशालय प्रमुख संजय कुमार मिश्रा के कार्यकाल का तीसरा विस्तार अवैध था।
- केंद्र को जांच एजेंसी के लिए नया प्रमुख नियुक्त करना पड़ा।
- एसके मिश्रा का विस्तारित कार्यकाल 2021 के फैसले का उल्लंघन है, सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल श्री मिश्रा के कार्यकाल को तीसरी बार बढ़ाने के केंद्र के फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए कहा।
- वैश्विक आतंकी वित्तपोषण निगरानी संस्था फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) की एक सहकर्मी समीक्षा के बीच केंद्र द्वारा निरंतरता के बारे में चिंता व्यक्त करने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें 31 जुलाई 2023 तक पद पर बने रहने दिया।

- केंद्र ने हर बार श्री मिश्रा का कार्यकाल बढ़ाने के लिए सहकर्मी समीक्षा का हवाला दिया था।
- इससे पहले सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि वह नवंबर में सेवानिवृत्त हो जाएंगे और याचिका "राजनीतिक आकाओं" को खुश करने के लिए "किसी सार्वजनिक हित के बजाय अप्रत्यक्ष व्यक्तिगत हित" से प्रेरित थी।

प्रवर्तन निदेशालय (ED) के बारे में

- प्रवर्तन निदेशालय की स्थापना वर्ष 1956 में आर्थिक मामलों के विभाग के तहत एक 'प्रवर्तन इकाई' के रूप में की गई थी।
- बाद में, 1957 में, इस इकाई का नाम बदलकर 'प्रवर्तन निदेशालय' कर दिया गया।

प्रशासनिक नियंत्रण

- वर्तमान में, यह परिचालन उद्देश्यों के लिए राजस्व विभाग (वित्त मंत्रालय के तहत) के प्रशासनिक नियंत्रण में है।

कार्य

- ED विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999 (फेमा) और PMLA के तहत कुछ प्रावधानों को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
- ED के पास फेमा के उल्लंघन के दोषी पाए गए दोषियों की संपत्ति कुर्क करने की शक्ति है।
- इसे PMLA के तहत किए गए अपराधों के खिलाफ कार्रवाई, तलाशी, जब्ती, गिरफ्तारी और सर्वेक्षण आदि करने का भी अधिकार दिया गया है।

ED के निदेशक की नियुक्ति

- ED निदेशक की नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा एक समिति की सिफारिश पर की जाती है:
- केंद्रीय सतर्कता आयुक्त की अध्यक्षता में
- सदस्यों में सतर्कता आयुक्त, गृह सचिव, सचिव डीओपीटी और राजस्व सचिव शामिल हैं।

कुई भाषा

खबरों में क्यों?

कुई भाषा को 8वीं अनुसूची में शामिल करने को ओडिशा सरकार की मंजूरी मिल गई

महत्वपूर्ण बिंदु

- ओडिशा राज्य कैबिनेट ने एक प्रस्ताव को मंजूरी दे दी जिसमें कुई भाषा को भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने की सिफारिश की गई।
- कैबिनेट की राय है कि भाषा को 8वीं अनुसूची में शामिल करने से कोई वित्तीय प्रभाव नहीं पड़ेगा।

कुई भाषा के बारे में:

- भारत के ओडिशा में जनजातीय आबादी द्वारा लगभग 46 भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें कुई भाषा भी शामिल है, जिसे कंध, खोंडी, कांडा, कोडु या कुइंगा के नाम से भी जाना जाता है। कुई एक दक्षिण-पूर्वी द्रविड़ भाषा है जो मुख्य रूप से ओडिशा के पहाड़ी और जंगली इलाकों में रहने वाले कंधों या कोंधों द्वारा बोली जाती है।
- कुई भाषा मुख्य रूप से दक्षिण और मध्य ओडिशा के फुलबनी (कोंडामाल), बौध, कोरापुट, कालाहांडी, रायगड़ा, नयागढ़, गंजम, गजपति, नबरंगपुर, सोनपुर, अंगुल और ढेंकनाल जिलों जैसे क्षेत्रों में बोली जाती है। यह गोंडी और कुवी भाषाओं से निकटता से संबंधित है और उड़िया लिपि में लिखी गई है।
- भारत की जनगणना के अनुसार, कुई भाषा को बोलने वालों की संख्या लगभग 1 मिलियन है, अर्थात् कुल 941,488 लोग।
- यूनेस्को साइट इंगित करती है कि भाषा की स्थिति संभावित रूप से कमजोर है, जो ध्यान और संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता का सुझाव देती है।

भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची:

- यह भारत की आधिकारिक भाषाओं को सूचीबद्ध करता है।
- हालाँकि पूरे देश में सैकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं, आठवीं अनुसूची कुल 22 भाषाओं को आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता देती है।

8वीं अनुसूची में भाषाएँ:

- अब संविधान के आठवें खंड में शामिल 22 भाषाएँ हैं, मणिपुरी, मैथिली, कश्मीरी, हिंदी, कन्नड़, गुजराती, कोंकणी, मलयालम, असमिया, मराठी, नेपाली, बंगाली, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तेलुगु, तमिल, उड़िया, उर्दू, बोडो, डोगरी और संथाली।
- इनमें से चौदह भाषाएँ मूल रूप से संविधान में सूचीबद्ध थीं। सिंधी को 1967 में, कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को 1992 में और संताली, डोगरी, मैथिली और बोडो को 2003 के 92वें संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ा किया गया था।

अंतर-सेवा संगठन (कमांड, नियंत्रण और अनुशासन) विधेयक 2023

खबरों में क्यों?

रक्षा संबंधी स्थायी समिति (जुएल ओरम की अध्यक्षता में) ने अंतर-सेवा संगठन (कमांड, नियंत्रण और अनुशासन) विधेयक, 2023 के सभी प्रावधानों पर सहमति व्यक्त करते हुए कहा है कि इसे बिना किसी संशोधन के पारित किया जाना चाहिए।

महत्वपूर्ण बिंदु

- विधेयक पर समिति की 39वीं रिपोर्ट (17वीं लोकसभा) लोकसभा में पेश की गई और राज्यसभा में भी रखी गई।

विधेयक की मुख्य विशेषताओं में शामिल हैं:

- अंतर-सेवा संगठन: मौजूदा अंतर-सेवा संगठनों को विधेयक के तहत गठित माना जाएगा।
  - इनमें अंडमान और निकोबार कमान, रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी शामिल हैं। केंद्र सरकार एक अंतर-सेवा संगठन का गठन कर सकती है जिसमें तीन सेवाओं में से कम से कम दो से संबंधित कर्मचारी हों: सेना, नौसेना और वायु सेना।
  - इन्हें एक ऑफिसर-इन-कमांड के अधीन रखा जा सकता है। इन संगठनों में एक संयुक्त सेवा कमान भी शामिल हो सकती है, जिसे कमांडर-इन-चीफ की कमान के तहत रखा जा सकता है।
- अंतर-सेवा संगठनों का नियंत्रण: वर्तमान में, अंतर-सेवा संगठनों के कमांडर-इन-चीफ या ऑफिसर-इन-कमांड को अन्य सेवाओं से संबंधित कर्मियों पर अनुशासनात्मक या प्रशासनिक शक्तियों का प्रयोग करने का अधिकार नहीं है।
  - विधेयक किसी अंतर-सेवा संगठन के कमांडर-इन-चीफ या ऑफिसर-इन-कमांड को उसमें सेवारत या उससे जुड़े कर्मियों पर आदेश और नियंत्रण रखने का अधिकार देता है।
  - वह सेवा कर्मियों द्वारा अनुशासन बनाए रखने और कर्तव्यों का उचित निर्वहन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होगा।
- एक अंतर-सेवा संगठन का अधीक्षण केंद्र सरकार में निहित होगा। सरकार ऐसे संगठनों को राष्ट्रीय सुरक्षा, सामान्य प्रशासन या सार्वजनिक हित के आधार पर भी निर्देश जारी कर सकती है।
- केंद्र सरकार के अधीन अन्य बल: केंद्र सरकार भारत में स्थापित और बनाए गए किसी भी बल को अधिसूचित कर सकती है, जिस पर यह विधेयक लागू होगा। यह सेना, नौसेना और वायु सेना के कर्मियों के अतिरिक्त होगा।
- कमांडर-इन-चीफ: कमांडर-इन-चीफ या ऑफिसर-इन-कमांड के रूप में नियुक्त होने के योग्य अधिकारी हैं: (i) नियमित सेना का एक जनरल ऑफिसर (ब्रिगेडियर के पद से ऊपर), (ii) ए नौसेना का ध्वज अधिकारी (बेड़े के एडमिरल, एडमिरल, वाइस-एडमिरल, या रियर-एडमिरल का पद), या (iii) वायु सेना का एक वायु अधिकारी (समूह कप्तान के पद से ऊपर)।
- उन्हें निहित सभी अनुशासनात्मक और प्रशासनिक शक्तियों का प्रयोग करने का अधिकार होगा: (i) सेना के जनरल ऑफिसर कमांडिंग, (ii) नौसेना कमान के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, (iii) एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ एक वायु कमान, (iv) सेवा अधिनियमों में निर्दिष्ट कोई अन्य अधिकारी/प्राधिकरण, और (v) सरकार द्वारा अधिसूचित कोई अन्य अधिकारी/प्राधिकरण।
- कमांडिंग ऑफिसर: बिल एक कमांडिंग ऑफिसर का प्रावधान करता है जो किसी यूनिट, जहाज या प्रतिष्ठान की कमान संभालेगा।
  - अधिकारी अंतर-सेवा संगठन के कमांडर-इन-चीफ या ऑफिसर-इन-कमांड द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों का भी पालन करेगा।
  - कमांडिंग ऑफिसर को उस अंतर-सेवा संगठन में नियुक्त, प्रतिनियुक्त, तैनात या संलग्न कर्मियों पर सभी अनुशासनात्मक या प्रशासनिक कार्रवाई शुरू करने का अधिकार होगा।

डिजिटल टाइम वाउचर

खबरों में क्यों?

चुनाव के दौरान दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो पर प्रचार के लिए ECI राष्ट्रीय और राज्य राजनीतिक दलों को डिजिटल टाइम वाउचर जारी करेगा

महत्वपूर्ण बिंदु

- चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों को ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन पर समय का आवंटन अब ऑनलाइन होगा।
- भारत के चुनाव आयोग ने राजनीतिक दलों द्वारा सरकारी स्वामित्व वाले इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उपयोग के लिए मौजूदा योजना में संशोधन किया है।
- यह सूचना प्रौद्योगिकी (IT) प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजिटल टाइम वाउचर जारी करने का प्रावधान शुरू करके किया गया है।
- इस सुविधा के साथ, राजनीतिक दलों को चुनाव के दौरान भौतिक रूप से टाइम वाउचर एकत्र करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को ECI/CEO कार्यालयों में भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।
- यह कदम चुनावी प्रक्रिया की बेहतरी और सभी हितधारकों की सहजता के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की आयोग की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- प्रौद्योगिकी में प्रगति को पहचानते हुए, आयोग राजनीतिक दलों के साथ इंटरफेस के लिए IT आधारित विकल्प प्रदान कर रहा है।
- हाल ही में, आयोग ने चुनाव आयोग के साथ राजनीतिक दलों द्वारा वित्तीय खातों को ऑनलाइन दाखिल करने के लिए एक वेब पोर्टल भी पेश किया।

पृष्ठभूमि:

- यह योजना, जिसे शुरू में 16 जनवरी 1998 को अधिसूचित किया गया था, R.P. अधिनियम, 1951 की धारा 39 a के तहत वैधानिक आधार रखती है।
- इसे मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य पार्टियों के साथ व्यापक विचार-विमर्श के बाद तैयार किया गया था और इसका उद्देश्य चुनाव के दौरान प्रचार के लिए सरकारी स्वामित्व वाले इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक समान पहुंच सुनिश्चित करना है।
- इस योजना के तहत, प्रत्येक राष्ट्रीय पार्टी और संबंधित राज्य की मान्यता प्राप्त राज्य पार्टी को DD और AIR पर समान रूप से एक समान आधार समय आवंटित किया जाता है और पार्टियों को आवंटित किया जाने वाला अतिरिक्त समय पार्टियों के चुनाव प्रदर्शन के आधार पर तय किया जाता है। संबंधित राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के पिछले विधानसभा चुनावों में या लोकसभा के पिछले आम चुनावों में, जैसा भी मामला हो।

- वास्तविक तिथि और समय जिसके दौरान किसी भी पार्टी के अधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा उपरोक्त प्रसारण/प्रसारण किया जाएगा, वह ECI के परामर्श से और राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में प्रसार भारती निगम द्वारा पूर्व निर्धारित किया जाता है।
- हकदार राजनीतिक दलों को टाइम वाउचर के प्रसंस्करण और वितरण के लिए एक IT-आधारित मंच की शुरूआत एक अधिक कुशल और सुव्यवस्थित प्रक्रिया की अनुमति देती है, जिससे राजनीतिक दलों के लिए पहुंच और उपयोग में आसानी बढ़ती है।

विश्व चुनाव निकाय (A-WEB)

खबरों में क्यों?

हाल ही में, भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त ने एसोसिएशन ऑफ वर्ल्ड इलेक्शन बॉडीज (A-WEB) के कार्यकारी बोर्ड की 11वीं बैठक में भाग लेने के लिए कोलंबिया के कार्टाजेना में भारतीय चुनाव आयोग (ECI) के तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- एसोसिएशन ऑफ वर्ल्ड इलेक्शन बॉडीज दुनिया भर में चुनाव प्रबंधन निकायों (EMB) का सबसे बड़ा संघ है, जिसमें 119 EMB सदस्य और 20 क्षेत्रीय संघ/संगठन सहयोगी सदस्य हैं।
- नेशनल सिविल रजिस्ट्री, कोलंबिया द्वारा 2023 में "क्षेत्रीय चुनाव 2023 की चुनौतियों पर एक वैश्विक दृष्टिकोण" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित किया जा रहा है।
- एक वैश्विक संघ के रूप में A-वेब EMB के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इस तरह एक-दूसरे के अनुभवों और सर्वोत्तम प्रथाओं से सीखने में सक्षम बनाता है।
- A-WEB जैसे मंचों के माध्यम से EMB फर्जी आख्यानों का मुकाबला करने जैसी गंभीर चुनौतियों पर मिलकर काम कर सकते हैं जो दुनिया भर में चुनावी अखंडता को पटरी से उतारने की कोशिश कर रहे हैं।
- कार्यकारी बोर्ड की बैठक में विचार-विमर्श के दौरान, प्रतिभागियों ने 2023-24 के दौरान ए-वेब द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों और गतिविधियों, ए-वेब की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट और ए-वेब इंडिया सेंटर सहित इसके क्षेत्रीय कार्यालयों सहित विभिन्न एजेंडा वस्तुओं पर चर्चा की।

बैठक में अन्य एजेंडा मदों में, भारत ने ECI प्रस्तावों को उठाया-

(i) एक ए-वेब पोर्टल स्थापित करना जो चुनावी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं में सदस्य EMB द्वारा की गई चुनावी सर्वोत्तम प्रथाओं और पहलों के भंडार के रूप में काम करेगा।

(ii) लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले और महत्वपूर्ण पहल करने वाले EMB के लिए ए-वेब ग्लोबल अवार्ड्स की स्थापना करना। दोनों प्रस्तावों को कार्यकारी बोर्ड ने मंजूरी दे दी।

- 11वीं A-WEB कार्यकारी बोर्ड की बैठक के मौके पर, ECI इलेक्ट्रॉनिक पोस्टल बैलेट सिस्टम पर कोरिया गणराज्य के राष्ट्रीय चुनाव आयोग के साथ एक द्विपक्षीय बैठक भी आयोजित की गई।
- भारत और दक्षिण कोरिया ने चुनाव प्रशासन के क्षेत्र में पारस्परिक रूप से सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने के लिए 2012 में एक समझौता ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर किए थे।
- दोनों EMB में सेमिनारों, सम्मेलनों और पर्यवेक्षक कार्यक्रमों के लिए अधिकारियों की नियमित यात्राओं के माध्यम से सक्रिय द्विपक्षीय आदान-प्रदान और जुड़ाव है।
- NEC ने मार्च 2023 में 'डेमोक्रेसी कोहोर्ट ऑन इलेक्शन इंटीग्रिटी' के तत्वावधान में ECI द्वारा आयोजित 'समावेशी चुनाव और चुनाव अखंडता' पर तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी भाग लिया।

पृष्ठभूमि: ECI और A-WEB

- A-WEB की स्थापना अक्टूबर, 2013 में सियोल, कोरिया गणराज्य में सदस्य देशों में चुनाव प्रबंधन की प्रक्रियाओं को मजबूत करने के माध्यम से दुनिया भर में स्थायी लोकतंत्र प्राप्त करने के अपने सदस्यों के बीच साझा दृष्टिकोण पर की गई थी।
- ECI 2011-12 से ए-वेब के गठन की प्रक्रिया से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है और अक्टूबर 2013 में इसकी स्थापना के बाद से लगातार दो कार्यकाल (2013-15 और 2015-17) के लिए इसके कार्यकारी बोर्ड का सदस्य रहा है।
- ECI ने 2017-19 अवधि के लिए A-WEB के उपाध्यक्ष का पदभार संभाला; 2019-22 कार्यकाल के लिए अध्यक्ष के रूप में और वर्तमान में ए-वेब के तत्काल पूर्व अध्यक्ष के रूप में 2022-24 के लिए इसके कार्यकारी बोर्ड के सदस्य हैं।
- ए-वेब अपने सदस्य ईएमबी के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करता है और चुनाव प्रबंधन प्रथाओं का अध्ययन करने और अन्य सदस्य ईएमबी के साथ ज्ञान साझा करने के लिए विभिन्न देशों में चुनाव आगंतुक और अवलोकन कार्यक्रम चलाता है।

इंडिया ए-वेब सेंटर

- सितंबर 2019 में बेंगलुरु में आयोजित ए-वेब कार्यकारी बोर्ड की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार, सर्वोत्तम प्रथाओं और प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण को साझा करने के लिए दस्तावेज़ीकरण और अनुसंधान के लिए नई दिल्ली में एक भारत ए-वेब केंद्र स्थापित किया गया है।
- केंद्र कई प्रकाशन और दस्तावेज़ ला रहा है, जिसमें 'ए-वेब इंडिया जर्नल ऑफ इलेक्शन' नामक एक विश्व स्तरीय जर्नल भी शामिल है। ईसीआई भारत ए-वेब केंद्र के लिए सभी आवश्यक संसाधन प्रदान कर रहा है।

वन संशोधन विधेयक

खबरों में क्यों?

वन संशोधन विधेयक में हॉर्नेट्स नेस्ट (परेशान करने वाली स्थिति)।

महत्वपूर्ण बिंदु

- लोकसभा ने वन (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2023 पारित किया, मूल संस्करण में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं किया गया।
- चूँकि बिल को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की प्रतिक्रियाएँ मिलीं, इसलिए बिल को उसकी संपूर्णता में समझना और उसके अनुसार मुद्दों का मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है।

वन (संरक्षण) संशोधन विधेयक 2023

- विधेयक का उद्देश्य वन संरक्षण अधिनियम 1980 में संशोधन करना है - जो भारत के वनों की रक्षा के लिए बनाया गया एक कानून है।
- 1980 का अधिनियम केंद्र सरकार को उद्योगों के साथ-साथ वन-निवास समुदायों द्वारा लकड़ी और बांस से लेकर कोयला और खनिजों तक वन संसाधनों के निष्कर्षण को विनियमित करने का अधिकार देता है।
- अधिनियम में मुख्य बदलावों में एक 'प्रस्तावना' सम्मिलित करना शामिल है जो रेखांकित करती है -
- वनों के संरक्षण, उनकी जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन से चुनौतियों से निपटने के लिए भारत की प्रतिबद्धता
- मौजूदा वन (संरक्षण) अधिनियम से अधिनियम का नाम बदलकर वन (संरक्षण एवं संवर्धन) अधिनियम (वन संरक्षण और संवर्धन के रूप में अनुवादित) किया गया।
- संशोधनों में यह भी कहा गया है कि अधिनियम केवल 1980 या उसके बाद किसी भी सरकारी रिकॉर्ड में 'वन' के रूप में अधिसूचित भूमि पर लागू होगा।

वन (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2023 की मुख्य विशेषताएं

अधिनियम के दायरे में भूमि

- भारतीय वन अधिनियम, 1927 या किसी अन्य कानून के तहत वन के रूप में घोषित/अधिसूचित भूमि,
- भूमि पहली श्रेणी में शामिल नहीं है लेकिन सरकारी रिकॉर्ड में 25 अक्टूबर 1980 को या उसके बाद जंगल के रूप में अधिसूचित की गई है।

भूमि की छूट प्राप्त श्रेणियाँ

- विधेयक कुछ प्रकार की भूमि को अधिनियम के प्रावधानों से छूट देता है, जैसे कि रेल लाइन या सरकार द्वारा प्रबंधित सार्वजनिक सड़क के किनारे वन भूमि।
- अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से 100 किमी दूर स्थित वन भूमि और "राष्ट्रीय महत्व की रणनीतिक परियोजनाओं" के लिए उपयोग की जाने वाली भूमि या सुरक्षा और रक्षा परियोजनाओं के लिए 5-10 हेक्टेयर तक की भूमि को भी अधिनियम की शर्तों से छूट दी जाएगी।

विदेशी भूमि का समनुदेशन/पट्टा देना

- अधिनियम के तहत, राज्य सरकार को सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण के बिना किसी भी इकाई को वन भूमि आवंटित करने के लिए केंद्र सरकार की पूर्व मंजूरी की आवश्यकता होती है।
- विधेयक में, यह शर्त सभी संस्थाओं पर लागू की गई है, जिनमें सरकार के स्वामित्व और नियंत्रण वाली संस्थाएं भी शामिल हैं।
- इसमें यह भी आवश्यक है कि पूर्व अनुमोदन केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित नियमों और शर्तों के अधीन हो।

वन भूमि में अनुमत गतिविधियाँ

- अधिनियम वनों के गैर-आरक्षण या गैर-वन उद्देश्यों के लिए वन भूमि के उपयोग को प्रतिबंधित करता है।
- ऐसे प्रतिबंध केंद्र सरकार की पूर्वानुमति से हटाए जा सकते हैं।
- गैर-वन उद्देश्यों में बागवानी फसलों की खेती के लिए या पुन: वनीकरण के अलावा किसी अन्य उद्देश्य के लिए भूमि का उपयोग शामिल है।
- अधिनियम कुछ गतिविधियों को निर्दिष्ट करता है जिन्हें गैर-वन उद्देश्यों से बाहर रखा जाएगा, जिसका अर्थ है कि गैर-वन उद्देश्यों के लिए वन भूमि के उपयोग पर प्रतिबंध लागू नहीं होगा।
- विधेयक इस सूची में और अधिक गतिविधियों को जोड़ता है जैसे कि वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत सरकार या किसी प्राधिकरण के स्वामित्व वाले चिड़ियाघर और सफारी, संरक्षित क्षेत्रों के अलावा अन्य वन क्षेत्रों में, इकोटूरिज्म सुविधाओं, सिल्वीकल्चरल संचालन (वन विकास को बढ़ाना) और केंद्र सरकार द्वारा निर्दिष्ट कोई अन्य उद्देश्य।
- निर्देश जारी करने की शक्ति: विधेयक में कहा गया है कि केंद्र सरकार केंद्र, राज्य या केंद्र शासित प्रदेश (UT) के तहत या मान्यता प्राप्त किसी भी प्राधिकरण/संगठन को अधिनियम के कार्यान्वयन के लिए निर्देश जारी कर सकती है।

विधेयक से संबंधित मुद्दे

- मूल कानून (वन संरक्षण अधिनियम 1980) से विचलन
- 1980 के अधिनियम ने एक संरक्षणवादी रुख अपनाया जिससे वन मंजूरी प्राप्त करना समय लेने वाला और महंगा हो गया।
- जबकि वर्तमान विकास आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को पहचाना जाना चाहिए, यह विधेयक मूल कानून की भावना से महत्वपूर्ण रूप से भटक गया है।
- विधेयक से उभरे तीन बिंदुओं ने पर्यावरण विशेषज्ञों के बीच काफी चिंता पैदा कर दी है:

- इसके दायरे में वनों की संकुचित परिभाषा।
- वन क्षेत्रों के महत्वपूर्ण इलाकों का बहिष्कार।
- पहले से विनियमित अतिरिक्त गतिविधियों को मंजूरी देना।

अविश्वास प्रस्ताव

खबरों में क्यों?

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सत्तारूढ़ सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

यह प्रस्ताव I.N.D.I.A गठबंधन के विपक्षी दलों की ओर से कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई द्वारा प्रस्तावित किया गया था।

अविश्वास प्रस्ताव क्या है?

- संसदीय लोकतंत्र में, कोई सरकार तभी सत्ता में रह सकती है जब उसके पास सीधे निर्वाचित सदन में बहुमत हो।
- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 75(3) इस नियम को निर्दिष्ट करके इस नियम का प्रतीक है कि मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी है।
- इस सामूहिक जिम्मेदारी के परीक्षण के लिए लोकसभा के नियम अविश्वास प्रस्ताव के लिए एक विशेष तंत्र प्रदान करते हैं।
- प्रक्रिया लोकसभा के नियम 198 के तहत निर्दिष्ट है।
- संविधान में विश्वास या अविश्वास प्रस्ताव का उल्लेख नहीं है।

अविश्वास प्रस्ताव कौन ला सकता है?

- कोई भी लोकसभा सांसद, जो 50 सहयोगियों का समर्थन जुटा सकता है, किसी भी समय, मंत्रिपरिषद के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश कर सकता है।
- अविश्वास प्रस्ताव केवल लोकसभा में ही लाया जा सकता है। इसे राज्यसभा में पेश नहीं किया जा सकता।

अविश्वास प्रस्ताव पर बहस और मतदान कैसे होता है?

- प्रस्ताव उस सदस्य द्वारा पेश किया जाता है जिसने इसे प्रस्तुत किया है, और सरकार तब प्रस्ताव पर प्रतिक्रिया देगी।
- इसके बाद विपक्षी दलों को प्रस्ताव पर बोलने का मौका मिलेगा।
- बहस के बाद लोकसभा अविश्वास प्रस्ताव पर वोटिंग करेगी।
- यदि सदन के अधिकांश सदस्यों द्वारा इसका समर्थन किया जाता है तो प्रस्ताव पारित हो जाएगा।
- यदि अविश्वास प्रस्ताव पारित हो जाता है, तो सरकार को इस्तीफा देना होगा।
- यदि सरकार अविश्वास प्रस्ताव पर वोट जीत जाती है, तो प्रस्ताव गिर जाता है और सरकार सत्ता में बनी रहती है।

आज़ादी के बाद से कितने अविश्वास प्रस्ताव पेश किए गए हैं?

- आजादी के बाद से लोकसभा में 27 अविश्वास प्रस्ताव पेश किये गये हैं
- तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के प्रशासन के खिलाफ पहला अविश्वास प्रस्ताव अगस्त 1963 में लोकसभा में पेश किया गया था।
- प्रस्ताव के पक्ष में केवल 62 वोट और विपक्ष में 347 वोट मिले।
- आखिरी अविश्वास प्रस्ताव 2018 में तत्कालीन NDA सरकार के खिलाफ लाया गया था।

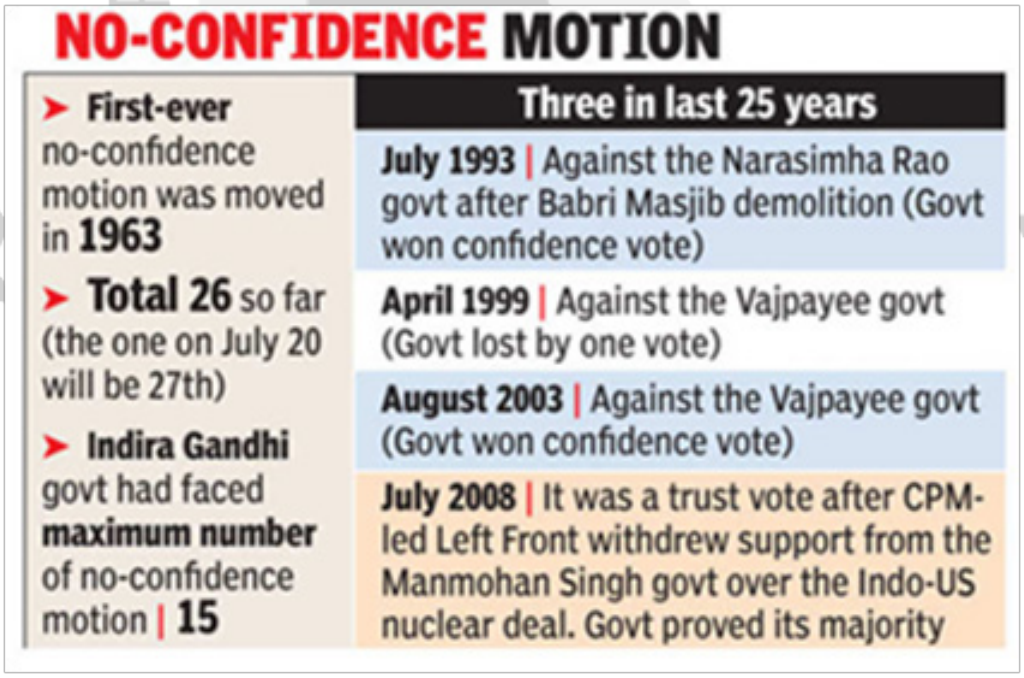

3 पर्यावरण और पारिस्थितिकी

GEF परिषद

खबरों में क्यों?

GEF परिषद ने 'गेम-चेंजिंग' वैश्विक जैव विविधता निधि (GEFF) की योजना को मंजूरी दी

महत्वपूर्ण बिंदु

- वैश्विक पर्यावरण सुविधा के गवर्निंग बोर्ड ने कुनमिंग-मॉन्ट्रियल ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क के कार्यान्वयन को वित्तपोषित करने के लिए एक "गेम-चेंजिंग" नया फंड स्थापित करने की योजना को मंजूरी दे दी है, जिसका उद्देश्य इस दशक के अंत तक प्रकृति को पुनर्प्राप्ति पथ पर लाना है।
- ब्राजील में एक बैठक के दौरान लिया गया GEF परिषद का निर्णय, अगस्त में कनाडा के वैंकूवर में होने वाली सातवीं GEF असेंबली में वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क फंड के लॉन्च का रास्ता साफ करता है।
- कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क दिसंबर 2022 में मॉन्ट्रियल में जैविक विविधता सम्मेलन COP15 शिखर सम्मेलन के दौरान हुआ एक महत्वपूर्ण समझौता था। इसने 2030 तक जैव विविधता और पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण, बहाली और टिकाऊ उपयोग पर नए लक्ष्य निर्धारित किए।
- समझौते को लागू करने के लिए, देशों को योजना को राष्ट्रीय लक्ष्यों और रणनीतियों में तब्दील करने, अपने निर्णय लेने में जैव विविधता को एकीकृत करने और परिणाम देने के लिए ठोस कार्रवाई करने की आवश्यकता होगी।
- इसके लिए बजट-तनाव वाले विकासशील देशों के लिए वित्तपोषण की आवश्यकता है, जिनमें से कई दुनिया में सबसे अधिक जैव विविधता वाले देशों में से कुछ हैं।
- वह प्रत्यक्ष समर्थन नए फंड के माध्यम से प्रदान किया जाएगा, जिसे सरकारों, निजी क्षेत्र और परोपकारी संगठनों से पूंजी आकर्षित करने के लिए स्थापित किया जाएगा।

तीन सिद्धांत जो GBFF के लिए देश के संसाधनों के आवंटन का मार्गदर्शन करते हैं

- आवंटन प्रणाली को रोलिंग आधार पर वित्तीय योगदान को समायोजित करना चाहिए।
- अल्प विकसित देशों और छोटे द्वीपीय विकासशील राज्यों की विशेष आवश्यकताओं पर विचार करें।
- यह स्वीकार करें कि जैव विविधता दुनिया भर में समान रूप से वितरित नहीं है और कुछ क्षेत्रों में दूसरों की तुलना में वैश्विक जैव विविधता लाभ में योगदान करने की अधिक क्षमता है।

GEF

- GEF, जो जैविक विविधता पर कन्वेंशन के लिए वित्तीय तंत्र है, ने पहले ही नए समझौते के लक्ष्यों और लक्ष्यों के आसपास राष्ट्रीय योजना का समर्थन करने के लिए प्रारंभिक कार्रवाई अनुदान प्रदान किया है।
- नए ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क फंड के आवास के अलावा, यह अपने अन्य ट्रस्ट फंडों के माध्यम से समर्थित परियोजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से जैव विविधता पहल का समर्थन करना जारी रखेगा।
- जैव विविधता GEF-8 फंडिंग चक्र का सबसे बड़ा घटक है, जो 2022 से 2026 तक चलता है।
- इससे पहले GEF परिषद ने मॉन्ट्रियल में की गई प्रतिबद्धताओं के अनुरूप, जैव विविधता के सतत उपयोग की रक्षा और सुनिश्चित करने के विकासशील देशों के प्रयासों के लिए प्रत्यक्ष समर्थन में $ 1.4 बिलियन प्रदान करने वाले एक रिकॉर्ड कार्य कार्यक्रम को मंजूरी दी थी।
- कार्य कार्यक्रम में शामिल छह नए एकीकृत कार्यक्रम कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के 23 लक्ष्यों में से 19 पर प्रगति का समर्थन करेंगे और प्रकृति के नुकसान को रोकने और उलटने से संबंधित अपने सभी लक्ष्यों पर प्रगति करेंगे।

सातवीं GEF असेंबली

- 22-26 अगस्त तक वैश्विक पर्यावरण सुविधा की सातवीं असेंबली के लिए 185 देशों के पर्यावरण नेता वैंकूवर, कनाडा के वैंकूवर कन्वेंशन सेंटर में एकत्रित होंगे।
- जैव विविधता हानि, जहरीले रसायनों और उच्च समुद्रों पर हाल की कूटनीतिक सफलताओं के आधार पर, GEF असेंबली प्रदूषण और प्रकृति हानि को समाप्त करने, जलवायु परिवर्तन से निपटने और समावेशी, स्थानीय नेतृत्व वाले संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 2030 लक्ष्यों के लिए एक महत्वपूर्ण स्टॉकटेकिंग होगी।

कार्बन क्रेडिट

खबरों में क्यों?

विद्युत मंत्रालय ने महत्वपूर्ण बिंदुओं को अधिसूचित किया

- योजना के तहत केंद्र बाजार के कार्यों को संचालित करने और उनकी देखरेख करने के लिए "भारतीय कार्बन बाजार के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति" का गठन करेगा।
- ऊर्जा मंत्रालय के सचिव पदेन अध्यक्ष होंगे, जबकि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सचिव सह-अध्यक्ष होंगे।
- समिति में वित्त, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा, इस्पात, कोयला और पेट्रोलियम मंत्रालय और नीति आयोग के सदस्य भी होंगे।
- संचालन समिति भारतीय कार्बन बाजार को संस्थागत बनाने और "बाध्य संस्थाओं" के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन लक्ष्य तैयार करने के लिए प्रक्रियाओं के निर्माण और अंतिम रूप देने के लिए ऊर्जा दक्षता ब्यूरो की सिफारिश करेगी।
- केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (CERC) को बाजार को विनियमित करने का अधिकार दिया गया है।
- यह पावर एक्सचेंजों को पंजीकृत करेगा और समय-समय पर भारतीय कार्बन बाजार में कार्बन क्रेडिट प्रमाणपत्र व्यापार को मंजूरी देगा।
- पावर एक्सचेंज को पावर एक्सचेंज में प्रमाणपत्रों के व्यापार के लिए अपने संबंधित उपनियमों और नियमों के लिए आयोग की मंजूरी लेनी होगी।
- पावर एक्सचेंज आयोग द्वारा अधिसूचित नियमों के अनुसार, कार्बन क्रेडिट प्रमाणपत्रों के व्यापार के संबंध में कार्य करेंगे।
- इसके अलावा, BEE इस योजना के प्रयोजनों के लिए अनुपालन तंत्र के तहत आवश्यकतानुसार विभिन्न क्षेत्रों के लिए तकनीकी समितियों का गठन करेगा।
- बिजली मंत्रालय BEE की सिफारिशों के आधार पर भारतीय कार्बन बाजार के अनुपालन तंत्र के तहत शामिल किए जाने वाले क्षेत्रों पर निर्णय लेगा।
- ब्यूरो अनुपालन तंत्र के तहत संस्थाओं के लिए प्रक्षेप पथ और लक्ष्य भी विकसित करेगा।
- विशेषज्ञों के अनुसार कार्बन बाजार से मदद मिलेगी क्योंकि कई प्रमुख भारतीय कॉरपोरेट्स ने कार्बन तटस्थ बनने के लिए प्रतिबद्धताएं जताई हैं और बाजार कठिन टोबेट क्षेत्रों में संस्थाओं को लचीलापन प्रदान करेगा और कार्बन बाजार से क्रेडिट के साथ अपने स्वयं के कटौती प्रयासों को पूरा करने के लिए उच्च कटौती लागत के साथ लचीलापन प्रदान करेगा।
- उम्मीद है कि बाजार कम कटौती लागत वाली संस्थाओं को उनके अधिदेश से परे उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रोत्साहित करेगा और कार्बन बाजार में व्यापार करने से भारत में उत्सर्जन में कटौती की कुल लागत कम हो सकती है।
- कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगाने पर ध्यान भारत के महत्वाकांक्षी शुद्ध शून्य लक्ष्य की पृष्ठभूमि में आता है जिसे 2070 तक हासिल करने का लक्ष्य है।

कार्बन क्रेडिट

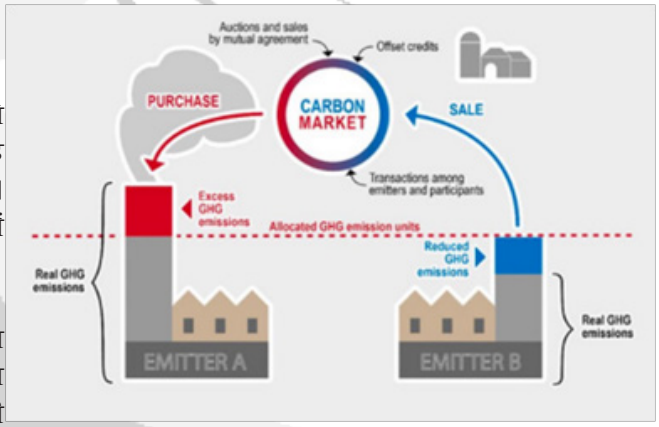

- कार्बन क्रेडिट, जिसे कार्बन ऑफसेट के रूप में भी जाना जाता है, ऐसे परमिट हैं जो मालिक को एक निश्चित मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड या अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करने की अनुमति देते हैं। एक क्रेडिट एक टन कार्बन डाइऑक्साइड या अन्य ग्रीनहाउस गैसों के बराबर उत्सर्जन की अनुमति देता है।
- कार्बन क्रेडिट तथाकथित कैप-एंड-ट्रेड कार्यक्रम का आधा हिस्सा है।
- प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों को क्रेडिट से सम्मानित किया जाता है जो उन्हें एक निश्चित सीमा तक प्रदूषण जारी रखने की अनुमति देता है, जिसे समय-समय पर कम किया जाता है। इस बीच, कंपनी किसी भी अनावश्यक क्रेडिट को किसी अन्य कंपनी को बेच सकती है जिसे उनकी आवश्यकता है।
- इस प्रकार निजी कंपनियों को ग्रीनहाउस उत्सर्जन को कम करने के लिए दोगुना प्रोत्साहन मिलता है।
- सबसे पहले, यदि उनका उत्सर्जन सीमा से अधिक है तो उन्हें अतिरिक्त क्रेडिट पर पैसा खर्च करना होगा। दूसरा, वे अपने उत्सर्जन को कम करके और अपने अतिरिक्त भत्ते बेचकर पैसा कमा सकते हैं।
- कार्बन क्रेडिट प्रणाली के समर्थकों का कहना है कि इससे प्रमाणित जलवायु कार्रवाई परियोजनाओं से मापने योग्य, सत्यापन योग्य उत्सर्जन में कमी आती है, और ये परियोजनाएं ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को कम करती हैं, हटाती हैं या उससे बचती हैं।

WHO

खबरों में क्यों?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (कौन) ने 'असुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और साफ-सफाई के कारण होने वाली बीमारियों का बोझ' (2019 अपडेट) रिपोर्ट जारी की

महत्वपूर्ण बिंदु

- रिपोर्ट दुनिया भर में मौतों की चिंताजनक संख्या और बुनियादी WASH सेवाओं तक पहुंच की कमी पर प्रकाश डालती है।

बाल मृत्यु दर

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, 2019 में पांच साल से कम उम्र के बच्चों की 395,000 मौतों के लिए असुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और स्वच्छता (WASH) जिम्मेदार थे।

मौतों का विवरण:

- 273,000 मौतें डायरिया के कारण हुई।
- 112,000 मौतें तीव्र श्वसन संक्रमण के कारण हुई।
- रिपोर्ट से पता चला है कि दुनिया की आधी आबादी के पास अभी भी पीने के पानी, स्वच्छता और स्वच्छता तक पर्याप्त पहुंच नहीं है, जिससे 2019 में कम से कम 1.4 मिलियन लोगों की मौत हो गई।

प्रभाव:

- डायरिया संबंधी बीमारियों के कारण दस लाख से अधिक मौतें हुई और 55 मिलियन विकलांगता-समायोजित जीवन वर्ष (WALY) हुए।
- DALY असामयिक मृत्यु के कारण नष्ट हुए जीवन के वर्षों की संख्या और किसी बीमारी या चोट के कारण विकलांगता के साथ जीए गए वर्षों का एक भारित माप है।
- दुनिया भर में अनुमानित 1.5 अरब लोग मिट्टी से फैलने वाले हेल्मिंथियासिस (STH) से प्रभावित हैं, जो खराब स्वच्छता प्रथाओं के कारण फैलता है।
- STH मानव मल में अंडों द्वारा फैलता है, जो बदले में उन क्षेत्रों में मिट्टी को दूषित करता है जहां स्वच्छता खराब है।
- अपर्याप्त WASH कुपोषण से जुड़ी बीमारी के बोझ में 10% का योगदान देता है।

प्रमुख रोग

- WHO ने असुरक्षित WASH के कारण होने वाली अन्य प्रमुख बीमारियों जैसे अल्पपोषण और मिट्टी से फैलने वाले हेल्मिंथियासिस (STH) का भी उल्लेख किया। मृदा-संचरित हेल्मिंथियासिस मानव मल में अंडों द्वारा प्रसारित होते हैं, जो बदले में उन क्षेत्रों में मिट्टी को दूषित करते हैं जहां स्वच्छता खराब है।

क्षेत्रीय असमानताएँ

- अधिकांश WASH-जिम्मेदार मौतें WHO अफ्रीकी और दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्रों में दर्ज की गई। एलएमआईसी में, 2019 में 505,000 से अधिक मौतें असुरक्षित पेयजल के कारण हुई और अमेरिका क्षेत्र में, डायरिया संबंधी बीमारियों ने 33,200 लोगों की जान ले ली।

घोना

- WASH एक संक्षिप्त शब्द है जो जल, स्वच्छता और स्वच्छता के परस्पर संबंधित क्षेत्रों के लिए है।
- WHO WASH रणनीति सदस्य राज्य संकल्प (WHA 64.4) और सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के जवाब में विकसित की गई है।
- यह WHO के 13वें सामान्य कार्य कार्यक्रम 2019-2023 का एक घटक है जिसका उद्देश्य बेहतर आपातकालीन तैयारी और प्रतिक्रिया जैसे बहुक्षेत्रीय कार्यों के माध्यम से तीन अरब लोगों के स्वास्थ्य में योगदान करना है; और एक बिलियन यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज (UHC) के साथ।
- यह जुलाई 2010 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाए गए सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता के मानवाधिकारों की प्रगतिशील प्राप्ति की आवश्यकता को भी शामिल करता है।

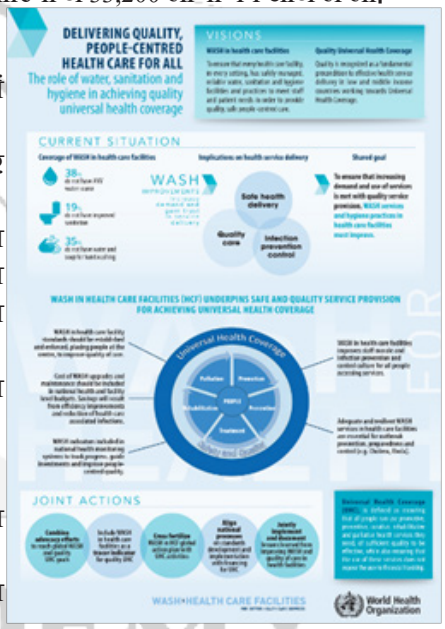

वॉश से जुड़े SDG:

- लक्ष्य 3: अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण - बीमारियों के प्रसार को रोकने और अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए WASH आवश्यक है।
- लक्ष्य 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता - यह लक्ष्य विशेष रूप से स्वच्छ पेयजल और पर्याप्त स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच की आवश्यकता को संबोधित करता है।
- लक्ष्य 12: जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन - जल संसाधनों की जिम्मेदार खपत और उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए WASH महत्वपूर्ण है।
- लक्ष्य 13: जलवायु कार्रवाई जलवायु परिवर्तन सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और स्वच्छता तक पहुंच को प्रभावित कर सकता है, जिससे WASH जलवायु कार्रवाई का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है।

भारत से संबंधित टिप्पणियाँ

- भारत उन देशों में शामिल है, जिन्होंने 2015 और 2020 के बीच सुरक्षित रूप से प्रबंधित स्वच्छता सेवाओं में 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की है।
- स्वच्छ भारत मिशन के परिणामस्वरूप 2014 और 2019 के बीच 300,000 से अधिक मौतों और 14 मिलियन DALY को रोका जा सकता है।
- जल जीवन मिशन के सफल कार्यान्वयन से डायरिया से होने वाली मौतों और DALY को लगभग आधा कम किया जा सकता है।

सिफारिशों

- उच्च WASH सेवा स्तरों से जुड़े स्वास्थ्य लाभ की मात्रा निर्धारित करना।
- सभी के लिए हाथ की स्वच्छता को बढ़ावा देना (सभी के लिए हाथ की स्वच्छता पहल, हाथ की स्वच्छता पर डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देश आदि)।
- सुरक्षित रूप से प्रबंधित सेवाओं के लिए जनसंख्या जोखिम पर डेटा में सुधार करने के लिए राष्ट्रीय निगरानी प्रणालियों को अपनाना।

फसल अवशेष प्रबंधन दिशानिर्देश

खबरों में क्यों?

सरकार ने पंजाब, हरियाणा, यूपी और दिल्ली राज्यों में उत्पन्न धान के भूसे के कुशल पूर्व-स्थिति प्रबंधन को सक्षम करने के लिए फसल अवशेष प्रबंधन दिशानिर्देशों को संशोधित किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- संशोधित दिशानिर्देशों के अनुसार, धान की भूसी आपूर्ति श्रृंखला के लिए तकनीकी-वाणिज्यिक पायलट परियोजनाएं लाभार्थी/एग्रीगेटर (किसान, ग्रामीण उद्यमी, किसानों की सहकारी समितियां, किसान उत्पादक संगठन (FPO) और पंचायतें) और के बीच द्विपक्षीय समझौते के तहत स्थापित की जाएंगी। धान की पराली का उपयोग करने वाले उद्योग।
- सरकार मशीनरी और उपकरण की पूंजीगत लागत पर वित्तीय सहायता प्रदान करेगी।
- आवश्यक कार्यशील पूंजी को या तो उद्योग और लाभार्थी द्वारा संयुक्त रूप से वित्तपोषित किया जा सकता है या लाभार्थी द्वारा कृषि अवसंरचना निधि (AIF), नाबार्ड वित्तीय या वित्तीय संस्थानों से वित्तपोषण का उपयोग किया जा सकता है।
- एकत्रित धान के भूसे के भंडारण के लिए भूमि की व्यवस्था और तैयारी लाभार्थी द्वारा की जाएगी जैसा कि अंतिम उपयोग उद्योग द्वारा निर्देशित किया जा सकता है।
- उच्च एचपी ट्रैक्टर, कटर, टेडर, मध्यम से बड़े बेलर, रेकर, लोडर, ग्रैबर्स और टेलीहैंडलर जैसी मशीनों और उपकरणों के लिए परियोजना प्रस्ताव आधारित वित्तीय सहायता दी जाएगी, जो अनिवार्य रूप से धान के भूसे की आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना के लिए आवश्यक हैं।
- राज्य सरकारें परियोजना मंजूरी समिति के माध्यम से इन परियोजनाओं को मंजूरी देंगी।
- सरकार (केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से) परियोजना लागत का 65% वित्तीय सहायता प्रदान करेगी, परियोजना के प्राथमिक प्रमोटर के रूप में उद्योग 25% का योगदान देगा और एकत्र किए गए फीडस्टॉक के प्राथमिक उपभोक्ता के रूप में कार्य करेगा और किसान या समूह किसान या ग्रामीण उद्यमी या किसानों की सहकारी समितियाँ या किसान उत्पादक संगठन (FPO), या पंचायतें परियोजना के प्रत्यक्ष लाभार्थी होंगे और शेष 10% का योगदान देंगे।

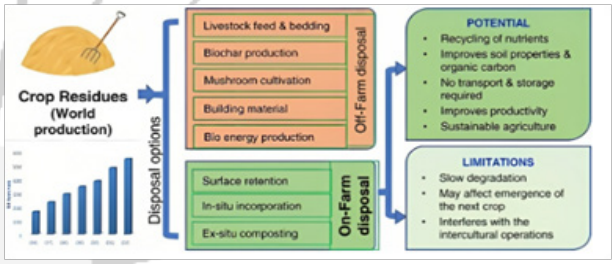

उपरोक्त हस्तक्षेपों के परिणाम हैं:

- यह पहल इन-सीटू विकल्पों के माध्यम से धान के भूसे प्रबंधन के प्रयासों को पूरक बनाएगी।
- हस्तक्षेप के तीन साल के कार्यकाल के दौरान, 1.5 मिलियन मीट्रिक टन अधिशेष धान का भूसा एकत्र होने की उम्मीद है जिसे अन्यथा खेतों में जला दिया जाता।
- पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में 4500 मीट्रिक टन क्षमता के लगभग 333 बायोमास संग्रह डिपो बनाए जाएंगे।
- पराली जलाने से होने वाला वायु प्रदूषण काफी कम हो जाएगा।
- इससे लगभग 9,00,000 मानव दिवस के रोजगार के अवसर पैदा होंगे।
- इन हस्तक्षेपों से धान के भूसे की मजबूत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन को बढ़ावा मिलेगा, जिससे बिजली/जैव-CNG/जैव-इथेनॉल द्वारा धान के भूसे को विभिन्न अंतिम उपयोगों यानी बिजली उत्पादन, गर्मी उत्पादन, जैव-CNG आदि के लिए उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।
- आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना से बायोमास से लेकर जैव ईंधन और ऊर्जा क्षेत्रों में नए निवेश होंगे।

विश्व संसाधन संस्थान

खबरों में क्यों?

वैश्विक उष्णकटिबंधीय प्राथमिक वन क्षेत्र में 2022 में निरंतर गिरावट जारी रही

महत्वपूर्ण बिंदु

- WRI के ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच के एक नए शोध के अनुसार, ट्रॉपिका क्षेत्रों में 4.1 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र नष्ट हो गया, जिसके परिणामस्वरूप 2.7 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन हुआ।
- वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (WRI) ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच द्वारा उद्धृत नए शोध में कहा गया है कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में 2022 में प्रति मिनट 11 फुटबॉल मैदानों के क्षेत्र को खोने के बराबर 4.1 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र खो गया है।

जंगल खो गया

- प्राथमिक वन: परिपक्व, प्राकृतिक वन जो हाल के इतिहास में अछूते रहे हैं। वे अन्य वनों की तुलना में अधिक कार्बन संग्रहीत करते हैं और जैव विविधता के समृद्ध स्रोत हैं। उनका नुकसान लगभग अपूरणीय है।

- द्वितीयक वन: वह वन जो वनों की कटाई के बाद प्राथमिक वन के स्थान पर प्राकृतिक रूप से उगता है। यह प्राकृतिक जंगल की तुलना में अधिक सजातीय है, जिसमें सीमित संख्या में प्रजातियाँ हैं और आमतौर पर यहाँ तक कि वृद्ध वन भी हैं।
- रोपे गए वन: वन मुख्य रूप से पौधे या बीज बोकर स्थापित किए जाते हैं। पेड़ आमतौर पर एक ही प्रजाति के होते हैं (चाहे देशी हों या लाए गए हों) उनकी उम्र भी एक जैसी होती है।

वितरण

- उष्णकटिबंधीय वर्षा वन एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, मध्य अमेरिका, मैक्सिको और कई प्रशांत द्वीपों में पाए जा सकते हैं, जो सभी भूमध्य रेखा के लगभग 28 डिग्री उत्तर या दक्षिण में हैं।
- वे पृथ्वी की सतह के लगभग 6-7 प्रतिशत हिस्से को कवर करते हैं और ग्रह की आधी जैव विविधता का घर हैं।
- ब्राजील (दक्षिण अमेरिका), कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (अफ्रीका), और इंडोनेशिया दुनिया के सबसे बड़े वर्षावनों का घर हैं।
- दक्षिण अमेरिका का अमेज़ॅन वर्षावन दुनिया का सबसे बड़ा है, जो महाद्वीपीय संयुक्त राज्य अमेरिका के आकार का लगभग दो-तिहाई क्षेत्र घेरता है।

निष्कर्ष

- ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच के अनुसार, भारत ने 2021 और 2022 के बीच 43.9 हजार हेक्टेयर आर्द्र प्राथमिक वन खो दिया, जो इस अवधि में देश के कुल वृक्ष आवरण हानि का 17% है।
- 2022 में कुल वैश्विक वृक्ष आवरण हानि में 10% की गिरावट आई। इसमें प्राथमिक, द्वितीयक और रोपित वन शामिल हैं।
- ग्लोबल फ़ॉरेस्ट वॉच के अनुसार, यह कमी, आग से संबंधित वन हानि में कमी का प्रत्यक्ष परिणाम है, जो 2021 से 28% कम हो गई है। 2022 में गैर-आग हानि में 1% से थोड़ा कम की वृद्धि हुई है।
- ब्राज़ील और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य सबसे अधिक उष्णकटिबंधीय वन क्षेत्र वाले दो देश हैं, और दोनों ने 2022 में इस संसाधन का नुकसान दर्ज किया।

सुझाव

- 2030 तक वैश्विक स्तर पर 350 एमएचए वनों को बहाल करने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए, दुनिया को 2021 और 2030 के बीच, प्रति वर्ष 22 एमएचए तक वृक्ष आवरण बढ़ाने की जरूरत है।
- वनों की कटाई को कम करने से अमेज़ॅन वर्षावन की लचीलापन मजबूत होगी और इसके खतरे वाले क्षेत्रों की सुरक्षा होगी।
- ब्राजील सरकार का वर्तमान प्रशासन सुर्खियों में है, और स्थिति को बदलने के लिए शून्य वनों की कटाई की नीति लागू करने का आग्रह किया जा रहा है।
- अमेज़ॅन पारिस्थितिकी तंत्र में पेड़ों की भूमिका के बारे में ज्ञान का निर्माण करना और अमेज़ॅन पारिस्थितिकी तंत्र में पेड़ों के महत्व के बारे में छात्रों और युवाओं के बीच जागरूकता पैदा करना।
- इनकी सुरक्षा के लिए वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को सीमित करना भी आवश्यक है।
- कॉरपोरेट्स को कॉरपोरेट जिम्मेदारी दिशानिर्देशों का पालन करना आवश्यक है जो उन्हें अमेज़ॅन को नुकसान पहुंचाने वाले प्रयासों में भाग लेने से प्रतिबंधित करता है।

सिंबिडियम लैंसिफोलियम

खबरों में क्यों?

हाल ही में, उत्तराखंड के पश्चिमी हिमालय क्षेत्र की चोपता घाटी में एक अत्यंत दुर्लभ और स्थलीय आर्किड प्रजाति सिंबिडियम लैंसिफोलियम की खोज की गई थी।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यह सिंबिडियम की खूबसूरत प्रजातियों में से एक है, जिसे लांस लीफ्ड सिंबिडियम के नाम से भी जाना जाता है।
- सिंबिडियम ऑर्किड दुनिया भर में बड़े पैमाने पर खेती की जाने वाली सबसे लोकप्रिय ऑर्किड प्रजातियों में से एक है।
- वितरण: यह प्रजाति भारत में हिमालय, असम, सिक्किम, नेपाल, भूटान, चीन, ताइवान, जापान और कई दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में प्राकृतिक रूप से पाई जाती है।
- ये 300 से 2300 मीटर की ऊंचाई पर उगते हैं।
- प्राकृतिक स्थिति में, वे चौड़ी पत्ती वाले जंगलों में उगते हैं जहां की मिट्टी ह्यूमस से भरपूर होती है और पत्तियों का कूड़ा भी प्रचुर मात्रा में होता है।
- पौधे को आम तौर पर ठंडे से मध्यवर्ती तापमान की स्थिति में लेकिन उज्ज्वल रोशनी के साथ उगाया जाता है।
- बागवानी में इन्हें अत्यधिक महत्व दिया जाता है और उनकी लंबे समय तक चलने वाली संपत्ति, रंगों की विस्तृत श्रृंखला और सुरुचिपूर्ण उपस्थिति के कारण व्यावसायिक पैमाने पर कटे हुए फूलों और गमले वाले पौधों के रूप में बेचा जाता है, जिससे वे इनडोर और आउटडोर सजावट दोनों के लिए पसंदीदा विकल्प बन जाते हैं।

- चोपता घाटी में सिंबिडियम लैंसिफोलियम की खोज उत्तराखंड की समृद्ध जैव विविधता और इन दुर्लभ और सुंदर प्रजातियों की रक्षा के लिए संरक्षण प्रयासों के महत्व पर प्रकाश डालती है।
- सिंबिडियम ऑर्किड दुनिया भर में बड़े पैमाने पर खेती की जाने वाली सबसे लोकप्रिय ऑर्किड प्रजातियों में से एक है।

- बागवानी में इन्हें अत्यधिक महत्व दिया जाता है और उनकी लंबे समय तक चलने वाली संपत्ति, रंगों की विस्तृत श्रृंखला और सुरुचिपूर्ण उपस्थिति के कारण व्यावसायिक पैमाने पर कटे हुए फूलों और गमले वाले पौधों के रूप में बेचा जाता है, जिससे वे इनडोर और आउटडोर सजावट दोनों के लिए पसंदीदा विकल्प बन जाते हैं।
- सेफलेंथेरा इरेक्टा वेर ओब्लांसोलाटा को 2021 में चमोली जिले की मंडल घाटी से दर्ज किया गया था। यह भारत की वनस्पतियों के लिए एक नया रिकॉर्ड था और यह खोज 'नेलुम्बो' में प्रकाशित हुई थी। पश्चिमी हिमालय के एक और दुर्लभ मांसाहारी पौधे यूट्रिकुलेरिया फुरसेलाटा को 2022 में प्रलेखित किया गया था और खोज को प्रतिष्ठित 'जर्नल ऑफ़ जापानी बॉटनी' में प्रकाशित किया गया था।

हूलॉक गिब्बन

खबरों में क्यों?

हाल ही में चीन में हूलॉक गिब्बन पर आयोजित एक वैश्विक कार्यक्रम में भारत के एकमात्र वानर की संरक्षण स्थिति चिंता का कारण थी।

महत्वपूर्ण बिंदु

हूलॉक गिब्बन के बारे में:

- यह भारत में पाया जाने वाला एकमात्र वानर है।
- यह पूर्वी बांग्लादेश, पूर्वोत्तर भारत, म्यांमार और दक्षिण-पश्चिम चीन का मूल निवासी है।
- गिबन्स, सभी वानरों में सबसे छोटा और सबसे तेज़, एशिया के दक्षिणपूर्वी भाग में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों में रहते हैं।
- हूलॉक गिब्बन, जो भारत के उत्तर-पूर्व में अद्वितीय है, पृथ्वी पर गिब्बन की 20 प्रजातियों में से एक है।
- इसे पश्चिमी हूलॉक गिब्बन और पूर्वी हूलॉक गिब्बन में वर्गीकृत किया गया है।
- सभी वानरों की तरह, वे बेहद बुद्धिमान, विशिष्ट व्यक्तित्व और मजबूत पारिवारिक बंधन वाले होते हैं।

पश्चिमी हूलॉक गिब्बन

- इसकी सीमा बहुत व्यापक है, क्योंकि यह उत्तर-पूर्व के सभी राज्यों में पाई जाती है, जो ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण और दिबांग नदी के पूर्व के बीच सीमित है।
- भारत के बाहर यह पूर्वी बांग्लादेश और उत्तर-पश्चिम म्यांमार में पाया जाता है।
- इसे IUCN रेड सूची में लुप्तप्राय के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

पूर्वी हूलॉक गिब्बन

- यह भारत में अरुणाचल प्रदेश और असम के विशिष्ट इलाकों और दक्षिणी चीन और उत्तर-पूर्व म्यांमार में निवास करता है।
- इसे IUCN रेड सूची में अतिसंवेदनशील के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

फॉस्फेट चट्टानें

खबरों में क्यों?

हाल ही में नॉर्वे की एक सरकारी संस्था ने देश के भीतर फॉस्फेट चट्टानों के व्यापक भंडार का पता लगाया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

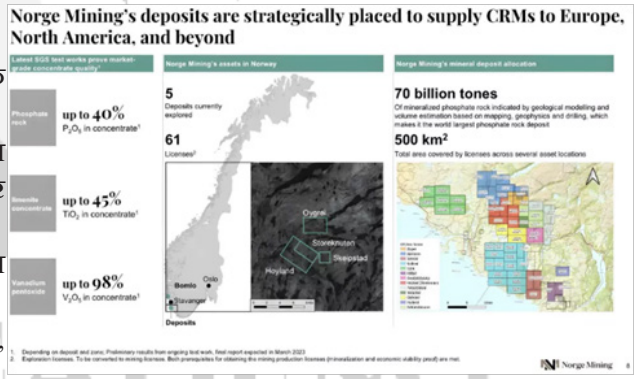

- एक प्रमुख खनन कंपनी नॉर्ज माइनिंग ने दक्षिण-पश्चिमी नॉर्वे में एक विशाल फॉस्फेट रॉक भंडार की खोज की घोषणा की है।
- कंपनी के अनुसार, इस जमा में 70 बिलियन टन तक गैर-नवीकरणीय संसाधन होने का अनुमान है, जो इसे 100 वर्षों तक बैटरी और सौर पैनलों की वैश्विक मांग के लिए गेम-चेंजर बनाता है।
- इस साइट में टाइटेनियम और वैनेडियम जैसे रणनीतिक खनिजों का भंडार भी है, जिससे इसका महत्व और बढ़ जाता है।
- फॉस्फेट रॉक, जो अपनी उच्च फॉस्फोरस सांद्रता के लिए प्रसिद्ध है, हरित प्रौद्योगिकियों के उत्पादन में एक महत्वपूर्ण घटक है।

यह एक अभूतपूर्व खोज क्यों है?

- भारी मांग के बावजूद, फॉस्फोरस की उपलब्धता सीमित है, जिसके परिणामस्वरूप आपूर्ति में महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा हुई हैं।
- इस अभूतपूर्व खोज के साथ, नॉर्ज माइनिंग का लक्ष्य इन चिंताओं को कम करना और संभावित रूप से नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग में क्रांति लाना है।
- पहले, रूस ने दुनिया के सबसे बड़े अल्ट्रा-शुद्ध फॉस्फेट रॉक भंडार पर नियंत्रण रखा था, जिससे इन "महत्वपूर्ण कच्चे माल" से जुड़े उच्च आपूर्ति जोखिम के बारे में चिंता बढ़ गई थी।
- यूरोपीय संघ, जो चीन, इराक और सीरिया सहित फॉस्फेट रॉक आयात पर बहुत अधिक निर्भर है, ने संभावित कमी के बारे में आशंका व्यक्त की है।
- हेग सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें आयात पर यूरोपीय संघ की निर्भरता और वैकल्पिक स्रोतों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

- वैज्ञानिक पत्रिका नेचर ने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण और उसके बाद के आर्थिक प्रतिबंधों को बाजार में अस्थिरता पैदा करने वाले कारकों के रूप में उद्धृत करते हुए आसन्न आपूर्ति व्यवधानों की चेतावनी दी।
- चूंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था सालाना लगभग 50 मिलियन टन फॉस्फोरस की खपत करती है, विशेषज्ञों ने आपूर्ति के रुझान जारी रहने पर संभावित "फॉस्फोगेडन" के बारे में चेतावनी दी है।
- यूरोपीय कच्चे माल गठबंधन ने पहले से ही स्थायी कच्चे माल स्रोतों को सुरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए खनन योजनाओं के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया है।
- यूरोपीय आयोग ने कच्चे माल के संबंध में आयोग के उद्देश्यों का समर्थन करने की क्षमता को पहचानते हुए, इस खोज का स्वागत किया है।
- नॉर्ज माइनिंग का अनुमान है कि अनुमानित अयस्क निकाय, 4,500 मीटर की प्रभावशाली गहराई तक पहुंचकर, सैद्धांतिक रूप से अगली शताब्दी के लिए वैश्विक मांग को पूरा कर सकता है।
- नॉर्वे में विशाल फॉस्फेट रॉक भंडार स्थायी ऊर्जा समाधानों की खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर दर्शाता है।
- अगले 100 वर्षों तक बैटरी और सौर पैनलों की वैश्विक मांग को पूरा करने की क्षमता के साथ, यह खोज हरित प्रौद्योगिकियों द्वारा संचालित भविष्य की आशा प्रदान करती है।

फॉस्फेट के बारे में:

- यह फॉस्फोरस का प्राकृतिक स्रोत है, एक ऐसा तत्व जो पौधों को उनकी वृद्धि और विकास के लिए पोषक तत्व प्रदान करता है।
- फॉस्फेट कैसे बनता है? यह एक तलछटी चट्टान है जो लाखों वर्ष पहले समुद्र तल पर कार्बनिक पदार्थों के संचय से बनी थी।
- इसके भंडार अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, कजाकिस्तान, मध्य पूर्व और ओशिनिया में पाए जाते हैं।
- दुनिया का सबसे बड़ा भंडार मोरक्को में स्थित है, जो फॉस्फेट निष्कर्षण में वैश्विक नेताओं में से एक है।

भारत में फास्फोरस

- फॉस्फेट चट्टानों का उत्पादन मुख्य रूप से भारत में केवल दो राज्यों राजस्थान और मध्य प्रदेश में होता है।
- रॉक फॉस्फेट DAP और NPK उर्वरकों के लिए प्रमुख कच्चा माल है। वर्तमान में, भारत इस कच्चे माल के लिए 90% आयात पर निर्भर है।

उपयोग

- दुनिया भर में खनन किए गए अधिकांश फॉस्फेट रॉक का उपयोग फॉस्फेट उर्वरक का उत्पादन करने के लिए किया जाता है।
- इसका उपयोग पशु आहार अनुपूरक के रूप में भी किया जाता है।
- फॉस्फेट चट्टानों से प्राप्त मौलिक फॉस्फोरस और फॉस्फोरिक रसायनों का उपयोग डिटर्जेंट, कीटनाशकों आदि में किया जाता है।

ट्यूनिकेट

खबरों में क्यों?

हाल ही में, शोधकर्ताओं ने 500 मिलियन वर्ष पुरानी ट्यूनिकेट जीवाश्म प्रजाति का वर्णन किया है, जिससे पता चलता है कि आधुनिक ट्यूनिकेट बॉडी योजना कैंब्रियन विस्फोट के तुरंत बाद ही स्थापित हो चुकी थी।

महत्वपूर्ण बिंदु

- मेगासिफ़ोन थाइलाकोस नाम के नए जीवाश्म से पता चला कि पैतृक ट्यूनिकेट्स स्थिर, फ़िल्टर-फीडिंग वयस्कों के रूप में रहते थे और संभवतः टैडपोल जैसे लार्वा से कायापलट हुआ था।
- भूमि से घिरे यूटा राज्य में, मार्जुम संरचना के भीतर, जीवाश्म विज्ञानियों ने एक रोमांचक खोज की है - 500 मिलियन वर्ष पुराने ट्यूनिकेट का एक जीवाश्म। यूटा पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका के माउंटेन वेस्ट उपक्षेत्र में स्थित है।
- मेगासिफ़ोन थायलाकोस जीवाश्म, जो लगभग 500 मिलियन वर्ष पुराना माना जाता है, इंगित करता है कि ट्यूनिकेट्स की मौलिक शारीरिक संरचना कैंब्रियन विस्फोट के तुरंत बाद ही उभर चुकी थी।
- यह खोज शुरुआती ट्यूनिकेट्स की गतिहीन, फिल्टर-फीडिंग आदतों के साथ-साथ टैडपोल जैसे लार्वा रूपों से उनके परिवर्तन के बारे में मूल्यवान ज्ञान प्रदान करती है।
- 500 मिलियन वर्षों की प्रभावशाली अवधि के लिए जीवाश्म रिकॉर्ड में संरक्षित होने से पहले, मेगासिफ़ोन थाइलाकोस समुद्र तल पर रहता था, जो पूरे दिन फिल्टर फीडिंग में लगा रहता था, जिसमें इसके नरम ऊतकों का उल्लेखनीय संरक्षण भी शामिल था।
- समुद्र की गहराई में पाए जाने वाले, ट्यूनिकेट्स पृथ्वी पर सबसे अजीब जीवन रूपों में से कुछ के रूप में सामने आते हैं।

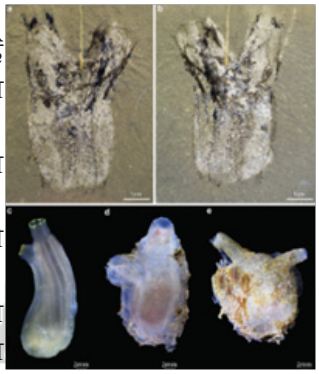

ट्यूनिकेट्स के बारे में:

- इन्हें आमतौर पर समुद्री धार कहा जाता है जो समुद्री जानवरों का एक समूह है।
- 3,000 से अधिक मौजूदा प्रजातियों के साथ, इन समुद्री अकशेरूकीय, जिन्हें आमतौर पर समुद्री स्क्वर्ट्स कहा जाता है, की एक अलग जीवनशैली होती है।
- वे अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा विभिन्न सतहों, जैसे गोदी, चट्टानों या नावों के पतवारों से चिपके हुए बिताते हैं।
- वे कम से कम 500 मिलियन वर्ष पहले के विकासवादी इतिहास के साथ समुद्री अकशेरुकी जीवों की एक प्रजाति हैं।
- ये दिलचस्प जीव मुख्य रूप से दुनिया भर के महासागरों में उथले पानी में निवास करते हैं।
- शोधकर्ता उनमें रुचि रखते हैं क्योंकि वे कशेरुकियों के सबसे करीबी रिश्तेदार हैं, जिनमें मछली, स्तनधारी और लोग शामिल हैं।

दो मुख्य ट्यूनिकेट वंश हैं;

- एस्किडिएसियंस: उन्हें अक्सर "समुद्री धारियां" कहा जाता है और अधिकांश एस्किडिएशियन्स अपना जीवन एक टैडपोल और मोबाइल की तरह शुरू करते हैं, फिर दो साइफन के साथ एक बैरल के आकार के वयस्क में रूपांतरित हो जाते हैं। वे अपना वयस्क जीवन समुद्र तल से जुड़े हुए जीते हैं।
- अपेंडिक्युलेरियस: जैसे-जैसे वे वयस्क होते हैं, वे टैडपोल का रूप बरकरार रखते हैं और ऊपरी पानी में स्वतंत्र रूप से तैरते हैं। ये कशेरुकियों से बहुत दूर प्रतीत होते हैं।

विशेषताएँ

- ट्यूनिकेट्स वास्तव में अजीब जीव हैं जो सभी आकार और साइज़ में आते हैं और उनकी जीवनशैली विविध प्रकार की होती है।
- एक वयस्क ट्यूनिकेट का मूल आकार आम तौर पर बैरल जैसा होता है, जिसके शरीर से दो साइफन निकलते हैं।
- साइफन में से एक सक्शन के माध्यम से भोजन के कणों के साथ पानी खींचता है, जिससे जानवर को आंतरिक टोकरी जैसे फिल्टर डिवाइस का उपयोग करके भोजन करने की अनुमति मिलती है।
- दूसरा साइफन पानी को बाहर निकालता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

4 अर्थव्यवस्था

वस्तु एवं सेवा कर (GST)

खबरों में क्यों?

भारत में वस्तु एवं सेवा कर (GST) के 6 वर्ष

महत्वपूर्ण बिंदु

- राष्ट्रव्यापी एकल अप्रत्यक्ष कर, वस्तु एवं सेवा कर (GST) ने 1 जुलाई 2023 को अपने 6 साल पूरे कर लिए।
- इसे भारत में 1 जुलाई 2017 को लागू किया गया था। इसकी परिषद 11 जुलाई 2023 को बैठक कर रही है।

GST की मूल बातें

- कर चोरी को कम करने के लिए GST लागू करने वाला फ्रांस पहला देश था। तब से, 160 से अधिक देशों ने GST या VAT (वस्तुओं और सेवाओं दोनों पर) लागू किया है, उदाहरण के लिए, ब्राजील, कनाडा और भारत जैसे कुछ देशों में दोहरे GST मॉडल हैं।
- GST एक अप्रत्यक्ष कर है जिसने भारत में कई अप्रत्यक्ष करों जैसे मूल्य वर्धित कर, सेवा कर, खरीद कर, उत्पाद शुल्क आदि का स्थान ले लिया है। GST विशिष्ट उत्पादों और सेवाओं की आपूर्ति पर लगाया जाता है।
- GST एक बहु-स्तरीय कर प्रणाली है जो प्रकृति में व्यापक है और वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री पर लागू होती है। इस कराधान प्रणाली का मुख्य उद्देश्य अन्य अप्रत्यक्ष करों के व्यापक प्रभाव को रोकना है और यह पूरे भारत में लागू है।

- GST परिषद ने विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के लिए 5% GST, 12% GST, 18% GST और 28% की GST दरें निर्धारित की हैं। इसके लागू होने के बाद से वस्तुओं और सेवाओं के लिए GST दरों में कई बार बदलाव किया गया है।
- अप्रत्यक्ष कर केंद्र और राज्य सरकार द्वारा लगाया जाएगा जिसे क्रमशः केंद्रीय GST (CGST) और राज्य GST (SGST) कहा जाएगा। कर काफी हद तक गंतव्य-आधारित है।

GST की विशेषताएं

- एक राष्ट्र, एक कर: GST ने केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा लगाए गए कई अप्रत्यक्ष करों, जैसे उत्पाद शुल्क, सेवा कर, मूल्य वर्धित कर (VAT) और अन्य का स्थान ले लिया। इसने पूरे भारत में कर संरचना में एकरूपता ला दी, जिससे करों का व्यापक प्रभाव समाप्त हो गया।
- दोहरी संरचना: GST दोहरी संरचना के तहत संचालित होता है, जिसमें केंद्र सरकार द्वारा लगाया जाने वाला केंद्रीय GST (CGST) और राज्य सरकारों द्वारा लगाया जाने वाला राज्य GST (SGST) शामिल है। अंतर-राज्यीय लेनदेन के मामले में, एकीकृत GST (IGST) लागू होता है, जिसे केंद्र सरकार एकत्र करती है और संबंधित राज्य को वितरित करती है। वस्तुओं या सेवाओं के आयात को अंतर-राज्य आपूर्ति के रूप में माना जाएगा और लागू सीमा शुल्क के अलावा IGST के अधीन होगा।
- गंतव्य-आधारित कर: GST एक गंतव्य-आधारित कर है, जो निर्माता से उपभोक्ता तक आपूर्ति श्रृंखला के प्रत्येक चरण पर लगाया जाता है। इसे प्रत्येक चरण में मूल्यवर्धन पर लागू किया जाता है, जिससे क्रेडिट के निर्बाध प्रवाह की अनुमति मिलती है और अंतिम उपभोक्ता पर कर का बोझ कम होता है।
- इनपुट टैक्स क्रेडिट (IGST): GST इनपुट टैक्स क्रेडिट के उपयोग की अनुमति देता है, जिसमें व्यवसाय वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन या प्रावधान में उपयोग किए गए इनपुट पर भुगतान किए गए कर के लिए क्रेडिट का दावा कर सकते हैं। इससे दोहरे कराधान से बचने में मदद मिलती है और कुल कर देनदारी कम हो जाती है।
- मानव उपभोग के लिए शराब को छोड़कर सभी वस्तुओं और सेवाओं पर GST लागू होगा। पांच निर्दिष्ट पेट्रोलियम उत्पादों (कच्चा, पेट्रोल, डीजल, एटीएफ और प्राकृतिक गैस) पर GST CGST द्वारा अनुशंसित तिथि से लागू होगा। तंबाकू उत्पाद GST के अधीन होंगे। इसके अलावा, केंद्र के पास इन उत्पादों पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क लगाने की शक्ति होगी। निर्यात शून्य-रेटेड आपूर्ति हैं। इस प्रकार, निर्यात की जाने वाली वस्तुओं या सेवाओं पर इनपुट कर या तैयार उत्पादों पर कर नहीं लगेगा।
- सीमा छूट: एक निर्दिष्ट सीमा से कम टर्नओवर वाले छोटे व्यवसायों (वर्तमान में, भारत में सेवाओं/वस्तुओं और सेवाओं दोनों के आपूर्तिकर्ता के लिए सीमा 20 लाख रुपये और माल के आपूर्तिकर्ता (इंट्रा-स्टेट) के लिए 40 लाख रुपये है) को छूट दी गई है। GST कुछ विशेष श्रेणी के राज्यों के लिए, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और असम को छोड़कर वस्तुओं और/या सेवाओं के आपूर्तिकर्ताओं के लिए सीमा 10-20 लाख रुपये के बीच भिन्न होती है, जहां सेवाओं/वस्तुओं और सेवाओं दोनों के आपूर्तिकर्ता के लिए सीमा 20 लाख रुपये है। माल के आपूर्तिकर्ता के लिए 40 लाख (इंट्रा-स्टेट)। यह सीमा छोटे पैमाने के व्यवसायों पर अनुपालन बोझ को कम करने में मदद करती है।
- कंपोजीशन स्कीम: कंपोजीशन स्कीम एक निर्धारित सीमा (वर्तमान में 1.5 करोड़ रुपये और विशेष श्रेणी वाले राज्य के लिए 75 लाख रुपये) से कम टर्नओवर वाले छोटे करदाताओं के लिए उपलब्ध है। इस योजना के तहत, व्यवसायों को अपने टर्नओवर का एक निश्चित प्रतिशत GST के रूप में भुगतान करना आवश्यक है और अनुपालन आवश्यकताओं को सरल बनाना है।

- ऑनलाइन अनुपालन: GST ने पंजीकरण, रिटर्न दाखिल करने, करों का भुगतान और अन्य अनुपालन-संबंधित गतिविधियों के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल, गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स नेटवर्क (NGST) की शुरुआत की। इसने प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया और करदाताओं के लिए अपने दायित्वों को पूरा करना आसान बना दिया।
- मुनाफाखोरी विरोधी उपाय: यह सुनिश्चित करने के लिए कि GST का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाए, सरकार ने राष्ट्रीय मुनाफाखोरी विरोधी प्राधिकरण (NAA) की स्थापना की। एनएए ने निगरानी की और सुनिश्चित किया कि GST के कार्यान्वयन के कारण व्यवसाय अनुचित मूल्य निर्धारण प्रथाओं और मुनाफाखोरी में संलग्न न हों। सभी GST मुनाफाखोरी विरोधी शिकायतें अब 1 दिसंबर, 2022 से भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) द्वारा निपटाई जाएंगी।
- अनुपालन और पारदर्शिता में वृद्धि: GST का उद्देश्य अधिक व्यवसायों को औपचारिक अर्थव्यवस्था में लाकर कर अनुपालन को बढ़ाना है। कर प्रणाली की पारदर्शी प्रकृति, प्रक्रियाओं और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण के साथ, कर चोरी को रोकने और पारदर्शिता बढ़ाने में मदद करती है।
- सेक्टर-विशिष्ट छूट: स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और खाद्यान्न जैसी बुनियादी आवश्यकताओं जैसे कुछ क्षेत्रों को या तो GST से छूट दी गई है या सामर्थ्य और पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कर दरों में कमी की गई है।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि IGST के भुगतान के लिए उपयोग किए जाने वाले SGST का क्रेडिट निर्यातक राज्य द्वारा केंद्र को हस्तांतरित किया जाता है, केंद्र और राज्यों के बीच समय-समय पर खातों का निपटान किया जाएगा। इसी प्रकार, SGST के भुगतान के लिए उपयोग किया जाने वाला IGST केंद्र द्वारा आयातक राज्य को हस्तांतरित किया जाएगा। इसके अलावा, B2C आपूर्ति पर एकत्रित IGST का SGST हिस्सा भी केंद्र द्वारा गंतव्य राज्य को हस्तांतरित किया जाएगा। करदाताओं द्वारा दाखिल रिटर्न में निहित जानकारी के आधार पर धन का हस्तांतरण किया जाएगा।

GST परिषद

- GST से संबंधित किसी भी मुद्दे के संबंध में राज्य और केंद्र सरकार को की गई कोई भी सिफारिश GST परिषद द्वारा की जाती है। GST परिषद के अध्यक्ष भारत के केंद्रीय वित्त मंत्री हैं। GST परिषद के अन्य सदस्य सभी राज्यों के केंद्रीय राजस्व या वित्त राज्य मंत्री हैं।

उपलब्धियों

- कर आधार को 2017 में 63.9 लाख करदाताओं से बढ़ाकर वर्तमान में 1.40 करोड़ करना।
- GST मासिक औसत राजस्व 2017 में 89.8 करोड़ से बढ़कर अप्रैल 2023 में 1.87 लाख करोड़ हो गया है।
- GST परिषद के माध्यम से आर्थिक संघवाद को बढ़ावा देना।
- अन्य लाभ: आसान अनुपालन, कर दरों और संरचनाओं की एकरूपता, व्यापक करों को हटाना, रसद लागत में कमी, नकली चालान की जांच के लिए ई-चालान प्रणाली आदि।

चिंता के क्षेत्र

- बार-बार बदलाव के साथ प्रस्तावित तीन-दर वाली GST संरचना के बजाय कई स्लैब।
- राज्यों को GST मुआवजे पर स्पष्टता का अभाव जो 5 वर्ष पूरे होने के साथ समाप्त हो गया।
- GST परिषद में असमान मतदान संरचना।
- पेट्रोल और डीजल जैसी कुछ वस्तुएं अभी भी GST व्यवस्था से बाहर हैं।
- अन्य चुनौतियाँ: बोझिल भरने की संरचना, नकली चालान आदि।

CSR

खबरों में क्यों?

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) पर खर्च बढ़ रहा है, लेकिन प्रभाव सीमित है

महत्वपूर्ण बिंदु

- कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय (MCA) ने हाल के वर्षों में इस तरह के खर्च में वृद्धि के बावजूद कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) पहल के सीमित प्रभाव को चिह्नित किया है, और भारत इंक से "उत्पादक परिणाम प्राप्त करने के लिए" दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया है।
- मंत्रालय के अनुसार वित्त वर्ष 2011 में CSR खर्च 26,210 करोड़ रुपये रहा, जो वित्त वर्ष 2016 से 80% बढ़ गया है।
- MCA ने CSR फंड की तैनाती में व्यापक क्षेत्रीय असमानता पर भी चिंता व्यक्त की है और कंपनियों से राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ अपने क्षेत्र की प्राथमिकता को संतुलित करने का आह्वान किया है।
- नियमों के अनुसार, एक निश्चित आकार की कंपनियों को पिछले तीन वित्तीय वर्षों में किए गए अपने औसत शुद्ध लाभ का कम से कम 2% सालाना खर्च करना आवश्यक है।
- MCA ने यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला है कि की गई पहल आत्मनिर्भर बनें ताकि सीएसआर कार्यक्रम कंपनियों पर बोझ बने बिना निर्बाध रूप से चल सकें।
- CSR के लिए एक उपयुक्त संरचना बनाने पर जोर दिया जाना चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि धनराशि समुदाय की भलाई के लिए जाए।
- इसके अलावा, उच्चतम गुणवत्ता वाले जोखिम प्रबंधन ढांचे को अपनाने की जरूरत है, ताकि CSR परियोजनाओं को टिकाऊ बनाया जा सके।
- क्षेत्रीय असमानता के लिए, मंत्रालय ने बताया कि महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश जैसे औद्योगिक राज्यों सहित केवल दस राज्यों ने वित्त वर्ष 2011 में सीएसआर फंड का 44% से अधिक हड़प लिया, जबकि आठ उत्तर-पूर्वी राज्यों को केवल 0.91% प्राप्त हुआ।

- एमसीए ने माना कि इस तरह की असमानता का संभावित कारण कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135(5) के तहत यह शर्त हो सकती है कि कंपनियों को CSR फंड आवंटित करते समय उन क्षेत्रों को प्राथमिकता देनी चाहिए जिनके आसपास वे काम करते हैं।
- शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और ग्रामीण विकास CSR फंड के शीर्ष प्राप्तकर्ता बने हुए हैं।
- आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, FY15 और FY21 के बीच, शिक्षा क्षेत्र (शिक्षा, आजीविका वृद्धि परियोजनाओं, विशेष शिक्षा और व्यावसायिक कौशल सहित) को 47,188 करोड़ रुपये या कुल CSR खर्च का लगभग 37% प्राप्त हुआ।
- स्वास्थ्य क्षेत्र (स्वास्थ्य देखभाल, गरीबी, भूख उन्मूलन, कुपोषण, स्वच्छता और स्वच्छ भारत सहित) अगले नंबर पर आता है, इस तरह के व्यय में 30% हिस्सेदारी 38,011 करोड़ रुपये है। ग्रामीण विकास परियोजनाओं को 12,300 करोड़ रुपये मिले, जो कुल CSR व्यय का 9.6% है।

CSR के प्रकार

- पर्यावरणीय कॉर्पोरेट जिम्मेदारी: पर्यावरणीय जिम्मेदारी स्थिरता और पर्यावरण के अनुकूल संचालन के लिए संगठन की प्रतिबद्धता को संदर्भित करती है।
- नैतिक/मानवाधिकार सामाजिक जिम्मेदारी: नैतिक जिम्मेदारी एक कंपनी की अपने व्यवसाय को नैतिक तरीके से संचालित करने की प्रतिबद्धता को संदर्भित करती है जो सभी हितधारकों के साथ उचित व्यवहार, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं और समान वेतन जैसे मानवाधिकार सिद्धांतों को कायम रखती है।
- परोपकारी कॉर्पोरेट जिम्मेदारी: परोपकारी जिम्मेदारी समग्र रूप से समाज को सक्रिय रूप से बेहतर बनाने के लिए निगम के लक्ष्यों, लक्ष्यों और उद्देश्यों को संदर्भित करती है। कॉर्पोरेट परोपकार का एक बड़ा पहलू कंपनी की कमाई से स्थानीय समुदाय के भीतर योग्य कार्यों के लिए अक्सर ट्रस्ट या फाउंडेशन के रूप में पैसा दान करना है।
- आर्थिक कॉर्पोरेट जिम्मेदारी: आर्थिक जिम्मेदारी अच्छा करने की प्रतिबद्धता के आधार पर वित्तीय निर्णय लेने की प्रथा को संदर्भित करती है।

CSR के सकारात्मक प्रभाव

- प्रतिष्ठा और ब्रांड मूल्य में वृद्धि: CSR कंपनी की प्रतिष्ठा में सुधार करता है, इसके ब्रांड मूल्य को बढ़ाता है और ग्राहकों के बीच विश्वास पैदा करता है।
- बेहतर ग्राहक संबंध: CSR पहल सामाजिक रूप से जागरूक उपभोक्ताओं को आकर्षित करती है, जिससे ग्राहक संतुष्टि, वफादारी और विस्तारित उपभोक्ता नेटवर्क में वृद्धि होती है।
- कर्मचारी जुड़ाव और प्रतिधारण में वृद्धि: CSR गतिविधियाँ उद्देश्य की भावना पैदा करती हैं, जिससे उच्च कर्मचारी जुड़ाव, नौकरी से संतुष्टि और बेहतर कर्मचारी प्रतिधारण होता है।
- समुदायों और समाज पर सकारात्मक प्रभाव: CSR कार्यक्रम सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते हैं और समुदायों की भलाई में योगदान करते हैं, जिससे समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

CSR के नकारात्मक प्रभाव

- बढ़ा हुआ प्रशासनिक बोझ और प्रवर्तन शुल्क: छोटी कंपनियों को CSR अनुपालन से जुड़े खर्चों को वहन करने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है, जिससे वित्तीय बोझ और संभावित प्रवर्तन शुल्क बढ़ सकता है।
- विभिन्न व्यावसायिक लक्ष्यों के बीच संघर्ष: CSR उद्देश्यों के साथ लाभ लक्ष्यों को संतुलित करने से हितधारकों के बीच चुनौतियां और संभावित असहमति पैदा हो सकती है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।
- 'ग्रीनवॉशिंग' प्रभाव: उपभोक्ता सतही या भ्रामक सीएसआर प्रथाओं में संलग्न कंपनियों से सावधान हो रहे हैं, जो कंपनी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकते हैं और परिणामस्वरूप नकारात्मक सार्वजनिक धारणा बन सकती है।

FTA

खबरों में क्यों?

उत्पत्ति के नियम यूरोपीय संघ के साथ FTA टैरिफ चर्चा में देरी करते हैं

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत और यूरोपीय संघ (EU) मूल मानदंडों के नियमों पर मतभेदों के कारण चल रहे मुक्त व्यापार समझौते (AFTA) चर्चा के तहत टैरिफ वार्ता में बड़ी प्रगति नहीं कर पाए हैं।

- ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत एक रूढ़िवादी मूल नियम चाहता है, जबकि यूरोपीय संघ चाहता है कि हम उदार मानदंडों का पालन करें।

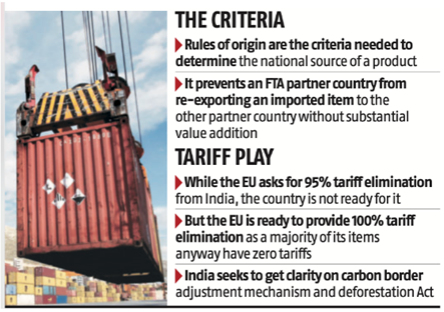

उत्पत्ति के नियम

- किसी उत्पाद की उत्पत्ति के देश का निर्धारण करने के लिए उत्पत्ति मानदंड के नियम महत्वपूर्ण हैं। मूल देश से तात्पर्य उस देश से है जहां उत्पादों का निर्माण किया गया था या उनमें बड़े पैमाने पर बदलाव किया गया था।

उत्पत्ति के नियम जिनके लिए उपयोग किया जाता है:

- वाणिज्यिक नीति के उपायों और उपकरणों को लागू करना, जैसे एंटी-डंपिंग शुल्क और सुरक्षा उपाय;
- यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयातित उत्पादों को सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र (MFN) उपचार या अधिमान्य उपचार प्राप्त होगा;
- व्यापार सांख्यिकी के प्रयोजन के लिए;
- लेबलिंग और अंकन आवश्यकताओं के आवेदन के लिए और
- सरकारी खरीद के लिए

मूल आवश्यकताओं के नियमों के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंड:

- मूल आवश्यकताओं के नियमों के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए किसी उत्पाद के लिए टैरिफ स्तर में परिवर्तन और न्यूनतम मूल्यवर्धन दो सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले मानदंड हैं।
- अधिकांश विकसित देश किसी भी मानदंड का उपयोग करने के लिए लचीलेपन को प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि यह निर्यातकों के लिए लचीलेपन की अनुमति देता है। भारत ने परंपरागत रूप से दोनों मानदंडों के उपयोग को प्राथमिकता दी है और उसे इनमें से किसी का भी उपयोग करने की छूट नहीं दी गई है।

युआन के मुकाबले रुपया

खबरों में क्यों?

पिछले तीन महीनों में चीनी युआन के मुकाबले रुपया 6% बढ़ा है

महत्वपूर्ण बिंदु

- नए अमेरिकी मुद्रास्फीति आंकड़ों के साथ डॉलर सूचकांक और ट्रेजरी पैदावार फिर से गिर गई, जिससे उपभोक्ता कीमतों में लगातार वृद्धि में मंदी दिखाई दे रही है।
- चीन की विकास कहानी निराशाजनक बनी हुई है, जिससे युआन में लगातार गिरावट आ रही है।
- चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में चीन की अर्थव्यवस्था 6.3 फीसदी बढ़ी।
- जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल-जून में चीन के सकल घरेलू उत्पाद में 6.3 प्रतिशत की वृद्धि ने पिछली तिमाही की 4.5 प्रतिशत की वृद्धि को पीछे छोड़ दिया।
- तिमाही संदर्भ में, अर्थव्यवस्था वर्ष के पहले तीन महीनों की तुलना में 0.8 प्रतिशत बढ़ी।
- चीनी युआन डॉलर और रुपये के मुकाबले कमजोर हो रहा है।
- ब्लूमबर्ग के आंकड़ों से पता चलता है कि 31 मार्च से 30 जून तक चीनी मुद्रा के मुकाबले रुपये में 6% की बढ़ोतरी हुई है।
- अब तक के कैलेंडर वर्ष के लिए, रुपये की सराहना समान स्तर पर है और जनवरी में युआन के निचले स्तर से रुपये की बढ़त को ध्यान में रखते हुए, घरेलू मुद्रा 8% तक मजबूत हुई है।
- जबकि धीमी चीनी वृद्धि ने वैश्विक आर्थिक संभावनाओं पर असर डाला है, मौजूदा व्यापार गतिशीलता को देखते हुए, भारत मुद्रास्फीति के परिप्रेक्ष्य से लाभान्वित होने के लिए तैयार है।

भारत पर असर संभव

- इससे चीन से आयात में बढ़ोतरी हो सकती है।
- इससे मुख्य मुद्रास्फीति (खाद्य और ऊर्जा को छोड़कर) को कम करने में मदद मिल सकती है क्योंकि आयातित चीनी सामान सस्ता होगा।

रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण

खबरों में क्यों?

RBI पैनल ने रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए उपायों की सिफारिश की

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नियुक्त कार्य समूह ने विभिन्न उपायों की सिफारिश की, जिसमें रुपये को विशेष आहरण अधिकार (SDR) टोकरी में शामिल करना और रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण की गति को तेज करने के लिए विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (FPI) शासन का पुन: अंशांकन शामिल है।
- RBI के कार्यकारी निदेशक की अध्यक्षता में एक अंतर-विभागीय समूह (IDG) द्वारा सिफारिशें।

- रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सीमा पार लेनदेन में स्थानीय मुद्रा का उपयोग बढ़ाना शामिल है।
- रुपये में एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बनने की क्षमता है क्योंकि भारत सबसे तेजी से बढ़ते देशों में से एक है और इसने प्रमुख विपरीत परिस्थितियों में भी उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है।

- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के चालान और निपटान के साथ-साथ पूंजी खाता लेनदेन में रुपये का अधिक उपयोग, घरेलू वर्तमान को उत्तरोत्तर अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति प्रदान करेगा।
- पिछले साल आरबीआई ने भारत से निर्यात पर जोर देने के साथ वैश्विक व्यापार के विकास को बढ़ावा देने और रुपये में वैश्विक व्यापारिक समुदाय की बढ़ती रुचि का समर्थन करने के लिए रुपये में अंतरराष्ट्रीय व्यापार को निपटाने के लिए एक तंत्र बनाया था।
- देश में लंबे समय से भूटान और नेपाल के साथ रुपये की व्यवस्था है, श्रीलंका द्वारा औपचारिक रूप से रुपये को एक निर्दिष्ट विदेशी मुद्रा के रूप में शामिल करने का हालिया निर्णय घरेलू मुद्रा के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए अच्छा संकेत है।

SDR (विशेष आहरण अधिकार):

- रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण को प्राप्त करने के दीर्घकालिक उपायों के हिस्से के रूप में, समूह ने रुपये को SDR (विशेष आहरण अधिकार) टोकरी में शामिल करने का सुझाव दिया।
- SDR IMF (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) द्वारा अपने सदस्य देशों के आधिकारिक भंडार के पूरक के लिए बनाई गई एक अंतरराष्ट्रीय आरक्षित संपत्ति है।
- SDR का मूल्य पांच मुद्राओं की एक टोकरी पर आधारित है - अमेरिकी डॉलर, यूरो, चीनी रॅन्मिन्बी, जापानी येन और ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग।

रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के उपाय:

- अल्पकालिक उपाय: उन सभी प्रस्तावों की जांच के लिए एक मानकीकृत दृष्टिकोण या/समान टेम्पलेट अपनाया जाना चाहिए जिसमें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौते / चालान, निपटान और रुपये और समकक्ष देशों की स्थानीय मुद्राओं में भुगतान, स्थानीय मुद्रा निपटान तंत्र और द्विपक्षीय व्यवस्थाएं शामिल हों। मौजूदा द्विपक्षीय और बहुपक्षीय भुगतान और निपटान तंत्र, जैसे ACU (एशियन क्लियरिंग यूनियन) का उपयोग रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण में मदद करता है।
- मध्यम अवधि के लिए, मसाला बांड जारी करने के लिए विदहोल्डिंग टैक्स की समीक्षा, अंतरराष्ट्रीय लेनदेन के निपटान के लिए आरटीजीएस (रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट) प्रणाली का विस्तार और निरंतर लिंक्ड सेटलमेंट (CLS) प्रणाली में रुपये को शामिल करना।

सॉवरेन ग्रीन बांड

खबरों में क्यों?

हाल ही में, पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDA) के अध्यक्ष ने कहा कि नियामक पेंशन फंडों को सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड (SGB) में निवेश करने का इच्छुक है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- उम्मीद है कि भारत सरकार समग्र बाजार उधार कार्यक्रम के हिस्से के रूप में चालू वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में सॉवरेन ग्रीन बांड जारी करेगी।

सॉवरेन ग्रीन बांड के बारे में:

- ये किसी संप्रभु इकाई, अंतर-सरकारी समूहों या गठबंधनों और कॉरपोरेट्स द्वारा जारी किए गए बांड हैं।
- उद्देश्य: बांड की आय का उपयोग पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ के रूप में वर्गीकृत परियोजनाओं के लिए किया जाता है।
- इन्हें लंबी परिपक्वता अवधि के साथ जारी किया जाता है।
- भारत में सरकार द्वारा सॉवरेन ग्रीन बांड की रूपरेखा 9 नवंबर, 2022 को जारी की गई थी।

PFRDA के बारे में मुख्य तथ्य

- यह 2014 में अधिनियमित PFRDA अधिनियम के तहत स्थापित एक वैधानिक नियामक निकाय है।
- उद्देश्य: पेंशन फंड की स्थापना, विकास और विनियमन करके वृद्धावस्था आय सुरक्षा को बढ़ावा देना और पेंशन फंड की योजनाओं और संबंधित मामलों के ग्राहकों के हितों की रक्षा करना।
- संरचना: इसमें एक अध्यक्ष और छह से अधिक सदस्य नहीं होते हैं, जिनमें से कम से कम तीन पूर्णकालिक सदस्य होंगे, जिन्हें केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किया जाएगा।
- नोडल मंत्रालय: वित्त मंत्रालय।
- मुख्यालय: नई दिल्ली

कार्य:

- राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) और अन्य पेंशन योजनाओं को विनियमित करें जिन पर PFRDA अधिनियम लागू होता है।
- पेंशन फंड की स्थापना, विकास और विनियमन।

- पेंशन फंड ग्राहकों के हितों की रक्षा करें।
- मध्यस्थों को पंजीकृत और विनियमित करें।
- पेंशन निधि के कोष के प्रबंधन के लिए मानदंड निर्धारित करना।
- ग्राहकों के लिए शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करें।
- मध्यस्थों के बीच और मध्यस्थों और ग्राहकों के बीच भी विवादों का निपटारा करें।

सेबी

खबरों में क्यों?

सेबी का कहना है कि FPI नियमों को कड़ा किया गया है, लेकिन टैक्स हेवेन एक वैश्विक चुनौती पैदा करते हैं

महत्वपूर्ण बिंदु

- SC द्वारा नियुक्त एक विशेषज्ञ समिति ने हाल ही में कहा कि आर्थिक हित धारकों की पहचान करने में SEBI द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयाँ आंशिक रूप से 2019 में "अपारदर्शी संरचनाओं" पर 2014 के प्रावधानों को निरस्त करने के कारण थीं।
- न्यूनतम सार्वजनिक शेयर-धारिता मानदंडों का उल्लंघन होने पर इसकी जांच के लिए विशेषज्ञ समिति की स्थापना की गई थी।

सेबी की कार्रवाई

- सेबी ने 2018 और 2019 में FPI को नियंत्रित करने वाले नियामक परिवर्तनों के साथ, FPI के लाभकारी मालिकों (BO) के लिए प्रकटीकरण आवश्यकता को सख्त कर दिया है।
- कुछ मामलों में एफपीआई में आर्थिक हित रखने वाली संस्थाएं उन न्यायक्षेत्रों में हैं जहां समकक्ष PMLA, 2002 नियमों के तहत केवल नियंत्रण या स्वामित्व के आधार पर बीओ पहचान की आवश्यकता होती है।
- इस प्रकार, वोटिंग शेयर/प्रबंधन शेयर जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से कार्य करने वाले निवेश प्रबंधक/ट्रस्टी आदि को एफपीआई के बीओ के रूप में पहचाना जाता है।
- नतीजतन, नियमों के अनुपालन में, आर्थिक हित वाले वास्तविक निवेश घटकों को FPI के BO के रूप में पहचाना नहीं जा सकता है।
- यदि ऐसे निवेशकों की हिस्सेदारी कई एफपीआई के माध्यम से फैली हुई है तो यह मुद्दा और भी बढ़ जाता है।

- सेबी ने कहा कि प्रत्येक एफपीआई को अनिवार्य रूप से अपने सभी बीओ का खुलासा पहले ही करना होगा
- किसी प्राकृतिक व्यक्ति बीओ की अनुपस्थिति में, एक एसएमओ (वरिष्ठ प्रबंध अधिकारी) को BO के रूप में पहचाना जाता है।
- इसके साथ, FPI 2014 नियमों के तहत वह व्यवस्था जो कुछ FPI को, अन्य बातों के अलावा, मांगे जाने पर BO विवरण प्रदान करने के उपक्रम के आधार पर पंजीकरण करने की अनुमति देती थी, अब उपलब्ध नहीं थी।
- संक्षेप में, मौजूदा नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त विवरण मांगने की सेबी की क्षमता 2014 के शासन के दौरान मौजूद थी, और 2019 के नियमों के तहत वर्तमान में भी मौजूद है।

न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता पर विचार

- सेबी ने निर्दिष्ट प्रकार के FI से अंतिम निवेशक को अतिरिक्त विस्तृत खुलासे के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है, जो या तो एक ही कॉर्पोरेट समूह में अपने एयूएम का 50% से अधिक रखते हैं, या कुछ छूट के अधीन कुल AUM 25,000 करोड़ रुपये से अधिक है।
- कंपनियों द्वारा समान हित या संबंध रखने वाली दो संस्थाओं के बीच संबंधित पार्टी लेनदेन (RPT), व्यवस्था या सौदों के आरोपों से निपटने पर भी नियामक विशेषज्ञ समिति के विचारों से भिन्न था।
- सेबी ने कहा कि यदि नियमों को दरकिनार करने की योजना की पहचान की जाती है, तो इसमें लंबे समय से चले आ रहे रिश्ते की मौजूदगी उल्लंघन के आरोप को बल दे सकती है।
- सेबी ने जांच और कार्यवाही की समयसीमा के संबंध में विशेषज्ञ समिति की टिप्पणियों से भी असहमति जताई

सेबी के बारे में

- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम, 1992 की आवश्यकताओं के अनुपालन में 12 अप्रैल 1992 को एक वैधानिक संगठन का गठन किया गया।
- मुख्यालय: मुंबई
- 4 क्षेत्रीय कार्यालय: अहमदाबाद, चेन्नई, दिल्ली और कोलकाता।

कार्य:

- प्रतिभूतियों में निवेशकों के हितों की रक्षा करना।
- प्रतिभूति बाजार को बढ़ावा देना और विनियमित करना।

तुलन पत्र

खबरों में क्यों?

भारतीय अर्थव्यवस्था ट्विन-बैलेंस शीट की समस्या से दूर हो गई है, बैंक अब मुनाफे में हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- वित्त मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार के ठोस प्रयासों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था बैंकों और कॉरपोरेट्स की ट्विन-बैलेंस शीट समस्या से हटकर ट्विन-बैलेंस शीट लाभ की ओर बढ़ गई है।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का मुनाफा 2022-23 में बढ़कर 1.04 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो 2014 की तुलना में तीन गुना है।
- ट्विन-बैलेंस शीट समस्या एक ही समय में बैंकों और कॉरपोरेट्स के वित्तीय स्वास्थ्य में गिरावट को संदर्भित करती है।
- रिजर्व बैंक के मुताबिक, भारतीय अर्थव्यवस्था को अब ट्विन-बैलेंस शीट का फायदा मिल रहा है।
- संपत्ति पर रिटर्न, शुद्ध ब्याज मार्जिन और प्रोविजनिंग कवरेज अनुपात जैसे सभी महत्वपूर्ण मापदंडों में सुधार हुआ।

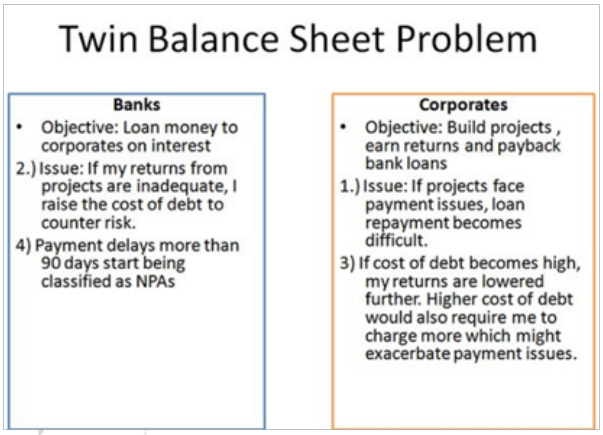

ट्विन बैलेंस शीट सिंड्रोम:

- 'ट्विन बैलेंस शीट सिंड्रोम' (TBS) एक ऐसा परिदृश्य है जहां बैंक निम्न कारणों से गंभीर तनाव में हैं:
  - गैर-निष्पादित आस्तियों (NPA) का उच्च स्तर
  - उच्च प्रावधान आवश्यकताएँ
  - कम मुनाफ़ा और
  - कम पूंजी पर्याप्तता अनुपात (CAR)

ट्विन-बैलेंस शीट समस्या से निपटने की रणनीति

- 4R रणनीति का तात्पर्य गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों की समस्या को पहचानना, बैंकों को पुनर्पूंजीकृत करना, उनकी समस्याओं का समाधान करना और उनमें सुधार करना है।
- डेटा संग्रह और साझाकरण - 2014 में बैंकों को 5 करोड़ रुपये और उससे अधिक के बड़े ऋण खातों पर जानकारी साझा करने में सक्षम बनाने के लिए बड़े क्रेडिट पर सूचना के केंद्रीय भंडार (CRILC) की शुरुआत की गई।
- RBI ने 90 दिनों तक अतिदेय ऋणों की जानकारी एकत्र करने पर जोर दिया, जिसे विशेष उल्लेख खाते (SMA) के रूप में जाना जाता है।
- दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016: 2016 में दिवाला और दिवालियापन संहिता (IBC) के अधिनियमन और भारतीय दिवाला और दिवालियापन बोर्ड (IBBI) के गठन से समस्या ऋण समाधान में तेजी लाने में मदद मिली।
- नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (NARCL) खराब कर्ज को संभालेगी।
- RBI के उपाय - 2017-21 के दौरान PSB के विलय से उनकी संख्या 27 से घटकर 12 हो गई और पीएसबी संभावित उच्च जोखिम क्षमता वाली मजबूत संस्थाओं में बदल गए।
- आसानी - TBS को कायम रखने के लिए, पीएसबी को बड़े पैमाने पर पूंजी निवेश की जरूरत है।
- जहरीली संपत्तियों से निपटने के लिए बैड बैंक - नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (NARCL) का भी गठन करना पड़ा।

GST परिषद

खबरों में क्यों?

GST परिषद ने ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों पर एक समान 28% टैक्स लगाने की घोषणा की

महत्वपूर्ण बिंदु

- वस्तु एवं सेवा कर (GST) परिषद ने अपनी 50वीं बैठक में ऑनलाइन गेमिंग, कैसिनो और घुड़दौड़ के लिए पूर्ण अंकित मूल्य पर एक समान 28% कर लगाने का निर्णय लिया, जबकि बिना पके/बिना तले स्नैक पेलेट, कैंसर के लिए दर कम कर दी।

वस्तु एवं सेवा कर (GST)

- यह एक अप्रत्यक्ष कर है (ग्राहकों द्वारा सीधे सरकार को भुगतान नहीं किया जाता है), जो भारत सरकार द्वारा भारत के संविधान में 101वें संशोधन के कार्यान्वयन के माध्यम से 1 जुलाई 2017 से लागू हुआ।
- इसने वास्तव में देश में विभिन्न अप्रत्यक्ष करों जैसे - सेवा कर, वैट, उत्पाद शुल्क और अन्य का स्थान ले लिया है।
- यह सामान के निर्माता या विक्रेता और सेवा प्रदाताओं पर लगाया जाता है।
- कर संग्रहण के लिए इसे पांच अलग-अलग टैक्स स्लैब में बांटा गया है - 0%, 5%, 12%, 18% और 28%।
- GST के प्रकार: राज्य माल और सेवा कर (SGST), केंद्रीय माल और सेवा कर (CGST) और एकीकृत माल और सेवा कर (IGST, निर्यात और आयात पर)।

GST परिषद

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 279A भारत के राष्ट्रपति को केंद्र और राज्यों का एक संयुक्त मंच जिसे GST परिषद कहा जाता है, का गठन करने की शक्ति देता है, जिसमें शामिल हैं -
- केंद्रीय वित्त मंत्री - अध्यक्ष

- केंद्रीय राज्य मंत्री, वित्त राजस्व के प्रभारी - सदस्य
- वित्त या कराधान के प्रभारी मंत्री या प्रत्येक राज्य सरकार द्वारा नामित कोई अन्य मंत्री - सदस्य
- GST परिषद GST पर केंद्र और राज्यों को संशोधित करने, सामंजस्य स्थापित करने या सिफारिशें करने के लिए एक शीर्ष समिति है, जैसे कि GST के अधीन या छूट प्राप्त वस्तुओं और सेवाओं, मॉडल GST कानूनों आदि।

ऑनलाइन गेमिंग, घुड़दौड़, कैसिनो पर पूर्ण मूल्य पर 28% GST लगाएं:

- GST परिषद इस बात पर सहमत हुई कि 'कौशल के खेल और मौके के खेल' के बीच कोई अंतर नहीं होना चाहिए।
- जबकि मंत्रियों का समूह (GoM) अपनी पिछली बैठक में उक्त गतिविधियों पर प्रस्तावित करों के लिए मोटे तौर पर सहमत था, ऑनलाइन गेमिंग पर कोई सहमति नहीं थी क्योंकि गोवा ने प्लेटफ़ॉर्म शुल्क पर केवल 18% कर लगाने का प्रस्ताव रखा था।
- ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के अनुसार, 28% GST न केवल ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफार्मों की नए गेम और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने की क्षमता को बाधित करेगा बल्कि बाजार में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता को भी कमजोर करेगा।

सिनेमा हॉल में भोजन और पेय पदार्थों पर कर:

- परिषद ने घोषणा की कि सिनेप्लेक्स के अंदर रेस्तरां पर पहले 18% के मुकाबले 5% GST लगेगा।
- बदलाव से पहले, 100 रुपये से नीचे के मूवी टिकटों पर 12% टैक्स लगता था, जबकि सीमा से ऊपर के टिकटों पर 18% GST लगता था।
- संपूर्ण आपूर्ति (टिकट + खाने का सामान) को समग्र आपूर्ति के रूप में माना जाना चाहिए और मुख्य आपूर्ति की लागू दर के अनुसार कर लगाया जाना चाहिए, जो इस मामले में सिनेमा टिकट है।

परिषद कैंसर की दवाओं पर GST से छूट देगी:

- इसके अलावा, बैठक में दुर्लभ बीमारियों के उपचार में उपयोग की जाने वाली कैंसर की दवा डिनुटुक्सिमैब और विशेष चिकित्सा प्रयोजनों के लिए खाद्य (FSMP) के आयात पर GST से छूट देने का भी निर्णय लिया गया।
- वर्तमान में, दवा पर 12% एकीकृत GST लगता है।

MUV पर कराधान परिषद:

- GST परिषद ने उपयोगिता वाहनों की परिभाषा और पंजीकरण के मानदंडों को कड़ा करने का भी निर्णय लिया।
- मल्टी यूटिलिटी वाहनों (MUV) के कराधान पर स्पष्टता प्रदान की गई। परिषद एमयूवी के लिए 22% मुआवजा उपकर लगाने की सिफारिश पर सहमत हो गई है, लेकिन सेडान को सूची में शामिल नहीं किया गया है।
- अपीलीय न्यायाधिकरण गठित करेगी परिषद: वित्त मंत्री ने कहा है कि बैठक के दौरान कई राज्यों ने बेंच के लिए अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि किसी भी अनुरोध को अस्वीकार नहीं किया जाएगा।

ट्राई

खबरों में क्यों?

ट्राई ने AI उपयोग मामलों को विनियमित करने के लिए वैधानिक निकाय की घोषणा की

महत्वपूर्ण बिंदु

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को विनियमित करने की जरूरतों पर बार-बार चर्चा के बाद, भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने 'दूरसंचार क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और बड़े डेटा का लाभ' शीर्षक से सिफारिशें जारी की हैं।
- सलाह में कहा गया है कि नियामक ढांचे को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कुछ AI उपयोग के मामले जो सीधे व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं उन्हें जोखिम-आधारित ढांचे के तहत लिया जाए।

रिपोर्ट की मुख्य बातें

- दूरसंचार क्षेत्र में AI और बिग डेटा को अपनाने के अवसर:
- दक्षता, उत्पादकता और स्वचालन में सुधार की संभावना।
- कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्रदान करके नेटवर्क की गति, क्षमता और विलंबता को बढ़ाने की उम्मीद है।
- नेटवर्क को सक्रिय रूप से सुरक्षित करने सहित डिजाइनिंग, तैनाती, रखरखाव और नेटवर्क जटिलताओं के प्रबंधन में बुद्धिमान स्वचालित सिस्टम प्रदान करता है।

प्रतिबंध:

- भारत में डेटा संरक्षण विधेयक की अनुपस्थिति के कारण नीति और नियामक चुनौतियाँ।
- सीमित AI विशेषज्ञता और ज्ञान, गुणवत्ता डेटा और AI विशिष्ट बुनियादी ढांचे तक पहुंच।
- डेटा तक सीमित पहुंच, अपर्याप्त कंप्यूटिंग अवसंरचना, और सीमित अनुसंधान एवं विकास प्रयास।
- विभिन्न AI सिस्टम और डेटा स्रोतों के बीच अंतरसंचालनीयता और अनुकूलता।
- उद्योग-व्यापी मानकों का अभाव सूचना के आदान-प्रदान में बाधा डालता है

सिफ़ारिशें:

- नियामक ढांचे में एक स्वतंत्र वैधानिक प्राधिकरण, एक बहु-हितधारक निकाय (MSB) शामिल होना चाहिए जो प्रस्तावित

वैधानिक प्राधिकरण के लिए एक सलाहकार निकाय के रूप में कार्य करेगा, और एआई उपयोग के मामलों को उनके जोखिम के आधार पर वर्गीकृत करेगा और व्यापक सिद्धांतों के अनुसार उन्हें विनियमित करेगा।

- AIDAI को AI के जिम्मेदार उपयोग सहित इसके विभिन्न पहलुओं पर नियम बनाना चाहिए। जिम्मेदार AI के सिद्धांतों को परिभाषित करना और जोखिम मूल्यांकन के आधार पर एआई उपयोग के मामलों में उनकी प्रयोज्यता।
- AIDAI को अपने मूल्यांकन, प्रस्तावित MSB की सलाह, वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं और सार्वजनिक परामर्श के आधार पर रूपरेखा विकसित करनी चाहिए।
- निकाय को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि AI फ्रेमवर्क जीवनचक्र के प्रत्येक चरण में जिम्मेदार एआई सिद्धांत लागू हों। उन्हें जिम्मेदारीपूर्वक AI को तैनात करने पर संगठनों का मार्गदर्शन करने के लिए एक मॉडल AI गवर्नेंस फ्रेमवर्क विकसित करना चाहिए।

- निकाय के अन्य कार्य AI-आधारित समाधानों के परीक्षण के लिए विनियामक सैंडबॉक्स स्थापित करना, विभिन्न क्षेत्रों के मानक-निर्धारण निकायों के साथ सहयोग करना, अंतर्राष्ट्रीय नियामकों के साथ सहयोग करना, उद्योग और शैक्षणिक सहयोग के लिए एक मंच प्रदान करना और जिम्मेदारों के बारे में जागरूकता पैदा करना होगा।

तेल व्यापार

खबरों में क्यों?

रूस के साथ भारत के तेल व्यापार का नाटकीय परिवर्तन

महत्वपूर्ण बिंदु

- एक वर्ष से अधिक समय से, भारत, 85% से अधिक की आयात निर्भरता के साथ कच्चे तेल का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता, रूसी तेल के साथ एक भावुक चक्कर में उलझा हुआ है।
- यूक्रेन पर आक्रमण के बाद, रूस ने इच्छुक खरीदारों को भारी छूट देना शुरू कर दिया क्योंकि पश्चिमी देशों ने उसके तेल से मुंह मोड़ लिया। संघर्ष से पहले, भारत के तेल व्यापार में रूस की एक छोटी भूमिका थी, जिस पर मुख्य रूप से इराक, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे पश्चिम एशियाई आपूर्तिकर्ताओं का वर्चस्व था। हालाँकि, रूस द्वारा दी गई छूट से भारी बदलाव आया, जिससे यह भारत के लिए कच्चे तेल का प्राथमिक स्रोत बन गया

रूस के साथ भारत का तेल व्यापार

- वाणिज्यिक खुफिया और सांख्यिकी महानिदेशालय (DGCI&S) के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2022 के बाद से रूस से भारत का तेल आयात दस गुना से अधिक बढ़ गया है।
- इस स्थिर वृद्धि ने गति पकड़ी, विशेष रूप से जी7 द्वारा दिसंबर 2022 में समुद्री रूसी कच्चे तेल पर 60 डॉलर प्रति बैरल मूल्य सीमा लगाने के बाद।
- 14 महीने की अवधि के दौरान रूस की बाजार हिस्सेदारी बढ़कर 24.2% हो गई, जो वित्त वर्ष 2012 में मात्र 2% थी। इसके विपरीत, इराक, नाइजीरिया और अमेरिका जैसे अन्य प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं के बाजार शेयरों में पर्याप्त गिरावट देखी गई।
- भारत के तेल आयात में ओपेक की हिस्सेदारी लगभग आधी गिरकर मई 2022 में 75.3% से मई 2023 में 40.3% हो गई।
- भारत के प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में, कई ओपेक सदस्यों की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट देखी गई, जबकि रूस की हिस्सेदारी 6% से बढ़कर 40.4% हो गई।

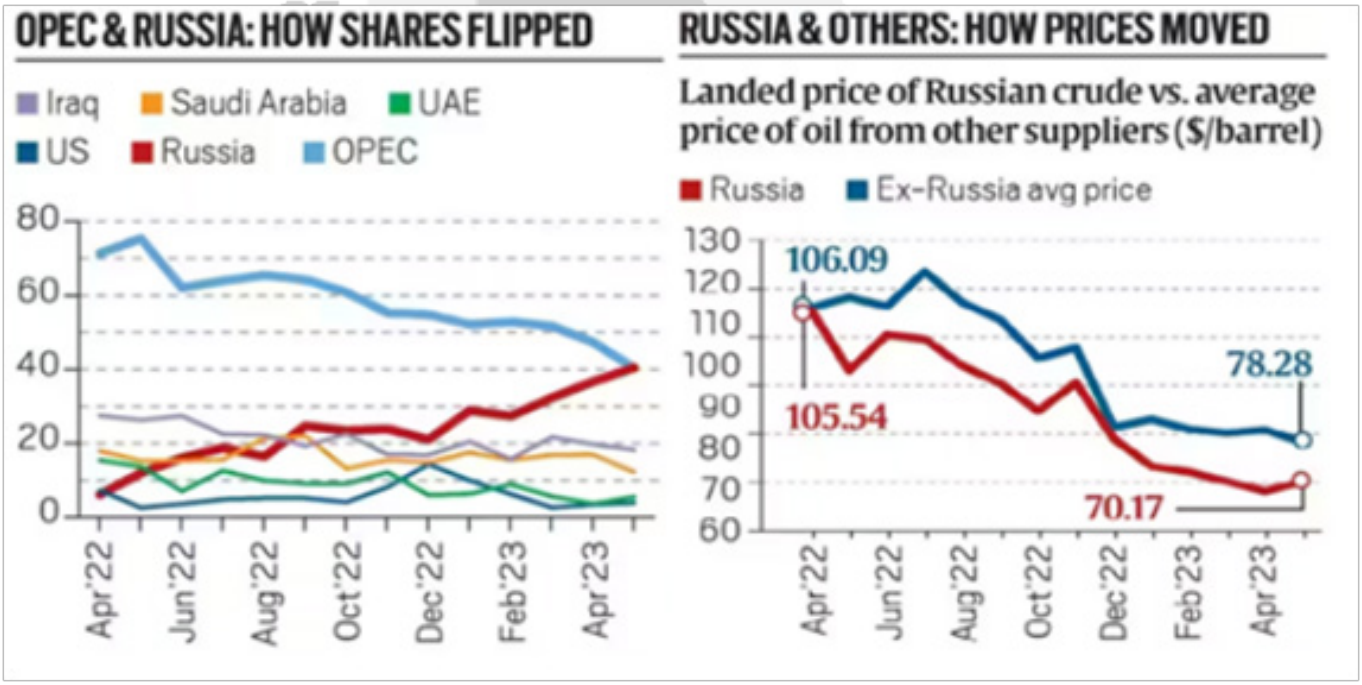

रूसी तेल के भारतीय आयात में वृद्धि के कारण कारक

रूसी तेल पर पश्चिमी प्रतिबंध

- यूरोपीय संघ ने रूसी कोयले का आयात बंद कर दिया और परिष्कृत तेल के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया।
- अमेरिका और ब्रिटेन ने सभी रूसी तेल और गैस आयात पर प्रतिबंध लगा दिया।
- जर्मनी ने रूस से नॉर्डस्ट्रीम 2 गैस पाइपलाइन का उद्घाटन रोक दिया।
- दिसंबर 2022 में, EU और G7 ने रूसी कच्चे तेल के लिए अधिकतम कीमत 60 डॉलर प्रति बैरल निर्धारित की।

रूस द्वारा भारी छूट की पेशकश

- पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध के बाद से रूस तेल की बिक्री के लिए भारत, चीन, तुर्की और बुल्गारिया जैसे देशों पर बहुत अधिक निर्भर था।
- रूस ने इच्छुक देशों को कच्चे तेल पर भारी छूट की पेशकश की। भारत ने मौके का फायदा उठाया।

चिंताओं

- भू-राजनीतिक तनाव और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के बीच रूस के साथ भारत के गहरे होते ऊर्जा संबंध भारत को भू-राजनीतिक जोखिमों में डाल सकते हैं।
- रूसी तेल के साथ संबंध अन्य देशों के साथ राजनयिक जटिलताओं को जन्म दे सकता है।
- ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने के बावजूद, रूसी तेल पर अत्यधिक निर्भरता को लेकर अभी भी चिंता बनी हुई है।
- रूस से भारत का पर्याप्त आयात इसे आपूर्ति में व्यवधान या रूसी निर्यात को प्रभावित करने वाले भूराजनीतिक विकास के प्रति संवेदनशील बना सकता है।
- रूसी तेल पर छूट के स्तर की अस्थिरता भारत की ऊर्जा व्यापार गणना में अनिश्चितता बढ़ाती है।
- रूसी तेल कार्गो के मूल्य निर्धारण में पारदर्शिता की कमी के कारण सटीक छूट का निर्धारण चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जिससे व्यापार वार्ता और वित्तीय योजना में अनिश्चितताएं पैदा होती हैं।

लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक परियोजना

खबरों में क्यों?

हाल ही में, उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) ने बंदरगाह प्रदर्शन में सुधार के लिए बंदरगाह अधिकारियों द्वारा उठाए गए उपायों की समीक्षा के लिए एक लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक प्रोजेक्ट (LDB) बैठक आयोजित की।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यह परियोजना 2016 को जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह, मुंबई में शुरू की गई थी।
- उद्देश्य: सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को और अधिक कुशल बनाने के लिए परियोजना शुरू की गई।
- कार्यान्वयन एजेंसी: इसे दिल्ली मुंबई औद्योगिक गलियारा विकास निगम लॉजिस्टिक्स डेटा सर्विसेज लिमिटेड (डीएलडीएसएल) नामक एक विशेष प्रयोजन वाहन के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है, जिसका स्वामित्व दिल्ली मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) ट्रस्ट और जापानी आईटी सेवा प्रमुख NEC कॉर्पोरेशन के पास संयुक्त रूप से (50:50) है।
- इसे भारत के विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने और अधिक पारदर्शिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक प्रमुख 'व्यापार करने में आसानी' पहल के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- नोडल मंत्रालय: वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय।

प्रमुख विशेषताएं:

- प्रत्येक कंटेनर एक रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग (RFID) टैग से जुड़ा होता है और फिर RFID रीडर के माध्यम से ट्रैक किया जाता है - आयातकों और निर्यातकों को पारगमन में अपने माल को ट्रैक करने में सहायता करता है।
- इससे, बदले में, कंटेनर आंदोलन के समग्र लीड समय में कटौती हुई है और साथ ही खेप और शिपर्स द्वारा की जाने वाली लेनदेन लागत भी कम हो गई है।
- यह परियोजना "अंतर्देशीय कंटेनर डिपो और कंटेनर फ्रेट स्टेशन तक रेल या सड़क के माध्यम से (कंटेनरों की) संपूर्ण आवाजाही को कवर करती है।"
- सेवा एकल विंडो के भीतर विस्तृत, वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करने के लिए आपूर्ति श्रृंखला में एजेंसियों के पास उपलब्ध जानकारी को एकीकृत करती है।

अप्रत्याशित कर

खबरों में क्यों?

भारत ने दो महीने के बाद पेट्रोलियम कच्चे तेल पर अप्रत्याशित कर लगाया

महत्वपूर्ण बिंदु

- एक सरकारी अधिसूचना के अनुसार भारत सरकार ने घरेलू पेट्रोलियम कच्चे तेल पर अप्रत्याशित कर फिर से लगा दिया है। कच्चे पेट्रोलियम पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (SAED) शून्य से बढ़ाकर 1600 रुपये प्रति मीट्रिक टन कर दिया गया है।

- अधिसूचना में कहा गया है कि सरकार ने डीजल, पेट्रोल और विमानन टरबाइन ईंधन पर अप्रत्याशित कर को शून्य पर अपरिवर्तित छोड़ दिया है। भारत ने मई 2023 में पेट्रोलियम कच्चे तेल पर अप्रत्याशित कर को 4,100 रुपये प्रति टन से घटाकर शून्य कर दिया था।
- भारत ने पहले कच्चे तेल उत्पादकों पर अप्रत्याशित कर लगाया था और गैसोलीन, डीजल और एटीएफ के निर्यात पर लेवी बढ़ा दी थी, जो ऊर्जा कंपनियों के सुपर सामान्य मुनाफे पर कर लगाने वाले देशों की बढ़ती संख्या में शामिल हो गया।
- जबकि पेट्रोल, डीजल और जेट ईंधन (ATF) के निर्यात पर शुल्क लगाया गया था, स्थानीय स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर एक विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (SAED) लगाया गया था।
- पिछले दो हफ्तों में औसत तेल की कीमतों के आधार पर हर पखवाड़े कर दरों की समीक्षा की जाती है।
- अप्रत्याशित लाभ कर की गणना किसी भी कीमत को हटाकर की जाती है जो उत्पादकों को एक सीमा से ऊपर मिल रही है।
- हाल के दिनों में वैश्विक तेल की कीमतें लगभग तीन महीनों में अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई हैं, जब अमेरिकी मुद्रास्फीति के आंकड़ों से पता चला कि दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें अपने चरम के करीब थीं।
- अंतर्राष्ट्रीय ब्रेंट क्रूड वायदा 80 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर कारोबार कर रहा था। बुधवार को आंकड़ों से पता चला कि अमेरिकी उपभोक्ता कीमतों में जून में मामूली वृद्धि हुई और दो साल से अधिक समय में सबसे छोटी वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई क्योंकि मुद्रास्फीति लगातार कम हो रही है।
- डेटा के कारण अमेरिकी डॉलर सूचकांक अप्रैल 2022 के बाद से सबसे निचले स्तर पर आ गया, जिससे तेल की कीमतों को बढ़ावा देने में मदद मिली। कमजोर डॉलर अन्य मुद्राओं के धारकों के लिए कच्चा तेल सस्ता बनाता है।

क्या है वह?

- यह सरकार द्वारा विशिष्ट उद्योगों पर लगाया जाने वाला एक उच्च कर है जब उन्हें अप्रत्याशित और औसत से अधिक लाभ का अनुभव होता है।

यह कब लगाया जाता है?

- जब सरकार किसी उद्योग के राजस्व में अचानक वृद्धि देखती है, तो वह यह कर लगाती है।
- हालाँकि, इन राजस्व को कंपनी द्वारा सक्रिय रूप से अपनाई गई किसी भी चीज़ से नहीं जोड़ा जा सकता है, जैसे कि इसकी व्यावसायिक रणनीति या विस्तार।
- नतीजतन, किसी उद्योग के मुनाफे पर अप्रत्याशित कर लगाया जाता है जब उसे असंबंधित बाहरी घटनाओं के कारण राजस्व में तेज वृद्धि का अनुभव होता है।

लगाने के पीछे का कारण:

- अप्रत्याशित लाभ का पुनर्वितरण, जब ऊंची कीमतें उपभोक्ताओं की कीमत पर उत्पादकों को लाभ पहुंचाती हैं;
- सामाजिक कल्याण योजनाओं को वित्तपोषित करना;
- सरकार के लिए एक पूरक राजस्व स्रोत के रूप में;
- सरकार के लिए देश के बढ़ते व्यापार घाटे को कम करने के एक तरीके के रूप में;

AT-1 बांड

खबरों में क्यों?

भारतीय स्टेट बैंक के अतिरिक्त टियर-1 (AT-1) बांड इश्यू के लिए जबरदस्त सब्सक्रिप्शन ने बाजार की धारणा को कमजोर कर दिया है और उम्मीद है कि अन्य PSU बैंकों के लिए फंड जुटाना कठिन हो जाएगा।

महत्वपूर्ण बिंदु

- SBI ने 10,000 करोड़ रुपये के निर्गम आकार के मुकाबले 3,101 करोड़ रुपये जुटाए।
- AT-1 बांड का बेस इश्यू 3,000 करोड़ रुपये का था और कुल 5,920 करोड़ रुपये की बोलियां प्राप्त हुईं।
- भले ही SBI को कूपन को 8.1 प्रतिशत तक सीमित करना ठीक लगे, दुर्भाग्य से, वित्त वर्ष 2014 के लिए पहला जारीकर्ता होने और सभी पीएसयू बैंकों के लिए अग्रणी होने के कारण SBI ने बाजार की धारणा को प्रभावित किया है।
- निवेशकों को लग रहा है कि उन्हें AT-1 बांड का वास्तविक मूल्य या कूपन नहीं मिला है।
- SBI ने 10-वर्षीय बेंचमार्क जी-सेक पर उपज की तुलना में 8.1 प्रतिशत 91 BPS अधिक और 7.90-8.42 प्रतिशत की सीमा में प्राप्त बोलियों के मुकाबले धन जुटाया।
- मौजूदा अस्थिर बाजार में 100 BPS से कम का अंतर, विशाल इश्यू आकार और 10-वर्षीय कॉल विकल्प के साथ, निवेशकों के साथ अच्छा नहीं लगता है, खासकर यह देखते हुए कि SBI को बेंचमार्क माना जाता है।
- यह दर्शाता है कि बैंक AT-1 बांड के लिए जोखिम-इनाम अनुपात का गलत मूल्य निर्धारण कर रहे हैं।
- AT1 उपकरण हानि-अवशोषित होते हैं, इसलिए यह संभव है कि निवेशक उस जोखिम के मुकाबले अधिक रिटर्न की उम्मीद करते हैं।
- राज्य के बैंकों के AT-1 पर घाटे की संभावना कम है, लेकिन फिर भी ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर यह एक जोखिम है।

सतर्क दृष्टिकोण

- कई अन्य PSU बैंक, जैसे कि पंजाब नेशनल बैंक, केनरा बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा, जिन्होंने या तो आवश्यक मंजूरी ले ली है या बांड तैयार कर रहे हैं, अब यह आकलन करने के लिए "प्रतीक्षा करें और देखें" कि क्या बाजार में तेजी आएगी। ऊपर, उच्च दरों की पेशकश करने पर विचार करें, या अपने धन जुटाने में कुछ हफ्तों या महीनों की देरी करें।

- बाजार सहभागियों का मानना है कि मौजूदा दरों पर कम से कम 15-20 BPS प्रीमियम से AT-1 बांड को मौजूदा बाजार माहौल में बाजार की भूख को पूरा करने के लिए उचित मूल्य देने में मदद मिलेगी, जो पहले से ही लंबी अवधि के क्षेत्र में कुछ भीड़भाड़ देख रहा है, जिसके कारण एक मूल्य निर्धारण बेमेल।

अतिरिक्त टियर-1 बांड

- AT-1 बांड एक प्रकार के असुरक्षित, स्थायी बांड हैं जिन्हें बैंक बेसल-III मानदंडों को पूरा करने के लिए अपने मुख्य पूंजी आधार को बढ़ाने के लिए जारी करते हैं।
- ऐसे दो मार्ग हैं जिनके माध्यम से ये बांड प्राप्त किए जा सकते हैं:
- धन जुटाने के इच्छुक बैंकों द्वारा AT-1 बांड की प्रारंभिक निजी प्लेसमेंट पेशकश।
- द्वितीयक बाजार में पहले से कारोबार किए गए एटी-1 बांड की खरीदारी।
- AT-1 बांड बैंकों और कंपनियों द्वारा जारी किए गए किसी भी अन्य बांड की तरह हैं, लेकिन अन्य बांड की तुलना में थोड़ा अधिक ब्याज दर देते हैं।
- ये बांड एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध और कारोबार भी किए जाते हैं। इसलिए, यदि किसी AT-1 बांडधारक को पैसे की जरूरत है, तो वह इसे द्वितीयक बाजार में बेच सकता है।
- निवेशक इन बांडों को जारीकर्ता बैंक को वापस नहीं कर सकते हैं और पैसा प्राप्त नहीं कर सकते हैं। यानी इसके धारकों के लिए कोई पुट विकल्प उपलब्ध नहीं है।
- हालाँकि, जारीकर्ता बैंकों के पास उनके द्वारा जारी किए गए AT-1 बांड को वापस लेने का विकल्प होता है (कॉल विकल्प कहा जाता है जो बैंकों को 5 या 10 वर्षों के बाद उन्हें भुनाने की अनुमति देता है)।
- AT-1 बांड जारी करने वाले बैंक किसी विशेष वर्ष के लिए ब्याज भुगतान को छोड़ सकते हैं या बांड के अंकित मूल्य को भी कम कर सकते हैं।
- AT-1 बांड RBI द्वारा विनियमित होते हैं। यदि आरबीआई को लगता है कि किसी बैंक को बचाव की जरूरत है, तो वह अपने निवेशकों से परामर्श किए बिना बैंक से अपने बकाया AT-1 बांड को माफ करने के लिए कह सकता है।

बांड

- बांड केवल एक कंपनी द्वारा लिया गया ऋण है।
- कंपनी को बैंक के पास जाने के बजाय उन निवेशकों से पैसा मिलता है जो उसके बांड खरीदते हैं।
- पूंजी के बदले में, कंपनी एक ब्याज कूपन का भुगतान करती है, जो अंकित मूल्य के प्रतिशत के रूप में व्यक्त बांड पर भुगतान की जाने वाली वार्षिक ब्याज दर है।

वित्तीय स्थिरता बोर्ड

खबरों में क्यों?

क्रिप्टो-परिसंपत्ति गतिविधियों के लिए FSB वैश्विक नियामक ढांचा

महत्वपूर्ण बिंदु

- FSB नियामक और पर्यवेक्षी दृष्टिकोण की व्यापकता और अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए क्रिप्टो-परिसंपत्ति गतिविधियों के लिए अपने वैश्विक नियामक ढांचे को अंतिम रूप दे रहा है।
- ढांचा 'समान गतिविधि, समान जोखिम, समान विनियमन' के सिद्धांत पर आधारित है और यह सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है कि क्रिप्टो-परिसंपत्ति गतिविधियां और तथाकथित स्थिर सिक्के उनके द्वारा उत्पन्न जोखिमों के अनुरूप सुसंगत और व्यापक विनियमन के अधीन हैं। तकनीकी परिवर्तन द्वारा संभावित रूप से लाए गए जिम्मेदार नवाचारों का समर्थन करते हुए।

इसमें अनुशंसाओं के दो अलग-अलग सेट शामिल हैं:

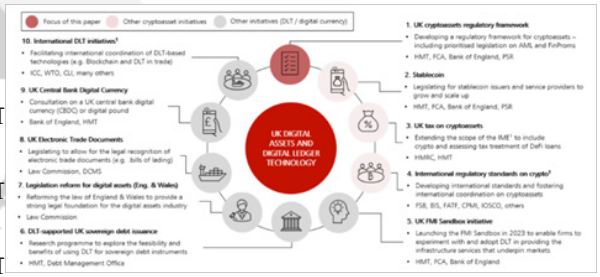

- क्रिप्टो-परिसंपत्ति गतिविधियों और बाजारों के विनियमन, पर्यवेक्षण और निरीक्षण के लिए उच्च स्तरीय सिफारिशें;
- "वैश्विक स्थिर मुद्रा" व्यवस्था के विनियमन, पर्यवेक्षण और निरीक्षण के लिए संशोधित उच्च स्तरीय सिफारिशें।

- सिफ़ारिशें वित्तीय स्थिरता के जोखिमों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं, और वे क्रिप्टो-परिसंपत्ति गतिविधियों से संबंधित सभी विशिष्ट जोखिम श्रेणियों को व्यापक रूप से कवर नहीं करती हैं।
- वे क्रिप्टो-परिसंपत्ति बाजारों में पिछले वर्ष की घटनाओं से सबक लेते हैं, साथ ही FSB के प्रस्तावों के सार्वजनिक परामर्श के दौरान प्राप्त फीडबैक का भी ध्यान रखते हैं।
- डिजिटलीकृत केंद्रीय बैंक देनदारियों के रूप में परिकल्पित सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्राएं (CBDC) इन सिफारिशों के अधीन नहीं हैं।
- यह दस्तावेज़ बताता है कि कैसे सिफ़ारिशों के दो अलग-अलग सेट वैश्विक स्टैब्लॉक्स व्यवस्था और अन्य क्रिप्टो-परिसंपत्ति गतिविधियों के विनियमन, पर्यवेक्षण और निरीक्षण के लिए एक रूपरेखा तैयार करते हैं।
- FSB और क्षेत्रीय मानक-निर्धारण निकायों (SSB) ने 2023 और उससे आगे के लिए एक साझा कार्य योजना विकसित की है, जिसके माध्यम से वे एक व्यापक और सुसंगत वैश्विक नियामक ढांचे के विकास को बढ़ावा देने के लिए, अपने संबंधित जनादेश के तहत काम का समन्वय करना जारी रखेंगे। क्रिप्टो-परिसंपत्ति बाजारों की गतिविधियों से दुनिया भर के न्यायक्षेत्रों को होने वाले जोखिमों

के बारे में पता चल सकता है, जिसमें एसएसबी द्वारा अधिक विस्तृत मार्गदर्शन का प्रावधान, निगरानी और सार्वजनिक रिपोर्टिंग शामिल है।

क्रिप्टो-संपत्तियों और स्थिर सिक्कों के बारे में

- क्रिप्टो-संपत्तियां एक प्रकार की निजी क्षेत्र की डिजिटल संपत्ति हैं जो मुख्य रूप से क्रिप्टोग्राफी और वितरित बहीखाता या इसी तरह की तकनीक पर निर्भर करती हैं।
- क्रिप्टो-परिसंपत्ति बाजारों के विभिन्न खंड गैर-समर्थित क्रिप्टो-परिसंपत्तियां (जैसे बिटकॉइन), स्थिर सिक्के और विकेन्द्रीकृत वित्त (DFI) हैं।
- स्टेबलकॉइन एक क्रिप्टोकरेंसी है जिसका मूल्य किसी अन्य परिसंपत्ति की कीमत से आंका जाता है।

FSB के बारे में

- G20 के तत्वावधान में 2009 में स्थापित, यह एक अंतरराष्ट्रीय निकाय (भारत एक सदस्य) है जो वैश्विक वित्तीय प्रणाली के बारे में निगरानी करता है और सिफारिशें करता है।
- इसका उद्देश्य वित्तीय प्रणालियों को मजबूत करना और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों की स्थिरता को बढ़ाना है।
- FSB एक संधि-आधारित संगठन नहीं है और इसके निर्णय कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं।

ग्लोबल टैक्स डील

खबरों में क्यों?

138 देश और क्षेत्राधिकार वैश्विक कर समझौते को लागू करने के ऐतिहासिक मील के पत्थर पर सहमत हैं

महत्वपूर्ण बिंदु

- वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के 90% से अधिक का प्रतिनिधित्व करने वाले आधार क्षरण और लाभ स्थानांतरण (BEPS) पर OECD/G20 समावेशी ढांचे के 138 सदस्यों ने महत्वपूर्ण प्रगति को मान्यता देते हुए और देशों और न्यायक्षेत्रों को अंतरराष्ट्रीय कर प्रणाली के ऐतिहासिक प्रमुख सुधार के साथ आगे बढ़ने की अनुमति देते हुए एक परिणाम वक्तव्य पर सहमति व्यक्त की।
- अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण से उत्पन्न होने वाली कर चुनौतियों का समाधान करने के लिए दो-स्तंभ समाधान दुनिया के सबसे बड़े बहुराष्ट्रीय उद्यमों (MNE) के संबंध में देशों और न्यायक्षेत्रों के बीच मुनाफे और कर अधिकारों का उचित वितरण सुनिश्चित करेगा।
- दो-स्तंभ समाधान अंतरराष्ट्रीय कर प्रणाली के लिए स्थिरता प्रदान करेगा, इसे निष्पक्ष बनाएगा और तेजी से डिजिटल और वैश्वीकृत विश्व अर्थव्यवस्था में बेहतर काम करेगा।

- OECD विकासशील देशों द्वारा कार्यान्वयन की क्षमता बढ़ाने के लिए अतिरिक्त समर्थन और तकनीकी सहायता के साथ, तेज और समन्वित कार्यान्वयन का समर्थन करने के लिए एक व्यापक कार्य योजना भी तैयार करेगा।
- परिणाम वक्तव्य दो-स्तंभ समाधान के शेष तत्वों को संबोधित करने के लिए समावेशी ढांचे द्वारा विकसित डिलिवरेबल्स के पैकेज का सारांश प्रस्तुत करता है:
  - समावेशी फ्रेमवर्क द्वारा विकसित एक बहुपक्षीय सम्मेलन (MLC) का एक पाठ, जो क्षेत्राधिकारों को MNE अवशिष्ट लाभ (स्तंभ एक की राशि a) के एक हिस्से पर घरेलू कर अधिकार को पुनः आवंटित करने और प्रयोग करने की अनुमति देता है। समावेशी ढांचा MLC के पाठ को हस्ताक्षर के लिए तैयार होने के बाद प्रकाशित करेगा, कुछ विशिष्ट वस्तुओं के समाधान पर, क्योंकि कुछ न्यायालयों ने MLC में कुछ विशिष्ट वस्तुओं के बारे में चिंता व्यक्त की है;
  - देश में आधारभूत विपणन और वितरण गतिविधियों (स्तंभ एक की राशि b) के लिए हाथ की लंबाई सिद्धांत के सरलीकृत और सुव्यवस्थित अनुप्रयोग के लिए एक प्रस्तावित रूपरेखा; जहां अंतिम रूप देने से पहले कुछ पहलुओं पर हितधारकों से इनपुट का अनुरोध किया जाता है;
  - अपने कार्यान्वयन ढांचे के साथ विषय-से-कर नियम (STTR), जो विकासशील देशों को कुछ अंतर-समूह आय पर "टैक्स बैंक" आय के लिए द्विपक्षीय कर संधियों को अद्यतन करने में सक्षम करेगा, जहां ऐसी आय कम या नाममात्र कराधान के अधीन है।
  - OECD द्वारा क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ समन्वय करते हुए, दो-स्तंभ समाधान के त्वरित और समन्वित कार्यान्वयन का समर्थन करने के लिए एक व्यापक कार्य योजना तैयार की जाएगी।

5 विज्ञान और तकनीक

प्रमाणपत्र

खबरों में क्यों?

CERT-In ने सुरक्षित और विश्वसनीय इंटरनेट के लिए सरकारी संस्थाओं के लिए "सूचना सुरक्षा प्रथाओं पर दिशानिर्देश" जारी किए

महत्वपूर्ण बिंदु

- हाल ही में भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-In) ने सरकारी संगठनों के लिए "सूचना सुरक्षा प्रथाओं पर दिशानिर्देश" जारी किए हैं।
- CERT-In ने सूचना प्रौद्योगिकी (IT) अधिनियम, 2000 की धारा 70b के तहत दिशानिर्देश जारी किए हैं।
- ये दिशानिर्देश भारत सरकार (व्यवसाय का आवंटन) नियम, 1961 की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट सभी मंत्रालयों, विभागों, सचिवालयों और कार्यालयों के साथ-साथ उनके संलग्न और अधीनस्थ कार्यालयों पर भी लागू होते हैं।
- ये दिशानिर्देश सरकारी संस्थानों और उद्योगों के लिए एक रोडमैप प्रदान करते हैं। इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं-
  - साइबर जोखिम को कम करना,
  - नागरिक डेटा को सुरक्षित रखें और
  - देश में साइबर सुरक्षा प्रणाली में सुधार लाना।

दिशानिर्देश:

- IT सुरक्षा के लिए एक मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी (CISO) नामित करना
- साइबर सुरक्षा नीति का निर्माण।
- सीआईएसओ और एक समर्पित साइबर सुरक्षा कार्यान्वयन टीम को कार्य और जिम्मेदारियां सौंपें।
- संपूर्ण सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (CT) बुनियादी ढांचे का आंतरिक और बाहरी ऑडिट करना।
- साथ ही ऑडिट के नतीजों के आधार पर उचित सुरक्षा व्यवस्था लागू करना।
- संवेदनशील और वायरलेस नेटवर्क का उचित भौतिक पृथक्करण सुनिश्चित करना।
- डेटा बैकअप नीति का दस्तावेजीकरण, निर्धारण और निगरानी की जानी चाहिए।

CERT-इन

- भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-IN)
- यह कंप्यूटर सुरक्षा घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने के लिए राष्ट्रीय नोडल एजेंसी है। इसकी स्थापना इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगि-की मंत्रालय के तहत IT अधिनियम, 2000 की धारा 70b के प्रावधानों के तहत की गई है।

साइबर सुरक्षा के लिए भारत के अन्य उपाय:

- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013
- भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (14सी) आदि।

यूक्लिड

खबरों में क्यों?

यूक्लिड दूरबीन अंधेरे ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज में रवाना हुई

महत्वपूर्ण बिंदु

- डार्क एनर्जी और डार्क मैटर पर नई रोशनी डालने के मिशन पर फ्लोरिडा से एक यूरोपीय निर्मित कक्षीय उपग्रह को अंतरिक्ष में लॉन्च किया गया था, वैज्ञानिकों का कहना है कि रहस्यमय ब्रह्मांडीय बल ज्ञात ब्रह्मांड का 95% हिस्सा हैं।
- यूक्लिड टेलीस्कोप, जिसका नाम "ज्यामिति के जनक" के रूप में जाने जाने वाले प्राचीन यूनानी गणितज्ञ के नाम पर रखा गया था, को स्पेसएक्स फाल्कन 9 रॉकेट के कार्गो बे में ले जाया गया था, जिसे केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से लॉन्च किया गया था।
- $1.4 बिलियन (£1.1 बिलियन) यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) मिशन से नई अंतर्दृष्टि, जिसे कम से कम छह साल तक चलने के लिए डिज़ाइन किया गया है, से खगोल भौतिकी और शायद गुरुत्वाकर्षण की प्रकृति के बारे में हमारी समझ में बदलाव की उम्मीद है।
- अंतरिक्ष की एक छोटी उड़ान के बाद, यूक्लिड को एक महीने की लंबी यात्रा के लिए फाल्कन से पृथ्वी से लगभग 1 मी मील (1.6 मी किमी) दूर सौर कक्षा में अपने गंतव्य के लिए छोड़ा जाना था, जो पृथ्वी के दूर की ओर गुरुत्वाकर्षण स्थिरता की स्थिति थी। सूर्य से जिसे लैग्रेंज बिंदु दो या L2 कहा जाता है।
- वहां से, यूक्लिड हमारी अपनी आकाशगंगा से परे आकाश के विशाल विस्तार में पृथ्वी से 10 अरब प्रकाश वर्ष दूर तक की आकाशगंगाओं का सर्वेक्षण करने के लिए एक वाइड-एंगल टेलीस्कोप का उपयोग करके "अंधेरे ब्रह्मांड" के विकास का पता लगाएगा।

- 2-टन का अंतरिक्ष यान उन उपकरणों से भी सुसज्जित है जो उन आकाशगंगाओं से अवरक्त प्रकाश की तीव्रता और स्पेक्ट्रम को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जो उनकी दूरी को सटीक रूप से निर्धारित करेंगे।
- मिशन अंधेरे ब्रह्मांड के दो मूलभूत घटकों पर केंद्रित है। एक है डार्क मैटर, अदृश्य लेकिन सैद्धांतिक रूप से प्रभावशाली ब्रह्मांडीय मचान जो ब्रह्मांड को आकार और बनावट देता है।
- दूसरी है डार्क एनर्जी, एक समान रूप से रहस्यमय शक्ति जो यह बताती है कि ब्रह्मांड का विस्तार क्यों तेज हो रहा है।
- मिशन की संभावनाएं यूक्लिड की जांच के आकार से परिलक्षित होती हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि डार्क एनर्जी और डार्क मैटर मिलकर ब्रह्मांड का 95% हिस्सा बनाते हैं, जबकि सामान्य पदार्थ जिसे हम देख सकते हैं वह केवल 5% है।
- डार्क मैटर और डार्क एनर्जी का सीधे तौर पर पता नहीं लगाया जा सकता है, लेकिन उनके गुण आकाशगंगाओं के आकार और स्थिति में कूटबद्ध हैं।

यूक्लिड के बारे में

- यूक्लिड को पूरी तरह से ESA द्वारा डिजाइन और निर्मित किया गया था, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी, नासा ने इसके निकट-अवरक्त उपकरण के लिए फोटोडिटेक्टरों की आपूर्ति की थी।
- यूक्लिड कंसोर्टियम में 13 यूरोपीय देशों, अमेरिका, कनाडा और जापान के 2,000 से अधिक वैज्ञानिक शामिल हैं।

सोलर जियोइंजीनियरिंग

खबरों में क्यों?

अमेरिकी सरकार ग्लोबल वार्मिंग का मुकाबला करने के लिए विवादास्पद सौर जियोइंजीनियरिंग पर विचार कर रही है

महत्वपूर्ण बिंदु

- संयुक्त राज्य अमेरिका ग्लोबल वार्मिंग का मुकाबला करने के लिए एक विवादास्पद उपकरण पर नजर गड़ाए हुए है: सौर विकिरण प्रबंधन (SRM), जिसमें सूर्य के प्रकाश के एक छोटे अंश को अंतरिक्ष में प्रतिबिंबित करना शामिल है।
- एक रिपोर्ट में, व्हाइट हाउस ने कहा कि सार्वजनिक या निजी कलाकार अंतरिक्ष में अधिक सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने के लिए एरोसोल इंजेक्ट करने और समुद्री बादलों को चमकाने जैसी गतिविधियों को अंजाम दे सकते हैं।
- कई वैज्ञानिकों ने SRM के साथ आने वाले उच्च पर्यावरणीय, सामाजिक और भू-राजनीतिक जोखिमों पर चिंता व्यक्त की है। रिपोर्ट को राष्ट्रीय समुद्री और वायुमंडलीय प्रशासन और अन्य प्रमुख अमेरिकी संघीय एजेंसियों के समन्वय में विकसित किया गया था।
- दस्तावेज़ एक अनुसंधान शासन ढांचे की प्रस्तावना है, जिसे वित्तीय वर्ष, 2022 के लिए समेकित विनियोग अधिनियम के हिस्से के रूप में स्थापित किया जाएगा।
- इस ढांचे से सौर जियोइंजीनियरिंग अनुसंधान में सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित कार्यों के लिए पारदर्शिता, जुड़ाव और जोखिम प्रबंधन पर मार्गदर्शन प्रदान करने की उम्मीद है।

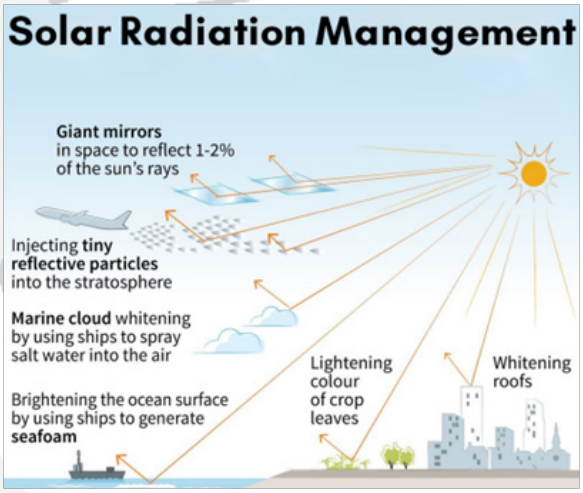

- व्हाइट हाउस की रिपोर्ट में शमन और अनुकूलन के अलावा, अपनी जलवायु नीति के हिस्से के रूप में उपकरण के संभावित जोखिमों और लाभों के बारे में बेहतर जानकारी वाले निर्णय लेने में सक्षम बनाने के लिए अनुसंधान का आह्वान किया गया है।
- हालाँकि, संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपना नीतिगत रुख नहीं बदला है। रिपोर्ट के अनुसार, सरकार उत्सर्जन को कम करने, लचीलापन बढ़ाने, पर्यावरणीय न्याय को आगे बढ़ाने और ऊर्जा सुरक्षा हासिल करने पर केंद्रित रहेगी।

सोलर जियोइंजीनियरिंग क्या है?

- सौर जियोइंजीनियरिंग - जिसे सौर विकिरण प्रबंधन भी कहा जाता है - पृथ्वी को तेजी से ठंडा करने के लिए सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रस्तावित दृष्टिकोणों के एक सेट का वर्णन करता है।
- सौर जियोइंजीनियरिंग के भीतर, शोधकर्ता दो मुख्य दृष्टिकोणों पर विचार कर रहे हैं।
- पहला: स्ट्रैटोस्फेरिक एरोसोल इंजेक्शन, या एसएआई में ग्रह को ठंडा करने के लिए ऊपरी वायुमंडल में छोटे परावर्तक कणों को इंजेक्ट करना शामिल होगा, जिन्हें एरोसोल के रूप में जाना जाता है।
- दूसरा: समुद्री बादल चमकाना, या एमसीबी समुद्र के ऊपर बादल निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए समुद्री नमक का उपयोग करेगा, जो क्षेत्र में सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने में भी मदद करेगा।

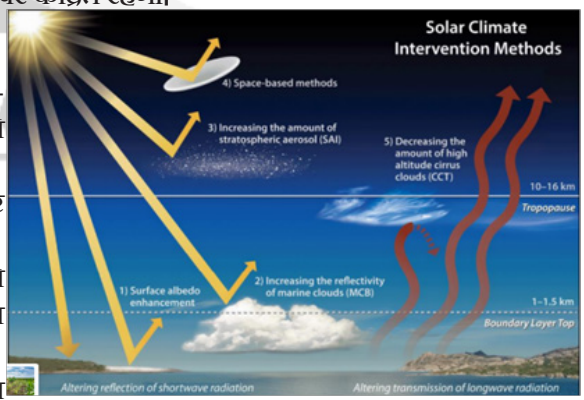

रिपोर्ट SGE के दो तरीकों पर केंद्रित है

- स्ट्रैटोस्फेरिक एरोसोल इंजेक्शन (SAI): पृथ्वी से दूर सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने के लिए ऊपरी वायुमंडल में सल्फर डाइऑक्साइड के कणों को छोड़ना।

- समुद्री बादल चमकाना: जहाजों का उपयोग करके समुद्री नमक इंजेक्ट करके कुछ बादलों की परावर्तनशीलता में सुधार करना।

SGE के अन्य प्रस्तावित तरीकों में शामिल हैं

- उच्च-अल्बिडो फसलें और इमारतें: इमारतों का एल्बिडो बढ़ाना अंतरिक्ष में अधिक सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है।
- महासागर दर्पण: दर्पण के रूप में कार्य करने के लिए समुद्र की सतह पर छोटे सूक्ष्म बुलबुले जोड़ने के लिए समुद्री जहाजों के बेड़े का उपयोग करना शामिल है।
- बादलों का पतला होना: वायुमंडल से सिरस बादलों को हटाकर, लंबी तरंग दैर्ध्य विकिरणों के उनके अवशोषण को कम किया जा सकता है।
- अंतरिक्ष सनशेड: इसमें पृथ्वी से अधिक सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने के लिए कक्षा में दर्पणों का एक बेड़ा भेजना शामिल है।

एक स्वास्थ्य

खबरों में क्यों?

FAO, UNEP, WHO और WOAH ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध के लिए अनुसंधान एजेंडा लॉन्च किया

महत्वपूर्ण बिंदु

- चार बहुपक्षीय एजेंसियों ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) में बढ़े हुए अनुसंधान और निवेश की बेहतर वकालत करने के लिए एक प्राथमिकता अनुसंधान एजेंडा शुरू किया है।
- 'चतुर्भुज': जिसमें संयुक्त राष्ट्र (UN) खाद्य और कृषि संगठन (FAO), संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP), विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH) शामिल हैं, ने वन हेल्थ जारी किया। एक वेबिनार के माध्यम से रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर प्राथमिकता अनुसंधान एजेंडा।
- संगठन विशेष रूप से मानव, पशु, पौधे और पर्यावरणीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करते हैं।
- इसी तर्ज पर, WHO ने मानव स्वास्थ्य में AMR के लिए एक वैश्विक अनुसंधान एजेंडा भी लॉन्च किया।
- एजेंडा 2030 तक नीति और हस्तक्षेप को सूचित करने के लिए साक्ष्य सृजन के लिए 40 शोध विषयों को प्राथमिकता देता है।
- इसका उद्देश्य निम्न और मध्यम आय वाले देशों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ रोगाणुरोधी प्रतिरोध को संबोधित करने के लिए नए सबूत तैयार करने में विभिन्न हितधारकों का मार्गदर्शन करना भी है।

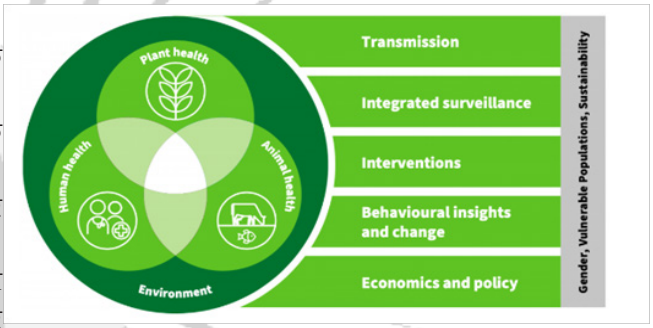

- एजेंडा वन हेल्थ एएमआर अनुसंधान का समर्थन करने के लिए देशों, अनुसंधान संस्थानों और वित्त पोषण निकायों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम करेगा। यह नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और बहु-विषयक वैज्ञानिक समुदाय को विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करने की भी अनुमति देगा।
- इसने 'वन हेल्थ' को एक एकीकृत, एकीकृत दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया है जिसका उद्देश्य लोगों, जानवरों और पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य को स्थायी रूप से संतुलित और अनुकूलित करना है।
- यह अवधारणा स्वीकार करती है कि मनुष्यों का स्वास्थ्य, घरेलू और जंगली जानवर, पौधे और पारिस्थितिक तंत्र सहित बड़ा पर्यावरण, अटूट रूप से जुड़े हुए और अन्योन्याश्रित हैं।
- इस वन हेल्थ इंटरफ़ेस पर, वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए AMR के लिए एक बहुक्षेत्रीय, बहु-विषयक प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
- मिश्रित-तरीकों के दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, वैश्विक विशेषज्ञों ने पांच प्रमुख स्तंभों के साथ-साथ तीन क्रॉस-कटिंग विषयों, अर्थात् लिंग, कमजोर आबादी और स्थिरता की पहचान की, जो इस प्रकार हैं:

हस्तांतरण

- यह स्तंभ पर्यावरण, पौधे, पशु और मानव क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है जहां AMR संचरण, परिसंचरण और प्रसार होता है। इसमें यह भी शामिल है कि इन क्षेत्रों में इस संचरण को कौन संचालित करता है, जहां ये अंत:क्रियाएं होती हैं और विभिन्न क्षेत्रों पर इसका प्रभाव पड़ता है।

एकीकृत निगरानी

- इस स्तंभ का उद्देश्य वन हेल्थ हितधारकों के बीच सामान्य तकनीकी समझ और सूचना विनिमय को बेहतर बनाने के लिए क्रॉस-कटिंग प्राथमिकता वाले अनुसंधान प्रश्नों की पहचान करना है। निगरानी का उद्देश्य LMIC पर ध्यान केंद्रित करते हुए एकीकृत निगरानी का सामंजस्य, प्रभावशीलता और कार्यान्वयन करना है।

हस्तक्षेप

- यह स्तंभ AMR की घटनाओं, व्यापकता और प्रसार को रोकने, नियंत्रित करने या कम करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों, प्रथाओं, उपकरणों और गतिविधियों पर केंद्रित है। इसमें मौजूदा टीकों के सर्वोत्तम उपयोग के साथ-साथ AMR को कम करने के लिए अन्य स्वास्थ्य संबंधी उपायों की भी आवश्यकता है।

व्यवहार संबंधी अंतर्दृष्टि और परिवर्तन

- इस स्तंभ के अंतर्गत प्राथमिकता वाले अनुसंधान क्षेत्र वन हेल्थ इंटरफ़ेस पर एएमआर के विकास और प्रसार में शामिल विभिन्न

समूहों और अभिनेताओं के व्यवहार को समझने से संबंधित हैं। यह मानव व्यवहार को संबोधित करने वाले अनुसंधान पर केंद्रित है जो एएमआर को प्रभावित करता है, जिसमें इससे निपटने के तरीके भी शामिल हैं।

अर्थशास्त्र और नीति

- वन हेल्थ के दृष्टिकोण से, इस स्तंभ ने एएमआर की रोकथाम और नियंत्रण में निवेश और कार्रवाई को संबोधित किया। यह स्तंभ एएमआर निवेश मामले की लागत-प्रभावशीलता, वित्तीय स्थिरता और दीर्घकालिक वित्तीय प्रभाव को भी ध्यान में रखता है।

ग्रेविटी होल

खबरों में क्यों?

क्रूर ब्लैक होल प्रारंभिक ब्रह्मांड में 'समय विस्तार' को प्रकट करते हैं

महत्वपूर्ण बिंदु

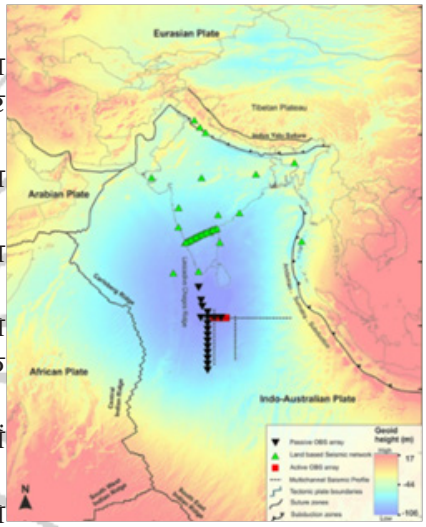

- वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में उस बिंदु को नए सिरे से बनाया है जिसमें प्रारंभिक ब्रह्मांड में "समय के विस्तार" को प्रदर्शित करने के लिए क्वासर नामक ब्लैक होल के एक क्रूर वर्ग के अवलोकन का उपयोग किया गया है, जिससे पता चलता है कि उस समय समय आज की तुलना में केवल पांचवां हिस्सा ही तेजी से बीतता था।
- अवलोकन लगभग 12.3 अरब वर्ष पहले के हैं, जब ब्रह्मांड अपनी वर्तमान आयु का लगभग दसवां हिस्सा था। क्वासर - ब्रह्मांड की सबसे चमकदार वस्तुओं में से एक का उपयोग गहरे अतीत में समय को मापने के लिए अध्ययन में "घड़ी" के रूप में किया गया था।
- क्वासर अत्यधिक सक्रिय सुपरमैसिव ब्लैक होल हैं जो हमारे सूर्य से लाखों से अरबों गुना अधिक विशाल हैं, जो आमतौर पर आकाशगंगाओं के केंद्रों में रहते हैं।
- सुपरनोवा सबसे बड़ा विस्फोट है जो मनुष्य ने कभी देखा है। प्रत्येक विस्फोट किसी तारे का अत्यंत चमकीला, अति-शक्तिशाली विस्फोट होता है।
- वे अपने विशाल गुरुत्वाकर्षण खिंचाव से अपनी ओर खींचे गए पदार्थ को निगल जाते हैं और उच्च-ऊर्जा कणों के जेट सहित विकिरण की धार छोड़ते हैं, जबकि पदार्थ की एक चमकती हुई डिस्क उनके चारों ओर घूमती है।
- शोधकर्ताओं ने ब्रह्मांड में बिग बैंग घटना के लगभग 1.5 बिलियन वर्ष बाद के 190 क्वासरों की चमक से जुड़े अवलोकनों का उपयोग किया, जिसने ब्रह्मांड को जन्म दिया।
- उन्होंने विभिन्न तरंग दैर्ध्य पर इन क्वासरों की चमक की तुलना आज मौजूद क्वासरों से की, और पाया कि आज एक विशेष समय में होने वाले कुछ उतार-चढ़ाव सबसे प्राचीन क्वासरों में पांच गुना अधिक धीरे-धीरे होते हैं।
- आइंस्टीन ने सापेक्षता के अपने सामान्य सिद्धांत में दिखाया कि समय और स्थान आपस में जुड़े हुए हैं और बिग बैंग के बाद से ब्रह्मांड सभी दिशाओं में बाहर की ओर फैल रहा है।
- अलग-अलग तारों के विस्फोट को एक निश्चित दूरी से अधिक दूर तक नहीं देखा जा सकता है, जिससे प्रारंभिक ब्रह्मांड के अध्ययन में उनका उपयोग सीमित हो जाता है। क्वासर इतने चमकीले हैं कि उन्हें ब्रह्मांड की शिशु अवस्था में भी देखा जा सकता है।

गुरुत्वाकर्षण छिद्र

खबरों में क्यों?

हिंद महासागर का 'गुरुत्वाकर्षण छिद्र' पृथ्वी की उत्पत्ति के रहस्यों के द्वार खोलता है

महत्वपूर्ण बिंदु

- पृथ्वी को अक्सर एक पूर्ण गोले के रूप में चित्रित किया जाता है। हालाँकि, ग्रह का आकार अनियमित है। यह असमान सतह ग्रह के असमान गुरुत्वाकर्षण के कारण होती है।
- पृथ्वी के तरंगित मानचित्र पर इन विसंगतियों को जियोइड्स के रूप में जाना जाता है। ऐसी ही एक विशेषता हिंद महासागर के नीचे मौजूद है, जहां खिंचाव "गुरुत्वाकर्षण छिद्र" की तरह बेहद कम हो जाता है। हिंद महासागर का जियोइड लो (IOGL) लगभग दो मिलियन किलोमीटर तक फैला है।
- हिंद महासागर में एक विशाल और रहस्यमय घटना है जिसे "ग्रेविटी होल" के नाम से जाना जाता है, एक हालिया अध्ययन के अनुसार, वैज्ञानिकों को अब संदेह है कि यह एक प्राचीन समुद्र के अवशेष हो सकते हैं जो लाखों साल पहले गायब हो गए थे।
- यह अभूतपूर्व शोध पृथ्वी की सबसे उल्लेखनीय गुरुत्वाकर्षण विसंगति, समुद्र की सतह के नीचे छिपे एक विशाल अवसाद, की उत्पत्ति के लिए एक संभावित स्पष्टीकरण प्रदान करता है।
- हिंद महासागर भू-आकृति निम्न (IOGL) के रूप में जाना जाता है, यह विशाल विस्तार 2 मिलियन वर्ग मील में फैला है और पृथ्वी की परत के नीचे 600 मील से अधिक स्थित है।
- जियोफिजिकल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित अध्ययन का प्रस्ताव है कि IOGL में टेथिस महासागर के स्लैब शामिल हैं, जो एक लंबे समय से खोया हुआ समुद्र है जो लाखों साल पहले ग्रह की गहराई में डूब गया था।
- माना जाता है कि टेथिस महासागर, जो कभी गोंडवाना और लौरेशिया के महाद्वीपों को अलग करता था, ने अफ्रीकी बड़े निम्न कतरनी वेग प्रांत को परेशान कर दिया है, जिसे "अफ्रीकी बूँद" के रूप में भी जाना जाता है, जो हिंद महासागर के नीचे प्लम पैदा करता है।
- गुरुत्वाकर्षण विसंगति पर पिछले अध्ययनों ने इसकी उत्पत्ति पर ध्यान दिए बिना, केवल इसकी वर्तमान स्थिति पर ध्यान केंद्रित

किया था। हालाँकि, इस नए शोध में IOGL को आकार देने वाली प्राचीन ताकतों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए एक दर्जन से अधिक कंप्यूटर मॉडल का उपयोग किया गया।

- अनुमान है कि ब्रेविटी होल ने लगभग 20 मिलियन वर्ष पहले अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया था और अनुमान है कि यह लाखों वर्षों तक बना रहेगा।
- इसकी दिलचस्प प्रकृति ने वैज्ञानिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है, हिंद महासागर के भूवैज्ञानिक इतिहास पर प्रकाश डाला है और हमारे ग्रह की सतह के नीचे काम करने वाली जटिल शक्तियों के बारे में हमारी समझ को गहरा किया है।
- जैसे-जैसे आगे का शोध गहराई में छिपे रहस्यों को उजागर करता है, वैज्ञानिकों को इस विस्मयकारी घटना के आसपास के और अधिक रहस्यों को उजागर करने की उम्मीद है।
- "ब्रेविटी होल" एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि पृथ्वी पर अभी भी कई रहस्य हैं, जिनका पता लगाने और समझने की प्रतीक्षा है।

SARS-CoV-2

खबरों में क्यों?

वैज्ञानिकों ने कोशिकाओं में प्रवेश को अवरुद्ध करके और संक्रमण क्षमता को कम करके SARS-CoV-2 को निष्क्रिय करने के लिए उपन्यास तंत्र विकसित किया है

महत्वपूर्ण बिंदु

- शोधकर्ताओं ने सिंथेटिक पेप्टाइड्स के एक नए वर्ग के डिजाइन की सूचना दी है जो न केवल कोशिकाओं में SARS-CoV-2 वायरस के प्रवेश को रोक सकता है, बल्कि विषाणुओं (वायरस कणों) को एक साथ चिपका सकता है, जिससे उनकी संक्रमित करने की क्षमता कम हो जाती है।
- यह नया दृष्टिकोण SARS-CoV-2 जैसे वायरस को निष्क्रिय करने के लिए एक वैकल्पिक तंत्र प्रदान करता है, जो एंटीवायरल के रूप में पेप्टाइड्स के एक नए वर्ग का वादा करता है।
- SARS-CoV-2 वायरस के नए उपभेदों के तेजी से उभरने से COVID-19 टीकों द्वारा दी जाने वाली सुरक्षा कम हो गई है, जिससे वायरस द्वारा संक्रमण को रोकने के लिए नए तरीकों की आवश्यकता होती है।
- यह ज्ञात है कि प्रोटीन-प्रोटीन अंतःक्रिया अक्सर ताले और चाबी की तरह होती है।
- यह इंटरैक्शन सिंथेटिक पेप्टाइड द्वारा बाधित हो सकता है जो 'कुंजी' की नकल करता है, उससे प्रतिस्पर्धा करता है और 'कुंजी' को 'लॉक' से जुड़ने से रोकता है, या इसके विपरीत। भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के वैज्ञानिकों ने CSIR-माइक्रोबियल टेक्नोलॉजी संस्थान के शोधकर्ताओं के सहयोग से पेप्टाइड्स को डिजाइन करने के लिए इस दृष्टिकोण का उपयोग किया है जो SARS-CoV-2 वायरस की सतह पर स्पाइक प्रोटीन को बांध और अवरुद्ध कर सकता है।
- इस बंधन को क्रायो-इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (क्रायो-EM) और अन्य बायोफिजिकल तरीकों द्वारा बड़े पैमाने पर चित्रित किया गया था।
- अनुसंधान को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) के एक वैधानिक निकाय, एसईआरबी विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड (SERB) के COVID-19 IRPHA कॉल के तहत समर्थित किया गया था।
- डिज़ाइन किए गए पेप्टाइड्स पेचदार, हेयरपिन के आकार के होते हैं, प्रत्येक अपनी तरह के दूसरे के साथ जुड़ने में सक्षम होते हैं, जो एक डिमर के रूप में जाना जाता है।
- प्रत्येक डिमेरिक 'बंडल' दो लक्ष्य अणुओं के साथ बातचीत करने के लिए दो 'चेहरे' प्रस्तुत करता है। नेचर केमिकल बायोलॉजी में प्रकाशित अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने परिकल्पना की कि दोनों चेहरे दो अलग-अलग लक्ष्य प्रोटीनों से बंध जाएंगे और चारों को एक जटिल में बंद कर देंगे और लक्ष्य की कार्रवाई को अवरुद्ध कर देंगे।
- टीम ने मानव कोशिकाओं में SARS-CoV-2 के स्पाइक (S) प्रोटीन और ACE2 प्रोटीन, SARS-CoV-2 रिसेप्टर के बीच परस्पर क्रिया को लक्षित करने के लिए SIH-5 नामक पेप्टाइड का उपयोग करके अपनी परिकल्पना का परीक्षण करने का निर्णय लिया।
- S प्रोटीन एक ट्रिमर है - तीन समान पॉलीपेप्टाइड्स का एक कॉम्प्लेक्स। प्रत्येक पॉलीपेप्टाइड में एक रिसेप्टर बाइंडिंग डोमेन (RBD) होता है जो मेजबान कोशिका की सतह पर SE2 रिसेप्टर से जुड़ता है। यह अंतःक्रिया कोशिका में वायरल प्रवेश की सुविधा प्रदान करती है।
- SIH-5 पेप्टाइड को मानव ACE2 के साथ RBD के बंधन को अवरुद्ध करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। जब एक SIH-5 डिमर को एस प्रोटीन का सामना करना पड़ा, तो उसका एक चेहरा एस प्रोटीन ट्रिमर पर तीन RBD में से एक से मजबूती से बंधा हुआ था और दूसरा चेहरा एक अलग एस प्रोटीन से RBD से बंधा हुआ था।
- इस 'क्रॉस-लिंकिंग' ने SIH-5 को एक ही समय में दोनों S प्रोटीन को अवरुद्ध करने की अनुमति दी।
- क्रायो-EM के तहत, SIH-5 द्वारा लक्षित एस प्रोटीन सिर से सिर तक जुड़े हुए दिखाई दिए, और स्पाइक प्रोटीन को डिमर बनाने के लिए मजबूर किया जा रहा था।
- इसके बाद, शोधकर्ताओं ने दिखाया कि SIH-5 ने विभिन्न वायरस कणों से स्पाइक प्रोटीन को क्रॉस-लिंक करके वायरस को कुशलतापूर्वक निष्क्रिय कर दिया।

बेपिकोलम्बो

खबरों में क्यों?

बुध पर इलेक्ट्रॉन वर्षा के कारण एक्स-रे ऑरोरा होता है, बेपीकोलंबो को नजदीकी उड़ान के दौरान पाया गया

महत्वपूर्ण बिंदु

- यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) और जापानी एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA) के संयुक्त मिशन बेपीकोलंबो ने वैज्ञानिकों को यह पता लगाने में मदद की कि ग्रह की सतह पर बारिश होने वाले इलेक्ट्रॉन उच्च-ऊर्जा अरोरा का कारण बन सकते हैं।
- पृथ्वी पर अरोरा तब उत्पन्न होता है जब सूर्य द्वारा उत्सर्जित आवेशित कणों की एक धारा हमारे ग्रह के वायुमंडल की विद्युत आवेशित ऊपरी परत आयनमंडल के साथ संपर्क करती है।
- लेकिन बुध का वातावरण बहुत पतला है और ग्रह पर ध्रुवीय रोशनी तब बनती है जब सौर हवा, कणों की धारा, ग्रह की सतह से सीधे संपर्क करती है।
- बेपीकोलंबो अंतरिक्ष यान ने 1 अक्टूबर, 2021 को अपनी पहली करीबी बुध उड़ान भरी।
- उस समय, अंतरिक्ष यान उत्तरी गोलार्ध के रात्रि पक्ष से ग्रह के करीब पहुंचा और दक्षिणी गोलार्ध के सुबह पक्ष के करीब पहुंच गया।
- इसने दक्षिणी गोलार्ध के दिन के समय मैग्नेटोस्फीयर का अवलोकन किया और फिर मैग्नेटोस्फीयर से बाहर सौर विंग में वापस चला गया।
- अंतरिक्ष यान के उपकरणों ने ग्रह के मैग्नेटोस्फीयर की संरचना और सीमाओं का अवलोकन किया और इसके डेटा से पता चला कि यह असामान्य रूप से संपीड़ित स्थिति में था। सबसे संभावित स्पष्टीकरण सौर हवा द्वारा लगाया गया उच्च दबाव है।
- ऐसा प्रतीत होता है कि बुध के मैग्नेटोस्फीयर का "भोर पक्ष" उच्च-ऊर्जा इलेक्ट्रॉनों को तेज कर रहा था, जो अंततः ग्रह की सतह पर बरस गया।
- चूंकि इलेक्ट्रॉनों की प्रगति को बाधित करने के लिए कोई वातावरण नहीं है, वे सतह पर सामग्री के साथ बातचीत करते हैं।
- यह प्रक्रिया एक्स-रे के रूप में एक ध्रुवीय चमक उत्सर्जित करती है।
- यूरोप्लैनेट सोसाइटी के अनुसार, यह पहली बार है जब ग्रह पर एक्स-रे ऑरोरा की प्रक्रिया को समझाया गया है।

बेपीकोलंबो अंतरिक्ष यान में दो मुख्य घटक होते हैं:

- मार्करी प्लैनेटरी ऑर्बिटर (MPO): MPO मुख्य रूप से ESA द्वारा प्रदान किया गया है और यह बुध की सतह के मानचित्रण और अध्ययन के साथ-साथ इसकी संरचना और स्थलाकृति के लिए जिम्मेदार है।
- मर्करी मैग्नेटोस्फेरिक ऑर्बिटर (MMO): MMO JAXA द्वारा प्रदान किया जाता है और बुध के चुंबकीय क्षेत्र और मैग्नेटोस्फेरिक का अध्ययन करने पर केंद्रित है।

क्वांटम सुपरकंप्यूटर

खबरों में क्यों?

माइक्रोसॉफ्ट के शोधकर्ताओं ने मेजराना जीरो मोड के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रगति की है, एक प्रकार का कण जो क्वांटम कंप्यूटिंग में क्रांति ला सकता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- मेजराना शून्य मोड, जो अपने स्वयं के एंटीपार्टिकल्स हैं, में अद्वितीय गुण होते हैं जो क्वांटम कंप्यूटर को अधिक मजबूत और कम्प्यूटेशनल रूप से बेहतर बना सकते हैं।

पृष्ठभूमि

- पदार्थ का निर्माण करने वाले सभी उपपरमाण्विक कणों को फ़र्मियन के रूप में जाना जाता है, प्रत्येक फ़र्मियन में एक संबद्ध एंटीपार्टिकल होता है जो परस्पर क्रिया करने पर नष्ट हो जाता है।
- 1937 में, इतालवी भौतिक विज्ञानी एटोर मेजराना ने पता लगाया कि कुछ कण, जिन्हें मेजराना फर्मियन के रूप में जाना जाता है, विशिष्ट स्थितियों को पूरा कर सकते हैं और अपने स्वयं के एंटीपार्टिकल हो सकते हैं।
- न्यूट्रिनो एक प्रकार के उपपरमाण्विक कण हैं जिनके बारे में वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह मेजराना फर्मियन व्यवहार प्रदर्शित कर सकते हैं, हालांकि प्रयोगात्मक पुष्टि अभी भी लंबित है।

मेजराना जीरो मोड्स

- सभी कणों में चार क्वांटम संख्याएँ होती हैं, जिनमें से एक को क्वांटम स्पिन कहा जाता है जिसमें फ़र्मियन के लिए आधे-पूर्णांक मान होते हैं। यह गुण किसी भी फर्मियन, यहां तक कि परमाणु जैसी बड़ी इकाई को भी फर्मियन के रूप में वर्गीकृत करने की अनुमति देता है।
- दो कणों से बनी बंधी हुई अवस्थाओं को भी फर्मियन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है यदि उनके कुल क्वांटम स्पिन में आधा-पूर्णांक मान होता है।
- जब ये बाध्य अवस्थाएँ अपने स्वयं के प्रतिकण होते हैं और आसानी से अलग नहीं होते हैं, तो उन्हें मेजराना शून्य मोड के रूप में जाना जाता है, जिसकी भौतिकविदों द्वारा कई वर्षों से मांग की जा रही है।

कंप्यूटिंग के लिए लाभ

- मेजराना शून्य मोड क्वांटम कंप्यूटिंग में सूचना की मूलभूत इकाइयों, क्वैबिट के लिए बढ़ी हुई स्थिरता प्रदान करते हैं। यहां तक कि अगर बाध्य स्थिति के भीतर एक इकाई परेशान है, तो समग्र रूप से क्वैबिट संरक्षित रह सकता है और एन्कोडेड जानकारी को बनाए रख सकता है।
- मेजराना शून्य मोड टोपोलॉजिकल क्वांटम कंप्यूटिंग को सक्षम कर सकते हैं, जो गैर-एबेलियन आंकड़ों का लाभ उठाता है। ये आँकड़े स्वतंत्रता की एक अतिरिक्त डिग्री पेश करते हैं, जिससे एल्गोरिदम को चरणों के निष्पादन के क्रम के आधार पर विभिन्न परिणाम उत्पन्न करने की अनुमति मिलती है।

चंद्रयान-3

खबरों में क्यों?

चंद्रमा के अज्ञात दक्षिणी ध्रुव का पता लगाने का भारत का मिशन

महत्वपूर्ण बिंदु

- चंद्रयान-3 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC) से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया। यह 2019 चंद्रयान-2 मिशन का अनुवर्ती है, जो आंशिक रूप से विफल हो गया था क्योंकि इसके लैंडर और रोवर चंद्रमा पर सॉफ्ट-लैंडिंग नहीं कर सके थे।
- चंद्रयान-3 अपने प्रक्षेपण के लगभग एक महीने बाद चंद्रमा की कक्षा में पहुंचेगा और इसके लैंडर, विक्रम और रोवर, प्रज्ञान के चंद्रमा पर उतरने की संभावना है।
- विशेष रूप से, नवीनतम मिशन की लैंडिंग साइट कमोबेश चंद्रयान-2 के समान ही है: 70 डिग्री अक्षांश पर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास। अगर सब कुछ ठीक रहा तो चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला मिशन बन जाएगा।

चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव क्यों?

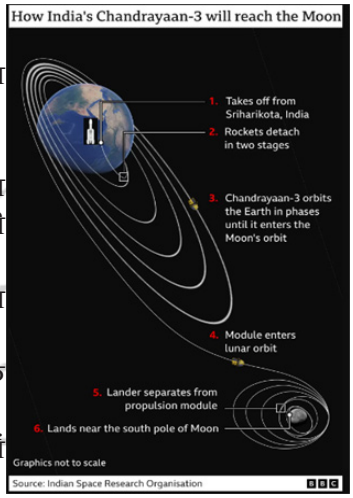

- अधिकांश चंद्रमा मिशन आमतौर पर ध्रुवों से दूर उतरते हैं, क्योंकि चंद्रमा के भूमध्य रेखा के पास अंतरिक्ष यान को उतारना बहुत आसान होता है।
- उस क्षेत्र का तापमान और परिदृश्य प्रौद्योगिकी के संचालन को आसान बनाता है।
- चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव अभी भी काफी हद तक अज्ञात है - वहां छाया में रहने वाला सतह क्षेत्र चंद्रमा के उत्तरी ध्रुव की तुलना में बहुत बड़ा है, जिसका अर्थ है कि स्थायी रूप से छाया वाले क्षेत्रों में पानी होने की संभावना है।
- ध्रुवीय क्षेत्र मुश्किल हैं क्योंकि कई हिस्से हर समय पूर्ण अंधकार में रहते हैं और वहां कभी भी सूरज की रोशनी नहीं होती है, तापमान -230 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है।
- हजारों किलोमीटर जितने बड़े बड़े गड्ढों की उपस्थिति के साथ-साथ ये स्थितियाँ उपकरणों के संचालन को कठिन बना सकती हैं।
- इसरो वैज्ञानिक चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्रों का पता लगाना चाहते हैं क्योंकि इस क्षेत्र में गहरे गड्ढों में बर्फ के अणु मौजूद हो सकते हैं। इसका संकेत चंद्रयान-1 मिशन से भी मिला था।
- इसके अलावा, चूँकि बर्फ़ीली तापमान हर चीज़ को फँसाए रखता है, चंद्रमा के इस क्षेत्र की स्थितियाँ प्रारंभिक सौर मंडल और पृथ्वी के इतिहास के बारे में सुराग दे सकती हैं।

चंद्रयान-1

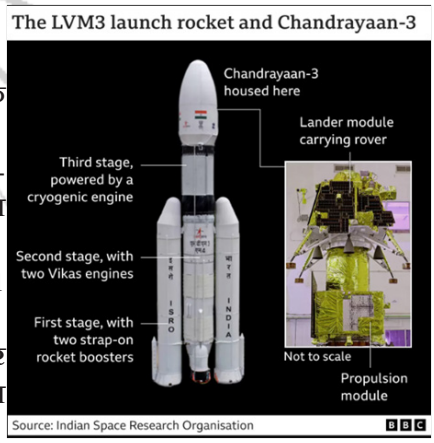

- चंद्रमा पर भारत का पहला मिशन, 2008 में SDSC शार, श्रीहरिकोटा से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया था।
- अंतरिक्ष यान चंद्रमा की रासायनिक, खनिज विज्ञान और फोटो-भूगर्भिक मानचित्रण के लिए चंद्रमा की सतह से 100 किमी की ऊंचाई पर चंद्रमा के चारों ओर परिक्रमा कर रहा था।
- अंतरिक्ष यान भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन और बुल्गारिया में निर्मित 11 वैज्ञानिक उपकरण ले गया।
- 2008 में देश का पहला चंद्रमा मिशन, जिसने चंद्रमा की सतह पर पानी की पहली और सबसे विस्तृत खोज की और स्थापित किया कि चंद्रमा पर दिन के समय वातावरण होता है।
- चंद्रयान-1 चंद्रमा पर दक्षिणी ध्रुव के पास 2008 में पानी की खोज करने वाला पहला मिशन था।

चंद्रयान-2

- इसमें एक ऑर्बिटर, एक लैंडर और एक रोवर भी शामिल था, जिसे जुलाई 2019 में लॉन्च किया गया था लेकिन यह केवल आंशिक रूप से सफल रहा। इसका ऑर्बिटर आज भी चंद्रमा का चक्कर लगा रहा है और उसका अध्ययन कर रहा है, लेकिन लैंडर-रोवर सॉफ्ट लैंडिंग करने में विफल रहा और टचडाउन के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यह "ब्रेकिंग सिस्टम में आखिरी मिनट की गड़बड़ी" के कारण था।

एओलस पवन उपग्रह

खबरों में क्यों?

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) का एयोलस पवन उपग्रह, कक्षा में अपने नियोजित जीवन को पूरा करने के बाद, पृथ्वी पर वापस आ रहा है।

महत्वपूर्ण बिंदु

एओलस पवन उपग्रह:

- एओलस पृथ्वी की हवाओं और ग्रह की जलवायु और मौसम के पैटर्न पर उनके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) द्वारा लॉन्च किया गया एक उपग्रह मिशन है।

- इस मिशन का नाम ग्रीक पौराणिक कथाओं में हवाओं के शासक एओलस के नाम पर रखा गया है।
- एओलस को 22 अगस्त, 2018 को फ्रेंच गुयाना के गुयाना अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया था।
- यह 1,360 किलोग्राम का उपग्रह है।

उद्देश्य:

- एयोलस मिशन का प्राथमिक लक्ष्य अंतरिक्ष से वैश्विक पवन प्रोफाइल को मापना है।
- इसका उद्देश्य मौसम की भविष्यवाणी में सुधार करने, जलवायु की गतिशीलता को समझने और पृथ्वी के वायुमंडलीय परिसंचरण के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाने के लिए पृथ्वी के वायुमंडल में हवा के पैटर्न पर सटीक और व्यापक डेटा प्रदान करना है।
- यह वैश्विक स्तर पर पृथ्वी की हवा की प्रोफाइल हासिल करने वाला पहला उपग्रह मिशन है।

इंस्ट्रुमेंटेशन:

- एओलस एक एकल उपकरण से सुसज्जित है जिसे वायुमंडलीय लेजर डॉपलर उपकरण (अलादीन) कहा जाता है।
- अलादीन एक डॉपलर विंड लिडार है, जिसका मतलब लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग है, जो ग्रह के चारों ओर चलने वाली हवाओं को मापेगा।

कार्बन-आधारित पेरोव्स्काइट सौर सेल (CPSC)

खबरों में क्यों?

हाल ही में, भारतीय वैज्ञानिकों ने स्वदेशी रूप से बेहतर थर्मल और नमी स्थिरता के साथ अत्यधिक स्थिर, कम लागत वाले कार्बन-आधारित पेरोव्स्काइट सौर सेल विकसित किए हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- हाल ही में, भारतीय वैज्ञानिकों ने असाधारण थर्मल और नमी स्थिरता के साथ कम लागत वाले कार्बन-आधारित पेरोव्स्काइट सौर सेल (CPSC) को सफलतापूर्वक विकसित किया है। यह सफलता ऑपरेशन के दौरान पेरोव्स्काइट फोटोवोल्टिक कोशिकाओं के सामने आने वाली गिरावट की चुनौतियों का समाधान करने में मदद कर सकती है।

प्रमुख बिंदु:

- गिरावट की चुनौतियों पर काबू पाना: पेरोव्स्काइट सौर सेल, जिन्हें तीसरी पीढ़ी का सौर सेल माना जाता है, सौर ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने के लिए आशाजनक क्षमता प्रदान करते हैं। हालाँकि, ऑपरेशन के दौरान गर्मी, नमी और प्रकाश जैसे पर्यावरणीय कारकों के संपर्क में आने पर उनके क्षरण का खतरा होता है, जिससे बड़े पैमाने पर व्यावसायीकरण में बाधा आती है।
- हरित ऊर्जा पदचिह्न को आगे बढ़ाना: पेरोव्स्काइट सौर सेल सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के लिए एक उभरती हुई तकनीक के रूप में वादा करते हैं। स्थिरता की चुनौतियों पर काबू पाकर, इस क्षेत्र में स्वदेशी अनुसंधान और विकास भारत की हरित ऊर्जा पदचिह्न के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।
- स्थिरता का मार्ग प्रशस्त करना: स्वदेशी रूप से विकसित सीपीएससी बेहतर स्थिरता प्रदर्शित करते हैं, डिवाइस स्थिरता के मुद्दों और निर्माण लागत को कम करते हैं।
- यह उपलब्धि भारत में पेरोव्स्काइट-संचालित आला उत्पादों के व्यावहारिक कार्यान्वयन और व्यावसायीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- नवीकरणीय ऊर्जा में भारत की भूमिका: भारत कार्बन उत्सर्जन को कम करने और पर्यावरण की रक्षा के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, पेरोव्स्काइट सौर सेल हरित ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के लिए एक भविष्य समाधान प्रदान करते हैं।
- स्थिर सौर कोशिकाओं का महत्व: सौर कोशिकाओं की स्थिरता दीर्घकालिक प्रदर्शन और स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में। नव विकसित सीपीएससी आर्द्रता और थर्मल तनाव का सामना कर सकते हैं, जिससे सौर ऊर्जा उद्योग में व्यापक रूप से अपनाने की उनकी क्षमता बढ़ जाती है।

पेरोव्स्काइट क्या है?

- पेरोव्स्काइट एक ऐसी सामग्री है जिसकी क्रिस्टल संरचना खनिज कैल्शियम टाइटेनियम ऑक्साइड के समान होती है जिसे पेरोव्स्काइट के नाम से भी जाना जाता है।
- यह पहली बार यूराल पर्वत में पाया गया था और इसका नाम लेव पेरोव्स्की के नाम पर रखा गया था जो रूसी भौगोलिक सोसायटी के संस्थापक थे।
- अपने अनूठे क्रिस्टल मेकअप के कारण, पेरोव्स्काइट अक्सर कई दिलचस्प गुण प्रदर्शित करते हैं, जिनमें सुपरकंडक्टिविटी, विशाल मैग्नेटोरेसिस्टेंस और फेरोइलेक्ट्रिसिटी शामिल हैं।
- आम तौर पर, पेरोव्स्काइट यौगिकों का रासायनिक सूत्र ABX3 होता है, जहां 'A' और 'B' धनायनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और एक्स एक आयन है जो दोनों से बंधता है।
- पेरोव्स्काइट बनाने के लिए बड़ी संख्या में विभिन्न तत्वों को एक साथ जोड़ा जा सकता है।
- इसकी संरचनागत लचीलेपन के कारण, वैज्ञानिक इन्सुलेटिंग, अर्धचालक, धातु और सुपरकंडक्टिंग विशेषताओं से भौतिक, ऑप्टिकल और विद्युत विशेषताओं की एक विस्तृत विविधता के लिए पेरोव्स्काइट क्रिस्टल को डिजाइन कर सकते हैं।

पेरोव्स्काइट सौर सेल (PSC) क्या हैं?

- पेरोव्स्काइट सोलर सेल (PSC) एक प्रकार का सौर सेल है जिसमें प्रकाश संचयन सक्रिय परत के रूप में पेरोव्स्काइट-संरचित यौगिक, आमतौर पर एक संकर कार्बनिक-अकार्बनिक सीसा या टिन हैलाइड-आधारित सामग्री शामिल होती है।
- पेरोव्स्काइट सौर सेल (PSC) पारंपरिक सिलिकॉन सौर कोशिकाओं के लिए एक आशाजनक विकल्प प्रदान करते हैं क्योंकि उनमें उच्च क्षमताएं और बहुत कम उत्पादन लागत होती है।

पेरोव्स्काइट फोटोवोल्टिक कोशिकाओं से संबंधित समस्याएं

- ऑपरेशन के दौरान जब वे गर्मी, नमी, प्रकाश और अन्य पर्यावरणीय कारकों के संपर्क में आते हैं तो उन्हें गिरावट की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- यह लंबी अवधि की स्थिरता उत्पाद के बड़े पैमाने पर व्यावसायीकरण में एक बड़ी बाधा है।

अपूरणीय टोकन (NFT)

खबरों में क्यों?

Google ने हाल ही में कहा था कि वह डेवलपर्स को प्ले स्टोर पर गेम पेश करने की अनुमति देगा, जहां खिलाड़ी नॉन-फंजिबल टोकन जैसी टोकन वाली डिजिटल संपत्ति खरीद, बेच और कमा सकते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- NFT अद्वितीय क्रिप्टोग्राफ़िक टोकन हैं जो ब्लॉकचेन पर मौजूद होते हैं और इन्हें दोहराया नहीं जा सकता है।
- वे डिजिटल या वास्तविक दुनिया की वस्तुओं जैसे कलाकृति, फोटोग्राफ, गीत, वीडियो, रियल एस्टेट, व्यक्तियों की पहचान, संपत्ति के अधिकार और बहुत कुछ का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।
- इस प्रकार, NFT ऐसी संपत्तियां हैं जिन्हें ब्लॉकचेन के माध्यम से टोकन किया गया है। उन्हें विशिष्ट पहचान कोड और मेटाडेटा सौंपा गया है जो उन्हें अन्य टोकन से अलग करता है।
- 'अपूरणीय' शब्द का सीधा-सा अर्थ है कि प्रत्येक टोकन मुद्रा जैसी परिवर्तनीय मुद्रा के विपरीत अलग है (एक दस रुपये का नोट दूसरे के लिए बदला जा सकता है इत्यादि)।
- NFT का कारोबार किया जा सकता है और पैसे, क्रिप्टोकरेंसी या अन्य एनएफटी के लिए विनिमय किया जा सकता है - यह सब बाजार और मालिकों द्वारा उन पर लगाए गए मूल्य पर निर्भर करता है।
- NFT लेनदेन ब्लॉकचेन पर दर्ज किए जाते हैं, जो एक डिजिटल सार्वजनिक बहीखाता है, जिसमें अधिकांश NFT एथेरियम ब्लॉकचेन का हिस्सा होते हैं।
- NFT 2021 में लोकप्रिय हो गए, जब उन्हें कलाकारों द्वारा अपने काम का मुद्रीकरण करने के एक सुविधाजनक तरीके के रूप में देखा जाने लगा।

ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी क्या है?

- ब्लॉकचेन अनिवार्य रूप से लेनदेन का एक डिजिटल खाता है जिसे ब्लॉकचेन पर कंप्यूटर सिस्टम के पूरे नेटवर्क में डुप्लिकेट और वितरित किया जाता है।
- श्रृंखला के प्रत्येक ब्लॉक में कई लेन-देन होते हैं, और जब भी ब्लॉकचेन पर कोई नया लेन-देन होता है, तो उस लेन-देन का रिकॉर्ड प्रत्येक भागीदार के बही-खाते में जोड़ा जाता है।
- विकेंद्रीकृत ब्लॉकचेन अपरिवर्तनीय हैं, जिसका अर्थ है कि दर्ज किया गया डेटा अपरिवर्तनीय है।
- इसका मतलब यह है कि यदि एक श्रृंखला में एक ब्लॉक बदला गया था, तो यह तुरंत स्पष्ट हो जाएगा कि इसके साथ छेड़छाड़ की गई है।

बार्ड चैटबॉट

खबरों में क्यों?

Google की मूल कंपनी Alphabet अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चैटबॉट बार्ड को यूरोप और ब्राज़ील में लॉन्च कर रही है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- बार्ड और चैटजीपीटी, दोनों जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके आसानी से मानव-जैसे उत्तर उत्पन्न करते हैं। चैटबॉट उपयोगकर्ताओं के साथ बातचीत करने में सक्षम हैं और असंख्य संकेतों का उत्तर दे सकते हैं।
- पिछले साल चैटजीपीटी का लॉन्च एक ब्लॉकबस्टर साबित हुआ और यह जनता के लिए उपलब्ध होने वाला पहला ऐसा उत्पाद था।
- Google की मूल कंपनी ने यूरोपीय संघ और ब्राज़ील में ChatGPT के लिए अपने चैटबॉट प्रतिद्वंद्वी को लॉन्च करने की घोषणा की है, क्योंकि तकनीकी कंपनियां कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर हावी होने के लिए अपनी प्रतिस्पर्धा बढ़ा रही हैं।
- बार्ड का विस्तारित रोलआउट एलोन मस्क द्वारा चैटजीपीटी निर्माता Open AI को चुनौती देने के लिए AI कंपनी XAI के लॉन्च की घोषणा के कुछ घंटों बाद आया है, जिस पर अरबपति ने "जागृत" राजनीति के पक्ष में पक्षपाती होने का आरोप लगाया है।
- Google प्रतिद्वंद्वी Microsoft, जिसने OpenAI में 10 बिलियन डॉलर के निवेश की घोषणा की है, खोज इंजन बिंग सहित अपने उत्पादों में AI कार्यों को एकीकृत करने के लिए काम कर रहा है।
- Facebook का मालिक मेटा, OpenAI और Google को टक्कर देने के लिए अपने AI मॉडल LLaMA के व्यावसायिक संस्करण पर भी काम कर रहा है।

बार्ड चैटबॉट:

- यह Google की मूल कंपनी Alphabet द्वारा विकसित एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) चैटबॉट है।
- यह जेनरेटिव एआई का एक उदाहरण है जो इंसानों की तरह सवालों का जवाब दे सकता है।

विशेषताएँ:

- बार्ड अब 27 EU देशों और ब्राज़ील के साथ-साथ अरबी, चीनी, जर्मन, हिंदी और स्पेनिश सहित 40 नई भाषाओं में उपलब्ध है।
- उपयोगकर्ता बार्ड की प्रतिक्रियाओं के स्वर और शैली को सरल, लंबे, छोटे, पेशेवर या आकस्मिक में बदल सकते हैं।
- वे बातचीत को पिन या नाम बदल सकते हैं, अधिक स्थानों पर कोड निर्यात कर सकते हैं और संकेतों में छवियों का उपयोग कर सकते हैं।
- Google में चैटबॉट के लिए अपने उत्तर आपको वापस बोलने और संकेतों का उत्तर देने की क्षमता शामिल है जिसमें छवियां भी शामिल हैं।

जनरेटिव A.I.

- जेनरेटिव AI (जेनएआई) एक प्रकार का AI है जो छवियों, वीडियो, ऑडियो, टेक्स्ट और 3D मॉडल जैसे विभिन्न प्रकार के डेटा बना सकता है।
- यह मौजूदा डेटा से पैटर्न सीखकर, फिर इस ज्ञान का उपयोग करके नए और अद्वितीय आउटपुट उत्पन्न करता है।
- GenAI अत्यधिक यथार्थवादी और जटिल सामग्री का उत्पादन करने में सक्षम है जो मानव रचनात्मकता की नकल करती है, जो इसे गेमिंग, मनोरंजन और उत्पाद डिजाइन जैसे कई उद्योगों के लिए एक मूल्यवान उपकरण बनाती है।

दुर्लभ बीमारियों के लिए राष्ट्रीय नीति 2021

खबरों में क्यों?

हाल ही में, जीएसटी परिषद ने कहा कि दुर्लभ बीमारियों के लिए राष्ट्रीय नीति, 2021 के तहत सूचीबद्ध दुर्लभ बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग की जाने वाली दवाओं और विशेष चिकित्सा प्रयोजनों के लिए भोजन (FSMP) पर एकीकृत माल और सेवा कर (IGST) से छूट दी जाएगी, जब व्यक्तिगत उपयोग के लिए आयात किया जाएगा।

महत्वपूर्ण बिंदु

- इसका उद्देश्य स्वदेशी अनुसंधान पर अधिक ध्यान केंद्रित करके दुर्लभ बीमारियों के इलाज की उच्च लागत को कम करना है।
- यह एक बार के इलाज के लिए रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान करता है। 20 लाख, एक क्राउड फंडिंग तंत्र की शुरुआत करता है, दुर्लभ बीमारियों की एक रजिस्ट्री बनाता है और शीघ्र पता लगाने की सुविधा प्रदान करता है।

दुर्लभ बीमारियों की पहचान की गई है और उन्हें 3 समूहों में वर्गीकृत किया गया है:

  - समूह -1: एक बार उपचारात्मक उपचार के लिए उत्तरदायी विकार।
  - समूह -2: जिन रोगों के उपचार की अपेक्षाकृत कम लागत और लाभ के लिए दीर्घकालिक/आजीवन उपचार की आवश्यकता होती है, उन्हें साहित्य में दर्ज किया गया है और वार्षिक या अधिक लगातार निगरानी की आवश्यकता होती है।
  - समूह -3: ऐसे रोग जिनके लिए निश्चित उपचार उपलब्ध है लेकिन लाभ, बहुत अधिक लागत और आजीवन चिकित्सा के लिए इष्टतम रोगी चयन करना चुनौती है।
- दुर्लभ बीमारी के इलाज के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए, आस-पास के क्षेत्र का रोगी निकटतम उत्कृष्टता केंद्र से संपर्क कर अपना मूल्यांकन करा सकता है और लाभ प्राप्त कर सकता है।
- दुर्लभ बीमारियों के निदान, रोकथाम और उपचार के लिए आठ (08) उत्कृष्टता केंद्र (COE) की पहचान की गई है।
- उत्कृष्टता केंद्र: उत्कृष्टता केंद्रों को स्क्रीनिंग, परीक्षण, उपचार के लिए बुनियादी ढांचे के विकास के लिए प्रत्येक को अधिकतम 5 करोड़ रुपये का एकमुश्त अनुदान प्रदान किया जाएगा।

मध्यम रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर

खबरों में क्यों?

हाल ही में, वैज्ञानिकों ने मॉडरेट रेजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर से उत्पन्न आंकड़ों का विश्लेषण किया है और कहा है कि जलवायु परिवर्तन ने दुनिया के 56 प्रतिशत महासागरों का रंग बदल दिया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- उष्ण कटिबंध में पानी हरा हो गया है और विशेष रूप से दक्षिणी हिंद महासागर में महत्वपूर्ण रंग परिवर्तन देखा गया है।
- समुद्र के रंग में परिवर्तन फाइटोप्लांकटन समुदायों में बदलाव का संकेत देता है - चूंकि समुद्री खाद्य जाल के आधार के रूप में समुद्र में अधिकांश जीवन के लिए फाइटोप्लांकटन आवश्यक है।
- मानव आंखें सूक्ष्म रंग परिवर्तनों को अलग करने के लिए पर्याप्त संवेदनशील नहीं हैं।
- महासागर नीले दिखाई देते हैं, लेकिन असली रंग में सूक्ष्म तरंग दैर्ध्य का मिश्रण हो सकता है, नीले से हरे और यहां तक कि लाल तक।
- हरा रंग क्लोरोफिल से आता है, एक वर्णक जो फाइटोप्लांकटन को भोजन बनाने में मदद करता है।
- जनसंख्या में वृद्धि या गिरावट के कारण रंग में परिवर्तन उन जीवों को प्रभावित करेगा जो प्लवक पर भोजन करते हैं।
- हालाँकि दक्षिणी हिंद महासागर में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा जा रहा है, लेकिन भारत के पास का पानी उसी प्रवृत्ति का अनुसरण नहीं कर रहा है।

मॉडरेट रेजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर (MODIS) क्या है?

- यह टेरा (मूल रूप से EOS AM-1 के रूप में जाना जाता है) और एक्वा (मूल रूप से EOS PM-1 के रूप में जाना जाता है) और एक्वा (मूल रूप से EOS PM-1 के रूप में जाना जाता है) उपग्रहों पर एक प्रमुख उपकरण है।
- पृथ्वी के चारों ओर टेरा की कक्षा का समय इस प्रकार है कि यह सुबह भूमध्य रेखा के पार उत्तर से दक्षिण की ओर गुजरती है, जबकि एक्वा दोपहर में भूमध्य रेखा के पार दक्षिण से उत्तर की ओर गुजरती है।
- टेरा MODIS और एक्वा MODIS हर 1 से 2 दिनों में पूरी पृथ्वी की सतह को देख रहे हैं, 36 वर्णक्रमीय बैंड, या तरंग दैर्ध्य के समूहों में डेटा प्राप्त कर रहे हैं।
- ये डेटा वैश्विक गतिशीलता और भूमि, महासागरों और निचले वायुमंडल में होने वाली प्रक्रियाओं के बारे में हमारी समझ में सुधार करेगा।
- महत्व: यह हमारे पर्यावरण की सुरक्षा के संबंध में ठोस निर्णय लेने में नीति निर्माताओं की सहायता करने के लिए वैश्विक परिवर्तन की सटीक भविष्यवाणी करने में सक्षम, मान्य, वैश्विक, इंटरैक्टिव पृथ्वी प्रणाली मॉडल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

लॉन्ग मार्च 10 रॉकेट

खबरों में क्यों?

चीन ने हाल ही में मानवयुक्त चंद्रमा लैंडिंग मिशनों के लिए डिज़ाइन किए गए एक नए वाहक रॉकेट लॉन्ग मार्च -10 के मुख्य इंजन पर एक परीक्षण परीक्षण किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- चीन के रॉकेट वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने एक नए प्रकार के इंजन पर एक बड़ा परीक्षण किया, जो चंद्रमा पर अपने अंतरिक्ष यात्रियों को उतारने के देश के प्रयास में सबसे महत्वपूर्ण घटक होगा।
- मल्टीपल-इग्निशन परीक्षण शानक्सी प्रांत के वेंग्ज़ियान काउंटी में एक इंजन परीक्षण सुविधा में हुआ और इंजन की संचालन प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक सत्यापित किया गया।
- यह चीन का नया वाहक रॉकेट है जिसे मानवयुक्त चंद्रमा लैंडिंग मिशन के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- रॉकेट एक चंद्र लैंडर के साथ एक क्रू मॉड्यूल को पृथ्वी-चंद्रमा स्थानांतरण कक्षा में ले जाने में सक्षम होगा।

विशेषताएँ:

- इसमें एक मॉड्यूलर डिज़ाइन है, जिसमें एक सर्विस कैप्सूल, एक रिटर्न कैप्सूल और एक एस्केप टावर शामिल है, जो इसे अपने आप में एक लघु अंतरिक्ष स्टेशन जैसा बनाता है।
- कमांड मॉड्यूल और रहने वाले क्वार्टर एक आधे हिस्से का निर्माण करते हैं, जबकि ऊर्जा और पावर मॉड्यूल दूसरे आधे हिस्से का निर्माण करते हैं।
- लचीला दृष्टिकोण घटकों को पुन: उपयोग करने की अनुमति देता है।
- क्रू कैप्सूल को चंद्रमा के साथ-साथ पृथ्वी की कक्षा में संचालन के लिए डिज़ाइन किया गया है। क्रू मॉड्यूल की क्षमता चार से सात मनुष्यों के बीच है।
- वाहन प्रणोदक के रूप में तरल हाइड्रोजन, तरल ऑक्सीजन और मिट्टी के तेल का उपयोग करेगा।
- इसकी लंबाई 92 मीटर होगी और यह पृथ्वी-चंद्रमा स्थानांतरण कक्षा में न्यूनतम 27 टन वजन पहुंचाने में सक्षम होगा।
- बिना बूस्टर वाले वाहन का एक विन्यास भी है जो ताइकोनॉट्स (अंतरिक्ष यात्री के लिए चीनी शब्द) को तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचा सकता है।

तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन के बारे में:

- तियांगोंग (चीनी भाषा में "हेवेनली पैलेस" के लिए) एक मॉड्यूलर अंतरिक्ष स्टेशन है जिसका निर्माण चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन (CNSA) द्वारा किया जा रहा है।
- यह चीन द्वारा निर्मित पहला अंतरिक्ष स्टेशन है।
- तियांगोंग वर्तमान में पृथ्वी की निचली कक्षा (LEO) में है और इसके 2028 तक चालू होने की उम्मीद है।
- यह तीन मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन है। कोर मॉड्यूल तियान्हे को अप्रैल 2021 में लॉन्च किया गया, इसके बाद 2022 में वेंटियन और मेंगटियन प्रयोग मॉड्यूल लॉन्च किया गया।
- यह स्टेशन अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) के आकार का है, और इसमें अधिकतम तीन अंतरिक्ष यात्री रह सकते हैं।
- सोवियत संघ (अब रूस) और अमेरिका के बाद चीन तीसरा देश है जिसने दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजा है और अंतरिक्ष स्टेशन बनाया है।

6 सामाजिक मुद्दे

डेटा अधिनियम

खबरों में क्यों?

यूरोपीय संघ डेटा अधिनियम पर समझौते पर पहुंचा - औद्योगिक डेटा उपयोग के लिए नए नियम आने वाले हैं

महत्वपूर्ण बिंदु

- यूरोपीय संसद और यूरोपीय संघ की परिषद द्वारा इस सप्ताह व्यापारिक ब्लॉक में औद्योगिक डेटा के उपयोग के लिए नए नियमों पर राजनीतिक समझौते पर पहुंचने के बाद, यूरोपीय आयोग अपने प्रस्तावित EU डेटा अधिनियम की दिशा में आगे बढ़ रहा है।
- नियम फरवरी 2022 में आयोग द्वारा प्रस्तावित किए गए थे और अब दो सह-विधायकों द्वारा औपचारिक अनुमोदन के अधीन हैं।

यूरोपीय आयोग (EC) की रूपरेखा है कि डेटा अधिनियम में शामिल हैं:

- उपाय जो कनेक्टेड डिवाइसों के उपयोगकर्ताओं को इन उपकरणों और इन उपकरणों से संबंधित सेवाओं द्वारा उत्पन्न डेटा तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं - EC का कहना है कि उपयोगकर्ता इस तरह के डेटा को तीसरे पक्ष के साथ इस उम्मीद के साथ साझा करने में सक्षम होंगे कि इससे आफ्टरमार्केट सेवाओं और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।
- एकतरफा लगाए गए अनुचित अनुबंध शर्तों से सुरक्षा प्रदान करने के उपाय - EC का उद्देश्य यूरोपीय संघ की कंपनियों को अन्यायपूर्ण समझौतों से बचाना, निष्पक्ष बातचीत को बढ़ावा देना और SME को डिजिटल बाजार में अधिक आत्मविश्वास से भाग लेने में सक्षम बनाना है।
- सार्वजनिक क्षेत्र के निकायों के लिए निजी क्षेत्र द्वारा रखे गए डेटा तक पहुंचने और उपयोग करने के लिए तंत्र - सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन बाढ़ और जंगल की आग जैसी सार्वजनिक आपात स्थितियों के मामलों में, या कानूनी जनादेश लागू करते समय जहां आवश्यक डेटा है, डेटा तक पहुंच और उपयोग करने में सक्षम होंगे।
- नए नियम जो ग्राहकों को विभिन्न क्लाउड डेटा-प्रोसेसिंग सेवा प्रदाताओं के बीच स्विच करने की स्वतंत्रता देते हैं - EC का कहना है कि इन नियमों का उद्देश्य विक्रेता लॉक-इन को रोकते हुए बाजार में प्रतिस्पर्धा और पसंद को बढ़ावा देना है। इसके अतिरिक्त, डेटा अधिनियम में अधिक विश्वसनीय और सुरक्षित डेटा-प्रोसेसिंग वातावरण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, गैरकानूनी डेटा ट्रांसफर के खिलाफ सुरक्षा उपाय शामिल हैं।
- अंतरसंचालनीयता मानकों के विकास को बढ़ावा देने के उपाय - इसका उद्देश्य यूरोपीय संघ मानकीकरण रणनीति के अनुरूप अधिक डेटा-साझाकरण और डेटा प्रोसेसिंग को प्रोत्साहित करना है।

जुर्माना

- EC प्रस्तावित EU डेटा अधिनियम के उल्लंघन के लिए दंड भी पेश करेगा, जहां प्रत्येक सदस्य राज्य में पर्यवेक्षी डेटा संरक्षण प्राधिकरण जुर्माना लगा सकते हैं।
- जुर्माना GDPR जुर्माने के अनुरूप होगा, जो €20 मिलियन या वैश्विक वार्षिक कारोबार का 4% (जो भी अधिक हो) तक है।

अधिनियम का महत्व

- व्यापार रहस्यों और बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- डेटा से मूल्य के आवंटन में निष्पक्षता सुनिश्चित करें और प्रतिस्पर्धी डेटा बाजार को प्रोत्साहित करें
- डेटा-संचालित नवाचार के लिए अवसर खोलें और डेटा को सभी के लिए अधिक सुलभ बनाएं।

डेटा स्क्रैपिंग

खबरों में क्यों?

ट्विटर ने डेटा स्क्रैपिंग से निपटने के लिए अस्थायी रीडिंग सीमा की घोषणा की।

महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रत्येक उपयोगकर्ता द्वारा एक दिन में देखे जा सकने वाले ट्वीट्स की संख्या अब प्रतिबंधित होगी, जिसे "दर सीमा" कहा जाएगा।
- इन प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप उपयोगकर्ताओं को अपनी दैनिक सीमा समाप्त होने के बाद एक दिन के लिए ट्विटर से बाहर कर दिया जा सकता है।
- यदि राशि उन ट्वीट्स को संदर्भित करती है जिन्हें एक उपयोगकर्ता स्क्रॉल करता है, तो सक्रिय उपयोगकर्ताओं के लिए ऐसी सीमाएं जल्दी से पार हो सकती हैं।

RAO'S ACADEMY

डेटा स्क्रैपिंग का क्या मतलब है?

- मस्क ने डेटा स्क्रैपिंग को दोषी ठहराया है, एक ऐसी प्रथा जिसके माध्यम से फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों जैसी वेबसाइटों से बड़ी मात्रा में डेटा लिया जाता है।
- 2023 ब्लूमबर्ग रिपोर्ट के अनुसार, डेटा पुनर्प्राप्त करने के लिए संगठनों द्वारा वेबसाइटों को 'स्क्रैप' किया जा सकता है जो उन्हें प्रतिस्पर्धियों पर नज़र रखने, विशिष्ट दर्शकों को बेहतर ढंग से समझने, बाज़ार के रुझानों का पालन करने और कीमतों की तुलना करने में मदद कर सकता है।
- हालाँकि, जब स्क्रैपिंग संपर्क विवरण जैसी व्यक्तिगत जानकारी को लक्षित करती है तो यह गोपनीयता के लिए खतरा पैदा कर सकती है और यह यूरोपीय संघ के कानून के खिलाफ है यदि कंपनियां तकनीकी और कानूनी माध्यमों से इसे रोकने का प्रयास नहीं करती हैं। नवंबर 2022 में, उपयोगकर्ता डेटा को तीसरे पक्ष द्वारा स्क्रैप किए जाने से बचाने में विफल रहने के लिए यूरोपीय संघ द्वारा मेटा पर €265 मिलियन ($277 मिलियन) का जुर्माना लगाया गया था।

क्या ट्विटर पर दरें पहले से मौजूद थीं?

- हाँ, लेकिन केवल उन कार्यों के लिए जैसे कोई प्रतिदिन कितने ट्वीट पोस्ट कर सकता है, कितने अकाउंट एक दिन में फ़ॉलो कर सकते हैं और कितने प्रत्यक्ष संदेश प्रतिदिन दूसरों को भेज सकते हैं। ऐसा इसलिए था क्योंकि वेबसाइट के अनुसार, "सीमाएँ ट्विटर के पर्दे के पीछे के हिस्से पर कुछ तनाव को कम करती हैं और डाउनटाइम और त्रुटि पृष्ठों को कम करती हैं", मूल रूप से वेबसाइट पर बहुत अधिक डेटा का बोझ न डालें।
- लेकिन देखे जाने वाले ट्वीट्स की संख्या पर ऐसी कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई थी और दिसंबर 2022 तक ट्वीट्स पर व्यूज़ नहीं देखे जा सकेंगे। केवल रीट्वीट, ट्वीट पर लाइक और कोट ट्वीट ही नजर आ रहे थे।

अब ट्वीट्स को सीमा से परे कौन एक्सेस कर सकता है?

- यह सत्यापित ट्विटर उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध है, जो राजस्व बढ़ाने के लिए अक्टूबर 2022 में मस्क के अधिग्रहण के बाद शुरू की गई $8 प्रति माह सदस्यता सेवा का भुगतान कर रहे हैं।
- जबकि ट्विटर ब्लू, सशुल्क सदस्यता सेवा, पहली बार 2021 में आई, मस्क ने इसे ख़तरनाक गति से नई सुविधाओं के साथ शुरू किया है। पहले के विपरीत, अब यह सेवा उपयोगकर्ता को एक सत्यापित बैज, ब्लू टिक भी प्रदान करती है।
- लेकिन परिवर्तन अक्सर थोड़ी चेतावनी के साथ पेश किए गए हैं और अक्सर उन्हें तुरंत उलट दिया गया है, जिससे भ्रम पैदा होता है। यह भी संदिग्ध है कि क्या इन प्रयासों से कंपनी के लिए राजस्व विकल्पों में सुधार हुआ है।

प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI)

खबरों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने वर्ष 2021-22 के लिए राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के लिए प्रदर्शन ग्रेडिंग इंडेक्स 2.0 पर रिपोर्ट जारी की।

महत्वपूर्ण बिंदु

- हाल ही में, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (MOE) ने जिला स्तर पर स्कूल शिक्षा प्रणाली के प्रदर्शन का आकलन करते हुए 2020-21 और 2021-22 के लिए जिलों के लिए प्रदर्शन ग्रेडिंग इंडेक्स (PGI-D) संयुक्त रिपोर्ट जारी की है।
- MoE ने वर्ष 2021-22 के लिए राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के लिए प्रदर्शन ग्रेडिंग इंडेक्स (PGI) 2.0 पर एक रिपोर्ट भी जारी की है।
- PGI 2.0 का उद्देश्य राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को गुणवत्ता में सुधार के संदर्भ में इष्टतम शिक्षा परिणाम प्राप्त करने के लिए बहु-आयामी हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित करना है और साथ ही राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा अपनाई जाने वाली सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करना है, जिन्हें जहां भी संभव हो दोहराया जा सकता है।
- स्कूली शिक्षा में शिक्षक शिक्षा पर जोर देने के लिए, शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण (TET) पर एक अलग श्रेणी और डोमेन अब पीजीआई 2.0 में जोड़ा गया है

प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक के बारे में

- प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय द्वारा तैयार किया जाता है। इसे पहली बार साल 2017-18 के लिए जारी किया गया था।
- यह एक सूचकांक बनाकर राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर पर स्कूली शिक्षा प्रणाली के प्रदर्शन का आकलन करता है।
- PGI 2.0 संरचना में 73 संकेतकों में 1000 अंकों का कुल वेटेज शामिल है, जिन्हें 2 श्रेणियों अर्थात परिणाम और शासन और प्रबंधन के अंतर्गत समूहीकृत किया गया है।
- इन श्रेणियों को आगे 6 डोमेन में विभाजित किया गया है, अर्थात, सीखने के परिणाम (LO), पहुंच (A), बुनियादी ढांचे और सुविधाएं (IF), इक्विटी (E), शासन प्रक्रियाएं (GP) और शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण (TET)।
- राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा प्राप्त अंकों को 10 ग्रेडों में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें उच्चतम प्राप्य ग्रेड दक्ष है, जो कुल 1000 अंकों में से 940 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले राज्य/केंद्रशासित प्रदेश के लिए है।
- सबसे निचला ग्रेड आकांशी-3 है जो 460 तक के स्कोर के लिए है।

राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा प्राप्त ग्रेड – 2021-22

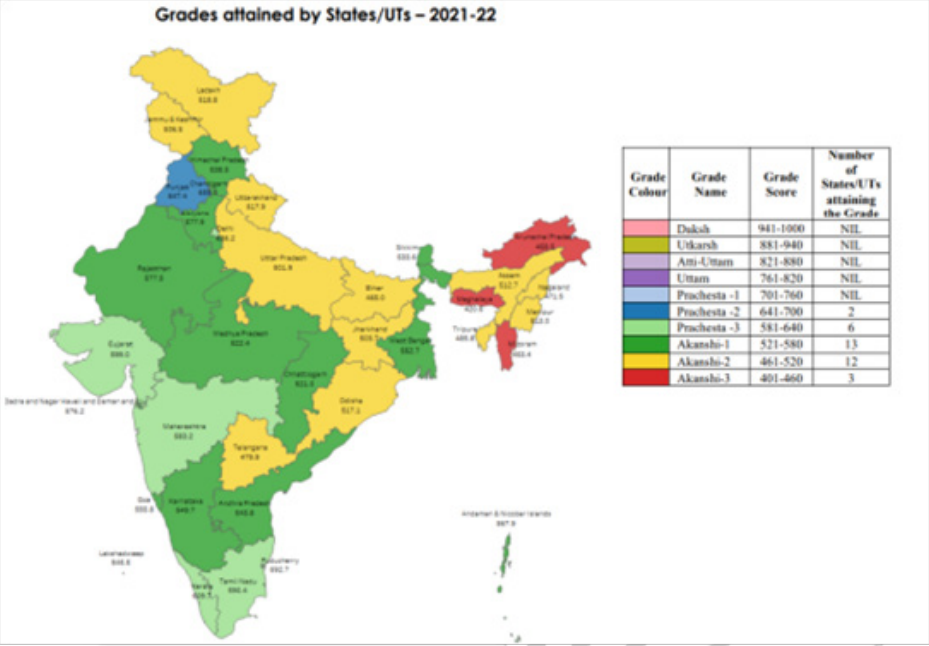

Grade Colour	Grade Name	Grade Score	Number of States/UTs attaining the Grade
	Daksh	941-1000	NIL
	Utkarsh	881-940	NIL
	Ati-Uttam	821-880	NIL
	Uttam	761-820	NIL
	Prachesta -1	701-760	NIL
	Prachesta -2	641-700	2
	Prachesta -3	581-640	6
	Akanshi-1	521-580	13
	Akanshi-2	461-520	12
	Akanshi-3	401-460	3

अंतरराज्यीय असमानता:

- 2021-22 में राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा प्राप्त अधिकतम और न्यूनतम स्कोर क्रमशः 659.01 और 420.64 हैं।
- राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा प्राप्त अधिकतम और न्यूनतम अंकों के बीच विचलन 238.37 या अधिकतम अंकों का 23.8% है, जो दर्शाता है कि, राज्यों अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और मिजोरम को शीर्ष स्थान पर पहुंचने के लिए अधिक प्रयास करना होगा।
- 2017-18 में यह असमानता 51% थी जो दर्शाती है कि, पीजीआई ने पिछले कुछ वर्षों में राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के बीच प्रदर्शन अंतर को पाटने में भी मदद की है, जो सरकार के पूर्व की ओर देखो नीति जैसे प्रयासों के कारण हो सकता है।
- अंतरराज्यीय अंतर में कमी साक्ष्य आधारित पीजीआई के माध्यम से योजनाओं की करीबी निगरानी के कारण भी है, जिससे प्रदर्शन करने वाले और आकांक्षी दोनों राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को अपने प्रदर्शन में सुधार करने में मदद मिली होगी।

सिंधु जल संधि

खबरों में क्यों?

जब पाकिस्तान ने IWT की व्याख्या और आवेदन को संबोधित करने के लिए स्थायी मध्यस्थता न्यायालय में मध्यस्थता शुरू की तो भारत ने आपत्ति जताई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत ने घोषणा की कि वह पाकिस्तान के साथ 62 साल पुरानी सिंधु जल संधि (IWT) को संशोधित करना चाहता है, जिसका हवाला देते हुए उसने जम्मू और कश्मीर दोनों में किशनगंगा और रतले जलविद्युत परियोजनाओं पर विवादों को सुलझाने में पाकिस्तान की "हठधर्मिता" का हवाला दिया।
- पाकिस्तान ने दो पनबिजली परियोजनाओं - किशनगंगा और रतले के कुछ डिजाइन तत्वों के लिए सिंधु जल संधि (IWT) की व्याख्या और आवेदन के संबंध में हेग स्थित स्थायी मध्यस्थता न्यायालय में मध्यस्थता शुरू की।

सिंधु जल संधि (IWT)

- सिंधु जल संधि भारत और पाकिस्तान के बीच एक जल-वितरण संधि है, जिस पर विश्व बैंक की मध्यस्थता में 1960 में कराची में हस्ताक्षर किए गए थे।
- इस समझौते के अनुसार भारत की तीन पूर्वी नदियों ब्यास, रावी और सतलज में बहने वाले पानी का नियंत्रण भारत को दे दिया गया।
- भारत की तीन पश्चिमी नदियों सिंधु, चिनाब और झेलम में बहने वाले पानी का नियंत्रण पाकिस्तान को दे दिया गया।

पाकिस्तान की हठधर्मिता पर भारत की आपत्ति

- भारत सरकार ने पाकिस्तान को नोटिस जारी कर सिंधु जल संधि में संशोधन के लिए बातचीत का आह्वान किया है।
- विवादित जलविद्युत परियोजनाएँ: किशनगंगा और रतले: यह नोटिस जम्मू और कश्मीर में दो भारतीय जलविद्युत परियोजनाओं पर पाकिस्तान की आपत्तियों के जवाब में है: 330MW किशनगंगा जलविद्युत परियोजना और 850MW रतले जलविद्युत परियोजना।
- भारत ने 2006 से तर्क दिया है कि ये परियोजनाएं संधि के प्रावधानों का अनुपालन करती हैं, लेकिन पाकिस्तान ने द्विपक्षीय तंत्र - विशेषज्ञों का स्थायी सिंधु आयोग जो नियमित रूप से मिलता है, में भारत के साथ बातचीत समाप्त करने से इनकार कर दिया है।

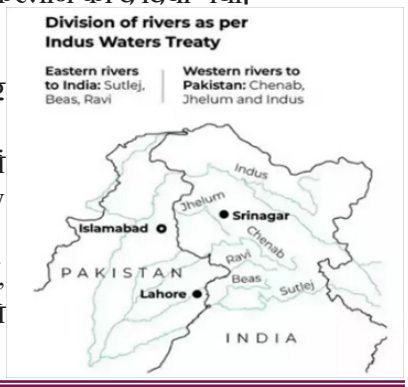

- विश्व बैंक का हस्तक्षेप: विश्व बैंक ने एक तटस्थ विशेषज्ञ नियुक्त किया, लेकिन पाकिस्तान ने मामले की सुनवाई हेग में करने पर जोर दिया, जिससे भारत के साथ असहमति पैदा हुई।
- भारत का बहिष्कार: भारत ने तटस्थ विशेषज्ञ के साथ सुनवाई में भाग लिया लेकिन हेग में मध्यस्थता न्यायालय का बहिष्कार करने का फैसला किया, यह दावा करते हुए कि वार्ता एक गतिरोध पर पहुंच गई है।
- मध्यस्थता न्यायालय भारत की प्रत्येक आपत्ति को खारिज करते हुए सर्वसम्मति से एक बाध्यकारी निर्णय पारित करता है।
- अदालत यह निर्धारित करती है कि उसके पास मध्यस्थता के लिए पाकिस्तान के अनुरोध में प्रस्तुत विवादों पर विचार करने और निर्धारित करने की क्षमता है

भारी वर्षा

खबरों में क्यों?

पश्चिमी विक्षोभ, मानसून वृद्धि की परस्पर क्रिया के कारण भारत में भारी वर्षा

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने हिमाचल, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा सहित उत्तर-पश्चिमी राज्यों में भारी बारिश के कारण तबाही मचाई है।
- IMD ने कहा कि क्षेत्र में अत्यधिक भारी वर्षा मानसूनी हवाओं और पश्चिमी विक्षोभ के संगम के कारण हुई।

पश्चिमी विक्षोभ क्या हैं?

- पश्चिमी विक्षोभ एक निम्न दबाव प्रणाली है जो भूमध्य सागर से उत्पन्न होती है और मध्य एशिया में पूर्व की ओर बढ़ती है। जैसे ही यह पूरे क्षेत्र में यात्रा करता है, यह मौसम के पैटर्न में बदलाव लाता है, खासकर उत्तरी भारत, पाकिस्तान और नेपाल में।
- WD को आमतौर पर ऊपरी वायुमंडल में नमी ले जाने के लिए जाना जाता है, इसके उष्णकटिबंधीय समकक्षों के विपरीत जहां नमी निचले वायुमंडल में ले जाती है। WD अक्सर होते हैं और उनका दौर लंबा या छोटा हो सकता है।

पश्चिमी विक्षोभ मानसून से किस प्रकार भिन्न हैं?

- भारत में, यह पुष्टि की गई है कि मानसून जुलाई में आता है और सितंबर तक रहता है। हालाँकि, WDs के आगमन का कोई निश्चित समय नहीं है। इसके अलावा, जबकि मानसून की अवधि लगभग तीन महीने है, WD बहुत कम समय तक रह सकता है।

पश्चिमी विक्षोभ का पूर्वानुमान कैसा होता है?

- मौसम विभाग के अनुसार, आगामी पश्चिमी विक्षोभ की भविष्यवाणी उसके आने से लगभग छह दिन पहले ही की जा सकती है। इस पर नजर रखने के लिए संबंधित मौसम विभाग हर आधे घंटे में भूमध्यसागरीय क्षेत्र की गतिविधियों पर नजर रखते हैं।
- उत्तर-पश्चिम भारत में अधिकांश शीतकालीन और प्री-मानसून सीज़न की वर्षा पश्चिमी विक्षोभ के कारण होती है।
- इस दौरान, सतह के गर्म होने के बाद वातावरण में अस्थिरता के कारण प्री-मानसून बारिश होती है। इस वर्ष, लंबे समय तक बारिश या गरज के साथ बौछारें भी दुर्लभ हैं क्योंकि उत्तर भारत में प्री-मॉनसून गतिविधि आम तौर पर संक्षिप्त और रुक-रुक कर होती है।

बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2023

खबरों में क्यों?

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) और ऑक्सफोर्ड गरीबी और मानव विकास पहल (OPHI) द्वारा वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) 2023 जारी किया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) का नवीनतम अपडेट गरीबी उन्मूलन में भारत की असाधारण उपलब्धि पर प्रकाश डालता है।

वैश्विक परिदृश्य:

- विश्व स्तर पर, 110 देशों में 6.1 अरब लोगों में से 1.1 अरब लोग (कुल जनसंख्या का 18%) अत्यंत बहुआयामी रूप से गरीब हैं और तीव्र बहुआयामी गरीबी में रहते हैं।
- उप-सहारा अफ्रीका में 534 मिलियन गरीब हैं और दक्षिण एशिया में 389 मिलियन गरीब हैं।
- ये दोनों क्षेत्र प्रत्येक छह गरीब लोगों में से लगभग पांच का घर हैं।
- MPI-गरीब लोगों में से आधे (566 मिलियन) 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे हैं।
- बच्चों में गरीबी दर 27.7% है, जबकि वयस्कों में यह 13.4% है।

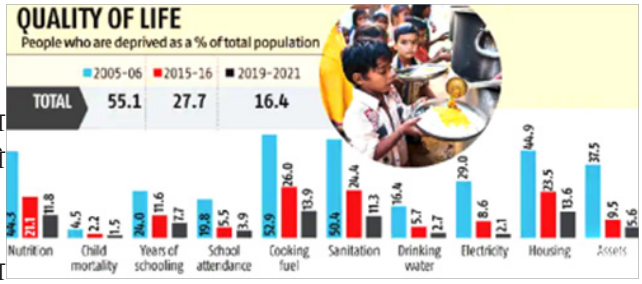

भारत का प्रदर्शन

- देश ने 15 वर्षों की अवधि के भीतर आश्चर्यजनक रूप से 415 मिलियन लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है, जो जीवन स्तर में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति दर्शाता है।
- भारत में गरीबी: भारत में अभी भी 230 मिलियन से अधिक लोग गरीब हैं।
- UNDP परिभाषित करता है, "संवेदनशीलता - उन लोगों का हिस्सा जो गरीब नहीं हैं, लेकिन सभी भारित संकेतकों के 20 - 33.3% में वंचित हैं - बहुत अधिक हो सकते हैं।

- भारत की लगभग 18.7% जनसंख्या इस श्रेणी के अंतर्गत है।
- भारत कंबोडिया, चीन, कांगो, होंडुरास, इंडोनेशिया, मोरक्को, सर्बिया और वियतनाम सहित 25 देशों में शामिल है, जिन्होंने 15 वर्षों के भीतर अपने वैश्विक MPI मूल्यों को सफलतापूर्वक आधा कर दिया है।
- 2005-06 और 2019-21 के बीच लगभग 415 मिलियन भारतीय गरीबी से बच गए।
- भारत में गरीबी की घटनाओं में उल्लेखनीय गिरावट आई, जो 2005/2006 में 55.1% से घटकर 2019/2021 में 16.4% हो गई।
- 2005/2006 में, भारत में लगभग 645 मिलियन लोगों ने बहुआयामी गरीबी का अनुभव किया, यह संख्या 2015/2016 में घटकर लगभग 370 मिलियन और 2019/2021 में 230 मिलियन हो गई।

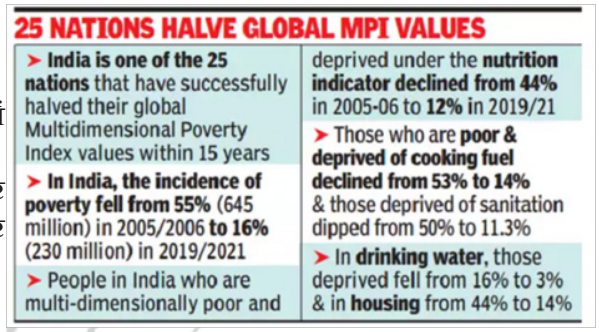

अभाव संकेतकों में सुधार:

- भारत ने सभी तीन अभाव संकेतकों: स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में महत्वपूर्ण प्रगति दिखाई है।
- पोषण से वंचित लोगों का प्रतिशत 2005/2006 में 44.3% से घटकर 2019/2021 में 11.8% हो गया, और बाल मृत्यु दर 4.5% से गिरकर 1.5% हो गई।

सिफ़ारिशें:

- संदर्भ-विशिष्ट बहुआयामी गरीबी सूचकांकों की आवश्यकता है जो गरीबी की राष्ट्रीय परिभाषाओं को दर्शाते हों।
- जबकि वैश्विक एमपीआई एक मानकीकृत पद्धति प्रदान करता है, राष्ट्रीय परिभाषाएँ प्रत्येक देश के लिए विशिष्ट गरीबी की व्यापक समझ प्रदान करती हैं।
- गरीबी का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन और समाधान करने के लिए इन संदर्भ-विशिष्ट सूचकांकों पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

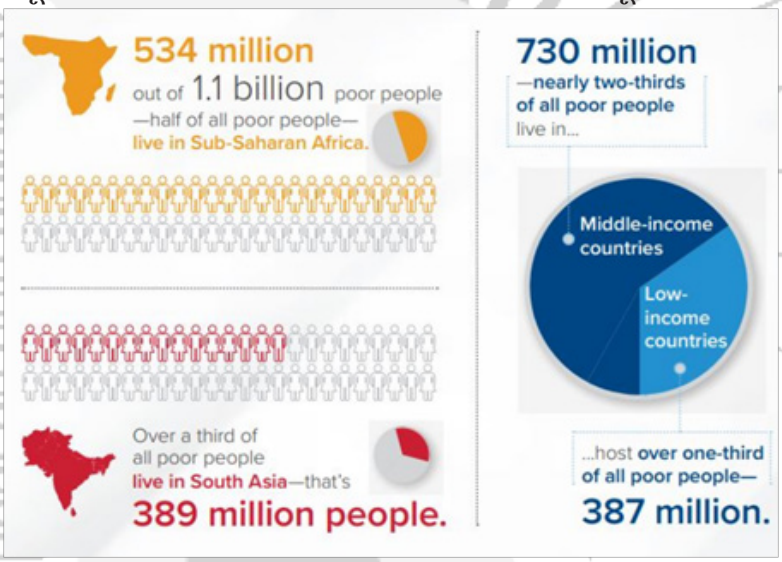

MPI संकेतक और आयाम: MPI गरीबी का व्यापक आकलन करने के लिए संकेतकों और आयामों की एक विविध श्रृंखला को शामिल करता है। हालाँकि विशिष्ट संकेतक विभिन्न देशों में भिन्न हो सकते हैं, निम्नलिखित आमतौर पर शामिल हैं:

1. **स्वास्थ्य संकेतक:**
   - पोषण और खाद्य सुरक्षा
   - बाल मृत्यु दर
   - स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच
2. **शिक्षा संकेतक:**
   - विद्यालय उपस्थिति
   - स्कूली शिक्षा के वर्ष पूरे
3. **जीवन स्तर संकेतक:**
   - स्वच्छ जल और स्वच्छता तक पहुंच
   - बिजली और खाना पकाने के ईंधन की उपलब्धता
   - आवास की गुणवत्ता
   - संपत्ति का स्वामित्व

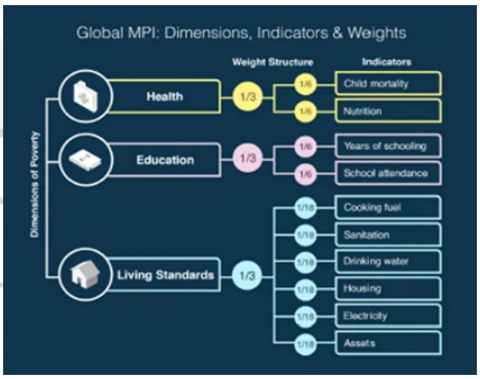

fibromyalgia

खबरों में क्यों?

एकत्रित डेटा विश्लेषण के अनुसार, फाइब्रोमायल्जिया दुर्घटनाओं, संक्रमणों और विशेष रूप से आत्महत्या के प्रति संवेदनशीलता के कारण मृत्यु के बढ़ते जोखिम से जुड़ा हो सकता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- फ़िब्रोमाइल्जीया, एक विकार जो लगातार, व्यापक दर्द और थकावट पैदा करता है, वर्तमान साक्ष्यों के एकत्रित डेटा विश्लेषण के अनुसार, दुर्घटनाओं, संक्रमणों और विशेष रूप से आत्महत्या के प्रति संवेदनशीलता के कारण मृत्यु के बढ़ते जोखिम से जुड़ा हो सकता है।
- यह एक दीर्घकालिक (पुरानी) स्वास्थ्य स्थिति है जो आपके पूरे शरीर में दर्द और कोमलता का कारण बनती है।
- यह मस्कुलोस्केलेटल दर्द और थकान का कारण बनता है।
- इन जोखिमों को कम करने के लिए, शोधकर्ता मरीजों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के नियमित मूल्यांकन की सलाह देते हैं।
- शोधकर्ताओं का कहना है कि यह स्पष्ट नहीं है कि फाइब्रोमायल्गिया का कारण क्या है, लेकिन इसकी व्यापकता बढ़ रही है।
- और इस बात की मान्यता बढ़ती जा रही है कि यह स्थिति अक्सर आमवाती, आंत, तंत्रिका संबंधी और मानसिक स्वास्थ्य विकारों सहित अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के साथ मौजूद होती है।
- उनके द्वारा अनुभव किए जाने वाले दर्द की सीमा और इन रोगियों में अन्य दर्दनाक और दुर्बल करने वाली स्थितियों की संभावना को देखते हुए, यह सोचा जाता है कि संभवतः उनके समय से पहले मरने का खतरा बढ़ जाता है।
- इस परिकल्पना को मजबूत करने के लिए, शोधकर्ताओं ने 1999 और 2020 के बीच प्रकाशित 8 प्रासंगिक अध्ययनों के निष्कर्षों की समीक्षा की, जिनमें से 33 के शुरुआती अध्ययन में से। उन्होंने उनमें से 6 के परिणामों को एकत्रित किया, जिसमें कुल 188,751 वयस्क शामिल थे, जिनमें से सभी ने अन्य सह-अस्तित्व की स्थितियाँ।
- विश्लेषण से पता चला कि फाइब्रोमायल्गिया समय के साथ सभी कारणों से मृत्यु के 27 प्रतिशत बढ़े जोखिम से जुड़ा था, हालांकि 1990 के मानदंडों के अनुसार निदान किए गए लोगों के लिए यह सच नहीं था।

लक्षण: फाइब्रोमायल्गिया के दो सबसे आम लक्षण दर्द और थकान हैं। अन्य लक्षणों में शामिल हैं,

- मांसपेशियों में दर्द या कोमलता।
- थकान।
- चेहरे और जबड़े में दर्द (टेम्पोरोमैंडिबुलर जोड़ विकार)।
- सिरदर्द और माइग्रेन।
- दस्त और कब्ज सहित पाचन संबंधी समस्याएं।
- मूत्राशय नियंत्रण संबंधी समस्याएं।

इलाज:

- हालांकि फाइब्रोमायल्गिया का कोई इलाज नहीं है, विभिन्न प्रकार की दवाएं लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं।
- उपचार में आमतौर पर व्यायाम या अन्य मूवमेंट थेरेपी, मनोवैज्ञानिक और व्यवहार थेरेपी और दवाओं का संयोजन शामिल होता है।

राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2023

खबरों में क्यों?

राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक: एक प्रगति समीक्षा, 2023, हाल ही में नीति आयोग द्वारा जारी किया गया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत में बहुआयामी गरीबों की संख्या में 9.89 प्रतिशत अंकों की उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है।
- यह गिरावट 2015-16 और 2019-2021 के बीच हुई, जिससे यह आंकड़ा 24.85% से घटकर 14.96% हो गया।
- रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र-अनुमोदित मापदंडों का उपयोग करके स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में तीव्र अभावों की पहचान करने और उन्हें संबोधित करने के लिए किए गए प्रयासों पर प्रकाश डालती है।
- नवीनतम राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण [NFHS-5 (2019-21)] पर आधारित राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) का यह दूसरा संस्करण दो सर्वेक्षणों NFHS-4 (2015-16) के और NFHS-5 (2019-21)बीच बहुआयामी गरीबी को कम करने में भारत की प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह नवंबर 2021 में लॉन्च की गई भारत की राष्ट्रीय MPI की बेसलाइन रिपोर्ट पर आधारित है। अपनाई गई व्यापक कार्यप्रणाली वैश्विक पद्धति के अनुरूप है।
- 2015-16 और 2019-21 के बीच MPI मूल्य 0.117 से लगभग आधा होकर 0.066 हो गया है और गरीबी की तीव्रता 47% से घटकर 44% हो गई है, जिससे भारत SDG लक्ष्य 1.2 (बहुआयामी गरीबी को कम करने) को प्राप्त करने की राह पर है।
- यह टिकाऊ और न्यायसंगत विकास सुनिश्चित करने और 2030 तक गरीबी उन्मूलन पर सरकार के रणनीतिक फोकस को दर्शाता है, जिससे SDG के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का पालन किया जा सके।

बहुआयामी गरीबी में गिरावट

- अध्ययन से पता चलता है कि मूल्यांकन अवधि के दौरान लगभग 13.5 करोड़ व्यक्ति बहुआयामी गरीबी से उभरे हैं।
- रिपोर्ट स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में गंभीर अभावों की पहचान करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मापदंडों के उपयोग पर जोर देती है।
- यह दृष्टिकोण गरीबी की व्यापक समझ की अनुमति देता है जो आय-आधारित उपायों से परे फैली हुई है।
- स्वास्थ्य देखभाल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बुनियादी जीवन स्तर तक पहुंच जैसे विभिन्न आयामों पर ध्यान केंद्रित करके, रिपोर्ट गरीबी उन्मूलन पर एक सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

क्षेत्रीय असमानताएँ

- रिपोर्ट भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की अलग-अलग दरों पर प्रकाश डालती है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी में सबसे तेज़ गिरावट देखी गई, जिसका प्रतिशत 59% से गिरकर 19.28% हो गया।
- इस सकारात्मक प्रवृत्ति को बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य जैसे राज्यों में बहुआयामी गरीब व्यक्तियों की संख्या में कमी के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- दूसरी ओर, केंद्र शासित प्रदेशों के साथ-साथ दिल्ली, केरल, गोवा और तमिलनाडु में बहुआयामी गरीबी की दर सबसे कम है।
- बिहार, झारखंड, मेघालय, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की पहचान बहुआयामी गरीबी के उच्चतम प्रतिशत वाले राज्यों के रूप में की गई।

शहरी प्रगति

- रिपोर्ट में शहरी क्षेत्रों में उत्साहजनक विकास का भी खुलासा किया गया है। इसी मूल्यांकन अवधि के दौरान शहरी क्षेत्रों में बहुआयामी गरीबी 8.65% से घटकर 5.27% हो गई।
- उत्तर प्रदेश गरीबी उन्मूलन में अग्रणी बनकर उभरा, 3.43 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि गरीबी को दूर करने के प्रयास ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रभावी रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई लोगों के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

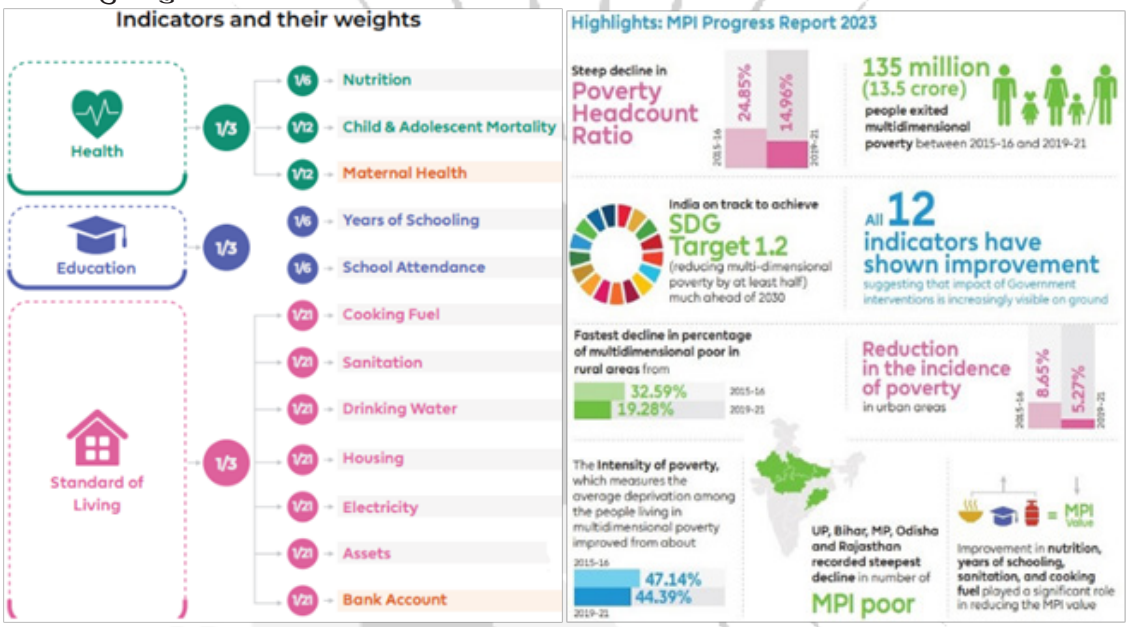

पहल

- स्वच्छता, पोषण, खाना पकाने के ईंधन, वित्तीय समावेशन, पेयजल और बिजली तक पहुंच में सुधार पर सरकार के समर्पित फोकस से इन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।
- एमपीआई के सभी 12 मापदंडों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पोषण अभियान और एनीमिया मुक्त भारत जैसे प्रमुख कार्यक्रमों ने स्वास्थ्य में अभावों को कम करने में योगदान दिया है। स्वच्छ भारत मिशन (SBM) और जल जीवन मिशन (JJM) जैसी पहलों ने पूरे देश में स्वच्छता में सुधार किया है।
- इन प्रयासों का प्रभाव स्वच्छता अभावों में 21.8 प्रतिशत अंकों के तेज सुधार के रूप में स्पष्ट है।
- प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) के माध्यम से सब्सिडी वाले खाना पकाने के ईंधन के प्रावधान ने खाना पकाने के ईंधन की कमी में 14.6 प्रतिशत अंक के सुधार के साथ जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया है।
- सौभाग्य, प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY), प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY), और समग्र शिक्षा जैसी पहलों ने भी देश में बहुआयामी गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- विशेष रूप से बिजली, बैंक खातों और पीने के पानी तक पहुंच के मामले में अत्यंत कम अभाव दर के माध्यम से हासिल की गई उल्लेखनीय प्रगति, नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने और सभी के लिए एक उज्जवल भविष्य बनाने के लिए सरकार की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- मजबूत अंतर्संबंधों वाले विविध प्रकार के कार्यक्रमों और पहलों के लगातार कार्यान्वयन से कई संकेतकों में अभावों में उल्लेखनीय कमी आई है।

आँख आना

खबरों में क्यों?

पिछले कुछ हफ्तों में दिल्ली और आसपास के इलाकों में भारी बारिश के बीच, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में नेत्रश्लेष्मलाशोथ के कई मामले सामने आ रहे हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- नेत्रश्लेष्मलाशोथ, जिसे आमतौर पर पिंक आई के रूप में जाना जाता है, पलक और नेत्रगोलक को ढकने वाली पारदर्शी झिल्ली का संक्रमण या सूजन है। इस झिल्ली को कंजंक्टिवा कहा जाता है।

आंखें गुलाबी क्यों दिखाई देती हैं?

- जब कंजंक्टिवा में छोटी रक्त वाहिकाएं सूज जाती हैं और उनमें जलन होने लगती है, तो वे अधिक दिखाई देने लगती हैं।
- यही कारण है कि आंखों का सफेद भाग लाल या गुलाबी दिखाई देता है।

कारक एजेंट:

- यह वायरस, बैक्टीरिया या एलर्जी के कारण हो सकता है।
- बैक्टीरियल और वायरल नेत्रश्लेष्मलाशोथ दोनों अत्यधिक संक्रामक हैं, जबकि एलर्जिक नेत्रश्लेष्मलाशोथ नहीं है।

ट्रांसमिशन:

- यह आमतौर पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संपर्क के माध्यम से होता है।
- किसी संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने से निकलने वाली बूंदों या हाथ से आंख के संपर्क के माध्यम से सीधा संचरण होता है।
- परोक्ष रूप से, यह तौलिए, मेकअप, तकिए या कॉन्टैक्ट लेंस जैसी साझा व्यक्तिगत वस्तुओं के माध्यम से फैल सकता है।

संकेत और लक्षण:

- सबसे आम लक्षण आंखों में लालिमा, सूजन और खुजली हैं।
- फ्लू की शुरुआत के दौरान आंखों में पानी भी आ सकता है।

इलाज:

- नेत्रश्लेष्मलाशोथ के उपचार के लिए, दवाओं के संयोजन का उपयोग करने की आवश्यकता होती है।
- सबसे उपयोगी उपचारों में से एक है कृत्रिम आँसू या किसी चिकनाई वाली आई ड्रॉप का उपयोग करना; ये संक्रमित व्यक्ति को नमी बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।
- गर्म या ठंडा सेक भी जलन और सूजन से राहत दिलाने में मदद करेगा।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

7 अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

23वां शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन

खबरों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने शंघाई सहयोग संगठन (SCO) वर्चुअल शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की है, नेताओं ने वैश्विक हित में "अधिक प्रतिनिधि" और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के गठन का आह्वान किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- 23वें शिखर सम्मेलन के दौरान, ईरान आधिकारिक तौर पर नौवें सदस्य देश के रूप में SCO में शामिल हो गया।
- SCO की भारत की अध्यक्षता का विषय 'एक सुरक्षित SCO की ओर' है, जो 2018 SCO क़िंगदाओ शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा गढ़े गए संक्षिप्त नाम से लिया गया है।
- इसका अर्थ है: S: सुरक्षा, E: आर्थिक विकास, C: कनेक्टिविटी, U: एकता, R: संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान, E: पर्यावरण संरक्षण।
- भारत, जिसने पहली बार शिखर सम्मेलन की मेजबानी की, ने संयुक्त बयान में चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) से संबंधित पैराग्राफ पर अन्य सदस्यों के साथ शामिल होने से इनकार कर दिया और एससीओ आर्थिक विकास रणनीति 2030 पर एक संयुक्त बयान से बाहर रहा, जो समूह में सर्वसम्मति की कमी का संकेत देता है।
- भारत ने सीमा पार आतंकवाद के लिए पाकिस्तान और संप्रभु सीमाओं का सम्मान नहीं करने वाली कनेक्टिविटी परियोजनाओं के लिए चीन पर भी तीखा निशाना साधा।
- SCO समूह में अब चीन, भारत, ईरान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान शामिल हैं।

नई दिल्ली घोषणा:

- हस्ताक्षरित समझौतों में नई दिल्ली घोषणा शामिल है, जिसमें SCO देशों के बीच सहयोग के क्षेत्रों को रेखांकित किया गया है; कट्टरपंथ का मुकाबला करने पर एक संयुक्त वक्तव्य; और एक डिजिटल परिवर्तन पर, जहां भारत ने UPI जैसे डिजिटल भुगतान इंटरफेस पर विशेषज्ञता साझा करने की पेशकश की।
- अमेरिका और यूरोपीय देशों द्वारा रूस और ईरान पर लगाए गए प्रतिबंधों के संदर्भ में, SCO सदस्यों ने संयुक्त रूप से गैर-संयुक्त राष्ट्र प्रतिबंधों की "अंतर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों के साथ असंगत" के रूप में आलोचना की, जिसका अन्य देशों पर "नकारात्मक प्रभाव" पड़ता है। SCO सदस्य समूह के भीतर भुगतान के लिए "राष्ट्रीय मुद्राओं" के उपयोग का पता लगाने पर भी सहमत हुए, जो अंतरराष्ट्रीय डॉलर-आधारित भुगतान को रोक देगा।
- हालाँकि, घोषणा में कहा गया कि केवल "इच्छुक सदस्य देशों" ने आर्थिक रणनीति वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए, जबकि भारत को चीन के BRI का समर्थन करने वाले पैराग्राफ से बाहर रखा।
- भारत ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में परियोजनाओं को शामिल करने पर BRI का विरोध किया।

नई विश्व व्यवस्था

- दिल्ली घोषणापत्र में कई वैश्विक चुनौतियों को सूचीबद्ध किया गया, जिनमें नए और उभरते संघर्ष, बाजारों में अशांति, आपूर्ति श्रृंखला अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन और COVID-19 महामारी शामिल हैं।
- एससीओ के सदस्य देश अंतरराष्ट्रीय कानून, बहुपक्षवाद, समान, संयुक्त, अविभाज्य, व्यापक और टिकाऊ सुरक्षा, सांस्कृतिक और सभ्यतागत विविधता, पारस्परिक रूप से लाभप्रद के सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त सिद्धांतों के आधार पर एक अधिक प्रतिनिधि, लोकतांत्रिक न्यायसंगत और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के गठन के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं। और संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीय समन्वय भूमिका वाले राज्यों का समान सहयोग।

SCO के बारे में

- SCO एक स्थायी अंतरसरकारी अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।
- यह एक राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संगठन है जिसका लक्ष्य क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखना है।
- इसे 2001 में बनाया गया था।
- SCO चार्टर पर 2002 में हस्ताक्षर किए गए और 2003 में इसे लागू किया गया।

उद्देश्य:

- सदस्य देशों के बीच आपसी विश्वास और पड़ोसीपन को मजबूत करना।
- राजनीति, व्यापार और अर्थव्यवस्था, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी और संस्कृति में प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देना।
- शिक्षा, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण आदि में संबंधों को बढ़ाना।

- क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखना और सुनिश्चित करना।
- एक लोकतांत्रिक, निष्पक्ष और तर्कसंगत नई अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की स्थापना।

SCO सचिवालय:

- सूचनात्मक, विश्लेषणात्मक और संगठनात्मक सहायता प्रदान करने के लिए बीजिंग में स्थित

IAEA

खबरों में क्यों?

IAEA ने जापान द्वारा उपचारित फुकुशिमा जल छोड़ने की योजना का समर्थन किया

महत्वपूर्ण बिंदु

- संयुक्त राष्ट्र परमाणु निगरानी संस्था फुकुशिमा परमाणु संयंत्र से उपचारित पानी को समुद्र में छोड़ने की जापान की योजना अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करती है और इसका "नगण्य रेडियोलॉजिकल प्रभाव" होगा।
- अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी द्वारा अंतिम समीक्षा में दिया गया मूल्यांकन, इस गर्मी में अपेक्षित जल रिलीज शुरू होने से पहले इसके प्रमुख के जापान दौरे के रूप में आया है।
- कई दशकों तक उपचारित पानी को पतला करके समुद्र में छोड़ने की टोक्यो की योजना प्रासंगिक अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मानकों के अनुरूप है।
- 2011 की भारी सुनामी के कारण शीतलन प्रणाली के प्रभावित होने के बाद फुकुशिमा दाइची संयंत्र के कई रिएक्टर पिघल गए।
- परिणामी परमाणु दुर्घटना चेरनोबिल के बाद से सबसे खराब थी, और सफाई एक दशक से अधिक समय तक चली है, विकिरण के कारण सीमा से बाहर घोषित किए गए अधिकांश क्षेत्रों को अब फिर से खोल दिया गया है।

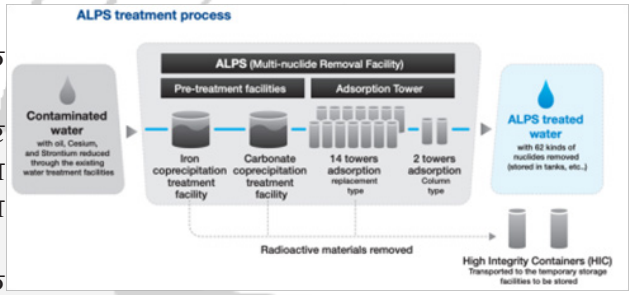

- संयंत्र को बंद करने में कई दशक और लगेंगे, लेकिन सुविधा के संचालक TEPCO को साइट पर जमा 1.33 मिलियन क्यूबिक मीटर से अधिक पानी की तत्काल समस्या का सामना करना पड़ता है।
- पानी भूजल, क्षेत्र में रिसने वाली बारिश और ठंडा करने के लिए उपयोग किए जाने वाले पानी का मिश्रण है।
- इसे एक ऐसी सुविधा के माध्यम से संसाधित किया जाता है जिसके बारे में TEPCO का कहना है कि ट्रिटियम को छोड़कर लगभग सभी रेडियोन्यूक्लाइड्स को हटा दिया जाता है, जो आमतौर पर वैश्विक स्तर पर परमाणु संयंत्रों द्वारा समुद्र में छोड़े गए अपशिष्ट जल में रहता है।
- प्रस्ताव को IAEA द्वारा पहले ही अस्थायी रूप से समर्थन दे दिया गया था, लेकिन सरकार ने कहा कि रिलीज "व्यापक समीक्षा" के बाद ही शुरू होगी।
- IAEA द्वारा की गई समीक्षा, यह देखते हुए कि परमाणु सुरक्षा मानकों के प्रबंधन और अनुप्रयोग में यह कितना आधिकारिक है, अंतरराष्ट्रीय समझ को बढ़ावा देने के हमारे प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण है।
- फिर भी, रिलीज विवादास्पद बनी हुई है, चीन ने मुखर रूप से योजनाओं की आलोचना की है, और दक्षिण कोरिया में कुछ लोग डिस्चार्ज शुरू होने के बाद संदूषण के डर से घबराकर नमक खरीद रहे हैं।
- फुकुशिमा में मछली पकड़ने वाले समुदाय भी चिंतित हैं कि क्षेत्र के भोजन के लिए सख्त परीक्षण प्रोटोकॉल के बावजूद, ग्राहक उनकी पकड़ से दूर रहेंगे।

काला सागर अनाज

खबरों में क्यों?

अनाज सौदे की समय सीमा नजदीक आने पर अमेरिका ने भारत से रूस के साथ 'अनूठी आवाज' का इस्तेमाल करने की अपील की

महत्वपूर्ण बिंदु

- ब्लैक सी ब्रेन इनिशिएटिव सौदे के विस्तार की समय सीमा बीतने के साथ, यूक्रेन में अमेरिकी दूत ने भारत से अपील की कि वह रूस के साथ अपने प्रभाव का उपयोग करके यह सुनिश्चित करे कि यूक्रेन से निर्यात होने वाला अनाज अवरुद्ध न हो।
- यह पहल, जिसकी मध्यस्थता पिछले साल तुर्की ने की थी, युद्ध के कारण यूक्रेनी और रूसी जहाजों को काला सागर से गेहूं निर्यात करने से रोक दिया गया था, जो 17 जुलाई 2023 को समाप्त होने वाली है।
- संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार, युद्ध से पहले, रूस और यूक्रेन एक साथ गेहूं, जौ, मक्का और वनस्पति तेलों के शीर्ष वैश्विक निर्यातकों में से एक थे।
- पिछले साल, तुर्की ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव की सहायता से एक समझौता किया था, जिसमें दोनों देशों को अनाज निर्यात जारी रखने की अनुमति देने पर सहमति व्यक्त की गई थी।
- हालाँकि, रूस ने लगातार शिकायत की है कि उसके जहाज निर्यात को अभी भी अवरुद्ध किया जा रहा है, और रूस ने चेतावनी दी है कि मई 2023 में दो महीने के लिए एक विस्तार पर सहमति के बाद उसके पास आगे विस्तार के लिए "कोई आधार नहीं" है।
- फरवरी 2022 में रूसी आक्रमण के बाद से, भारत ने संयुक्त राष्ट्र के वोटों में रूस के कार्यों की आलोचना करने से इनकार कर दिया है, और अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिबंधों को तोड़ते हुए, रूसी तेल का सेवन पचास गुना बढ़ा दिया है।

- भारत यूक्रेन को मानवीय सहायता प्रदान करने वाले 50 देशों में से एक है और भारतीय प्रधान मंत्री ने जापान में जी-7 प्लस शिखर सम्मेलन के मौके पर यूक्रेनी राष्ट्रपति से मुलाकात की, लेकिन अब तक उन्होंने G-20 शिखर सम्मेलन को दिल्ली में संबोधित करने की अनुमति देने के यूक्रेनी राष्ट्रपति के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया है।
- भारत-अमेरिका में वाशिंगटन में जारी संयुक्त बयान में यूक्रेन संघर्ष का उल्लेख है, लेकिन रूस का कोई संदर्भ नहीं है, माना जाता है कि यह नई दिल्ली के आग्रह पर किया गया है।

काला सागर अनाज पहल

- ब्लैक सी ग्रेन पहल दुनिया के 'ब्रेडबास्केट' में रूसी कार्यों के कारण आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों से उत्पन्न खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों से निपटने का प्रयास करती है।
- संयुक्त राष्ट्र (UN) और तुर्की द्वारा मध्यस्थता किए गए समझौते पर जुलाई, 2022 में इस्तांबुल में हस्ताक्षर किए गए थे।

उद्देश्य:

- शुरू में 120 दिनों की अवधि के लिए निर्धारित, यह सौदा यूक्रेनी निर्यात (विशेष रूप से खाद्यान्न के लिए) के लिए एक सुरक्षित समुद्री मानवीय गलियारा प्रदान करना था।
- केंद्रीय विचार अनाज की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करके बाजारों को शांत करना था, जिससे खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति को सीमित किया जा सके।

संयुक्त समन्वय केंद्र (JCC) की भूमिका:

- समझौते के तहत एक संयुक्त समन्वय केंद्र (JCC) स्थापित किया गया, जिसमें निगरानी और समन्वय के लिए रूस, तुर्की, यूक्रेन और संयुक्त राष्ट्र के वरिष्ठ प्रतिनिधि शामिल होंगे।
- उचित निगरानी, निरीक्षण और सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करने के लिए सभी वाणिज्यिक जहाजों को सीधे JCC के साथ पंजीकृत होना आवश्यक है। आने वाले और बाहर जाने वाले जहाज (निर्दिष्ट गलियारे तक) निरीक्षण के बाद जेसीसी द्वारा दिए गए कार्यक्रम के अनुसार पारगमन करते हैं।
- ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जहाज पर कोई अनधिकृत कार्गो या कर्मी नहीं है।
- इसके बाद, उन्हें निर्दिष्ट गलियारे के माध्यम से लोडिंग के लिए यूक्रेनी बंदरगाहों तक जाने की अनुमति दी जाती है।

ताइवान और भारत

खबरों में क्यों?

भारत-ताइवान संबंधों को बढ़ावा देने के लिए ताइवान मुंबई में प्रतिनिधि कार्यालय स्थापित करेगा

महत्वपूर्ण बिंदु

- ताइवान ने इस बार भारत में अपना तीसरा प्रतिनिधि कार्यालय मुंबई में खोलने के फैसले की घोषणा की है। यह कदम एक दशक से अधिक समय के बाद आया है जब ताइवान ने आखिरी बार देश में अपनी उपस्थिति का विस्तार किया था।
- मुंबई में ताइवान आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र (TECC) की स्थापना का उद्देश्य व्यापार, निवेश को सुविधाजनक बनाना और ताइवानी नागरिकों और भारतीय व्यापारियों और पर्यटकों को विभिन्न सेवाएं प्रदान करना है।
- यह विकास भारत और ताइवान के बीच आर्थिक संबंधों को बढ़ाने और संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतीक है।

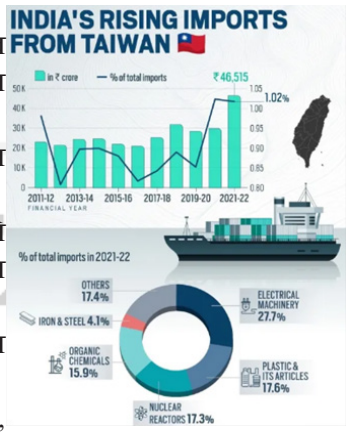

- मुंबई में TECC स्थापित करने का ताइवान का निर्णय ऐसे समय में आया है जब ताइवान की प्रमुख कंपनियां बीजिंग के साथ ताइपे के बढ़ते तनावपूर्ण संबंधों के बीच अपने उत्पादन अड्डों को चीन से भारत, अमेरिका और यूरोप के देशों में स्थानांतरित करने पर विचार कर रही हैं।
- 2012 में अपनी स्थापना के बाद से, चेन्नई में TECC को लगभग 60% ताइवानी व्यवसायों ने भारत में निवेश करने और कारखाने खोलने के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकता दी है।
- भारत, 2022 में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दर्जा प्राप्त करने और इस वर्ष सबसे अधिक आबादी वाला देश बनने के बाद, वैश्विक उद्यमों के लिए एक प्रमुख निवेश गंतव्य के रूप में उभरा है।
- अपने विशाल बाज़ार और संबद्ध व्यावसायिक संभावनाओं के साथ, भारत आकर्षक अवसर प्रदान करता है।
- मुंबई, भारत का सबसे बड़ा शहर और एक प्रमुख बंदरगाह के साथ एक वित्तीय केंद्र होने के नाते, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, यूनाइटेड किंगडम और ऑस्ट्रेलिया सहित विभिन्न देशों के वाणिज्य दूतावासों को आकर्षित करता है।

TECC का महत्व

- ताइवान के अनुसार, मुंबई में TECC का उद्देश्य दोनों देशों के बीच विस्तारित व्यापार और निवेश के अवसरों को बढ़ावा देना है, जिससे दोनों पक्षों को लाभ हो।
- यह ताइवान की नई साउथबाउंड नीति के अनुरूप विज्ञान और प्रौद्योगिकी, शिक्षा, संस्कृति और लोगों से लोगों के बीच संपर्क जैसे क्षेत्रों में आदान-प्रदान और सहयोग को भी सक्रिय रूप से बढ़ावा देगा।
- इसके अतिरिक्त, मुंबई में टीईसीसी महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात और मध्य प्रदेश राज्यों के साथ-साथ केंद्र शासित प्रदेश दादरा और नगर

हवेली और दमन और दीव में ताइवानी नागरिकों, व्यवसायियों और पर्यटकों को वीज़ा सेवाएं, दस्तावेज़ प्रमाणीकरण और आपातकालीन सहायता प्रदान करेगा।

IMO ग्रीनहाउस गैस रणनीति

खबरों में क्यों?

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) ने अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए संशोधित रणनीति अपनाई है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- समुद्री पर्यावरण संरक्षण समिति (MEPC 80) की बैठक के दौरान, IMO के सदस्य राज्यों ने जहाजों से ग्रीनहाउस हाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में कमी पर 2023 IMO रणनीति को अपनाया है।
- 2018 में, एक प्रारंभिक रणनीति अपनाई गई जिसमें 2023 में संशोधन की परिकल्पना की गई।
- MEPC पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करती है जैसे कि MARPOL संधि द्वारा कवर किए गए जहाज-स्रोत प्रदूषण की रोकथाम, जिसमें तेल, भारी मात्रा में ले जाए जाने वाले रसायन, जहाजों से उत्सर्जन शामिल है।
- समुद्री नौवहन वैश्विक मानवजनित जीएचजी उत्सर्जन के 3 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार है।

2023 IMO GHG रणनीति के लक्ष्य

- जहाजों के लिए - नए जहाजों के लिए ऊर्जा दक्षता में और सुधार के माध्यम से जहाज की कार्बन तीव्रता में कमी आएगी।
- शिपिंग के लिए - अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग की कार्बन तीव्रता को 2008 की तुलना में 2030 तक कम से कम 40% तक कम करने के लिए, प्रति परिवहन कार्य में CO2 उत्सर्जन को कम करने के लिए, अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग में औसत के रूप में।
- प्रौद्योगिकियां - 2030 तक अंतरराष्ट्रीय शिपिंग द्वारा उपयोग की जाने वाली ऊर्जा का कम से कम 5% (10% के लिए प्रयास) का प्रतिनिधित्व करने के लिए शून्य/लगभग-शून्य ग्रीन हाउस गैस (GHG) उत्सर्जन प्रौद्योगिकियों या ईंधन का उपयोग।
- नेट ज़ीरो - अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग से अधिकतम जीएचजी उत्सर्जन को जल्द से जल्द नेट ज़ीरो तक पहुँचाना और 2050 तक या उसके आसपास नेट ज़ीरो उत्सर्जन तक पहुँचना।

सांकेतिक चौकियाँ

- 2030 के लिए - अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग उद्योग 2008 की तुलना में 2030 तक अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग से कुल वार्षिक GHG उत्सर्जन को कम से कम 20% तक कम करने का प्रयास कर रहा है।
- 2040 के लिए - अंतरराष्ट्रीय शिपिंग से कुल वार्षिक जीएचजी उत्सर्जन को 2008 की तुलना में 2040 तक कम से कम 70% कम करना, 80% के लिए प्रयास करना।
- इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज 2022 रिपोर्ट के अनुसार, समुद्री शिपिंग वैश्विक मानवजनित जीएचजी उत्सर्जन के 3% के लिए जिम्मेदार है और यह तेजी से बढ़ रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय मैरिटाइम संगठन

- उद्देश्य: यह संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है जो शिपिंग की सुरक्षा और जहाजों द्वारा समुद्री और वायुमंडलीय प्रदूषण की रोकथाम की जिम्मेदारी लेती है।
- मुख्यालय – लंदन, UK
- सदस्य देश - IMO में वर्तमान में 175 सदस्य देश हैं।
- भारत 1959 से IMO का सदस्य है।
- आईएमओ असेंबली में सभी सदस्य राज्य शामिल हैं और यह संगठन का सर्वोच्च शासी निकाय है।
- यह कार्य कार्यक्रम को मंजूरी देने, बजट पर मतदान करने और आईएमओ की वित्तीय व्यवस्था निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार है।
- IMO परिषद को विधानसभा द्वारा 2 वर्षों के लिए चुना जाता है।
- यह आईएमओ के कार्यकारी अंग के रूप में कार्य करता है और संगठन के काम की निगरानी के लिए असेंबली के तहत जिम्मेदार है।

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2023

खबरों में क्यों?

हाल ही में जारी हेनले पासपोर्ट इंडेक्स द्वारा प्रकाशित नवीनतम रैंकिंग में भारत का पासपोर्ट 80वें स्थान पर है, जो 2022 में अपनी स्थिति से पांच स्थान ऊपर है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- 2023 के लिए वैश्विक पासपोर्ट रैंकिंग अंतर्राष्ट्रीय वायु परिवहन प्राधिकरण, या IATA द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर आयोजित की गई थी, जो दुनिया के पासपोर्टों को उन गंतव्यों की संख्या के आधार पर रैंक करता है, जहां उनके धारक बिना पूर्व वीजा के पहुंच सकते हैं।
- अब यदि किसी वीज़ा की आवश्यकता नहीं है, तो उस पासपोर्ट के लिए मूल्य वाला स्कोर 1 है।
- यदि आप गंतव्य में प्रवेश करते समय आगमन पर वीज़ा, आगंतुक परमिट, या इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्राधिकरण (ETA) प्राप्त कर सकते हैं तो यही बात लागू होती है।

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2023 की मुख्य विशेषताएं:

- सिंगापुर ने दुनिया के सबसे शक्तिशाली पासपोर्ट का दावा करते हुए जापान को पीछे छोड़ दिया है।
- अब सिंगापुर पासपोर्ट धारकों को दुनिया के 227 में से 192 गंतव्यों में वीज़ा-मुक्त प्रवेश की अनुमति देता है।
- जर्मनी, इटली और स्पेन दूसरे स्थान पर हैं, जिनके नागरिक 190 वैश्विक गंतव्यों की यात्रा करने में सक्षम हैं।
- जापान, जो पिछले साल सूची में शीर्ष पर था, अपने पासपोर्ट के साथ 189 गंतव्यों तक वीज़ा-मुक्त पहुंच की अनुमति देकर तीसरे स्थान पर खिसक गया है, जो 2022 में 193 से कम है।
- जापान के साथ तीसरे स्थान पर रहने वाले अन्य पासपोर्ट ऑस्ट्रिया, फिनलैंड, फ्रांस, लक्ज़मबर्ग, दक्षिण कोरिया और स्वीडन हैं।
- छह साल की गिरावट के बाद ब्रिटेन दो पायदान ऊपर चढ़कर चौथे स्थान पर आ गया।
- क्रमशः 101, 102 और 103 रैंक के साथ, सीरिया, इराक और अफगानिस्तान दुनिया के सबसे कमजोर पासपोर्ट हैं। पाकिस्तान 100वें स्थान पर है।

भारत की रैंक:

- भारत पिछले वर्ष के 87वें स्थान से सात पायदान ऊपर चढ़कर 80वें स्थान पर पहुंच गया है।
- यह 57 गंतव्यों तक वीज़ा-मुक्त पहुंच के साथ सेनेगल और टोगो के साथ स्थान साझा करता है।

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स के बारे में

- लगभग 20 साल पहले हेनले एंड पार्टनर्स के अध्यक्ष डॉ क्रिश्चियन एच केलिन द्वारा आविष्कार किया गया यह सूचकांक इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन (IATA) के विशेष और आधिकारिक डेटा पर आधारित है।
- यह उन सभी पासपोर्टों की मूल रैंकिंग है, जो उन गंतव्यों की संख्या के अनुसार हैं, जहां उनके धारक बिना पूर्व वीजा के यात्रा कर सकते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि हेनले पासपोर्ट इंडेक्स अपनी रैंकिंग की गणना करने के लिए इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के डेटा पर निर्भर करता है।
- इस सूचकांक द्वारा उपयोग की जाने वाली पद्धति अन्य पासपोर्ट रैंकिंग से भिन्न है, जैसे कि वित्तीय सलाहकार आर्टन कैपिटल द्वारा प्रकाशित, जिसने पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात को शीर्ष स्थान पर रखा था।

यूरोपीय स्काई शील्ड पहल

खबरों में क्यों?

हाल ही में ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड यूक्रेन पर रूस के हमले के जवाब में हवाई रक्षा के लिए 'यूरोपियन स्काई शील्ड इनिशिएटिव' (ESSI) में शामिल हुए हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यूरोपियन स्काई शील्ड इनिशिएटिव (ESSI) यूरोपीय देशों का एक क्षेत्रीय समूह है जिसका उद्देश्य एक साझा वायु और मिसाइल रक्षा प्रणाली विकसित करना है।
- यह नाटो की एकीकृत वायु और मिसाइल रक्षा (IAMD) को मजबूत करने के लिए सामूहिक रूप से वायु रक्षा उपकरण और मिसाइलों को प्राप्त करने पर केंद्रित है।
- रक्षा के लिए मौजूदा नाटो सहयोग ढांचे का लाभ उठाने के लक्ष्य के साथ ESSI में अब 19 सदस्य देश हैं। 2022 में इसका नेतृत्व जर्मनी ने किया था।
- 13 अक्टूबर, 2022 को जर्मनी और 14 नाटो साझेदारों ने "यूरोपीय देशों द्वारा वायु रक्षा उपकरणों और मिसाइलों के आम अधिग्रहण के माध्यम से एक यूरोपीय वायु और मिसाइल रक्षा प्रणाली बनाने" की पहल की घोषणा की।

- मूल सदस्य थे: बेल्जियम, बुल्गारिया, चेकिया, एस्टोनिया, जर्मनी, हंगरी, लातविया, लिथुआनिया, नीदरलैंड, नॉर्वे, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, रोमानिया और यूनाइटेड किंगडम।
- प्रत्येक भाग लेने वाला देश अपनी भागीदारी की सीमा को नियंत्रित करता है।
- इस समझौता ज्ञापन के हिस्से के रूप में, स्विट्जरलैंड अब इस बात की जांच करेगा कि वह किन क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करेगा; जैसे सूचना के आदान-प्रदान या संचालन और प्रशिक्षण में सहयोग के माध्यम से पैट्रियट जीबीएडी प्रणाली में तालमेल में सुधार करना। इससे लागत बचत भी हो सकती है।

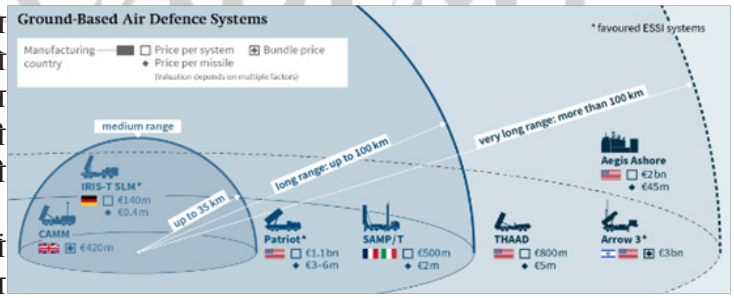

- स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रिया ने एक अतिरिक्त घोषणा में तटस्थता के संबंध में अपनी शर्तें निर्धारित की हैं, उदाहरण के लिए, वे अंतरराष्ट्रीय सैन्य संघर्षों में भाग नहीं लेंगे या शामिल नहीं होंगे।
- स्काई शील्ड का लक्ष्य यूरोपीय भागीदारों, विशेष रूप से जर्मनी के लिए एक सामान्य वायु रक्षा बनाना है जो कम दूरी के अवरोधन के लिए विरासत वायु रक्षा प्रणालियों पर निर्भर है।

- जर्मनों को उम्मीद है कि सहयोगी क्षेत्र में रणनीतिक गहराई बनाने और सभी श्रेणियों के लिए आधुनिक वायु रक्षा प्रणालियों पर थोक मूल्य हासिल करने के लिए साझेदार क्रय शक्ति का लाभ उठाया जाएगा।

डी-dollarisation

खबरों में क्यों?

बांग्लादेश और भारत ने रुपये में व्यापार लेनदेन शुरू किया, जो डी-डॉलरीकरण की दिशा में एक कदम है।

महत्वपूर्ण बिंदु

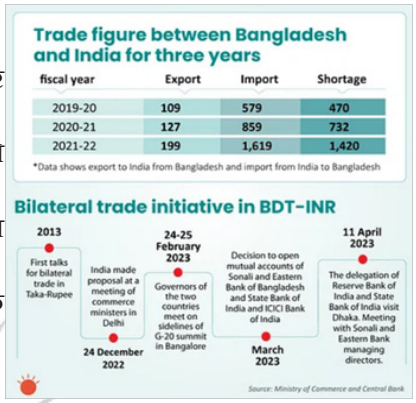

- बांग्लादेश और भारत ने अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने और क्षेत्रीय मुद्रा और व्यापार को मजबूत करने के उद्देश्य से रुपये में व्यापार लेनदेन शुरू किया है।
- यह द्विपक्षीय व्यापार समझौता बांग्लादेश के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो किसी विदेशी देश के साथ व्यापार समझौते के लिए अमेरिकी डॉलर से आगे बढ़ रहा है।
- बांग्लादेश बैंक के गवर्नर अब्दुर रउफ तालुकदार ने रुपये में व्यापार निपटान की शुरुआत को "एक महान यात्रा में पहला कदम" बताया।
- यह कदम भारत और बांग्लादेश के बीच आपसी लाभ को बढ़ावा देते हुए विकास और आर्थिक सहयोग का प्रतीक है।

दोहरी मुद्रा कार्ड:

- टका-रुपया दोहरी मुद्रा कार्ड की शुरूआत, सितंबर से लॉन्च होने की उम्मीद है, इससे दोनों देशों के बीच व्यापार में और आसानी होगी।
- दोहरी मुद्रा कार्ड भारत के साथ व्यापार के दौरान लेनदेन लागत को कम करने, व्यापारियों के लिए सुविधा बढ़ाने और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने में मदद करेगा।

रुपये में व्यापार को सामान्य बनाना:

- जबकि बांग्लादेश और भारत के बीच कुछ क्षेत्रों में सीमा व्यापार मौजूद है, जिन्हें "सीमा झोपड़ियाँ" कहा जाता है, औपचारिक व्यापार अब रुपये में किया जाएगा।
- प्रारंभ में, व्यापार का लेन-देन रुपये में किया जाएगा, जैसे-जैसे व्यापार अंतर कम होगा, बांग्लादेशी मुद्रा, टका का उपयोग करने की ओर धीरे-धीरे बदलाव आएगा।
- बांग्लादेश और भारत दोनों में बैंकों को विदेशी मुद्रा लेनदेन के लिए नोस्ट्रो खाते खोलने की अनुमति दी गई है।
- विनिमय दर बाजार की मांग के आधार पर निर्धारित की जाएगी, जिससे व्यापार प्रक्रिया में पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित होगी।
- आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत को बांग्लादेश का निर्यात 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है, जबकि भारत से आयात का मूल्य 13.69 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।
- कुछ अर्थशास्त्री व्यापार घाटे के कारण बांग्लादेश को होने वाले तात्कालिक लाभ को लेकर संदेह व्यक्त करते हैं। हालाँकि, गवर्नर तालुकदार दोनों देशों में निर्यातकों और आयातकों पर व्यापक प्रभाव पर जोर देते हैं।

अप्रत्याशित घटना

खबरों में क्यों?

केंद्र सरकार इराक में ONGC विदेश लिमिटेड के अन्वेषण ब्लॉक में परिचालन फिर से शुरू करने पर विचार कर रही है, जो 2003 से अप्रत्याशित स्थिति में है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत सरकार ONGC विदेश (OVL) के हाइड्रोकार्बन अन्वेषण ब्लॉक के लिए इराक में परिचालन फिर से शुरू करने पर विचार कर रही है। इराक भारत के लिए कच्चे तेल के एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है, जिसने भारतीय ऊर्जा कंपनियों को संभावित रूप से इराक में तेल और गैस संपत्तियों में निवेश करने के लिए प्रेरित किया है।
- रुकी हुई परियोजना में संचालन और निवेश को फिर से शुरू करने में सुरक्षा स्थिति सहित विभिन्न कारकों पर सावधानीपूर्वक विचार करना शामिल होगा।

- अन्वेषण ब्लॉक, जिसे 'ब्लॉक 20' (पहले ब्लॉक 8) के नाम से जाना जाता है, इराक के पश्चिमी रेगिस्तान में स्थित एक बड़ा भूमि क्षेत्र है, जो 10,500 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।
- OVL ने नवंबर 2000 में एक अन्वेषण और विकास अनुबंध पर हस्ताक्षर करके ब्लॉक में 100 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल कर ली थी।
- हालाँकि, सुरक्षा चिंताओं के कारण, 2003 में अप्रत्याशित घटना की घोषणा की गई थी, जिससे अनुबंध संबंधी दायित्वों में बाधा डालने वाली अप्रत्याशित और अपरिहार्य आपदाओं के लिए दायित्व से प्रतिभागियों को राहत मिली।
- हाल ही में आयोजित भारत-इराक संयुक्त आयोग की बैठक (JCM) के दौरान निवेश और रुकी हुई परियोजनाओं में परिचालन फिर से शुरू करने के संबंध में चर्चा हुई।

- बैठक में वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ते ऊर्जा मांग केंद्र के रूप में भारत की स्थिति पर विचार करते हुए दोनों देशों के बीच प्राकृतिक और पारंपरिक तालमेल पर जोर दिया गया।

अप्रत्याशित घटना:

- अप्रत्याशित घटना एक फ्रांसीसी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है "अधिक बल।"
- अप्रत्याशित घटना की अवधारणा एक असाधारण घटना को संदर्भित करती है जो दो या दो से अधिक अनुबंधित पार्टियों के बीच कानूनी दायित्वों को पूरा करना असंभव बना देती है।
- यह ईश्वर के कार्य की अवधारणा से संबंधित है, एक ऐसी घटना जिसके लिए किसी भी पक्ष को जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता है। इस प्रकार का आयोजन पूरी तरह से पार्टियों के उचित नियंत्रण से परे होना चाहिए।
- अनुबंध के उल्लंघन के खिलाफ एहतियाती उपाय के रूप में, कई वाणिज्यिक समझौतों में अप्रत्याशित घटना अनुबंध खंड शामिल होते हैं जो प्रमुख घटनाओं की एक सूची की गणना करते हैं जिसके परिणामस्वरूप संविदात्मक कर्तव्यों का गैर-प्रदर्शन हो सकता है।
- उल्लेखनीय घटनाओं में युद्ध, दंगे, आपराधिक गतिविधि, महामारी, महामारी और अन्य अप्रत्याशित घटनाएं शामिल हैं।
- अप्रत्याशित घटना को लागू करने के लिए, ये बाधा डालने वाली परिस्थितियाँ किसी पक्ष के उचित नियंत्रण से परे होनी चाहिए।
- अनुबंध करने वाले पक्षों को उन परिस्थितियों को कम करने के लिए अपने उचित प्रयासों को भी साबित करना होगा जिन्होंने उनके कर्तव्यों की पूर्ति को अव्यवहारिक बना दिया है।
- ऐसी घटनाओं के परिणामस्वरूप पक्ष कुछ समय के लिए अपने दायित्वों में देरी कर सकते हैं, अनुबंध की शर्तों को संशोधित कर सकते हैं, या अनुबंध को रद्द करने पर सहमत हो सकते हैं।
- जबकि भारतीय क़ानूनों में अप्रत्याशित घटना को न तो परिभाषित किया गया है और न ही विशेष रूप से निपटाया गया है, भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872 ("अनुबंध अधिनियम") की धारा 32 में कुछ संदर्भ पाए जा सकते हैं, जिसमें यह परिकल्पना की गई है कि यदि कोई अनुबंध घटित होने पर निर्भर है वह घटना जो घटना असंभव हो जाती है तो अनुबंध शून्य हो जाता है।
- अप्रत्याशित घटना "पैक्टा संट सर्वंडा" की अवधारणा के साथ टकराव करती है, जो अंतरराष्ट्रीय कानून में एक सिद्धांत है कि समझौतों को बनाए रखा जाना चाहिए और इससे पीछे नहीं हटना चाहिए।

सोलोमन इस्लैंडस

खबरों में क्यों?

हाल ही में, सोलोमन द्वीप के नेता ने चीन के साथ अपने देश के गहरे सुरक्षा संबंधों की आलोचना पर पलटवार किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- सोलोमन द्वीप के प्रधान मंत्री ने चीन में रहते हुए नौ समझौतों और ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए, जिनमें एक पुलिस सहयोग योजना भी शामिल है।
- नए समझौते सोलोमन द्वीप समूह द्वारा पिछले साल चीन के साथ एक सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद आए हैं, जिससे क्षेत्र में सैन्य निर्माण की आशंका बढ़ गई है।
- अमेरिका ने सोलोमन द्वीप में दूतावास खोलने सहित अपने स्वयं के राजनयिक कदमों से इसका प्रतिकार किया है।
- सोलोमन द्वीप ने 2019 में स्व-शासित द्वीप ताइवान से बीजिंग के प्रति निष्ठा बदल ली, जिससे द्वितीय विश्व युद्ध के समय से अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंधों को खतरा पैदा हो गया।

- अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया दोनों ने नई पुलिस योजना की गोपनीयता को लेकर चिंता जताई है।
- सोलोमन के प्रधान मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि पुलिस की मदद करने की चीन की योजना उनके देश में मौजूदा ऑस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड पुलिस कार्यक्रमों की पूरक है।
- 700,000 लोगों का घर और ऑस्ट्रेलिया से लगभग 2,000 किमी (1,200 मील) उत्तर पूर्व में स्थित, सोलोमन द्वीप दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने के अभियान में चीन की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक रहा है।

सोलोमन द्वीप के बारे में

- सोलोमन द्वीप ओशिनिया में स्थित एक द्वीप राष्ट्र है। इनमें लगभग 992 छोटे द्वीप, एटोल और चट्टानें शामिल हैं।
- द्वीपों में से केवल 347 पर आबादी है। छह प्रमुख द्वीप चोईसेउल, गुआडलकैनाल, मलाइता, मकीरा, न्यू जॉर्जिया और सांता इसाबेल हैं।
- सोलोमन द्वीप दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में तीसरा सबसे बड़ा द्वीपसमूह है।
- सोलोमन द्वीप के पहले निवासी न्यू गिनी के पापुआन भाषी शिकारी-संग्रहकर्ता थे। ऑस्ट्रोनेशियन-भाषी आरंभिक मेलनेशियनों के 4000 ईसा पूर्व के आसपास आगमन शुरू होने से पहले वे संभवतः 50,000 वर्षों तक द्वीपों पर निवास करते थे।
- द्वीपों का पता लगाने वाले पहले यूरोपीय 1568 में स्पेनिश खोजकर्ता अल्वारो डी मेंडाना थे।
- यह विश्वास करते हुए कि सोना मौजूद था, मेंडाना ने द्वीपों का नाम प्रसिद्ध राजा सोलोमन की खानों के नाम पर रखा।
- 19वीं शताब्दी में सोलोमन द्वीप समूह को ब्रिटेन द्वारा उपनिवेशित किया गया था। ब्रिटिश सोलोमन द्वीप संरक्षित क्षेत्र 1893 में घोषित किया गया था।
- संरक्षक को अनौपचारिक रूप से "द हैप्पी आइल्स" के रूप में जाना जाता था।
- 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोलोमन द्वीप पर जापान का कब्ज़ा हो गया। व्यापक लड़ाई हुई, विशेषकर गुआडलकैनाल की निर्णायक लड़ाई के दौरान। अंततः 1945 में मित्र राष्ट्रों द्वारा जापानियों को द्वीपों से खदेड़ दिया गया और ब्रिटिश शासन बहाल हो गया।

- 1976 में, प्रधान मंत्री पीटर केनिलोरिया के सत्ता में आने के साथ 1978 में यूके से पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले सोलोमन द्वीप स्वशासी बन गया।
- राष्ट्रीय ध्वज में नीले रंग के त्रिकोण होते हैं, जो पानी के महत्व को दर्शाता है, और हरा, जो पेड़ों और फसलों का प्रतिनिधित्व करता है, एक पीले विकर्ण पट्टी से अलग होता है जो सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है।

भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग

खबरों में क्यों?

भारत के विदेश मंत्री ने हाल ही में अपने म्यांमार समकक्ष से मुलाकात की और परियोजनाओं, विशेषकर भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग में तेजी लाने पर चर्चा की।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत के विदेश मंत्री ने अभियान परियोजनाओं विशेष रूप से भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और परियोजना के सुचारू कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए अपने म्यांमार समकक्ष से मुलाकात की।

भारत-म्यांमार-थाईलैंड राजमार्ग:

- भारत-म्यांमार-थाईलैंड राजमार्ग एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय कनेक्टिविटी परियोजना है जिसका उद्देश्य भारत, म्यांमार और थाईलैंड के बीच सड़क संपर्क स्थापित करना है।
- राजमार्ग लगभग 1,360 किलोमीटर (845 मील) की दूरी तय करेगा, जो भारत के मणिपुर में मोरेह से शुरू होगा और थाईलैंड में माए सोत तक पहुंचने से पहले म्यांमार से होकर गुजरेगा।
- यह पहली बार पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तावित किया गया था और अप्रैल 2002 में भारत, म्यांमार और थाईलैंड के बीच एक मंत्री-स्तरीय बैठक में इसे मंजूरी दी गई थी।
- भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग का निर्माण 2012 में शुरू हुआ और इसे कई चरणों में कार्यान्वित किया जा रहा है।
- भारत-म्यांमार मैत्री सड़क IMT राजमार्ग का पहला खंड बनाती है। यह तमू/मोरेह की सीमा से कालेम्यो और कालेवा तक चलती है।
- दिसंबर 2020 में, बांग्लादेश ने ढाका से कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए इस राजमार्ग परियोजना में शामिल होने में रुचि दिखाई।
- भारत और आसियान ने इस मार्ग को लाओस, कंबोडिया और वियतनाम तक विस्तारित करने की योजना बनाई है क्योंकि यह कनेक्टिविटी 2025 तक सालाना अनुमानित सकल घरेलू उत्पाद में 70 बिलियन अमेरिकी डॉलर और वृद्धिशील रोजगार में 20 मिलियन उत्पन्न करेगी। भारत ने इसके लिए 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर भारत आसियान कनेक्टिविटी परियोजनाएँ लाइन ऑफ कंट्रोल क्रेडिट की पेशकश की है।

कार्यान्वयन एजेंसियां

- भारतीय पक्ष में, परियोजना को म्यांमार और थाईलैंड में अपने समकक्षों के सहयोग से विदेश मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। और इस प्रोजेक्ट के लिए वित्त मंत्रालय से बजट आवंटित किया गया था।

IMT राजमार्ग परियोजना में भारत का योगदान:

- तामू/मोरेह की सीमा को कलमेया और कलेवा से जोड़ने वाली भारत-म्यांमार मैत्री सड़क भी इस परियोजना का एक हिस्सा है।
- भारत ने म्यांमार में राजमार्ग के दो खंडों का निर्माण कार्य शुरू किया है:
- 74 किमी कालेवा-यागयी सड़क खंड का निर्माण।
- 70 किलोमीटर तमु-क्यिगोन-कालेवा (TKK) सड़क खंड पर पहुंच मार्ग के साथ 69 पुलों का निर्माण।
- 2023 तक, भारतीय हिस्से में राजमार्ग के इंफाल-मोरेह हिस्से को पूरा करने की उम्मीद है।
- भारत ने मिजोरम में ज़ोखावथर से म्यांमार के चिन राज्य में टेडिम तक मार्ग को अपग्रेड करके आईएमटी राजमार्ग पर एक नया कनेक्शन जोड़ने की भी योजना बनाई है।

IMT त्रिपक्षीय राजमार्ग का महत्व:

- यह त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना परिवहन लागत को काफी कम कर देगी जिससे सीमा पार आर्थिक गतिविधियों और व्यापार के अवसरों में वृद्धि होगी।
- यह परियोजना जुड़े हुए देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध भी विकसित करेगी और पर्यटकों और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देगी।
- यह परियोजना देशों के लिए नए बाजार और व्यापार के अवसर खोलेगी जिससे उनकी आर्थिक वृद्धि में सुधार होगा और विकास में मदद मिलेगी।

उत्तरी/इंटरैक्शन-2023

खबरों में क्यों?

एक चीनी नौसैनिक बेड़ा हाल ही में "उत्तरी/इंटरेक्शन-2023" सैन्य अभ्यास में भाग लेने के लिए जापान के सागर में रूसी नौसेना और वायु सेना में शामिल होने के लिए रवाना हुआ।

महत्वपूर्ण बिंदु

- उत्तरी/इंटरेक्शन-2023 सैन्य अभ्यास चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी उत्तरी थिएटर कमांड द्वारा जापान के मध्य सागर में आयोजित किया जाता है।
- यह आयोजन PLA वार्षिक रणनीतिक अभ्यास में रूस के दूसरी बार भाग लेने का प्रतीक है और यह भी पहली बार है कि रूस ने इसी तरह के आयोजनों में भाग लेने के लिए नौसेना और वायु सेना दोनों को भेजा है।
- इस अभ्यास का विषय "रणनीतिक समुद्री मार्गों की सुरक्षा की रक्षा करना" है।
- अगस्त 2021 में, रूस ने उत्तर-पश्चिमी चीन के निंग्ज़िया हुई स्वायत्त क्षेत्र में आयोजित "वेस्टर्न/इंटरेक्शन-2021" अभ्यास में भाग लिया, जिससे पहली बार चीन ने विदेशी सेनाओं को अपने क्षेत्र में अपने वार्षिक रणनीतिक अभ्यास में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।
- "उत्तरी/इंटरेक्शन-2023" अभ्यास पीएलए उत्तरी थिएटर कमांड द्वारा आयोजित किया जाता है, जबकि पिछले "वेस्टर्न/इंटरेक्शन-2021" अभ्यास में भाग लेने वाले पीएलए बल मुख्य रूप से पश्चिमी थिएटर कमांड के बलों से बने थे।

जापान का सागर:

- जापान सागर (पूर्वी सागर) पश्चिमी प्रशांत महासागर का एक सीमांत सागर है।
- यह पूर्वी एशिया में स्थित है जो पूर्व में जापान और सखालिन द्वीप से और पश्चिम में एशियाई मुख्य भूमि पर रूस और कोरिया से घिरा है।
- इसका क्षेत्रफल 377,600 वर्ग मील (978,000 वर्ग किमी) है।
- समुद्र अपने आप में एक गहरे बेसिन में स्थित है, जो पूर्वी चीन सागर से दक्षिण में त्सुशिमा और कोरिया जलडमरूमध्य द्वारा और उत्तर में ओखोटस्क सागर से ला पेरोस (या सोया) और तातार जलडमरूमध्य द्वारा अलग किया गया है।
- पूर्व में यह कानमोन जलडमरूमध्य द्वारा जापान के अंतर्देशीय सागर और त्सुगारू जलडमरूमध्य द्वारा प्रशांत महासागर से भी जुड़ा हुआ है।
- यह अपने अपेक्षाकृत गर्म पानी के कारण जापान की जलवायु को प्रभावित करता है।

ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप के लिए व्यापक और प्रगतिशील समझौता (CPTPP)

खबरों में क्यों?

UK औपचारिक रूप से ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (CPTPP) के लिए व्यापक और प्रगतिशील समझौते में शामिल होने वाला पहला यूरोपीय देश बनने के लिए सहमत हो गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यूनाइटेड किंगडम ने औपचारिक रूप से एक प्रमुख इंडो-पैसिफिक ब्लॉक में शामिल होने के लिए एक संधि पर हस्ताक्षर किए - उसने जो कहा वह 2020 की शुरुआत में देश के यूरोपीय संघ छोड़ने के बाद से सबसे बड़ा व्यापार सौदा था।
- ब्रिटेन की व्यापार मंत्री ने न्यूजीलैंड के ऑकलैंड में ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (CPTPP) के लिए व्यापक और प्रगतिशील समझौते के परिग्रहण प्रोटोकॉल पर अपने हस्ताक्षर किए।
- ब्रिटेन के पास "सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्र में मेज पर एक सीट" है और अन्य देश इस समझौते में शामिल होने के लिए कतार में खड़े हैं
- इस समझौते से लंबी अवधि में यूके के निर्यात में 1.7 बिलियन पाउंड (€1.9 बिलियन, $2.23 बिलियन), यूके में आयात में 1.6 बिलियन पाउंड और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में £1.8 बिलियन पाउंड की वृद्धि होगी। यह समझौता 2024 की दूसरी छमाही में प्रभावी होने की उम्मीद है।

CPTPP क्या है ?

- CPTPP 2018 में सहमत एक ऐतिहासिक समझौता है जो ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई, कनाडा, चिली, जापान, मलेशिया, मैक्सिको, न्यूजीलैंड, पेरू, सिंगापुर और वियतनाम सहित 11 देशों के बीच व्यापार बाधाओं को कम करता है।
- समझौते में देशों को टैरिफ को खत्म करने या उल्लेखनीय रूप से कम करने और सेवाओं और निवेश बाजारों को खोलने के लिए मजबूत प्रतिबद्धताएं बनाने की आवश्यकता है।
- इसमें विदेशी कंपनियों के लिए प्रतिस्पर्धा, बौद्धिक संपदा अधिकार और सुरक्षा को संबोधित करने वाले नियम भी हैं।
- CPTPP को क्षेत्र में चीन के प्रभुत्व के खिलाफ एक दीवार के रूप में देखा जाता है, हालांकि बीजिंग ने ताइवान, यूक्रेन, कोस्टा रिका, उरुग्वे और इक्वाडोर के साथ इसमें शामिल होने के लिए आवेदन किया है।

CPTPP UK के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

- CPTPP एशिया प्रशांत देशों में यूके के निर्यात के लिए टैरिफ में कटौती करेगा और यूके की सदस्यता के साथ, ट्रेडिंग ब्लॉक की संयुक्त GDP 12 ट्रिलियन पाउंड होगी और वैश्विक व्यापार का 15% हिस्सा होगा।
- ब्रिटेन 2020 में ब्रेक्सिट के बाद प्रशांत क्षेत्र में व्यापार संबंधों को गहरा करने का इच्छुक है।
- लगभग 50 वर्षों के बाद यूरोपीय संघ की सदस्यता छोड़ने और ब्लॉक के एकल बाजार और सीमा शुल्क संघ को छोड़ने के बाद से लंदन "ग्लोबल ब्रिटेन" रणनीति पर जोर दे रहा है।
- ब्रेक्सिट के बाद से, UK ने दुनिया भर के उन देशों और व्यापारिक समूहों के साथ अन्य व्यापार समझौते की मांग की है जिनके बारे में सरकार का कहना है कि उनकी अर्थव्यवस्थाएं यूरोपीय संघ की तुलना में तेजी से बढ़ती हैं।

- लेकिन लंदन को निकट भविष्य में चीन जैसी बड़ी शक्तियों के साथ मुक्त व्यापार समझौते हासिल करने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है और यहां तक कि उसके सबसे करीबी सहयोगी, संयुक्त राज्य अमेरिका के पास ब्रिटेन के साथ व्यापार उदारीकरण फिलहाल मेज से बाहर है।
- आलोचकों का कहना है कि CPTTP और अन्य सौदे अब 27 सदस्यीय यूरोपीय संघ - दुनिया के सबसे बड़े व्यापारिक ब्लॉक और सामूहिक अर्थव्यवस्था - को छोड़ने से होने वाली आर्थिक क्षति की भरपाई के लिए संघर्ष करेंगे।
- ब्रेक्सिट के परिणामस्वरूप UK की दीर्घकालिक उत्पादकता में 4% की कमी होने का अनुमान है।
- यूके के पास पहले से ही CPTPP के 11 अन्य सदस्यों में से 10 के साथ व्यापार समझौते हैं और अंततः आर्थिक वृद्धि से सकल घरेलू उत्पाद में सालाना केवल 0.08% की वृद्धि होने की संभावना है।
- 2022 में, ब्रिटेन ने यूरोपीय संघ को 340 बिलियन पाउंड की वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात किया, जो ब्रिटेन के कुल निर्यात का 42% है।
- वैश्विक विकास 2030 के मध्य तक इंडो-पैसिफिक से आने का अनुमान है और विकास सदी के मध्य तक जारी रहेगा।

CPTTP बैठक में और क्या घोषणा की गई ?

- ट्रांस-पैसिफिक व्यापार समझौते के सदस्य समझौते में शामिल होने के इच्छुक देशों के बारे में खुफिया जानकारी इकट्ठा कर रहे थे, यह देखने के लिए कि क्या वे ब्लॉक के "उच्च मानकों" को पूरा करने में सक्षम हैं।
- सदस्यता वर्तमान में अपनी व्यापार प्रतिबद्धताओं पर उनके अनुभव को ध्यान में रखते हुए, आकांक्षी अर्थव्यवस्थाएं CPTPP के उच्च मानकों को पूरा कर सकती हैं या नहीं, इस पर जानकारी एकत्र करने की प्रक्रिया शुरू कर रही है।

भारत-अमेरिका

खबरों में क्यों?

भारत-अमेरिका रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी मंत्रिस्तरीय संयुक्त वक्तव्य

महत्वपूर्ण बिंदु

- बैठक के दौरान, दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय स्वच्छ ऊर्जा भागीदारी के महत्वपूर्ण महत्व और ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने, स्वच्छ ऊर्जा नवाचार के अवसर पैदा करने, जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने और SCEP की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए देशों के बीच द्विपक्षीय ऊर्जा सहयोग के बढ़ते महत्व पर ध्यान दिया। रोजगार सृजन के अवसर पैदा करना।
- दोनों पक्षों ने देशों के बीच बढ़ते ऊर्जा व्यापार का स्वागत किया जो लगातार नई ऊंचाइयों को छू रहा है और SCEP द्वारा सुविधाजनक वाणिज्यिक साझेदारी का स्वागत किया।
- दोनों पक्षों ने न्यायसंगत, व्यवस्थित और टिकाऊ ऊर्जा परिवर्तन की दिशा में काम करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई, जो विश्वसनीय, किफायती और स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति तक पहुंच को प्राथमिकता देता है।
- इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि भारत और अमेरिका दुनिया में सबसे बड़े लोकतंत्रों और सबसे बड़ी और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, दोनों पक्षों ने न केवल द्विपक्षीय प्रगति के लिए बल्कि वैश्विक ऊर्जा संक्रमण को नेविगेट करने के लिए संयुक्त कार्रवाई और सहयोग के महत्व को रेखांकित किया।
- दोनों पक्षों ने महत्वाकांक्षी और गतिशील एससीईपी जनादेश की समीक्षा की, जिसने पिछले कुछ वर्षों में स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, बैटरी भंडारण, गैस हाइड्रेट्स, उन्नत जैव ईंधन और हाइड्रोजन और इलेक्ट्रोलाइज़र उत्पादन और स्वैपिंग प्रौद्योगिकियों जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग बढ़ाने सहित स्वच्छ ऊर्जा कार्य धाराओं की एक विस्तृत श्रृंखला में सहयोग को गहरा और मजबूत किया है।
- इस संदर्भ में, पक्षों ने वैश्विक डीकार्बोनाइजेशन के लिए एक महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत के रूप में हरित/स्वच्छ हाइड्रोजन के उत्पादन के महत्व को पहचाना और एक-दूसरे के राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन का समर्थन करने पर सहमति व्यक्त की।
- दोनों पक्षों ने दोनों देशों में डीकार्बोनाइजेशन का समर्थन करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग को गहरा करने की दिशा में एससीईपी के पांच स्तंभों द्वारा किए गए कार्यों का भी स्वागत किया, जिसमें सार्वजनिक-निजी कार्य बल, रिवर्स व्यापार मिशन, भारत-अमेरिका व्यापार गोलमेज सम्मेलन की अध्यक्षता शामिल है।
- दोनों पक्षों ने प्रत्येक देश में ऊर्जा पहुंच, सामर्थ्य और ऊर्जा न्याय को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया।
- दोनों पक्षों ने यह भी स्वीकार किया कि महत्वाकांक्षी जलवायु और स्वच्छ ऊर्जा आकांक्षाओं को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए ऊर्जा संक्रमण रोडमैप के विकास, क्षमता निर्माण, नौकरी कौशल और सरकार के सभी स्तरों पर सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।
- उस संदर्भ में, दोनों पक्ष स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण का समर्थन करने के लिए भारत में शुद्ध शून्य गांवों के विकास की दिशा में काम करने पर सहमत हुए।
- दोनों पक्षों ने 22 जून, 2023 के अपने संयुक्त वक्तव्य में भारत के प्रधान मंत्री और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा उल्लिखित सकारात्मक एजेंडे को आगे बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की, जिसमें ऊर्जा भंडारण प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और तैनात करने, उनके समर्थन में सहयोग का विस्तार करने के लिए एससीईपी के तहत प्रयासों का स्वागत किया गया। राष्ट्रीय हाइड्रोजन रणनीतियाँ और लागत में कमी के लक्ष्य और नई और उभरती नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों पर सहयोग में तेजी लाना।

इसके लिए, मंत्रियों ने स्वागत किया:

- स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन का समर्थन करने के लिए आवश्यक नवीकरणीय ऊर्जा के बड़े पैमाने पर एकीकरण का समर्थन करने के लिए सार्वजनिक-निजी ऊर्जा भंडारण कार्य बल और संबंधित प्रयासों की स्थापना;

- सार्वजनिक-निजी हाइड्रोजन टास्क फोर्स और उनकी राष्ट्रीय हाइड्रोजन रणनीतियों के समर्थन में अन्य प्रयासों के माध्यम से हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों की तैनाती को बढ़ाने और तेज करने के लिए सहयोग को गहरा करना, जिसमें सामान्य लागत कटौती लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है;
- आम महत्वाकांक्षी स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रमुख प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने के लिए यूएस-इंडिया न्यू एंड इमर्जिंग रिन्यूएबल एनर्जी टेक्नोलॉजीज एक्शन प्लेटफॉर्म (RETAP) का शुभारंभ।

दोनों पक्षों ने निम्नलिखित क्षेत्रों में चल रहे सहयोग का भी स्वागत किया:

- स्वच्छ ऊर्जा प्रणालियों की विश्वसनीयता, लचीलापन, लचीलेपन, सामर्थ्य और स्थिरता में सुधार के लिए बिजली प्रणाली का आधुनिकीकरण करना;
- इमारतों, उपकरणों और औद्योगिक क्षेत्र सहित ऊर्जा दक्षता और संरक्षण को बढ़ावा देना;
- तेल और गैस क्षेत्र में उत्सर्जन को कम करना, जिसमें मीथेन कमी की जांच और स्वैच्छिक और पारस्परिक रूप से सहमत शर्तों के तहत प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण और तैनाती शामिल है; और
- कठिन क्षेत्रों के विद्युतीकरण और डीकार्बोनाइजेशन का समर्थन करने के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाना।

- दोनों पक्षों ने अनुसंधान, विश्लेषण और क्षमता निर्माण गतिविधियों जैसे जीवन चक्र में मॉडलिंग क्षमता का निर्माण, कम कार्बन प्रौद्योगिकियों का आकलन और ऊर्जा पर विश्लेषण का समर्थन करने के लिए भारतीय एजेंसियों और अमेरिकी राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के बीच जुड़ाव को गहरा करने के लिए दक्षिण एशिया ब्रुप फॉर एनर्जी (SAGE) लॉन्च किया।
- दोनों पक्षों ने स्वच्छ ऊर्जा-अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए साझेदारी (पीएसीई-आर) के तहत लंबे समय से चले आ रहे संयुक्त अनुसंधान एवं विकास की सराहना की, जिसमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के सह-नेतृत्व में स्टोरेज (UI-असिस्ट) के साथ स्मार्ट डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम के लिए US-इंडिया कोलैबोरेटिव कंसोर्टियम भी शामिल है। इस तरह की अनुसंधान एवं विकास पहल के महत्व का स्वागत करते हुए, दोनों पक्षों ने आज तक पेस-आर की सफलताओं का स्वागत किया और उन्नत स्मार्ट ग्रिड और ऊर्जा भंडारण प्रौद्योगिकियों पर अनुसंधान एवं विकास ट्रैक के अंतिम वर्ष पर प्रकाश डाला।

अमेरिका और भारत सरकार की एजेंसियों ने सहयोग के पांच तकनीकी स्तंभों में कई उपलब्धियों का प्रदर्शन किया:

1. शक्ति एवं ऊर्जा दक्षता,
2. नवीकरणीय ऊर्जा,
3. जिम्मेदार तेल एवं गैस,
4. सतत विकास,
5. उभरते ईंधन और प्रौद्योगिकियाँ।

YOUR SUCCESS OUR PRIOR
RAO'S ACADEMY

8 सरकारी योजना

पीड़ित बालिकाओं के लिए योजना

खबरों में क्यों?

सरकार ने गर्भवती नाबालिग बलात्कार पीड़ितों को आश्रय, सहायता के लिए योजना शुरू की

महत्वपूर्ण बिंदु

- बलात्कार/सामूहिक बलात्कार पीड़ितों और गर्भवती होने वाली नाबालिग लड़कियों को न्याय तक पहुंचने के लिए महत्वपूर्ण देखभाल और सहायता के प्रस्ताव को WCD मंत्रालय द्वारा 74.10 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ मंजूरी दे दी गई है और यह एक सप्ताह के भीतर पूरे देश में लागू हो जाएगा।

- बलात्कार या गंभीर हमले की नाबालिग पीड़ितों को होने वाले शारीरिक और भावनात्मक आघात को पहचानते हुए और कुछ परिस्थितियों में जहां ऐसी पीड़िताएं गर्भवती हो जाती हैं, मंत्रालय में हमने ऐसी नाबालिग पीड़ितों को मिलने वाली वित्तीय सहायता के अलावा चिकित्सा ढांचागत सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया है। निर्भया फंड के तत्वावधान में इसकी आवश्यकता है।
- इस योजना का उद्देश्य उन नाबालिग लड़कियों को आश्रय, भोजन, दैनिक ज़रूरतें, अदालत की सुनवाई में भाग लेने के लिए सुरक्षित परिवहन और कानूनी सहायता प्रदान करना है, जिन्हें बलात्कार या सामूहिक बलात्कार या किसी अन्य कारण से जबरन गर्भावस्था के कारण उनके परिवार द्वारा छोड़ दिया गया है। और उनके पास अपना भरण-पोषण करने के लिए कोई अन्य साधन नहीं है।
- 2021 में, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) ने POCSO अधिनियम के तहत 51,863 मामले दर्ज किए। WCD मंत्रालय के अधिकारियों ने खुलासा किया कि उनमें से 64% या 33,348 मामले अधिनियम की धारा 3 और 5 के तहत दर्ज किए गए थे, जो क्रमशः प्रवेशन यौन हमले और गंभीर प्रवेशन यौन हमले से संबंधित हैं।
- अधिकारियों के मुताबिक, यह फंड ऐसे पीड़ितों के लिए आश्रय स्थल स्थापित करने में मदद करेगा। यह स्टैंडअलोन आश्रयों की प्रकृति में हो सकता है, या मौजूदा बाल देखभाल संस्थानों (CCI) में ऐसे पीड़ितों के लिए वार्ड निर्धारित किए जा सकते हैं, जैसा कि राज्य सरकारें उचित समझती हैं। मौजूदा CCI के अंदर वार्डों के मामले में, संस्था का प्रभारी व्यक्ति यह सुनिश्चित करेगा कि नाबालिग बलात्कार पीड़ितों को एक अलग सुरक्षित स्थान प्रदान किया जाए, "क्योंकि उसकी ज़रूरतें वहां रहने वाले अन्य बच्चों से भिन्न हो सकती हैं"।

पॉस्को एक्ट

- यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2012 एक ऐसा कानून है जिसका उद्देश्य बच्चों को सभी प्रकार के यौन शोषण से बचाना है। हालाँकि बाल अधिकारों पर कन्वेंशन को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1989 में अपनाया गया था, लेकिन वर्ष 2012 तक भारत में बच्चों के खिलाफ अपराधों का किसी भी कानून के माध्यम से निवारण नहीं किया गया था।
- यह गंभीर प्रवेशन यौन उत्पीड़न के मामले में न्यूनतम 20 साल की कैद से लेकर मौत की सजा तक बच्चों के खिलाफ अपराध करने के लिए कठोर निवारक प्रावधान प्रदान करता है।

अग्निशमन सेवाएँ

खबरों में क्यों?

गृह मंत्रालय ने राज्यों में अग्निशमन सेवाओं के विस्तार और आधुनिकीकरण के लिए योजना शुरू की

महत्वपूर्ण बिंदु

- गृह मंत्रालय ने 5,000 करोड़ रुपये के महत्वपूर्ण आवंटन के साथ "राज्यों में अग्निशमन सेवाओं के विस्तार और आधुनिकीकरण की योजना" शुरू की है।
- इस योजना की घोषणा केंद्रीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री ने नई दिल्ली में राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के आपदा प्रबंधन मंत्रियों के साथ एक बैठक के दौरान की थी।
- योजना का उद्देश्य देश भर में अग्निशमन सेवाओं को मजबूत करना और भारत को आपदा-रोधी बनाना है।

योजना का उद्देश्य:

- योजना का प्राथमिक लक्ष्य राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF) की तैयारियों और क्षमता-निर्माण घटकों को बढ़ाकर राज्यों में अग्निशमन सेवाओं का विस्तार और आधुनिकीकरण करना है।

फंडिंग और योगदान:

- योजना के तहत परियोजना प्रस्तावों के लिए, राज्य सरकारों को उत्तर-पूर्वी और हिमालयी (NEH) राज्यों को छोड़कर, कुल लागत का 25% योगदान करना होगा, जो अपने बजटीय संसाधनों से 10% योगदान देंगे।
- यह योजना पंद्रहवें वित्त आयोग (XV-FC) की सिफारिश पर आधारित है, जिसमें तैयारी और क्षमता निर्माण की फंडिंग विंडो के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF) और राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (SDRF) से 12.5% आवंटन की अनुमति दी गई है।

आवंटन और उपयोग:

- "अग्निशमन सेवाओं के विस्तार और आधुनिकीकरण" की प्राथमिकता परियोजना के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF) कोष से 5,000 करोड़ रुपये की राशि निर्धारित की गई है।
- यह ध्यान रखना आवश्यक है कि निर्दिष्ट पुरस्कार अवधि के बाद स्वीकृत परियोजनाओं के लिए देनदारियों का कोई फैलाव नहीं होगा।

डिजिटल इंडिया

खबरों में क्यों?

डिजिटल इंडिया मिशन की 8वीं वर्षगांठ मनाई गई

महत्वपूर्ण बिंदु

- पिछले आठ वर्षों में, डिजिटल इंडिया पहल ने प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने और डिजिटल माध्यमों से लाखों भारतीय नागरिकों को सशक्त बनाने में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है।
- डिजिटल रूप से समावेशी समाज बनाने के उद्देश्य से कार्यक्रम ने महत्वपूर्ण मील के पत्थर को चिह्नित करते हुए शासन, कनेक्टिविटी और सेवा वितरण में क्रांति ला दी है।
- इसने अपने सभी तीन मुख्य स्तंभों डिजिटल बुनियादी ढांचे के निर्माण, सेवाओं की डिजिटल डिलीवरी और साक्षरता के माध्यम से डिजिटल क्षमता निर्माण में प्रभावशाली प्रगति की है, जिससे भविष्य के सभी प्रयासों के लिए एक मजबूत नींव तैयार हुई है।

अंत्योदय: समावेशन के साथ विकास

- यह महत्वाकांक्षी कार्यक्रम भारत में उस समय पेश किया गया था जब स्मार्टफोन और 4G शहरी क्षेत्रों में लोकप्रिय हो रहे थे और 2G और 3G से संक्रमण सामने आ रहा था।
- कार्यक्रम का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाले स्मार्टफोन और उच्च गति डेटा के लिए प्रीमियम का भुगतान करने के विचार को बदलना और वास्तविक उपयोग के मामले बनाकर इन्हें व्यापक दर्शकों के लिए सुलभ बनाना है जो समाज में अंतिम व्यक्ति के उत्थान और विकास को सुनिश्चित करेगा।
- इसके बाद स्मार्टफोन और डेटा क्रांति आई, जिसने किफायती स्मार्टफोन और सस्ते डेटा टैरिफ के माध्यम से करोड़ों भारतीयों को जोड़ा।
- यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि डिजिटल इंडिया की शुरुआत ऐसे समय में की गई थी जब प्रौद्योगिकी और नवाचार अभी भी एक बहुत ही शहरी विशेषाधिकार थे और इस प्रकार बुनियादी ढांचे के निर्माण, गोद लेने को बढ़ावा देने और नवाचार के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण करने वाले महत्वपूर्ण प्रयासों को स्वीकार करना आवश्यक है।

- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम अंधेरे में मोमबत्ती जलाने और लाखों नए इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन लाने और उन्हें सशक्त बनाने की भावना का प्रतीक है।
    - प्रधान मंत्री की परिवर्तनकारी पहल की आठवीं वर्षगांठ पर उन आठ प्रमुख क्षेत्रों पर चर्चा करें जिनमें डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं:

1. डिजिटल विभाजन को पाटना: डिजिटल इंडिया ने डिजिटल विभाजन को कम करने, विस्तारित इंटरनेट कनेक्टिविटी के माध्यम से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों को करीब लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बुनियादी ढांचे के विकास, जिसका उदाहरण भारतनेट परियोजना है, ने 1,72,000 से अधिक ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड पहुंच को सक्षम किया है, जिससे लाखों ग्रामीण भारतीयों को अंतिम उपलब्ध डेटा सेट के अनुसार शिक्षा, आजीविका और संचार के लिए इंटरनेट का लाभ उठाने में सशक्त बनाया गया है। यह महत्वाकांक्षी परियोजना पूरी होने पर सामुदायिक विकास खंडों (CDB) पर समाप्त होने वाले भारत के 630,000 बसे हुए गांवों को कवर करने वाली सभी 250,000 ग्राम ग्राम पंचायतों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के माध्यम से ICT पहुंच प्रदान करेगी।
2. डेटा क्रांति: पिछले दशक में, भारत ने किफायती स्मार्टफोन और डेटा टैरिफ में क्रांति देखी है। जुलाई 2023 तक, देश में 850 मिलियन ब्रॉडबैंड ग्राहक हैं, जो 2015 से लगभग 250% की आश्चर्यजनक वृद्धि है, जो दुनिया में सबसे अधिक वृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। 2022 में, प्रति उपयोगकर्ता प्रति माह डेटा खपत औसतन 19.5 जीबी थी और पूरे भारत में प्रति माह मोबाइल डेटा उपयोग 2018 में 4.5 एक्साबाइट से बढ़कर 2022 में 14.4 एक्साबाइट हो गया है। 5जी के कारण यह 2024 तक दोगुना होने की उम्मीद है।
3. डिजिटल भुगतान: डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत डिजिटल भुगतान परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। अकेले 2023 में 82 बिलियन से अधिक डिजिटल लेनदेन के साथ, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) जैसे प्लेटफार्मों के कार्यान्वयन ने वित्तीय लेनदेन और

सेवा वितरण में क्रांति ला दी है। एक ही महीने में, यूपीआई लेनदेन 14.3 ट्रिलियन रुपये से अधिक हो गया, जो 2015 के पूरे वित्तीय वर्ष में सभी डिजिटल लेनदेन के कुल मूल्य को पार कर गया।

4. डिजिटल गवर्नेंस और सेवा वितरण: डिजिटल इंडिया ने पारदर्शिता, दक्षता और नागरिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर शासन को बदल दिया है। प्रौद्योगिकी से जुड़ी सरकारी प्रक्रियाओं ने सेवा वितरण को सुव्यवस्थित किया है और नागरिक-केंद्रित शासन की सुविधा प्रदान की है। ई-गवर्नमेंट प्रोक्योरमेंट (GEM), ई-हॉस्पिटल और डिजीलॉकर जैसे प्लेटफार्मों ने प्रक्रियाओं को सरल बनाया है, लालफीताशाही को कम किया है और आवश्यक सेवाओं को सभी के लिए सुलभ बनाया है। अकेले वित्त वर्ष 2021 में, सरकारी सेवाओं से संबंधित E-लेनदेन 3 बिलियन का आंकड़ा पार कर गया, जो कार्यक्रम के प्रभाव का उदाहरण है।
5. डिजिटल प्राइवेट इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI): सावधानीपूर्वक डिजाइन की गई DPI की क्षमता को पहचानते हुए, भारत के जी20 नेतृत्व ने सकारात्मक बदलाव लाने के लिए इस अवधारणा को अपनाया है। इंडिया स्टैक DPI के लिए आधार के रूप में कार्य करता है, जो सरकारी सेवाओं तक निर्बाध पहुंच को सक्षम बनाता है और समावेशी विकास को बढ़ावा देता है। आधार, डिजीलॉकर, डिजीयात्रा, UPI, भारतनेट, आरोग्यसेतु और कोविन जैसी तकनीकों ने नागरिकों को महत्वपूर्ण सेवाओं तक दूर से पहुंचने का अधिकार दिया है, जिससे भारत के डिजिटल परिदृश्य में क्रांति आ गई है।
6. डिजिटल कौशल और कार्यबल सुधार: डिजिटल इंडिया डिजिटल साक्षरता और कौशल पहल पर महत्वपूर्ण जोर देता है। प्रधान मंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (पीएमजीदिशा) जैसे कार्यक्रमों ने लाखों लोगों को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, आवश्यक डिजिटल कौशल के साथ सशक्त बनाया है, जिससे डिजिटल अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी संभव हो सकी है। राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन (एनडीएलएम) और स्किल इंडिया ने उभरती प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षण प्रदान करके और उद्यमशीलता को बढ़ावा देकर देश के कार्यबल को और मजबूत किया है।
7. वित्तीय समावेशन: डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने JAM ट्रिनिटी के माध्यम से भारत में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री जन धन योजना जैसी पहल ने यह सुनिश्चित किया है कि सबसे गरीब लोगों की वित्तीय सेवाओं तक पहुंच हो। इस सरकारी पहल ने डिजिटल लेनदेन और वित्तीय सशक्तिकरण को बढ़ावा देने, पहले से बैंकिंग सुविधा से वंचित व्यक्तियों के लिए 430 मिलियन से अधिक बैंक खाते खोलने की सुविधा प्रदान की है।
8. रोजगार: भारत की डिजिटल क्रांति ने किफायती और सुलभ हाई-स्पीड इंटरनेट की बदौलत अपने कार्यबल के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं। ऑनलाइन शिक्षा, गिग इकॉनमी और ई-कॉमर्स के विस्तार ने रोजगार के अवसर पैदा किए हैं और लिंग अंतर कम किया है। 2023 के अंत तक ऑनलाइन कार्य क्षेत्र 455 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जिससे ग्राहक सेवा, डिजिटल मार्केटिंग और ऑनलाइन शिक्षा जैसे विभिन्न क्षेत्र प्रभावित होंगे।

ऋण गारंटी योजना

खबरों में क्यों?

MSME का लाभ उठाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को फिर से मजबूत करने के लिए पशुधन क्षेत्र के लिए पहली बार "क्रेडिट गारंटी योजना" शुरू की गई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ऋण वितरण प्रणाली को मजबूत करने और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम को ऋण के सुचारू प्रवाह की सुविधा के लिए पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (AHIDF) के तहत क्रेडिट गारंटी योजना लागू कर रहा है। (MSME) संपार्श्विक सुरक्षा की परेशानी के बिना पशुधन क्षेत्र में लगे हुए हैं।
- योजना के संचालन के लिए, DAHD ने रुपये का क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट स्थापित किया है। 750.00 करोड़ रुपये, जो पात्र ऋण संस्थानों द्वारा MSME को दी गई क्रेडिट सुविधाओं के 25% तक क्रेडिट गारंटी कवरेज प्रदान करेगा।

पात्रता:

- यह योजना समाज के वंचित वर्गों को लक्षित करती है, जिसमें पहली पीढ़ी के उद्यमी और वंचित व्यक्ति शामिल हैं, जिनके पास अक्सर अपने उद्यमों के लिए संपार्श्विक सुरक्षा की कमी होती है।

लक्ष्य:

- इसका उद्देश्य ऋण वितरण प्रणाली को मजबूत करना और पशुधन क्षेत्र में लगे उद्यमियों के लिए वित्त तक सुगम पहुंच सुनिश्चित करना है।

उद्देश्य:

- मुख्य उद्देश्य उधारदाताओं को परियोजनाओं की व्यवहार्यता पर ध्यान केंद्रित करने और वित्तपोषित परिसंपत्तियों की प्राथमिक सुरक्षा के आधार पर ऋण सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करना है।
- वित्तीय सहायता तक पहुंच प्रदान करके, यह पशुधन क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे डेयरी और मांस प्रसंस्करण, पशु चारा संयंत्र, नस्ल सुधार प्रौद्योगिकी, अपशिष्ट प्रबंधन और पशु चिकित्सा वैक्सीन और दवा निर्माण सुविधाओं में निवेश को बढ़ावा देता है।

अनुदान

- DAHD ने 750 करोड़ रुपये का क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट स्थापित किया है, जो ऋण देने वाले संस्थानों द्वारा पात्र MSME को दी जाने वाली 25 प्रतिशत तक क्रेडिट सुविधाओं को कवर करेगा।
- नाबार्ड की सहायक कंपनी एनएबी संरक्षण ट्रस्टी कंपनी प्राइवेट लिमिटेड के साथ साझेदारी में गठित ट्रस्ट, एएचआईडीएफ योजना के तहत MSME के लिए क्रेडिट गारंटी सुनिश्चित करता है।

प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

- ब्याज में तीन प्रतिशत की छूट
- किसी भी अनुसूचित बैंक, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) से कुल परियोजना लागत का 90 प्रतिशत तक ऋण।

अग्रिम प्राधिकरण योजना

खबरों में क्यों?

हाल ही में, विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने विदेश व्यापार नीति के तहत अग्रिम प्राधिकरण योजना लागू की है, जो निर्यात उद्देश्यों के लिए इनपुट के शुल्क-मुक्त आयात की अनुमति देती है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- मानदंड निर्धारण प्रक्रिया को और अधिक कुशल बनाने के लिए, डीजीएफटी ने पिछले वर्षों में तय किए गए तदर्थ मानदंडों का एक उपयोगकर्ता-अनुकूल और खोज योग्य डेटाबेस बनाया है।
- इन मानदंडों का उपयोग किसी भी निर्यातक द्वारा विदेश व्यापार नीति 2023 में उल्लिखित मानक समिति की समीक्षा की आवश्यकता के बिना किया जा सकता है।
- डेटाबेस को DGFT वेबसाइट पर होस्ट किया गया है और यह उपयोगकर्ताओं को निर्यात या आयात आइटम विवरण, तकनीकी विशेषताओं, या भारतीय टैरिफ वर्गीकरण ITC (HS) कोड का उपयोग करके खोज करने की अनुमति देता है।
- यह इनपुट के शुल्क मुक्त आयात की अनुमति देता है, जो निर्यात उत्पाद में भौतिक रूप से शामिल होते हैं। किसी भी इनपुट के अलावा, निर्यात उत्पाद के उत्पादन की प्रक्रिया में उपभोग/उपयोग की जाने वाली पैकेजिंग सामग्री, ईंधन, तेल, उत्प्रेरक को भी अनुमति दी जाती है।
- उन्हें घरेलू बाज़ार में उत्पाद बेचने की अनुमति नहीं है।
- डेटाबेस तक पहुंचने के लिए, निर्यातक या जनता सेवाओं -> अग्रिम प्राधिकरण/DFIA -> तदर्थ मानदंडों के तहत DGFT वेबसाइट पर जा सकते हैं।
- यदि कोई तदर्थ मानदंड आइटम विवरण, निर्दिष्ट अपव्यय से मेल खाता है, और प्रक्रिया पुस्तिका (HBP) में उल्लिखित प्रावधानों का अनुपालन करता है, तो आवेदक "नो-नॉर्म रिपीट" आधार के तहत अग्रिम प्राधिकरण के लिए आवेदन करना चुन सकते हैं।
- अग्रिम प्राधिकरण ऐसे प्राधिकरण के जारी होने की तारीख से 12 महीने के लिए वैध है।
- यह व्यापार सुविधा उपाय अग्रिम प्राधिकरण और मानदंड निर्धारण प्रक्रिया को सरल बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप निर्यातकों के लिए टर्नअराउंड समय कम होता है, व्यापार करने में आसानी में सुधार होता है और अनुपालन बोझ कम होता है।
- यह योजना या तो सीधे निर्माता निर्यातक के लिए या किसी सहायक निर्माता से जुड़े व्यापारी निर्यातक के लिए उपलब्ध है।
- इसमें भौतिक निर्यात, मध्यवर्ती आपूर्ति, डीम्ड निर्यात की निर्दिष्ट श्रेणियों को की गई आपूर्ति शामिल है।
- शुल्क से छूट: आयातित इनपुट को मूल सीमा शुल्क, अतिरिक्त सीमा शुल्क, शिक्षा उपकर, एंटी-डंपिंग शुल्क, सुरक्षा शुल्क और संक्रमण उत्पाद-विशिष्ट सुरक्षा शुल्क, एकीकृत कर और मुआवजा उपकर, जहां भी लागू हो, जैसे कर्तव्यों से छूट दी गई है।

पीएम-मित्र योजना

खबरों में क्यों?

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल (PM MITRA) योजना के तहत महाराष्ट्र और गुजरात में 2 मेगा टेक्सटाइल पार्कों की आधारशिला रखने की सराहना की है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- पिछले कुछ दिनों में 2 PM-MITRA मेगा टेक्सटाइल पार्क की आधारशिला रखी गई है। ये पार्क अमरावती, महाराष्ट्र और नवसारी, गुजरात में बनेंगे। वे उत्पादकता बढ़ाएंगे, नवाचार को बढ़ावा देंगे और रोजगार के कई अवसर पैदा करेंगे।
- यह एक ही स्थान पर कताई, बुनाई, प्रसंस्करण/रंगाई और छपाई से लेकर परिधान निर्माण आदि तक एक एकीकृत कपड़ा मूल्य श्रृंखला बनाने का अवसर प्रदान करेगा और उद्योग की रसद लागत को कम करेगा।
- प्रत्येक पार्क के लिए केंद्र और राज्य सरकार के स्वामित्व वाला एक विशेष प्रयोजन वाहन स्थापित किया जाएगा जो परियोजना के कार्यान्वयन की निगरानी करेगा।

अनुदान

- कपड़ा मंत्रालय पार्क एसपीवी को प्रति पार्क 500 करोड़ रुपये तक विकास पूंजी सहायता के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।
- त्वरित कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने के लिए पीएम मित्र पार्क में इकाइयों को प्रति पार्क 300 करोड़ रुपये तक की प्रतिस्पर्धी प्रोत्साहन सहायता (CIS) भी प्रदान की जाएगी।
- राज्य सरकारें कम से कम 1000 एकड़ भूमि का सन्निहित और बाधा-मुक्त भूमि पार्सल प्रदान करेंगी।

उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना 2.0

खबरों में क्यों?

हाल ही में, IIT हार्डवेयर के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना 2.0 के परिचालन दिशानिर्देशों को अंतिम रूप दिया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यह योजना घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने और मूल्य श्रृंखला में बड़े निवेश को आकर्षित करने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन का प्रस्ताव करती है।
- PLI 2.0 योजना के तहत लक्ष्य खंडों में लैपटॉप, टैबलेट, ऑल-इन-वन PC और सर्वर और अल्ट्रा स्मॉल फॉर्म फैक्टर शामिल होंगे।
- कार्यान्वयन: वैश्विक और घरेलू दोनों कंपनियां, जो PLI 2.0 योजना दिशानिर्देशों में निर्दिष्ट पात्रता मानदंडों को पूरा करती हैं, उन्हें निर्दिष्ट लक्ष्य खंड के भीतर भारत में सामान बनाने के लिए समर्थन प्राप्त होगा।
- हाइब्रिड (वैश्विक/घरेलू) श्रेणी में आवेदकों का वर्गीकरण इस आधार पर निर्धारित किया जाएगा कि कंपनी घरेलू है या वैश्विक।

- योजना दिशानिर्देशों में उल्लिखित पात्रता मानदंडों के आधार पर सभी आवेदकों की एक व्यापक रैंकिंग बनाए रखी जाएगी।
- इसके बाद, प्रत्येक श्रेणी - वैश्विक, हाइब्रिड और घरेलू - में आवेदकों का चयन उनकी रैंकिंग और समग्र PLI प्रक्षेपण के आधार पर होगा, जो बजट की उपलब्धता पर निर्भर करेगा।
- कार्यकाल: पीएलआई 2.0 योजना के तहत प्रदान किए गए प्रोत्साहन 6 साल की अवधि के लिए लागू होंगे
- आधार वर्ष: विनिर्मित वस्तुओं की शुद्ध वृद्धिशील बिक्री की गणना के लिए आधार वर्ष वित्तीय वर्ष 2022-23 होगा।

प्रोत्साहन भुगतान:

- प्रत्येक कंपनी को दिया जाने वाला प्रोत्साहन आधार वर्ष की तुलना में लक्ष्य खंड में विनिर्मित वस्तुओं की शुद्ध वृद्धिशील बिक्री पर आधारित होगा।
- वैश्विक कंपनियों के लिए अधिकतम प्रोत्साहन राशि 45 अरब रुपये, हाइब्रिड (वैश्विक/घरेलू) कंपनियों के लिए 22.50 अरब रुपये और घरेलू कंपनियों के लिए 5 अरब रुपये तय की जाएगी।

भारत अभियान

खबरों में क्यों?

हाल ही में, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने कृषि अवसंरचना निधि के तहत बैंकों के लिए भारत (बैंक्स हेराल्डिंग एक्सेलेरेटेड रूरल एंड एग्रीकल्चर ट्रांसफॉर्मेशन) नामक एक नया अभियान शुरू किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यह 7200 करोड़ रुपये के लक्ष्य के साथ एक महीने तक चलने वाला अभियान है।
- इसका उद्देश्य कृषि अवसंरचना कोष की योजना को बढ़ावा देने में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के वाणिज्यिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, लघु वित्त बैंकों, NBFC और चुनिंदा सहकारी बैंकों के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी और समर्थन प्राप्त करना है।
- योजना की अवधि FY2020 से FY2032 (10 वर्ष) तक होगी।

कृषि अवसंरचना निधि

- यह एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है जिसे 2020 में लॉन्च किया गया था
- यह योजना ब्याज छूट और वित्तीय सहायता के माध्यम से फसल कटाई के बाद के बुनियादी ढांचे और सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों के प्रबंधन के लिए व्यवहार्य परियोजनाओं में निवेश के लिए मध्यम-दीर्घकालिक ऋण वित्तपोषण सुविधा प्रदान करेगी।

फ़ायदे

- इस वित्तपोषण सुविधा के तहत सभी ऋणों पर 2 करोड़ रुपये की सीमा तक प्रति वर्ष 3% की ब्याज छूट होगी। यह छूट अधिकतम सात वर्ष की अवधि के लिए उपलब्ध होगी।
- इसके अलावा, 2 करोड़ रुपये तक के ऋण के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट फॉर माइक्रो एंड स्मॉल एंटरप्राइजेज (CGTMSE) योजना के तहत इस वित्तपोषण सुविधा से पात्र उधारकर्ताओं के लिए क्रेडिट गारंटी कवरेज उपलब्ध होगी। इस कवरेज के लिए शुल्क का भुगतान सरकार द्वारा किया जाएगा।
- एफपीओ के मामले में कृषि, सहयोग और किसान कल्याण विभाग (DACFW) की FPO प्रोत्साहन योजना के तहत बनाई गई सुविधा से क्रेडिट गारंटी का लाभ उठाया जा सकता है।
- इस वित्तपोषण सुविधा के तहत पुनर्भुगतान के लिए अधिस्थगन न्यूनतम 6 महीने और अधिकतम 2 वर्ष के अधीन भिन्न हो सकता है।

अमृत भारत स्टेशन योजना (ABSS)

खबरों में क्यों?

दक्षिण रेलवे ने अमृत भारत स्टेशन योजना (ABSS) के तहत विकास के लिए 90 स्टेशनों की पहचान की है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- इसमें दीर्घकालिक दृष्टि से निरंतर आधार पर स्टेशनों के विकास की परिकल्पना की गई है।
- यह योजना उन सभी पिछली पुनर्विकास परियोजनाओं को समाहित कर देगी जहां काम अभी शुरू होना बाकी है।
- इस योजना का उद्देश्य रेलवे स्टेशनों के मास्टर प्लान तैयार करना और न्यूनतम आवश्यक सुविधाओं सहित और उससे आगे की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए चरणों में मास्टर प्लान का कार्यान्वयन करना है।
- हालाँकि, योजनाओं और परिणामी बजटों को केवल हितधारकों की उपस्थिति और इनपुट जैसे कारकों के आधार पर अनुमोदित किया जाएगा।
- जोनल रेलवे को स्टेशनों के चयन की जिम्मेदारी दी गई है, जिसे बाद में वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों की एक समिति द्वारा अनुमोदित किया जाएगा।
- मॉडल में स्टेशनों के कम लागत वाले पुनर्विकास की परिकल्पना की गई है जिसे समय पर क्रियान्वित किया जा सकता है।
- यह योजना नई सुविधाओं की शुरूआत के साथ-साथ मौजूदा सुविधाओं के उन्नयन और प्रतिस्थापन को पूरा करेगी।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत नियोजित सुविधाएं:

- भविष्य में रूफ प्लाजा का प्रावधान किया जाएगा।
- मुफ़्त वाई-फाई, 5G मोबाइल टावरों के लिए जगह।
- सड़कों को चौड़ा करने, अवांछित संरचनाओं को हटाने, उचित रूप से डिजाइन किए गए साइनेज, समर्पित पैदल यात्री पथ, अच्छी तरह से नियोजित पार्किंग क्षेत्र, बेहतर प्रकाश व्यवस्था आदि द्वारा सुगम पहुंच।
- जहां तक संभव हो विभिन्न ग्रेड/प्रकार के वेटिंग हॉल को क्लब करने और अच्छे कैफेटेरिया/रिटेल सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास किया जाएगा।
- वेटिंग रूम, प्लेटफॉर्म, रेस्ट रूम और ऑफिस में बेहतर फर्नीचर लगाया जाएगा।
- सभी श्रेणियों के स्टेशनों पर उच्च स्तरीय प्लेटफार्म (760-840 मिल मीटर) उपलब्ध कराए जाएंगे।
- रेलवे बोर्ड द्वारा समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों के अनुसार विकलांगों के लिए विशेष सुविधाएं।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

खबरों में क्यों?

यूएनडीपी इंडिया ने प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) को मजबूत करने के लिए समझौता ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर किए

महत्वपूर्ण बिंदु

- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) और बायोसाइंस कंपनी एब्सोल्यूट ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) को मजबूत करने और किसानों की लचीलापन बढ़ाने के लिए एक समझौता ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर किए हैं।
- UNDP इंडिया और एब्सोल्यूट के बीच साझेदारी का उद्देश्य योजना की तकनीकी क्षमताओं का निर्माण करके और पहुंच और उठाव को बढ़ाने के लिए फसल बीमा और कृषि ऋण प्रक्रियाओं की सेवा वितरण को डिजिटल बनाकर PMFBY और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (RWBCIS) के कार्यान्वयन को बढ़ाना है।
- यह कृषि वित्तपोषण जुटाने के लिए सटीक फसल हानि मूल्यांकन और जोखिम मूल्यांकन के लिए किसानों, कृषि-उद्यमियों और किसान उत्पादक संगठनों (FPO) की क्रेडिट प्रोफाइलिंग को भी बढ़ावा देगा।
- UNDP और एब्सोल्यूट कृषि भूमि की पहचान को सुविधाजनक बनाने और डेटा-संचालित नीति निर्माण और धोखाधड़ी विश्लेषण की सुविधा के लिए कृषि निगरानी, अनुसंधान और विकास और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी और डेटा-संचालित समाधानों का भी उपयोग करेंगे, जिससे कमजोर लोगों को सरकारी सहायता की कुशल और पारदर्शी डिलीवरी सुनिश्चित होगी।
- इससे भारत को किसान समुदायों को सशक्त बनाने और कृषि को जलवायु के अनुकूल बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक कदम आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

PMFBY से जुड़े मुद्दे

- कुछ राज्यों ने वित्तीय बाधाओं के कारण इससे बाहर निकलने का विकल्प चुना है।
- कम मुआवज़ा, विलंबित भुगतान, और बीमा कंपनी द्वारा दावों को अस्वीकार करना।
- बीमा कंपनियों और राज्यों के बीच उपज संबंधी विवाद।
- दावों की रिपोर्टिंग के लिए सही पद्धति पर किसानों के बीच जागरूकता का अभाव।
- वर्षा आदि का पूर्वानुमान न लगाने से फसल के नुकसान के आकलन में बाधा आती है और भुगतान में देरी होती है।

MOU से मिलेगी मदद

- योजना की पहुंच और उठाव बढ़ाने के लिए फसल बीमा और कृषि ऋण प्रक्रियाओं की डिजिटल सेवा वितरण।
- कृषि भूमि की पहचान को सुविधाजनक बनाने और कृषि निगरानी, अनुसंधान एवं विकास को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और डेटा-संचालित समाधानों को आगे बढ़ाना।

- सटीक फसल हानि मूल्यांकन और जोखिम मूल्यांकन के लिए किसानों, कृषि-उद्यमियों और किसान उत्पादक संगठनों (FPO) की क्रेडिट प्रोफाइलिंग को बढ़ावा देना।

PMFBY के बारे में

- अप्रत्याशित घटनाओं से उत्पन्न फसल हानि/नुकसान से पीड़ित किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से 2016-17 में पेश किया गया।
- स्वैच्छिक आधार पर सभी राज्यों और किसानों के लिए उपलब्ध।
- किसानों को खरीफ के लिए अधिकतम 2%, रबी खाद्य और तिलहन फसलों के लिए 1.5% और वाणिज्यिक/बागवानी के लिए 5% प्रीमियम का भुगतान करना होगा।

राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

खबरों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत टेली-मानस हेल्पलाइन को अक्टूबर 2022 में लॉन्च होने के बाद से 200,000 से अधिक कॉल प्राप्त हुई हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (सभी राज्यों में टेली मानसिक स्वास्थ्य सहायता और नेटवर्किंग: टेली मानस, 'जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम' की डिजिटल शाखा) भारत सरकार द्वारा अक्टूबर 2022 में लॉन्च किया गया, ताकि मानसिक स्वास्थ्य सेवा वितरण को मजबूत किया जा सके। देश एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच गया है।
- लॉन्च के बाद से टोल-फ्री सेवा को देश के विभिन्न हिस्सों से 2,00,000 से अधिक कॉल प्राप्त हुई हैं, जो लगातार प्रगतिशील प्रवृत्ति को दर्शाती है।
- प्राप्त कॉलों की संख्या 1 लाख कॉल (अप्रैल 2023 में) से 2 लाख कॉल तक पहुंचने में मात्र 3 महीने के अंतराल में तेजी से वृद्धि हुई है।

राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के बारे में:

- टेली मेंटल हेल्थ असिस्टेंस एंड नेटवर्किंग अक्रॉस स्टेट्स (टेली मानस) अक्टूबर 2022 के दौरान लॉन्च किया गया है।
- उद्देश्य: इसका उद्देश्य पूरे देश में चौबीसों घंटे मुफ्त टेली-मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है, विशेष रूप से दूरदराज के या अल्प-सेवा वाले क्षेत्रों में लोगों को सेवाएं प्रदान करना।
- 31 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 42 सक्रिय टेली मानस सेल हैं।
- यह सेवा पसंदीदा भाषाओं को चुनने के विकल्प के साथ टोल-फ्री नंबरों के माध्यम से उपलब्ध है (अब तक 20 भाषाएँ शामिल हैं)।

टेली-मानस दो स्तरीय प्रणाली में आयोजित किया जाएगा:

- टियर 1: इसमें राज्य टेली-मानस सेल शामिल हैं जिनमें प्रशिक्षित परामर्शदाता और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ शामिल हैं।
- टियर 2: इसमें शारीरिक परामर्श के लिए जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (DMHP)/मेडिकल कॉलेज संसाधनों और/या ऑडियो विजुअल परामर्श के लिए ई-संजीवनी के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

टेली मानस द्वारा दी जाने वाली सेवाएँ:

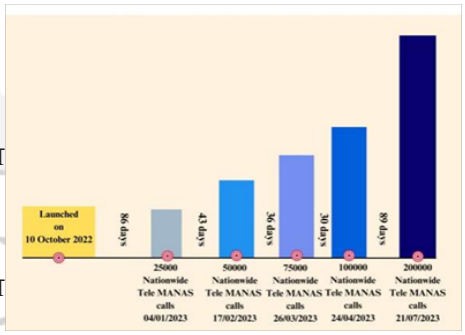

- प्रशिक्षित परामर्शदाताओं द्वारा टेली काउंसलिंग।
- आवश्यकता पड़ने पर मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा टेली परामर्श।
- अन्य मानसिक स्वास्थ्य प्रतिष्ठानों जैसे मेडिकल कॉलेजों, जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (DMHP) सेवाओं और विशेष संस्थानों के लिए रेफरल सेवाएं।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (NMHP) के बारे में:

- भारत सरकार ने निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ 1982 में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (NMHP) शुरू किया है:
- निकट भविष्य में सभी के लिए न्यूनतम मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की उपलब्धता और पहुंच सुनिश्चित करना, विशेष रूप से आबादी के सबसे कमजोर और वंचित वर्गों के लिए;
- सामान्य स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक विकास में मानसिक स्वास्थ्य ज्ञान के अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करना;
- मानसिक स्वास्थ्य सेवा विकास में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना और समुदाय में स्वयं सहायता की दिशा में प्रयासों को प्रोत्साहित करना।

9 विविध

गहरे समुद्र में खनन

खबरों में क्यों?

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री प्राधिकरण (ISA) गहरे समुद्र में खनन को विनियमित करने के लिए बातचीत फिर से शुरू करेगा

महत्वपूर्ण बिंदु

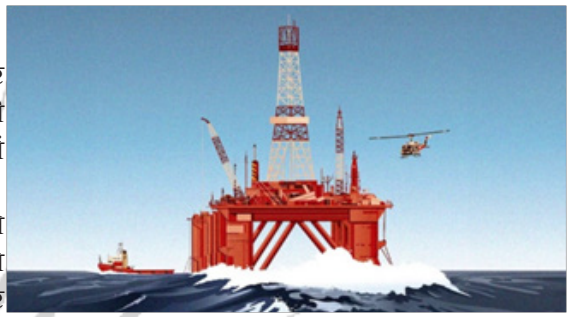

- अंतर्राष्ट्रीय सीबेड अथॉरिटी, संयुक्त राष्ट्र की संस्था जो दुनिया के महासागर तल को नियंत्रित करती है, उन वार्ताओं को फिर से शुरू करने की तैयारी कर रही है जो खनन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सीबेड को खोल सकती हैं, जिसमें हरित ऊर्जा संक्रमण के लिए महत्वपूर्ण सामग्री भी शामिल है।
- वर्षों से चल रही बातचीत एक महत्वपूर्ण बिंदु पर पहुंच रही है जहां प्राधिकरण को जल्द ही खनन परमिट आवेदन स्वीकार करना शुरू करना होगा, जिससे कम शोध वाले समुद्री पारिस्थितिक तंत्र और गहरे समुद्र के आवासों पर संभावित प्रभावों पर चिंताएं बढ़ जाएंगी।

गहरे समुद्र में खनन क्या है?

- गहरे समुद्र में खनन में समुद्र के तल से खनिज भंडार और धातुओं को निकालना शामिल है। इस तरह के खनन तीन प्रकार के होते हैं: समुद्र तल से जमा-समृद्ध पॉलीमेटेलिक नोड्यूल को निकालना, समुद्र तल से बड़े पैमाने पर सल्फाइड जमा का खनन करना और चट्टान से कोबाल्ट क्रस्ट को अलग करना।
- इन पिंडों, जमाओं और परतों में निकेल, दुर्लभ पृथ्वी, कोबाल्ट और बहुत कुछ जैसी सामग्रियां होती हैं, जो बैटरी और नवीकरणीय ऊर्जा के दोहन में उपयोग की जाने वाली अन्य सामग्रियों के साथ-साथ सेलफोन और कंप्यूटर जैसी रोजमर्रा की तकनीक के लिए भी आवश्यक होती हैं।
- गहरे समुद्र में खनन के लिए उपयोग की जाने वाली इंजीनियरिंग और तकनीक अभी भी विकसित हो रही है। कुछ कंपनियाँ बड़े पैमाने पर पंपों का उपयोग करके समुद्र तल से सामग्री को वैक्यूम करना चाह रही हैं। अन्य लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित तकनीक विकसित कर रहे हैं जो गहरे समुद्र के रोबोटों को फर्श से गांठें निकालना सिखाएंगी। कुछ लोग उन्नत मशीनों का उपयोग करना चाह रहे हैं जो विशाल पानी के नीचे के पहाड़ों और ज्वालामुखियों से सामग्री का खनन कर सकें।
- कंपनियां और सरकारें इन्हें रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण संसाधनों के रूप में देखती हैं जिनकी आवश्यकता होगी क्योंकि तटवर्ती भंडार समाप्त हो रहे हैं और मांग में वृद्धि जारी है।

अब गहरे समुद्र में खनन को कैसे नियंत्रित किया जाता है?

- देश अपने स्वयं के समुद्री क्षेत्र और विशेष आर्थिक क्षेत्रों का प्रबंधन करते हैं, जबकि उच्च समुद्र और अंतर्राष्ट्रीय महासागर तल समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन द्वारा शासित होते हैं।
- इसे राज्यों पर लागू माना जाता है, भले ही उन्होंने इस पर हस्ताक्षर किए हों या इसकी पुष्टि की हो या नहीं। संधि के तहत, समुद्र तल और उसके खनिज संसाधनों को "मानव जाति की साझी विरासत" माना जाता है, जिसे इस तरह से प्रबंधित किया जाना चाहिए कि आर्थिक लाभों को साझा करने, समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए समर्थन और समुद्री पर्यावरण की रक्षा के माध्यम से मानवता के हितों की रक्षा की जा सके।
- गहरे समुद्र के दोहन में रुचि रखने वाली खनन कंपनियां अन्वेषण लाइसेंस प्राप्त करने में मदद करने के लिए देशों के साथ साझेदारी कर रही हैं।
- अब तक 30 से अधिक अन्वेषण लाइसेंस जारी किए जा चुके हैं, जिनकी गतिविधि ज्यादातर क्लेरियन-क्लिपरटन फ्रैक्चर जोन नामक क्षेत्र में केंद्रित है, जो हवाई और मैक्सिको के बीच 1.7 मिलियन वर्ग मील (4.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर) तक फैला है।

पर्यावरण संबंधी चिंताएँ क्या हैं?

- गहरे समुद्र तल का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही खोजा गया है और संरक्षणवादियों को चिंता है कि खनन से पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान होगा, खासकर बिना किसी पर्यावरणीय प्रोटोकॉल के।
- खनन से होने वाले नुकसान में शोर, कंपन और प्रकाश प्रदूषण, साथ ही खनन प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले ईंधन और अन्य रसायनों के संभावित रिसाव और फैलाव शामिल हो सकते हैं।
- कुछ खनन प्रक्रियाओं से निकलने वाला तलछट एक प्रमुख चिंता का विषय है। एक बार जब मूल्यवान सामग्री निकाल ली जाती है, तो गारा तलछट के ढेर कभी-कभी वापस समुद्र में डाल दिए जाते हैं। यह कोरल और स्पंज जैसी फ़िल्टर फ़ीडिंग प्रजातियों को नुकसान पहुंचा सकता है और कुछ प्राणियों को दबा सकता है या अन्यथा हस्तक्षेप कर सकता है।
- गहरे समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र के लिए निहितार्थ की पूरी सीमा स्पष्ट नहीं है, लेकिन वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि जैव विविधता का नुकसान अपरिहार्य और संभावित रूप से अपरिवर्तनीय है।

जैविक नैनो जनरेटर

खबरों में क्यों?

हाल ही में, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (IASST) के वैज्ञानिकों ने कार्बनिक पदार्थों का उपयोग करके प्रकाश ऊर्जा संचयन के लिए एक नैनो जनरेटर उपकरण विकसित किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

ऑर्गेनिक नैनो जनरेटर के बारे में:

- डिवाइस अपने ऊपर पड़ने वाली थोड़ी सी गर्मी या प्रकाश से करंट और वोल्टेज उत्पन्न कर सकता है।
- ऊर्जा सामग्रियों के प्रायोगिक अन्वेषण से पॉलीएनिलिन-रूबरीन नामक कार्बनिक ऊर्जा सामग्री का सफल संश्लेषण हुआ है, और उन्होंने एक ऑर्गेनिक पायरोइलेक्ट्रिक नैनोजेनरेटर (OPNG) का निर्माण किया है।
- डिवाइस का पायरोइलेक्ट्रिक प्रभाव पॉलीएनिलिन-रूब्रीन पतली फिल्म की अल्ट्रा-पतली ऑक्सीकृत सतह परत में होने वाले सहज ध्रुवीकरण में प्रकाश-प्रेरित परिवर्तन से प्रेरित होता है।

पायरोइलेक्ट्रिक प्रभाव क्या है?

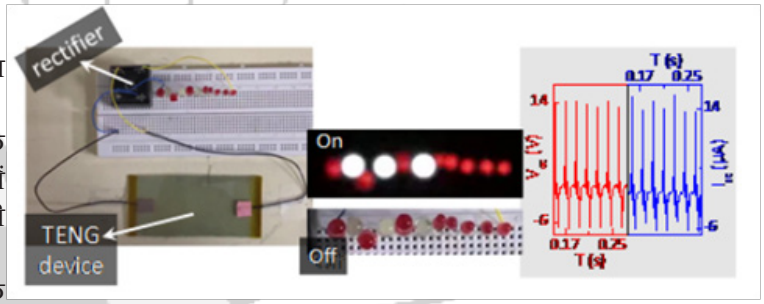

- पायरोइलेक्ट्रिक प्रभाव तापमान में परिवर्तन के कारण ध्रुवीकरण में परिवर्तन है।
- फेरोइलेक्ट्रिक सामग्रियों के दृढ़ता से पायरोइलेक्ट्रिक होने की उम्मीद है क्योंकि फेरोइलेक्ट्रिक सामग्रियों में तापमान पर निर्भर सहज ध्रुवीकरण की एक बड़ी श्रृंखला होती है
- यह प्रभाव पायरोइलेक्ट्रिक नैनोजेनरेटर (PyNG) में एक अनूठा लाभ रखता है, क्योंकि यह वैकल्पिक रूप से पायरोइलेक्ट्रिक प्रभाव को प्रेरित कर सकता है, जो ऊर्जा संचयन के लिए उपयोगी है।
- जैविक सामग्री का उपयोग करने वाला निर्मित OPyNG उपकरण नई अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और जैविक सामग्री से ऊर्जा संचयन के लिए नए रास्ते खोलता है।
- OPyNG स्व-संचालित मोड में UV-दृश्य-NIR क्षेत्र में काम करता है, और यह महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है क्योंकि यह एक स्व-टिकाऊ स्टैंडअलोन डिवाइस के रूप में कार्य कर सकता है।

STAR-C पहल

खबरों में क्यों?

भारत अपनी सौर प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग संसाधन केंद्र (STAR-C) पहल को कई प्रशांत द्वीप देशों में विस्तारित करने पर विचार कर रहा है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- कार्यक्रम का लक्ष्य सबसे गरीब देशों में सौर ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना है।
- यह पहल संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO) के साथ साझेदारी में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन द्वारा संचालित है।
- इसका उद्देश्य सौर ऊर्जा उत्पादों और सेवाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए ISA सदस्य देशों के भीतर संस्थागत क्षमताओं का एक मजबूत नेटवर्क बनाना है।
- इस परियोजना को फ्रांस द्वारा भी वित्त पोषित किया गया है।
- कार्यक्रम के उद्देश्य: सौर कार्यबल का निर्माण, उत्पादों का मानकीकरण, बुनियादी ढांचे की स्थापना और विकासशील देशों में नीति निर्माताओं के बीच जागरूकता बढ़ाना।
- इस पहल के माध्यम से, भारत का लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के सदस्य देशों की संस्थागत क्षमताओं को बढ़ाना और सौर ऊर्जा के लिए गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान देना है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के बारे में मुख्य तथ्य

- इसकी कल्पना सौर ऊर्जा समाधानों की तैनाती के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के खिलाफ प्रयास जुटाने के लिए भारत और फ्रांस के संयुक्त प्रयास के रूप में की गई थी।
- इसकी संकल्पना 2015 में पेरिस में आयोजित जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के 21वें पार्टियों के सम्मेलन (COP21) के मौके पर की गई थी।
- 2020 में इसके फ्रेमवर्क समझौते में संशोधन के साथ, संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश अब ISA में शामिल होने के लिए पात्र हैं।
- मुख्यालय: भारत

क्रीमियन-कांगो रक्तस्रावी बुखार (CCHF)

खबरों में क्यों?

जैसे-जैसे यूरोप गर्मी की लहर और जंगल की आग की चपेट में है, बढ़ते तापमान ने वायरल रक्तस्रावी बुखार के फैलने की आशंका भी बढ़ा दी है जो आमतौर पर ठंडे मौसम में नहीं पाया जाता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यह एक वायरल रक्तस्रावी बुखार है जो आमतौर पर टिक्स द्वारा फैलता है।
- यह जानवरों के वध के दौरान और उसके तुरंत बाद विरेमिक पशु ऊतकों (जानवरों के ऊतक जहां वायरस रक्तप्रवाह में प्रवेश कर चुका है) के संपर्क के माध्यम से भी हो सकता है।
- यह बीमारी सबसे पहले 1944 में क्रीमिया प्रायद्वीप (काला सागर के पास) में सैनिकों के बीच पाई गई थी।
- 1969 में, यह पाया गया कि कांगो बेसिन में पहचानी गई एक बीमारी उसी रोगज़नक़ के कारण हुई थी। इस प्रकार, इस बीमारी का नाम क्रीमियन-कांगो रक्तस्रावी बुखार रखा गया।
- इसका प्रकोप सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए खतरा है क्योंकि यह वायरस महामारी का कारण बन सकता है, इसका मृत्यु अनुपात उच्च (10-40%) है।

ट्रांसमिशन:

- मवेशी, बकरी, भेड़ और खरगोश जैसे जानवर वायरस के लिए प्रवर्धक मेजबान के रूप में काम करते हैं।
- मनुष्यों में संचरण संक्रमित टिक्स या जानवरों के रक्त के संपर्क के माध्यम से होता है।
- यह संक्रामक रक्त या शरीर के तरल पदार्थ, जैसे पसीना और लार के संपर्क से एक संक्रमित मनुष्य से दूसरे में फैल सकता है।
- टिकों को प्रवासी पक्षियों द्वारा भी आश्रय दिया जा सकता है।

लक्षण:

- इसमें बुखार, मांसपेशियों में दर्द, चक्कर आना, गर्दन में दर्द, पीठ दर्द, सिरदर्द, आंखों में दर्द और प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता शामिल है।
- 2-4 दिनों के बाद उत्तेजना की जगह तंद्रा, अवसाद और आलस्य आ सकता है।

इलाज:

- मनुष्यों या जानवरों में वायरस के लिए कोई टीका नहीं है और उपचार में आम तौर पर लक्षणों का प्रबंधन शामिल होता है।
- WHO के अनुसार, "स्पष्ट लाभ के साथ CCHF संक्रमण के इलाज के लिए एंटीवायरल दवा रिबाविरिन का उपयोग किया गया है।"

पायलट व्हेल

खबरों में क्यों?

हाल ही में फरो आइलैंड्स की राजधानी के पास समुद्री डॉल्फ़िन की एक प्रजाति, 78 लंबे पंखों वाली पायलट व्हेलों की हत्या कर दी गई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- एक ब्रिटिश क्रूज जहाज के यात्रियों ने फरो आइलैंड्स में पायलट व्हेल के वध की एक भयानक और वीभत्स घटना देखी।
- डेनमार्क की राजधानी टोर्शवन के निकट फरो आइलैंड्स में सदियों पुरानी शिकार परंपरा के तहत 78 पायलट व्हेलों की हत्या कर दी गई।
- कई पर्यावरण संगठनों और विशेषज्ञों ने इस पुरानी और क्रूर प्रथा की निंदा की।
- ब्रिटिश क्रूज जहाज ने भी इस कार्यक्रम के दौरान फरो आइलैंड्स में अपने जहाज को खड़ा करने के लिए यात्रियों से माफी मांगी है।
- हर साल औसतन 800 व्हेल मारी जाती हैं, संख्या 1400 तक जा सकती है।
- हत्या के बाद मांस और चर्बी को द्वीपवासियों या इस प्रथा में भाग लेने वालों के बीच वितरित किया जाता है।

पायलट व्हेल

- ये व्हेल समुद्री डॉल्फ़िन की एक प्रजाति हैं और सीतासियों का हिस्सा हैं।
- ये परिवार डेल्फिनिडे और जीनस ग्लोबिसफाला से संबंधित हैं।

विशेषताएँ/विशेषताएँ

- लंबे पंखों वाले, उनके सिर बल्बनुमा और हंसिया के आकार के फ्लिपर्स होते हैं।
- पायलट व्हेल को किलर व्हेल के बाद डॉल्फ़िन परिवार का दूसरा सबसे बड़ा सदस्य माना जाता है
- NOAA (नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन), इनका वजन 5000 पाउंड तक होने का अनुमान लगाता है
- वे मध्यम आकार की व्हेल हैं और 19-25 फीट की रेंज में हो सकती हैं।
- स्वभाव से ये आम तौर पर 20 व्यक्तियों के समूह में रहते हैं।

आवास एवं वितरण

- वे विश्व के महासागरों में वितरित हैं।
- हालाँकि ये मुख्यतः उत्तरी अटलांटिक में पाए जाते हैं।
- इन्हें चिली, अर्जेंटीना, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के तटों पर भी देखा जाता है।
- भारतीय, अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय जल में भी इसकी उपस्थिति है।

संरक्षण की स्थिति

- 2006 में जनसंख्या का आकार 200,000 से अधिक होने का अनुमान लगाया गया था 1989 में जनसंख्या 778,000 होने का अनुमान लगाया गया था।
- IUCN की संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची में लंबे पंख वाले पायलट व्हेल को 'कम से कम चिंताजनक' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

अलास्का प्रायद्वीप

खबरों में क्यों?

हाल ही में अलास्का प्रायद्वीप क्षेत्र में 7.2 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया।

महत्वपूर्ण बिंदु

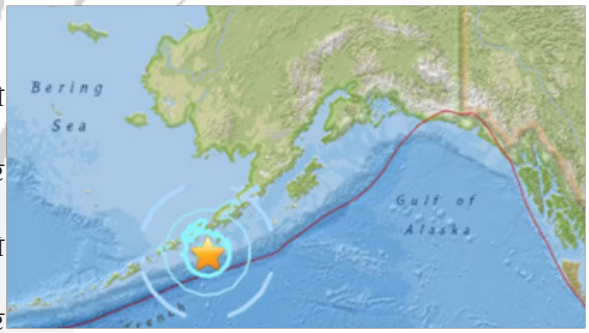

- यह अमेरिकी राज्य अलास्का के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित भूमि की एक लंबी, संकीर्ण पट्टी है।
- यह अलास्का की मुख्य भूमि से दक्षिण पश्चिम दिशा में लगभग 800 किलोमीटर (500 मील) तक फैला हुआ है।
- यह प्रशांत महासागर को बेरिंग सागर की एक शाखा ब्रिस्टल खाड़ी से अलग करता है।
- भौतिक विज्ञान: प्रायद्वीप काफी हद तक पहाड़ी है, जिसमें कई सक्रिय और निष्क्रिय ज्वालामुखी, ऊबड़-खाबड़ तटरेखाएं, गहरे मैदान और जंगल का विशाल विस्तार है।
- ज्वालामुखीय अलेउतियन रेंज इसकी पूरी लंबाई के साथ चलती है।
- प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी किनारे के पास पावलोफ ज्वालामुखी, 8,260 फीट (2,518 मीटर) से अधिक ऊंचा है और अलेउतियन ज्वालामुखी चाप में सबसे सक्रिय ज्वालामुखी है।

जनसंख्या:

- यह हजारों वर्षों से स्वदेशी लोगों, मुख्य रूप से अलेउत और अलुतिइक (सुगपियाक) समुदायों द्वारा बसा हुआ है।
- यह बहुत कम आबादी वाला है, इसके समुद्र तट पर छोटे-छोटे समुदाय बिखरे हुए हैं।

जैव विविधता:

- यह विविध वन्यजीवों का घर है, जिनमें भूरे भालू, कारिबू, मूस, भेड़िये, गंजा ईगल और विभिन्न समुद्री स्तनधारी शामिल हैं।
- प्रसिद्ध कटमाई राष्ट्रीय उद्यान और संरक्षित क्षेत्र, जो भूरे भालू की आबादी और दस हजार स्मोक्स की घाटी के लिए जाना जाता है, प्रायद्वीप के उत्तरपूर्वी भाग पर स्थित है।

प्रायद्वीप:

- प्रायद्वीप भूमि का एक टुकड़ा है जो लगभग पूरी तरह से पानी से घिरा हुआ है लेकिन एक तरफ मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ है।
- यह भूमि का एक विस्तार है जो पानी के शरीर में बदल जाता है, जैसे कि महासागर, समुद्र, झील या नदी।
- प्रायद्वीप आमतौर पर आकार में संकीर्ण और लम्बे होते हैं, हालांकि उनका आकार काफी भिन्न हो सकता है।

खानाबदोश हाथी

खबरों में क्यों?

भारत-मंगोलिया संयुक्त सैन्य अभ्यास "घुमंतू हाथी - 2023" मंगोलिया के उलानबटार में शुरू होगा

महत्वपूर्ण बिंदु

- 43 जवानों वाली भारतीय सेना की टुकड़ी मंगोलिया के लिए रवाना हुई।
- यह दल द्विपक्षीय संयुक्त सैन्य अभ्यास "नोमैडिक एलीफैंट-23" के 15वें संस्करण में भाग लेगा।
- यह अभ्यास 17 से 31 जुलाई 2023 तक मंगोलिया के उलानबटार में आयोजित किया जाना निर्धारित है।
- घुमंतू हाथी अभ्यास मंगोलिया के साथ एक वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो मंगोलिया और भारत में वैकल्पिक रूप से आयोजित किया जाता है, पिछला संस्करण अक्टूबर 2019 में विशेष बल प्रशिक्षण स्कूल, बकलोह में आयोजित किया गया था।

RAO'S ACADEMY

- मंगोलियाई सशस्त्र बल यूनिट 084 के सैनिक और जम्मू और कश्मीर लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट के भारतीय सेना के सैनिक अभ्यास में भाग लेंगे।
- भारतीय सेना की टुकड़ी भारतीय वायु सेना के C-17 विमान से उलानबटार पहुंची।
- इस अभ्यास का उद्देश्य सकारात्मक सैन्य संबंध बनाना, सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करना, दोनों सेनाओं के बीच अंतर-संचालन क्षमता, सौहार्द, सौहार्द और मित्रता विकसित करना है।
- अभ्यास का प्राथमिक विषय संयुक्त राष्ट्र के आदेश के तहत पहाड़ी इलाकों में आतंकवाद विरोधी अभियानों पर केंद्रित होगा।
- इस अभ्यास के दायरे में प्लाटून स्तर की फील्ड ट्रेनिंग एक्सरसाइज (FTX) शामिल है। अभ्यास के दौरान, भारतीय और मंगोलियाई सैनिक अपने कौशल और क्षमताओं को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई विभिन्न प्रशिक्षण गतिविधियों में शामिल होंगे।
- इन गतिविधियों में सहनशक्ति प्रशिक्षण, रिफ्लेक्स फायरिंग, रूम इंटरवेंशन, छोटी टीम रणनीति और रॉक क्राफ्ट प्रशिक्षण शामिल हैं। दोनों पक्षों के सैनिक एक-दूसरे के ऑपरेशनल अनुभव से सीखेंगे।
- भारत और मंगोलिया की क्षेत्रीय सुरक्षा और सहयोग के प्रति साझा प्रतिबद्धता है। नोमैडिक एलीफेंट-23 अभ्यास भारतीय सेना और मंगोलियाई सेना के बीच रक्षा सहयोग में एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगा जो दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और बढ़ावा देगा।

S.No	Country	Exercise
1.	Australia	AUSTRA HIND, AUSINDEX, PITCH BLACK
2.	Bangladesh	SAMPRITI, TABLE TOP, SAMVEDNA
3.	Brazil and South Africa	IBSAMAR
4.	China	HAND IN HAND
5.	Egypt	CYCLONE
6.	France	SHAKTI, VARUNA, GARUDA
7.	Indonesia	GARUDA SHAKTI, IND-INDO CORPAT
8.	Israel	BLUE FLAG
9.	Japan	DHARMA GUARDIAN, JIMEX
10.	Kazakhstan	KAZIND
11.	Kyrgyzstan	KHANJAR
12.	Malaysia	HARIMAU SHAKTI
13.	Maldives	EKUVERIN,
14.	Mongolia	NOMADIC ELEPHANT
15.	Myanmar	IMBEX, TABLE TOP
16.	Nepal	SURYA KIRAN
17.	Oman	AL NAGAH, NASEEM-AL-BAHR, EASTERN BRIDGE
18.	Qatar	ZA'IR AL BAHR
19.	Russia	INDRA, AVIAINDRA
20.	Seychelles	LAMITIYE
21.	Singapore	SIMBEX
22.	Sri Lanka	MITRA SHAKTI, SLINEX, SAMVEDNA
23.	Thailand	MAITREE, SIAM BHARAT
24.	UAE	DESERT EAGLE
25.	UK	AJEY WARRIOR, KONKAN, INDRADHANUSH
26.	USA	YUDHABHAYAS, VAJRA PRAHAR, SPITTING COBRA, SANGAM, RED FLAG, COPE INDIA
27.	Uzbekistan	DUSTLIK
28.	Vietnam	VINBAX,

उमियम बांध

खबरों में क्यों?

अधिकारियों ने हाल ही में बताया कि यदि जलाशय में जल स्तर सुरक्षित स्तर से ऊपर बढ़ जाता है तो उमियाम बांध से पानी किसी भी समय छोड़ा जा सकता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- बढ़ते जल स्तर से जुड़े संभावित खतरों के बीच समुदाय की सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित करने के लिए यह चेतावनी एक सक्रिय उपाय के रूप में आती है।
- जनता को नदियों, नालों और पुलियों के पास के क्षेत्रों से बचने की दृढ़ता से सलाह दी गई है। इसके अलावा, बाढ़ की स्थिति में, लोगों से बिजली के झटके के जोखिम को कम करने के लिए बिजली के खंभों या बिजली लाइनों से दूर रहने का आग्रह किया जाता है।
- उमियम बांध के निचले इलाकों में रहने वाले निवासियों से आग्रह किया जाता है कि वे स्थानीय अधिकारियों से नवीनतम जानकारी से अपडेट रहें और संबंधित अधिकारियों द्वारा जारी किसी भी अन्य निर्देश या चेतावनी का पालन करें।
- सावधानी बरतने और सुरक्षा दिशानिर्देशों का पालन करने से, व्यक्ति बढ़े हुए जल स्तर की इस अवधि के दौरान जोखिमों को कम करने और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं।

- स्थान: उमियाम बांध, जिसे बारापानी बांध के नाम से भी जाना जाता है, पूर्वोत्तर भारत के मेघालय राज्य में स्थित एक बड़ा जलाशय है।
- यह मेघालय की राजधानी शिलांग से लगभग 15 किलोमीटर उत्तर में उमियम नदी पर स्थित है।
- उद्देश्य: उमियम बांध का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्र में पनबिजली उत्पादन और पीने के पानी की आपूर्ति करना है। यह शिलांग और इसके आसपास के क्षेत्रों के लिए एक प्रमुख जल स्रोत के रूप में कार्य करता है।
- बांध का निर्माण 1964 में शुरू हुआ और 1965 में पूरा हुआ।
- इसका निर्माण असम राज्य विद्युत बोर्ड (ASEB) द्वारा नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NEEPCO) की तकनीकी सहायता से किया गया था।
- जलाशय क्षमता: बांध एक जलाशय बनाता है जिसे उमियम झील के नाम से जाना जाता है, जिसकी भंडारण क्षमता लगभग 9.6 बिलियन क्यूबिक फीट पानी है। यह झील लगभग 220 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है।
- जलविद्युत विद्युत उत्पादन: उमियम बांध में 2x30 मेगावाट की कुल स्थापित क्षमता वाला एक जलविद्युत विद्युत स्टेशन है।

डचेन की मस्कुलर डिस्ट्रॉफी

खबरों में क्यों?

हाल ही में, तमिलनाडु के डॉक्टरों की एक टीम ने जापान के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर डचेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी (DMD) के लिए एक रोग-निवारक उपचार विकसित किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- तमिलनाडु के डॉक्टरों ने जापान के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर एक खाद्य योज्य बीटा-ग्लूकेन का उपयोग करके एक रोग-संशोधक उपचार विकसित किया है, जो कि यीस्ट ऑरियोबैसिडियम पुलुलंस के N-163 स्ट्रेन द्वारा निर्मित होता है।

डचेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के बारे में:

- यह एक दुर्लभ आनुवंशिक विकार है।
- इसका वर्णन सबसे पहले 1860 में फ्रांसीसी न्यूरोलॉजिस्ट गिलाउम बेंजामिन अमांड डचेन ने किया था।
- यह डायस्ट्रोफिन नामक प्रोटीन में परिवर्तन के कारण प्रगतिशील मांसपेशी अध : पतन और कमजोरी की विशेषता है जो मांसपेशियों की कोशिकाओं को बरकरार रखने में मदद करता है।
- यह एक बहु-प्रणालीगत स्थिति है, जो शरीर के कई हिस्सों को प्रभावित करती है, जिसके परिणामस्वरूप कंकाल, हृदय और फेफड़ों की मांसपेशियां खराब हो जाती हैं।
- डायस्ट्रोफिन जीन X-क्रोमोसोम पर पाया जाता है, यह मुख्य रूप से पुरुषों को प्रभावित करता है, जबकि महिलाएं आमतौर पर वाहक होती हैं।

लक्षण

- यह 2 या 3 साल की उम्र में शुरू हो सकता है, पहले समीपस्थ मांसपेशियों (शरीर के मूल के करीब) को प्रभावित करता है और बाद में डिस्टल अंग की मांसपेशियों (चरम के करीब) को प्रभावित करता है।
- आमतौर पर निचली बाहरी मांसपेशियां ऊपरी बाहरी मांसपेशियों से पहले प्रभावित होती हैं।
- प्रभावित बच्चे को कूदने, दौड़ने और चलने में कठिनाई हो सकती है।
- अन्य लक्षणों में पिंडलियों का बढ़ना, टेढ़ी-मेढ़ी चाल, और लम्बर लॉर्डोसिस (रीढ़ की हड्डी का अंदर की ओर मुड़ना) शामिल हैं।
- बाद में हृदय और श्वसन की मांसपेशियां भी प्रभावित होती हैं।
- उपचार: वर्तमान में उपलब्ध उपचार जीन थेरेपी, एक्सॉन स्किपिंग, स्टॉप कोडन रीड-थ्रू और जीन रिपेयर हैं।

RAU'S ACADEMY

लीजन ऑफ ऑनर का ग्रैंड क्रॉस

खबरों में क्यों?

पीएम मोदी को फ्रांस के सर्वोच्च पुरस्कार ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत-फ्रांसीसी साझेदारी की भावना का प्रतीक एक गर्मजोशीपूर्ण संकेत। पीएम नरेंद्र मोदी को राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने फ्रांस के सर्वोच्च पुरस्कार ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया।
- नेशनल ऑर्डर ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर, या बस द लीजन ऑफ ऑनर, नागरिक और सैन्य दोनों में सर्वोच्च फ्रांसीसी सजावट है और दुनिया में सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय सम्मानों में से एक है।
- लीजन ऑफ ऑनर नागरिक या सैन्य क्षमता में राष्ट्र की सेवा में अर्जित उत्कृष्ट योग्यता का पुरस्कार है।

विदेशियों के लिए पुरस्कार मानदंड:

  - विदेशियों को लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया जा सकता है यदि उन्होंने फ्रांस को सेवाएं (जैसे सांस्कृतिक या आर्थिक) प्रदान की हैं या फ्रांस द्वारा बचाव किए गए कारणों जैसे मानवाधिकार, प्रेस की स्वतंत्रता, या मानवीय कार्रवाई का समर्थन किया है।
  - राजकीय यात्राएं राजनयिक पारस्परिकता के अनुरूप, आधिकारिक हस्तियों को लीजन ऑफ ऑनर प्रदान करने और इस तरह फ्रांस की विदेश नीति का समर्थन करने का भी एक अवसर है।
- पांच डिग्री: लीजन ऑफ ऑनर में बढ़ती विशिष्टता की पांच डिग्री हैं: तीन रैंक शेवेलियर (नाइट), ऑफिसर (अधिकारी) और कमांडर (कमांडर) और दो उपाधियां ग्रैंड ऑफिसर (ग्रैंड ऑफिसर) और ग्रैंड-क्रॉइक्स (ग्रैंड क्रॉस)। प्रधानमंत्री को भारत में भारत रत्न के समान सर्वोच्च फ्रांसीसी सम्मान से सम्मानित किया गया है।
- उत्पत्ति: यह आदेश 1802 में नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा स्थापित किया गया था, और पिछले दो शताब्दियों से अधिक समय से फ्रांसीसी राज्य प्रमुख की ओर से गतिविधि के सभी क्षेत्रों में अपने सबसे योग्य नागरिकों को प्रस्तुत किया गया है।
- ऑर्डर का आदर्श वाक्य है: ऑनर एट पेट्री, फ्रेंच फॉर ऑनर एंड फादरलैंड।

पुरस्कार:

- पुरस्कार के साथ कोई भौतिक या वित्तीय लाभ जुड़ा नहीं है।
- पुरस्कार बैज ओक और लॉरेल पुष्पांजलि पर लटका हुआ पांच-सशस्त्र माल्टीज़ तारांकन है।
- सामने की तरफ गणतंत्र का पुतला है और पीछे की तरफ आदर्श वाक्य से घिरे दो तिरंगे झंडे हैं। रिबन का रंग लाल है।

ह्वासोंग-18

खबरों में क्यों?

उत्तर कोरिया ने एक नई ठोस ईंधन वाली अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल ह्वासोंग-18 का परीक्षण किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- उत्तर कोरिया ने अपनी नवीनतम ह्वासोंग-18 अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM) का परीक्षण किया। यह ICBM ठोस प्रणोदक का उपयोग करने वाला पहला है।

ह्वासोंग-18 ICBM क्या है?

- ह्वासोंग-18 एक ठोस ईंधन वाला ICBM है और इसका पहली बार DPRK की राजधानी प्योंगयांग में कोरियाई पीपुल्स आर्मी की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ पर अनावरण किया गया था।
- ह्वासोंग-18 में ठोस प्रणोदक का उपयोग मिसाइलों की तेजी से तैनाती की अनुमति देता है।
- ठोस पदार्थों का उपयोग कई सैन्य अनुप्रयोगों के लिए किया जाता था, जैसे कि कम दूरी के रॉकेट, लेकिन उनका उपयोग किसी भी लंबी दूरी के अनुप्रयोगों के लिए नहीं किया जाता था, और निश्चित रूप से उनकी शक्ति की तुलनात्मक कमी के कारण अंतरिक्ष उड़ान के लिए नहीं किया जाता था।
- इसके बावजूद, ठोस प्रणोदक मुख्य रूप से सैन्य मिसाइल उपयोग के लिए बेहद आकर्षक थे क्योंकि वे भंडारण योग्य थे।

ठोस ईंधन के लाभ

- ठोस ईंधन सघन होता है और बहुत तेजी से जलता है, जिससे कम समय में जोर पैदा होता है।
- ठोस प्रणोदक तेजी से फायर कर सकते हैं और लिफ्टऑफ़ पर अधिक तेज़ी से गति कर सकते हैं।
- ठोस ईंधन तरल ईंधन के साथ एक सामान्य समस्या को खराब किए बिना या तोड़े बिना लंबे समय तक भंडारण में रह सकता है।
- ठोस-ईंधन मिसाइलों को संचालित करना आसान और सुरक्षित है, और उन्हें कम लॉजिस्टिक समर्थन की आवश्यकता होती है, जिससे उनका पता लगाना कठिन हो जाता है और तरल-ईंधन हथियारों की तुलना में वे अधिक जीवित रहते हैं।

बैलिस्टिक मिसाइल

- यह एक रॉकेट-चालित स्व-निर्देशित रणनीतिक-हथियार प्रणाली है जो अपने प्रक्षेपण स्थल से एक पूर्व निर्धारित लक्ष्य तक पेलोड पहुंचाने के लिए एक बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र का अनुसरण करती है।
- बैलिस्टिक मिसाइलें शुरू में एक रॉकेट या चरणों में रॉकेटों की श्रृंखला द्वारा संचालित होती हैं, लेकिन फिर एक अशक्त प्रक्षेपवक्र का पालन करती हैं जो अपने इच्छित लक्ष्य तक पहुंचने के लिए नीचे उतरने से पहले ऊपर की ओर झुकती है।
- बैलिस्टिक मिसाइलें परमाणु या पारंपरिक हथियार ले जा सकती हैं।

ICBM:

- ICBM बैलिस्टिक मिसाइलें हैं जिनकी मारक क्षमता 5,500 किमी से अधिक है और इनमें परमाणु हथियार वितरण तकनीक है।
- वर्तमान में, DPRK के अलावा, रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम, चीन, भारत और इज़राइल एकमात्र ऐसे देश हैं जिनके पास भूमि-आधारित ICBM का दस्तावेजीकरण है।

कैनबिस मेडिसिन प्रोजेक्ट

खबरों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने कहा कि जम्मू भारत की पहली कैनबिस मेडिसिन परियोजना का नेतृत्व करने जा रहा है।

महत्वपूर्ण बिंदु

कैनबिस मेडिसिन प्रोजेक्ट के बारे में:

- CSIR-IIIM जम्मू का 'कैनबिस रिसर्च प्रोजेक्ट' भारत में अपनी तरह का पहला प्रोजेक्ट है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के नेतृत्व में एक कनाडाई फर्म के साथ निजी सार्वजनिक भागीदारी में शुरू किया गया है, जिसमें अच्छे के लिए दुरुपयोग की संभावनाएं मौजूद हैं। मानव जाति के विशेष रूप से न्यूरोपैथी, कैंसर और मिर्गी, घातक बीमारियों से पीड़ित रोगियों के लिए।
- CSIR-IIIM की यह परियोजना आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार की न्यूरोपैथी, मधुमेह दर्द आदि के लिए निर्यात गुणवत्ता वाली दवाओं का उत्पादन करने में सक्षम होगी।
- यह परियोजना कैनबिस के चिकित्सीय गुणों का पता लगाएगी, एक पौधा जो अन्यथा प्रतिबंधित है और दुरुपयोग के लिए जाना जाता है।

भांग की खेती:

- कैनबिस, खरपतवार, गमला और मारिजुआना सभी पौधों के एक ही समूह को संदर्भित करते हैं जो अपने आरामदायक और शांत प्रभावों के लिए जाने जाते हैं।
- कैनबिस में कम से कम 120 विश्वसनीय स्रोत सक्रिय तत्व, या कैनबिनोइड्स होते हैं। सबसे प्रचुर मात्रा में कैनबिडिओल (CBD) और डेल्टा-9-टेट्राहाइड्रोकैनाबिनोल (टीएचसी) हैं।
- कैनबिडिओल (CBD) - यह एक साइकोएक्टिव कैनाबिनोइड है, फिर भी यह गैर-नशीला और गैर-उत्साही है।
- THC- यह कैनाबिस में मुख्य साइकोएक्टिव यौगिक है।

भारत में कानूनी प्रावधान:

- कैनबिस से संबंधित केंद्रीय कानून नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट, 1985 है।
- NDPS अधिनियम कैनबिस राल और फूलों की बिक्री और उत्पादन पर प्रतिबंध लगाता है, लेकिन कैनबिस पौधे की पत्तियों और बीजों के उपयोग की अनुमति है।
- हालाँकि, अलग-अलग राज्यों में इसके उपभोग, कब्जे, बिक्री या खरीद से संबंधित अपने-अपने कानून हैं।
- उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मणिपुर, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों ने वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए भांग के उपयोग के लिए नीति और नियम बनाना शुरू कर दिया है।

CSIR-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन (CSIR-IIIM) के बारे में:

- यह भारत का सबसे पुराना वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान है, जिसका इतिहास 1960 के दशक में टकसाल की खोज का है, जो बैंगनी क्रांति का केंद्र है और अब कैनबिस अनुसंधान परियोजना है।
- इसे पहली बार 1941 में एक अनुसंधान और उत्पादन केंद्र के रूप में स्थापित किया गया था लेकिन बाद में 1957 में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) ने इसे अपने अधिकार में ले लिया।
- अधिदेश: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए उच्च मूल्य की प्रौद्योगिकियों, दवाओं और उत्पादों को विकसित करने के लिए, जैव प्रौद्योगिकी द्वारा सक्षम, पौधे और माइक्रोबियल मूल दोनों के प्राकृतिक उत्पादों से नई दवाओं और चिकित्सीय दृष्टिकोण की खोज करना।

भारत जलवायु ऊर्जा डैशबोर्ड (ICED) 3.0

खबरों में क्यों?

नीति आयोग ने हाल ही में भारत जलवायु ऊर्जा डैशबोर्ड (ICED) 3.0 लॉन्च किया है।

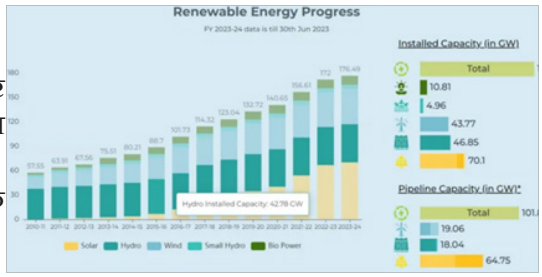

महत्वपूर्ण बिंदु

- यह सरकार द्वारा प्रकाशित स्रोतों के आधार पर ऊर्जा क्षेत्र, जलवायु और संबंधित आर्थिक डेटासेट पर वास्तविक समय के डेटा के लिए देश का वन-स्टॉप प्लेटफ़ॉर्म है।
- इसे नीति आयोग द्वारा ऊर्जा और जलवायु थिंक-टैंक वसुधा फाउंडेशन के सहयोग से विकसित किया गया था।

विशेषताएँ:

- एक उपयोगकर्ता-अनुकूल प्लेटफ़ॉर्म के रूप में विकसित, ICED 3.0 उपयोगकर्ताओं को एक विश्लेषणात्मक इंजन का उपयोग करके डेटासेट तक स्वतंत्र रूप से पहुंचने और उसका विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है।
- यह प्रमुख चुनौतियों की पहचान करते हुए ऊर्जा और जलवायु क्षेत्रों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा और समझ बढ़ाएगा।
- पोर्टल उपलब्ध डेटा मापदंडों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करेगा और इसलिए भारत की स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण यात्रा की प्रगति की निगरानी में बेहद उपयोगी है।
- यह डैशबोर्ड 500 से अधिक पैरामीटर, 2000 से अधिक इन्फोग्राफिक्स और कई इंटरैक्टिव विज़ुअलाइज़ेशन प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को भारत के ऊर्जा क्षेत्र की समग्र समझ प्राप्त करने की अनुमति मिलती है।
- ऊर्जा और जलवायु के अलावा, डैशबोर्ड तुलनात्मक अध्ययन और ऊर्जा और जलवायु मुद्दों के साथ-साथ इसके संयुक्त विश्लेषण के लिए अर्थव्यवस्था और जनसांख्यिकी पर भी जानकारी प्रदान करता है।

मापुटो प्रोटोकॉल

खबरों में क्यों?

2023 अफ्रीका में महिलाओं के अधिकारों पर अफ्रीकी चार्टर के प्रोटोकॉल (मापुटो प्रोटोकॉल) की 20वीं वर्षगांठ है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- इसके प्रगतिशील प्रावधानों के निरंतर अनुकूलन और कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए मापुटो प्रोटोकॉल की 20 वीं वर्षगांठ को चिह्नित करने के लिए, अफ्रीकी महिला अधिकार गठबंधन (SOAWR), इक्वेलिटी नाउ और मेक एवरी वुमेन काउंट (MEWC) के लिए एकजुटता द्वारा एक ऐतिहासिक रिपोर्ट तैयार की गई है। मापुटो प्रोटोकॉल के 20 वर्ष शीर्षक।
- रिपोर्ट में मापुटो प्रोटोकॉल के अनुसमर्थन, घरेलूकरण और कार्यान्वयन की दिशा में अफ्रीका में अब तक हुई प्रगति का सारांश दिया गया है, जिसमें विस्तृत केस अध्ययनों की एक श्रृंखला के साथ कुछ प्रमुख उपलब्धियों और चुनौतियों का वर्णन किया गया है।
- महाद्वीप पर लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने की दिशा में राज्यों के निरंतर प्रयासों का समर्थन करने के लिए SOAWR सदस्य संगठनों की सिफारिशों के साथ साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है।

मापुटो प्रोटोकॉल के बारे में:

- अफ्रीका में महिलाओं के मानव और लोगों के अधिकारों पर अफ्रीकी चार्टर का प्रोटोकॉल, जिसे मापुटो प्रोटोकॉल के रूप में जाना जाता है, अफ्रीकी संघ द्वारा स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार साधन है।

दत्तक ग्रहण:

- इसे मानव और लोगों के अधिकारों पर अफ्रीकी चार्टर के एक प्रोटोकॉल के रूप में 2003 में मापुटो, मोजाम्बिक में अफ्रीकी संघ द्वारा अपनाया गया था।
- यह 2005 में लागू हुआ।

अनुसमर्थन:

- 55 सदस्य देशों में से, 44 ने लैंगिक समानता पर प्रोटोकॉल की पुष्टि की है या उसे स्वीकार किया है, जो एयू में सबसे अधिक अनुसमर्थित उपकरणों में से एक बन गया है।
- कई राज्यों में प्रोटोकॉल का पूर्ण वर्चस्व धीमा या अप्रभावी रहा है।
- अफ्रीका के कुछ राज्यों ने अभी तक प्रोटोकॉल का अनुमोदन या उसमें शामिल होना बाकी है।

शासनादेश:

- यह महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार, पुरुषों के साथ सामाजिक और राजनीतिक समानता, उनके प्रजनन स्वास्थ्य निर्णयों में बेहतर स्वायत्तता और अंत-से-अंत महिला जननांग विकृति सहित व्यापक अधिकारों की गारंटी देता है।

मापुटो प्रोटोकॉल के तहत अफ्रीकी महिलाओं के अधिकार:

प्रोटोकॉल अफ्रीकी महिलाओं और लड़कियों को व्यापक अधिकार प्रदान करता है और इसमें प्रगतिशील प्रावधान शामिल हैं:

- हानिकारक पारंपरिक प्रथाएँ जैसे बाल विवाह और महिला जननांग विकृति (एफजीएम)।
- प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकार।
- राजनीतिक प्रक्रियाओं में भूमिकाएँ।
- आर्थिक सशक्तिकरण।
- महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करना।

रिपोर्ट के निष्कर्ष:

अनुसमर्थन के संबंध में:

- प्रोटोकॉल में अफ्रीकी राज्यों के सार्वभौमिक अनुसमर्थन का लक्ष्य है, हालांकि, लक्ष्य के केवल पांच साल पूरे होने पर अभी भी 12 देशों को अनुसमर्थन करना बाकी है।
- यदि अनुसमर्थन और बल में प्रवेश पर विचार किया जाए तो मापुटो प्रोटोकॉल को सबसे तेजी से लागू होने वाली मानवाधिकार संधि माना जाता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

अध्याय 1. सहकार से समृद्धि: योजना से कार्यान्वयन तक

समृद्धि और प्रगति के लिए सहयोग का उपयोग करने के लिए, "सहकार से समृद्धि" (सहयोग के माध्यम से समृद्धि) के आह्वान के साथ, जुलाई 2021 में एक अलग प्रशासनिक निकाय के रूप में सहकारिता मंत्रालय (MoC) की स्थापना की गई थी। सहकारी नेतृत्व वाले आंदोलन को अपनाकर, भारत में संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने और स्थानीय उद्यमियों को वैश्विक स्तर पर विस्तार करने के लिए सशक्त बनाने की क्षमता है।

सहकारी आंदोलन का अवलोकन

- भारत के 98% गांवों में मौजूद 8.54 लाख सहकारी समितियां हैं और इनके 29 करोड़ सदस्य हैं। इनमें से 80% सहकारी समितियाँ गैर-क्रेडिट सहकारी समितियाँ हैं और 20% क्रेडिट सहकारी समितियाँ हैं।
- सहकारी आंदोलन की पहली पहचान 1904 में सहकारी क्रेडिट सोसायटी अधिनियम की घोषणा के साथ शुरू हुई।
- सहकारिता पर मैक्लेगन समिति की रिपोर्ट (1914-15) के बाद, सहकारी आंदोलन मुख्य रूप से राहत प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने से सामाजिक-आर्थिक कल्याण में सुधार के उद्देश्य से एक आंदोलन बन गया।
- स्वतंत्रता के बाद, सहकारी आंदोलन को भारत सरकार की परिप्रेक्ष्य योजनाओं में उचित मान्यता मिली।

सहयोग के सिद्धांत

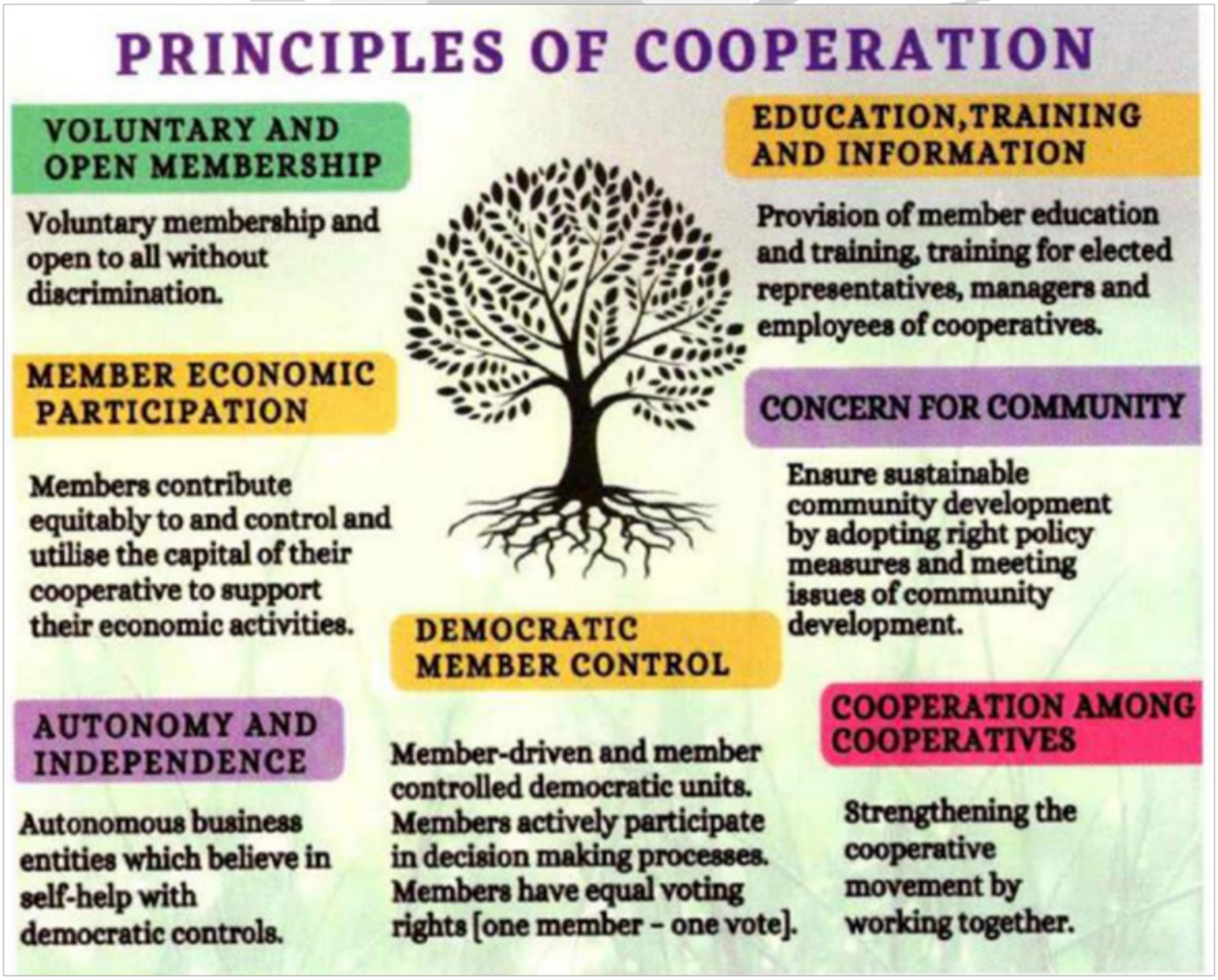

सहकारी समितियों की पूरी क्षमता को उजागर करने के लिए उचित नीतियों और प्रभावी सरकारी हस्तक्षेपों के माध्यम से बाधाओं और चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। इसे 4 पीएस और 4 ईएस ढांचे का उपयोग करके हासिल किया जा सकता है।

भारतीय सहकारी आंदोलनों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धताएँ

- सहकारी 'स्क्वाड': सरकार ने एक योजना तैयार की है जो 'स्क्वाड' ढांचे के माध्यम से सहकारी समितियों के लिए नए उभरते क्षेत्रों को प्राथमिकता देती है और उनकी खोज करती है।
- राष्ट्रीय सहयोग नीति: समान सहकारी आंदोलन के लिए एक सर्व-समावेशी नीति तैयार करने के लिए सुरेश प्रभु समिति की स्थापना की गई है।

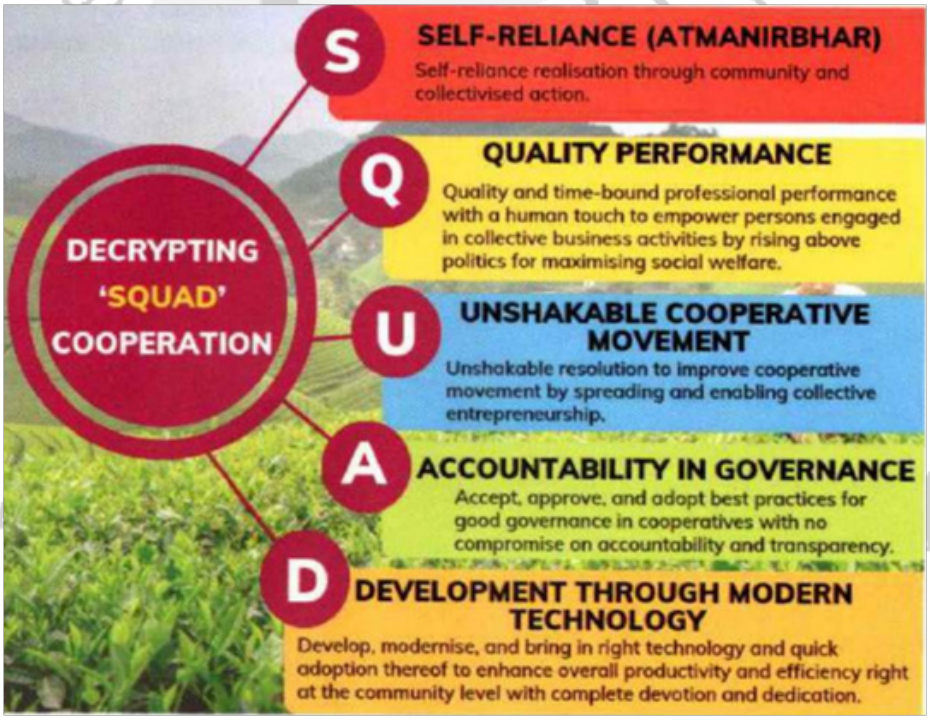

प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) को सुदृढ़ बनाना:

- PACS के लिए मॉडल उपनियम: 22 राज्यों ने सामूहिक सामुदायिक विकास के प्रति परिचालन दक्षता, पारदर्शिता और जिम्मेदारी बढ़ाने के लिए मॉडल-उपनियम अपनाए हैं।
- PACS सामान्य सेवा केंद्र (CSC) के रूप में: PACS आत्मनिर्भरता के लिए अपने व्यवसाय में विविधता लाने के लिए CSC के रूप में पंजीकरण कर सकता है।

- पैक्स को FPO के साथ एकीकृत करना: इससे पैक्स को अपनी गतिविधियों का दायरा बढ़ाने और मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती आदि जैसे उच्च आय वाले उद्यम शुरू करने में मदद मिलेगी।
- तेल और ऊर्जा व्यवसाय में पैक्स: PACS पेट्रोल और डीजल डीलरशिप और LPG वितरकों के लिए लाइसेंस प्राप्त कर सकते हैं और वे विभिन्न नवीकरणीय ऊर्जा योजनाओं के कार्यान्वयन में भी लगे रहेंगे।
- राष्ट्रीय सहकारी विश्वविद्यालय: यह सहकारी शिक्षण और प्रशिक्षण की एक व्यापक, एकीकृत और मानकीकृत संरचना स्थापित करने और मौजूदा कार्यबल की क्षमता निर्माण की मांग को पूरा करने में मदद करेगा।
- सहकारी डेटाबेस: सहकारिता मंत्रालय नीति निर्माण में सहायता के लिए सभी क्षेत्रों की सहकारी समितियों पर प्रामाणिक और अद्यतन डेटा प्राप्त करने के लिए एक व्यापक सहकारी डेटाबेस विकसित कर रहा है।

अन्य पहल:

- 63,000 कार्यात्मक प्राथमिक कृषि ऋण समितियों का कम्प्यूटरीकरण।
- सरकारी ई-मार्केट प्लेटफॉर्म (GeM) पर पंजीकृत खरीदार और विक्रेता के रूप में सहकारी समितियां।
- सहकारी समितियों से निर्यात को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय निर्यात सहकारी समिति की स्थापना।
- जैविक उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय जैविक सहकारी समिति की स्थापना।
- गुणवत्तापूर्ण बीजों के उत्पादन संरक्षण प्रमाणीकरण और वितरण को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय निर्यात बीज सहकारी समिति की स्थापना।
- सभी 2.54 लाख पंचायतों को कवर करने के लिए 2 लाख नए बहुउद्देश्यीय PAC बनाना।

सहकारी क्षेत्र की सुचारू और सतत वृद्धि सुनिश्चित करने में चुनौतियाँ:

- सहकारी विस्तार में क्षेत्रीय और क्षेत्रीय असंतुलन को संबोधित करना।
- राज्यों में जटिल नियामक परिदृश्य को नेविगेट करना।
- शासन, नेतृत्व और परिचालन प्रणालियों को बढ़ाना और सहकारी समितियों के पेशेवर प्रबंधन को सुनिश्चित करना।
- केंद्रीय, क्षेत्रीय और राज्य सहकारी समितियों के रजिस्ट्रारों के बीच प्रभावी संवाद और समन्वय स्थापित करना।
- बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और नई सहकारी समितियों और सामाजिक सहकारी समितियों के गठन और प्रचार को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष:

- किसानों की आय को बढ़ावा देते हुए पांच ट्रिलियन डॉलर की भारतीय अर्थव्यवस्था हासिल करने के लक्ष्य पर सहकारी समितियों के योगदान का कई गुना प्रभाव पड़ेगा।
- सहकार से समृद्धि दृष्टिकोण की सच्ची पूर्ति सामुदायिक व्यावसायिक इकाइयों पर निर्भर करती है जो लोगों की सामूहिक कार्रवाई की अंतर्निहित क्षमता का प्रभावी ढंग से दोहन करती है और सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए सहकारी-आधारित मॉडल के मूल दर्शन के साथ संरेखित करती है।

अध्याय 2. डिजिटलीकरण के माध्यम से कृषि सहकारी समितियों को सशक्त बनाना

सहकारी ऋण संस्थाएँ लंबे समय से भारत में सामाजिक और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में सहायक रही हैं। ये संस्थाएँ, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, कृषि उत्पादन के लिए ऋण जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सहकारी ऋण संस्थाओं के बारे में

- अल्पकालिक ग्रामीण सहकारी ऋण संरचना (STCCS) एक 3 स्तरीय संरचना है जिसमें ग्रामीण स्तर पर राज्य सहकारी बैंक (STB), जिला केंद्रीय सहकारी बैंक (DCCB) और प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (PAC) शामिल हैं।
- इन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा विनियमित किया जाता है और राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) द्वारा पर्यवेक्षण किया जाता है।
- वे कृषि उत्पादन में आवश्यक ऋण जुटाना प्रदान करते हैं, लेकिन स्वयं सहायता, जमीनी स्तर पर सामुदायिक भागीदारी और संसाधन आवंटन और गतिशीलता पर सामाजिक नियंत्रण के लिए उत्प्रेरक के रूप में भी काम करते हैं।

सहकारी ऋण संस्थाओं के समक्ष चुनौतियाँ

- ग्रामीण ऋण क्षेत्र में वाणिज्यिक बैंकों और माइक्रोफाइनेंस संस्थानों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।
- अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने में असमर्थता।
- वित्तीय सलाह और विपणन जैसी सेवाओं का उपयोग करने के बजाय पारंपरिक सेवाओं (अल्पकालिक ऋण) पर निर्भरता।
- नवीनता का अभाव।

STCCS का डिजिटलीकरण:

- केंद्रीकृत ऑनलाइन रीयल-टाइम एक्सचेंज (कोर) आधारित बैंकिंग समाधान (CBS) ने राज्य सहकारी बैंकों (STB) और जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों (DCCB) को स्वचालित कर दिया है, जो नियामक तंत्र में सुधार करता है और कभी भी, कहीं भी बैंकिंग को सक्षम बनाता है।
- मानकीकृत प्रौद्योगिकी-संचालित कार्यालय प्रबंधन प्रणालियों को अपनाकर सहकारी बैंकों की दक्षता और प्रशासन में सुधार किया जा सकता है।

पैक्स के लिए प्रौद्योगिकी अपनाना:

- जबकि DCCB को व्यावसायिक प्रक्रियाओं के डिजिटलीकरण की आवश्यकता है, PACS को दक्षता की दिशा में एक बुनियादी कदम के रूप में कम्प्यूटरीकृत करने की आवश्यकता है।
- PACS के कम्प्यूटरीकरण का उद्देश्य सेवा वितरण को बढ़ाना, संचालन को डिजिटल बनाना और उन्हें DCCB और STB के साथ एकीकृत करना है।
- हालाँकि, अपर्याप्त ग्रामीण बुनियादी ढांचे, बिजली आपूर्ति, इंटरनेट कनेक्टिविटी और कंप्यूटर कौशल जैसी चुनौतियों का समाधान किया जाना चाहिए।

ग्राहक इंटरफ़ेस, सेवा वितरण और निर्णय लेने के लिए प्रौद्योगिकी को अपनाना:

- साइबर सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, फील्ड मॉनिटरिंग के लिए ड्रोन और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों को अपनाने की जरूरत है।
- ग्राहक अधिग्रहण, क्रेडिट प्रोफाइलिंग, सलाहकार सेवाओं, वित्तीय उत्पादों और उपयोगकर्ता के अनुकूल डिजिटल इंटरफेस के विकास की सुविधा के लिए फिनटेक फर्मों के साथ सहयोगात्मक साझेदारी की आवश्यकता है।

अध्याय 3. गैर-क्रेडिट सहकारी समितियों के लिए मार्ग विकसित करना

- लगभग 8.5 लाख सहकारी समितियों और 29 करोड़ लोगों की सदस्यता के साथ, सहकारी समितियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- हालाँकि, राज्य प्रशासनिक मशीनरी द्वारा अपनाए गए विविध फोकस क्षेत्रों के कारण सहकारी समितियों की वृद्धि और विकास राज्यों में भिन्न-भिन्न है।

भारत में सहकारी समितियों की संरचना:

- सहकारी समितियां सहकारी समिति अधिनियम 1912 के तहत काम करती हैं, जिसमें सहकारी थ्रिफ्ट सोसाइटी अधिनियम और बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम 2002 शामिल हैं।

सहकारी संरचनाएँ दो प्रकार की होती हैं:

- राज्य सहकारी समितियाँ (राज्य सरकार के अधीन आती हैं)
- बहु-राज्य सहकारी समितियाँ (केंद्र सरकार के अधीन आती हैं)

सहकारिता पर वैश्वीकरण का प्रभाव:

- इस डर के बावजूद कि वैश्वीकरण सहकारी समितियों के विकास को प्रभावित करेगा, अमूल, हॉपकॉम्स और इफको सफलता की कहानियाँ रही हैं।
- उनकी सफलता का श्रेय दिया जा सकता है
- अच्छी तरह से काम करने वाली एंड-टू-एंड आपूर्ति एकीकरण श्रृंखला
- उत्पादों और विपणन का विविधीकरण
- प्रौद्योगिकी प्रगति
- पेशेवर प्रबंधन

सफलता की ये कहानियाँ भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान देने के लिए, विशेषकर खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में, सहकारी समितियों की क्षमता को उजागर करती हैं।

भारत में गैर-क्रेडिट सहकारी समितियों को उनकी विविधता के कारण एक अनुरूप दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इसे स्वीकार करते हुए कृषि उत्पादों के लिए राष्ट्रीय स्तर की सहकारी समिति स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

अभिसरण:

- भारत में सहकारी समितियां उद्यम पोर्टल पर MSME के रूप में पंजीकरण कर सकती हैं
- क्लस्टर-आधारित कार्यक्रम सामान्य सुविधाओं, प्रसंस्करण केंद्रों और कौशल विकास के लिए धन उपलब्ध कराते हैं।
- उद्यम प्रमाणन को कार्यक्रम के लाभों तक पहुँचने के लिए प्राथमिक दस्तावेज़ माना जा सकता है।
- यह सुव्यवस्थित दृष्टिकोण "संपूर्ण सरकारी दृष्टिकोण" के साथ संरेखित होता है और प्राथमिकता क्षेत्र को ऋण देने के लिए सहकारी समितियों को MSME का दर्जा प्रदान करता है।

जागरूकता, प्रशिक्षण और सलाह:

- एक व्यवहार्य कैरियर विकल्प के रूप में छात्रों के बीच सहकारी समितियों के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- सहकारी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कौशल विकास के माध्यम से क्षमता निर्माण।
- मेंटरशिप कार्यक्रम बड़ी सहकारी समितियों और समान गतिविधियों में लगी राज्य-स्तरीय सहकारी समितियों के बीच सहयोग को बढ़ावा दे सकते हैं।
- ज्ञान के आदान-प्रदान और रचनात्मक सहयोग को बढ़ावा देना।

भारत सरकार ने गठन की घोषणा कर दी है

a. राष्ट्रीय स्तर की बहुराज्य सहकारी बीज सोसायटी, जो गुणवत्ता वाले बीजों के उत्पादन, खरीद, प्रसंस्करण, ब्रांडिंग, लेबलिंग, पैकेजिंग, भंडारण, विपणन और वितरण के लिए एक शीर्ष संगठन के रूप में कार्य करेगी; और रणनीतिक अनुसंधान और विकास।

b. जैविक उत्पादों के एकत्रीकरण, प्रमाणीकरण, परीक्षण, खरीद, भंडारण, प्रसंस्करण, ब्रांडिंग, लेबलिंग, पैकेजिंग, लॉजिस्टिक सुविधाओं और विपणन के लिए एक छत्र संगठन के रूप में कार्य करने के लिए एक बहु राज्य सहकारी जैविक सोसायटी।

- प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण:
- सहकारी समितियों को प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए डिजिटलीकरण को अपनाते हुए प्रौद्योगिकी, उत्पादन और व्यवसाय मॉडल को उन्नत करना महत्वपूर्ण है।
- सब्सिडी और ऋण सुविधाओं सहित सरकारी समर्थन, इस परिवर्तन में सहकारी समितियों की सहायता कर सकता है।
- भौतिक बुनियादी ढांचे का निर्माण करना और सहकारी समितियों को प्रासंगिक क्लस्टर योजनाओं से जोड़ना।

अध्याय 4. मत्स्य पालन सहकारी समितियाँ

- भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र विविध है, जिसमें ठंडे पानी और सजावटी मत्स्य पालन के अलावा समुद्री, अंतर्देशीय और खारे पानी जैसे उप-क्षेत्र शामिल हैं।
- 8,000 किमी से अधिक की तटरेखा, 2 मिलियन वर्ग किमी से अधिक के एक विशेष आर्थिक क्षेत्र और व्यापक मीठे पानी के निकायों के साथ, इस क्षेत्र में भारत में अपार आर्थिक क्षमता है।

मत्स्य पालन सहकारी समितियों की भूमिका:

- मत्स्य सहकारी समितियाँ समाज में कमजोर समूहों को आजीविका सुरक्षा, पोषण सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर सकती हैं।
- भारत में प्राथमिक मत्स्य सहकारी समितियों के माध्यम से लगभग 4 मिलियन लोग आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं।
- बदले हुए आर्थिक परिदृश्य में हर स्तर पर मत्स्य पालन सहकारी समितियों की भूमिका पर विचार किया जाना चाहिए, और स्थिरता के लिए बुनियादी ढांचे और प्रगतिशील आपूर्ति और मूल्य श्रृंखला विकसित करने के लिए उन्हें धन का समर्थन किया जाना चाहिए।

भारत सरकार का जोर:

- आत्मनिर्भर भारत अभियान: प्रधानमंत्री ने मत्स्य पालन क्षेत्र में रोजगार पैदा करने के लिए 20 लाख करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की घोषणा की।
- प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY): मत्स्य पालन क्षेत्र के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए 20,050 करोड़ रुपये के कुल परियोजना परिव्यय के साथ 2019-20 में शुरू की गई। लिंक में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के बारे में और जानें।
- मत्स्य पालन और जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDF): मत्स्य पालन और जलीय कृषि अवसंरचना विकसित करने के लिए 7,522 करोड़ रुपये का एक समर्पित कोष स्थापित किया गया था।
- नीली क्रांति: 2014 में पेश की गई, यह मछली पालन क्षेत्र में मछली उत्पादन और बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देती है। लिंक में नीली क्रांति के बारे में और पढ़ें।

भारत में मत्स्य पालन सहकारी आंदोलन:

- भारत में मत्स्य पालन सहकारी आंदोलन 1913 की शुरुआत में शुरू हुआ जब महाराष्ट्र में 'कारला मच्छीमार सहकारी समिति' के नाम से पहली मछुआरों की सोसायटी का आयोजन किया गया था।

मत्स्य पालन सहकारी समितियों का राष्ट्रीय डेटाबेस:

- आने वाले पांच वर्षों में देश की प्रत्येक पंचायत को 2 लाख के आंकड़े तक पहुंचाने के लिए मत्स्य पालन सहकारी समितियों को संगठित करने का निर्णय लिया गया है।
- राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB) और फिशकोफेड को संबंधित राज्य/केंद्र शासित प्रदेश के अधिकारियों के साथ समन्वय में काम में तेजी लाने का काम सौंपा गया है।
- डेटाबेस क्षेत्र में अंतराल की पहचान करने में मदद कर सकता है, और अंतराल को पाटने के प्रयास किए जाएंगे।

मत्स्य पालन की सफलता की कहानियाँ:

- 2021 में सहकारिता मंत्रालय की स्थापना के बाद से मत्स्य पालन सहकारी समितियों को प्राथमिकता और वास्तविक फोकस मिला है।
- मत्स्यफेड-केरल: 1984 में स्थापित, यह राज्य-स्तरीय महासंघ मछली की बिक्री, निर्यात और खुदरा दुकानों में उत्कृष्टता रखता है, और अपने स्वयं के चटाई बनाने और प्रसंस्करण संयंत्र संचालित करता है।
- गुजरात मत्स्य पालन केंद्रीय सहकारी संघ (GFCCA): 1956 में पंजीकृत, GFCCA दिल्ली में मछली पकड़ने वाली नौकाओं और सफल मछली खुदरा दुकानों के लिए डीजल आउटलेट संचालित करता है।
- सहकारिता मंत्रालय की स्थापना के साथ, मत्स्य पालन सहकारी समितियों को प्राथमिकता और वास्तविक फोकस प्राप्त हुआ है।

अध्याय 5. वन पैक्स वन ड्रोन

- ड्रोन एक मानव रहित हवाई वाहन (UAV) है जो मानव पायलट, चालक दल या यात्रियों के बिना संचालित होता है और इसे दूर से या स्वायत्त रूप से संचालित किया जा सकता है।
- ड्रोन के निर्माण को बढ़ावा देने और प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) को मजबूत करने की भारत सरकार की पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

भारत सरकार की पहल:

प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) को सुदृढ़ बनाना:

- पैक्स को मजबूत करने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।
- इससे किसानों के लिए सेवाओं में वृद्धि होगी और ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलेगा।

उदारीकृत ड्रोन नियम 2021:

- नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने उदारीकृत ड्रोन नियम 2021 की घोषणा की।
- नियमों का लक्ष्य 2030 तक भारत को वैश्विक ड्रोन केंद्र बनाना है।
- भारत में ड्रोन संचालन के लिए आसान और तेज़ मंजूरी।
- ड्रोन उद्योग के लिए एक नियामक वातावरण की सुविधा के लिए एक ड्रोन प्रमोशन काउंसिल का निर्माण।

उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना:

- केंद्र सरकार ने ड्रोन और घटकों के लिए 120 करोड़ रुपये की PLI योजना को मंजूरी दी।
- भारत में ड्रोन विनिर्माण को बढ़ावा देना और आयात निर्भरता को कम करना है।

सहकारी आंदोलन को सुदृढ़ बनाना:

- सरकार देश भर में सहकारी आंदोलन को मजबूत करने पर अधिक ध्यान दे रही है।

कृषि में ड्रोन:

- कम उपज, मिट्टी का कटाव, सिंचाई सुविधाओं की कमी, इनपुट का अकुशल उपयोग, उर्वरकों का अवैज्ञानिक उपयोग, फसल कटाई के बाद प्रबंधन की कमी और वित्तीय सेवाओं तक सीमित पहुंच।
- डिजिटल तकनीक-आधारित कृषि सकल घरेलू उत्पाद पर महत्वपूर्ण प्रभाव के साथ 2025 तक $65 बिलियन का मूल्य अनलॉक कर सकती है।
- ड्रोन भूमि मानचित्रण, कृषि रसायन छिड़काव, बीजारोपण, फसल उपज मूल्यांकन और ड्रोन-आधारित विश्लेषण जैसे समाधान प्रदान करते हैं।
- ड्रोन के साथ कृषि रसायन छिड़काव के लाभ: इनपुट पर 25-90% की लागत बचत, त्वचा के जोखिम में 90% की कमी, और फसल की उपज में सुधार।
- ड्रोन-आधारित भूमि मानचित्रण के माध्यम से सटीक कृषि और भूमि विवादों में कमी लाई जा सकती है।
- भारत में कृषि मशीनीकरण का निम्न स्तर: उत्तरी राज्यों में गोद लेने की दर 70-80% है, लेकिन चीन, ब्राजील और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों की तुलना में अभी भी कम है। ड्रोन उत्पादकता बढ़ाने और इनपुट लागत को कम करने में मदद कर सकते हैं।
- ड्रोन कीटों के संक्रमण और फसलों पर उनके प्रभाव से निपटने के लिए कीटनाशकों, कवकनाशी और तरल उर्वरकों का प्रभावी ढंग से छिड़काव कर सकते हैं।
- ड्रोन सर्वेक्षण, बीजारोपण, छिड़काव और परागण जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों के साथ लागत में कमी और इनपुट उपयोग के अनुकूलन की पेशकश करते हैं।

एक पैक्स एक ड्रोन: आवश्यक कार्रवाई और लाभ

- प्रत्येक ड्रोन के साथ देश भर में बहुउद्देशीय पैक्स स्थापना
- FPO के समान PACS के लिए कृषि ड्रोन लागत का 75% अनुदान
- ड्रोन भारतीय कृषि को बदल सकते हैं, सकल घरेलू उत्पाद में 1-1.5% की वृद्धि कर सकते हैं
- 5 लाख नई नौकरियाँ पैदा करें और समृद्धि के डिजिटल युग की शुरुआत करें
- पायलट लाइसेंस वाले योग्य ग्रामीण उद्यमी कृषि ड्रोन उड़ा सकते हैं
- दिशानिर्देश पैक्स सदस्यों के लिए 5 से 6 लाख रुपये की शुद्ध वार्षिक लाभ सीमा प्रदान करते हैं।

अध्याय 6. पुनर्योजी कृषि-आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन

- कृषि आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन (ASCM) रसद प्रवाह, ट्रांसपोर्टरों, दुकानों, खरीद, गोदाम, इन्वेंट्री प्रबंधन और प्रसंस्करण के माध्यम से खेत से कांटा तक कृषि वस्तुओं के प्रभावी प्रवाह से संबंधित है।
- जलवायु परिवर्तन, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, बाजार में अस्थिरता जैसे कारक आपूर्ति श्रृंखला के लिए चुनौतियां पैदा करते हैं।
- स्मार्ट पुनर्योजी आपूर्ति श्रृंखला में परिवर्तन कृषि को सामाजिक और पर्यावरणीय दबावों से मुक्त करता है।

आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का महत्व:

- यह हितधारकों को जोड़कर खाद्य सुरक्षा और दीर्घकालिक कृषि विकास प्रदान करता है।
- यह किसानों को वस्तुओं की खरीद, विपणन और वितरण में मदद करता है।
- भंडारण मुद्दों, परिवहन मुद्दों और इन्वेंट्री प्रबंधन से निपटने के लिए संसाधनों के उचित आवंटन की आवश्यकता होती है।

कृषि आपूर्ति श्रृंखला में सहकारी समितियों की भूमिका:

- सहकारी समितियाँ तकनीकी, वित्तीय और परिचालन सहायता सेवाएँ प्रदान करके कृषि आपूर्ति श्रृंखला में मदद करती हैं।
- किसान उत्पादक संगठन (FPO) जैसी सहकारी समितियां कृषि आदानों की थोक खरीद और ऋण आवश्यकताओं को सुविधाजनक बनाने जैसी व्यावसायिक गतिविधियों के लिए जिम्मेदार हैं।
- वे वस्तुओं के सूचना प्रसारण, विपणन, परिवहन और वितरण के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं।
- वे कृषि इनपुट (बीज, उर्वरक, आदि) की आपूर्ति और ऋण सुविधाएं प्रदान करके गुणवत्तापूर्ण उपज प्राप्त करने में मदद करते हैं। उनका ध्यान विपणन और प्रसंस्करण के अलावा गुणवत्तापूर्ण उपज पर केंद्रित हो गया है।
- सहकारी विपणन समितियां बेहतर भंडारण सुविधाओं, संसाधनों के कुशल प्रबंधन, किसानों को समय पर भुगतान और अपशिष्ट को कम करने की दिशा में आगे बढ़ी हैं।
- वे स्थायी प्रथाओं को अपनाकर पुनर्योजी आपूर्ति श्रृंखलाओं में बदल गए हैं।

प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटी (PACS) भंडारण एवं आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन:

- बहु-सेवा केंद्र: प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटी (PACS) बहु-सेवा केंद्रों के रूप में कार्य करती है जो किसानों को ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ कृषि उपज की खरीद और विपणन में सहायता करती है।
- किसानों के लिए गुणवत्तापूर्ण इनपुट: पैक्स द्वारा कृषि उपकरणों और कृषि-इनपुट का भंडारण किसानों के लिए गुणवत्तापूर्ण इनपुट की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है।
- सामान्य सेवा केंद्र: पैक्स गांवों तक सेवाओं की डिलीवरी की सुविधा प्रदान करके सामान्य सेवा केंद्रों के रूप में कार्य कर रहे हैं।

की गई पहल:

- सहकारिता मंत्रालय ने तीन क्षेत्र-विशिष्ट राष्ट्रीय स्तर की सहकारी समितियों की स्थापना की है:
- बीज समितियाँ: बीज उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण और वितरण में मदद करती हैं
- निर्यात समितियाँ: खरीद, भंडारण, प्रसंस्करण, विपणन, ब्रांडिंग, पैकेजिंग में मदद करती हैं
- ऑर्गेनिक सोसायटी: प्रयोगशाला नेटवर्क के माध्यम से बाजार में प्रमाणन और मानकीकरण प्रदान करती है।

अध्याय 7. आर्थिक विकास के लिए सहकारी उद्यमिता

भारत में उद्यमिता और सहकारी आंदोलनों दोनों का एक लंबा इतिहास है। भारत में, सहकारी आंदोलन ने हमेशा समावेशन और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय और सामाजिक संसाधनों का उपयोग किया है।

सहकारी उद्यमिता:

- सहकारी उद्यमिता एक प्रकार की सामूहिक या संयुक्त उद्यमिता है। एक "सहकारी उद्यमी" एक सामाजिक नेता होता है जिसका दृष्टिकोण केवल किसी के लाभ के बजाय लोकतांत्रिक तरीके से व्यवसाय चलाने के लिए प्रभावी योजनाएँ विकसित करना होता है। एक व्यक्ति, एक वोट और समानता पर आधारित लोकतांत्रिक शासन सहकारी समितियों के शासन के स्तंभ हैं।

सहकारी उद्यमिता का फोकस और महत्व:

- गुणवत्तापूर्ण रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित।
- धन बनाना।
- सामुदायिक स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का इष्टतम उपयोग।
- जमीनी स्तर पर सामान और सेवाएं पहुंचाने की क्षमता।
- सामाजिक जुड़ाव और एकजुटता।
- कार्यस्थल का नियंत्रण और गरिमा।

वर्तमान स्थिति:

- भारत में, सहकारी समितियों का योगदान है:
- हमारे कृषि वित्तपोषण का 19%
- उर्वरक वितरण का 35% और उर्वरक उत्पादन का 30%
- चीनी उत्पादन का 40%
- गेहूं की खरीद 13% और धान की खरीद 20%

विकास क्षमता:

- सामुदायिक समस्याओं के समाधान और क्षेत्रीय रुझानों के अवलोकन के माध्यम से सहकारी समितियों के गठन के अवसरों की तलाश प्रभावी ढंग से की जा सकती है।
- विनिर्माण, सेवाओं, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन, परिवहन, हथकरघा, हस्तशिल्प, स्वास्थ्य, छात्र/परिसर उपभोक्ता सहकारी समितियों आदि जैसे विकासशील आर्थिक क्षेत्रों में सहकारी समितियों को स्थापित करने और विकसित करने का पर्याप्त अवसर है।
- सामाजिक कल्याण क्षेत्र में जबरदस्त संभावनाएं हैं जो आमतौर पर अन्य प्रकार के वाणिज्यिक उद्यमों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं है।

चुनौतियाँ:

- पूंजी तक पहुंच प्राप्त करने में कठिनाई।
- संचालन या सदस्यता की सीमा पर अक्सर कानूनी प्रतिबंध होते हैं।
- लोकतांत्रिक निर्णय लेने आदि के कारण संचालन और प्रक्रियाएं महंगी और समय लेने वाली हैं।

RAO'S ACADEMY

11 कुरुक्षेत्र अगस्त 2023

अध्याय 1. बाजरा: सतत कृषि का भविष्य

बाजरा एक प्रकार की छोटी बीज वाली घास है जिसे पोषक अनाज या शुष्क भूमि अनाज के रूप में भी जाना जाता है। उनमें पोषण संतुलन में सुधार करने, चावल जैसी जल-गहन फसलों पर निर्भरता कम करने और सभी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की क्षमता है।

भारत में बाजरा की खेती का अवलोकन

- भारत दुनिया में बाजरा का अग्रणी उत्पादक है, जो वैश्विक उत्पादन का 19% और दुनिया के बाजरा उगाने वाले क्षेत्र का 20% हिस्सा है।
- भारत में उत्पादित बाजरा की तीन सबसे लोकप्रिय किस्में मोती बाजरा (बाजरा), ज्वार (ज्वार) और फिंगर बाजरा (रागी) हैं।
- भारत में शीर्ष 10 बाजरा उत्पादक राज्य आंध्र प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड हैं। भारत में बाजरा उत्पादन का 98% हिस्सा इन 10 राज्यों में है।
- इन राज्यों में से गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश का बाजरा उत्पादन में 83% हिस्सा है।
- बाजरा को बढ़ावा देने के लिए हालिया अभियान पोषण मूल्यों, पर्यावरण-अनुकूल फसल पैटर्न और इसकी लाभकारी क्षमता के कारण है।

Grains	Energy (kcal)	Protein (g)	Carbohydrate (g)	Starch (g)	Fat (g)	Dietary Fibre (g)	Minerals (g)
Sorghum	334	10.4	67.6	59	1.9	10.2	1.6
Pearl millet	363	11.6	61.7	55	5	11.4	2.3
Finger millet	320	7.3	66.8	62	1.3	11.1	2.7
Proso millet	341	12.5	70.0	-	1.1	-	1.9
Foxtail millet	331	12.3	60.0	-	4.3	-	3.3
Kodo millet	353	8.3	66.1	64	1.4	6.3	2.6
Little millet	329	8.7	65.5	56	5.3	6.3	1.7
Barnyard millet	307	11.6	65.5	-	5.8	-	4.7
Maize	334	11.5	64.7	59	3.6	12.2	1.5
Wheat	321	11.8	64.7	56	1.5	11.2	1.5
Rice	353	6.8	74.8	71	0.5	4.4	0.6

बाजरा का पोषण मूल्य

- अधिकांश बाजरा में प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और आवश्यक खनिजों की उच्च मात्रा होती है। वे अनाज के लिए एक आकर्षक ग्लूटेन-मुक्त विकल्प भी हैं और वसा के कम अवशोषण और कम ग्लाइसेमिक सूचकांकों के लाभ हैं। यह उन्हें सभी उम्र के लोगों के लिए पोषण का एक अच्छा स्रोत बनाता है।

पर्यावरणीय स्थिरता

- अनुकूलनशीलता: बाजरा बहुमुखी फसलें हैं जिन्हें विभिन्न परिस्थितियों में उगाया जा सकता है। वे सूखा-प्रतिरोधी हैं और तापमान की एक विस्तृत श्रृंखला को सहन कर सकते हैं।
- मिश्रित फसल: बाजरा को मिश्रित फसल प्रणालियों में उगाया जा सकता है, जो मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने और कीटों के दबाव को कम करने में मदद करता है।
- सिंचाई: बाजरा को चावल और गेहूं जैसे अन्य अनाजों की तुलना में कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। यह उन्हें सीमित जल संसाधनों वाले क्षेत्रों में किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाता है। उदाहरण के लिए: धान को 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा के साथ 25 डिग्री से अधिक तापमान की आवश्यकता होती है, जबकि ज्वार को 20 सेमी से कम वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है।
- फसल अवधि: बाजरा की फसल अवधि अन्य अनाजों की तुलना में कम होती है, जो उन्हें फसल चक्र अपनाने के लिए आदर्श बनाती है।

Crop	MSP 2014-15	MSP 2022-23	MSP 2023-24	Cost* of production 2022-23	Increase in MSP (Absolute)	Return over cost (in per cent)
Paddy	1,360	2,040	2,183	1,455	143	50
Jowar	1,530	2,970	3,180	2,120	210	50
Bajra	1,250	2,350	2,500	1,371	150	82
Ragi	1,550	3,578	3,846	2,564	268	50

बाजरा उत्पादन और खपत को बढ़ावा देने की पहल:

उत्पादन:

- बाजरा को सरकार की न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के तहत समर्थन दिया जाता है जो यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को उनकी फसलों के लिए उचित मूल्य मिले और बाजरा उगाने में जोखिम कम हो।
- धान जैसी अन्य फसलों की तुलना में MSP के अंतर्गत आने वाली फसलों के लिए लागत पर रिटर्न बाजरा के लिए अधिक है।
- भारत में बाजरा का कुल उत्पादन 2018-19 में 137 लाख टन से बढ़कर 2021-22 में 160 लाख टन हो गया है। इस अवधि के दौरान खेती के कुल क्षेत्रफल में भी वृद्धि हुई है।

उपभोग:

- भारत सरकार लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS), प्रधान मंत्री पोषण शक्ति निर्माण (पीएम-पोशन), एकीकृत बाल विकास योजना (ICDS), एक जिला एक उत्पाद (ODOP) जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से बाजरा की खपत को बढ़ावा दे रही है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत पोषक अनाज पर योजना और उप-मिशन।
- बाजरा पर अनुसंधान करने और अन्य देशों के साथ सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए हैदराबाद में भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान (IIMR) की स्थापना की जाएगी।
- उपभोक्ताओं को बाजरा के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए बाजरा पर स्मारक सिक्के और टिकट प्रकाशित करना, भारतीय खाद्य निगम द्वारा पोषण कार्यक्रम आदि जैसे जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

अध्याय 2. सतत कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकी

- कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जो भारतीय आबादी के 42.1% को रोजगार देती है। हालाँकि, भारत में पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ टिकाऊ नहीं हैं और पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।
- भारत में कृषि की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए टिकाऊ कृषि पद्धतियों (जो मिट्टी, पर्यावरण और समुदाय के दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करती हैं) की आवश्यकता है।

सतत कृषि के विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका:

- प्रौद्योगिकी उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करने, जल प्रबंधन में सुधार और पैदावार बढ़ाने, मिट्टी, जैव-संरक्षण और कार्बन पृथक्करण में लाभ पहुंचाने में मदद कर सकती है।
- सटीक खेती: इसमें फसल प्रदर्शन की निगरानी और अनुकूलन के लिए सेंसर, जीपीएस मैपिंग और डेटा एनालिटिक्स शामिल हैं।
- कृषि वानिकी: कृषि वानिकी एक भूमि-उपयोग एकीकृत प्रबंधन प्रणाली है जो अधिक टिकाऊ और उत्पादक कृषि प्रणाली बनाने के लिए फसलों और पशुधन के साथ पेड़ों और झाड़ियों को जोड़ती है।
- ऊर्ध्वाधर खेती: इसमें नियंत्रित स्थितियों में फसलों की खेती की जाती है।
- हाइड्रोपोनिक्स: इसमें मिट्टी के बिना पोषक तत्वों से भरपूर पानी में पौधे उगाना शामिल है। यह दृष्टिकोण साल भर फसल उत्पादन की अनुमति दे सकता है।
- नवीकरणीय ऊर्जा: नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग कृषि कार्यों को बिजली देने के लिए किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम कर सकता है।
- रोबोटिक्स और ऑटोमेशन: ये श्रम लागत को कम करने, फसल की पैदावार में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

सतत कृषि अपनाने में कमियाँ:

- जागरूकता और ज्ञान की कमी: कई किसान टिकाऊ कृषि के लाभों को नहीं जानते हैं या इसे प्रभावी ढंग से लागू नहीं करते हैं।
- वित्त तक सीमित पहुंच: टिकाऊ कृषि के लिए बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए यह मुश्किल है।
- अपर्याप्त नीति और नियामक ढांचा: नीति और नियामक ढांचे के माध्यम से समर्थन का अभाव।
- उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन को कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय (MOAFW) के बजट का केवल 0.8% प्राप्त होता है।
- सीमित अनुसंधान और विकास: टिकाऊ कृषि पद्धतियों में और अधिक अनुसंधान और विकास की आवश्यकता है जो भारतीय संदर्भ के लिए उपयुक्त हों।
- बुनियादी ढांचे और तकनीकी सहायता की कमी: ग्रामीण सड़कों, भंडारण सुविधाओं और कोल्ड चेन जैसी अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, भारत में कृषि क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
- कम उत्पादकता: भारत में कृषि की विशेषता कम उत्पादकता है।
- खंडित भूमि जोत: औसत भूमि जोत का आकार छोटा होने के कारण, आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाना मुश्किल हो जाता है।
- बाज़ार तक पहुँच की कमी: बाज़ारों तक पहुँच की कमी भारत में किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
- जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन पानी की उपलब्धता, कीट और रोग प्रबंधन और फसल की पैदावार के मामले में महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करता है।
- अनियमित वर्षा और बढ़ते तापमान सहित बदलते मौसम के पैटर्न, फसल उत्पादकता को प्रभावित करते हैं और किसानों की असुरक्षा को बढ़ाते हैं।

पहल:

- राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA)

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
- एकीकृत वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम
- टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने की पहल:
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन,
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना

एग्री टेक स्टार्ट-अप केस स्टडीज:

- एग्रीऐप टेक्नोलॉजीज: यह किसानों को उच्च दक्षता वाली प्रौद्योगिकी-सक्षम कृषि उत्पादन और विपणन के लिए तैयार करने का काम करती है।
- खेती कृषिवानिकी मॉडल के माध्यम से कृषि पारिस्थितिकीय खेती को बढ़ावा देती है।
- पुधुवई ग्रीन गैस: यह जैविक अपशिष्ट कृषि-कच्चे माल और जैव-उर्वरक का उत्पादन करती है।

अध्याय 3. जलवायु टिकाऊ कृषि

- जलवायु परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि को विकट चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए टिकाऊ कृषि की आवश्यकता है।

कृषि में चुनौतियाँ:

- वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए 2050 तक खाद्य उत्पादन को 70% तक बढ़ाने की आवश्यकता है।
- बढ़ते तापमान से फसल की पैदावार में कमी आती है: मक्का (-7.4%), गेहूं (-6.0%), चावल (-6.2%), सोयाबीन (-3.1%)।
- जलवायु परिवर्तन के कारण 9-10 बिलियन अमेरिकी डॉलर की वार्षिक कृषि हानि होती है, जिसमें 20-40% अनाज की संभावित कटौती होती है।
- कृषि, वानिकी और भूमि-उपयोग परिवर्तन मानव-प्रेरित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 25% का योगदान करते हैं।

जलवायु-स्मार्ट कृषि (CSA):

- क्लाइमेट-स्मार्ट एग्रीकल्चर (CSA) का लक्ष्य जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को दूर करके टिकाऊ कृषि हासिल करना है।
- CSA तीन मुख्य परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता है: बढ़ी हुई उत्पादकता, बढ़ी हुई लचीलापन, और कम उत्सर्जन।
- कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए लचीली फसल किस्मों का प्रजनन महत्वपूर्ण है।
- जलवायु-स्मार्ट फसलों को कीटों, पाले और चरम मौसम की घटनाओं जैसी विभिन्न चुनौतियों से निपटना चाहिए।
- किसानों के लिए जलवायु-स्मार्ट फसल किस्मों को सुलभ बनाने के लिए कुशल उत्पादन और वितरण आवश्यक है।
- जलवायु-स्मार्ट कृषि रणनीति को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए, कुछ घटक हैं जिनकी FAO द्वारा अनुशंसा की जाती है:
- जलवायु प्रतिरोधी फसल किस्मों का विकास करें और निर्णय लेने में किसानों को शामिल करें।
- कृषि लचीलेपन और लाभप्रदता को बढ़ावा देने के लिए फसलों और जीवों में विविधता लाएं।
- कीटों, बीमारियों और खरपतवारों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का समग्र रूप से मुकाबला करें।
- बढ़ती पानी की कमी को दूर करने के लिए जल संसाधन प्रबंधन को प्राथमिकता दें।
- एकीकृत परिदृश्य योजना और टिकाऊ प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से मिट्टी की रक्षा करें।
- उपयुक्त मशीनरी और सटीक खेती के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाएं और उत्सर्जन कम करें।

भारत सरकार की पहल:

- नेशनल इनोवेशन ऑन क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर (NICRA): 2011 में रुपये के परिव्यय के साथ लॉन्च किया गया। जलवायु परिवर्तन के प्रति भारतीय कृषि की लचीलापन बढ़ाने के उद्देश्य से 350 करोड़ रुपये। जलवायु-लचीली प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं के अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।
- कृषि-वानिकी पर उप-मिशन: खेत की मेड़ों पर पेड़ लगाने के उद्देश्य से 2016-17 में शुरू किया गया और इसका उद्देश्य कृषि में स्थिरता लाना और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना है।
- राष्ट्रीय पशुधन मिशन: टिकाऊ दृष्टिकोण के माध्यम से पशुधन विकास पर ध्यान देने के साथ 2014-15 में शुरू किया गया और इसका उद्देश्य प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करना, पशु जैव विविधता का संरक्षण करना और किसानों की आजीविका सुनिश्चित करना है। लिंक में राष्ट्रीय पशुधन मिशन के बारे में और जानें।
- राष्ट्रीय जल मिशन (NWM): जल स्रोतों के संरक्षण और बर्बादी को कम करने के लिए एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन (IWRM) सुनिश्चित करने के लिए लॉन्च किया गया। कृषि क्षेत्र सहित जल उपयोग दक्षता (WUE) को 20% तक अनुकूलित करने का लक्ष्य। लिंक में राष्ट्रीय जल मिशन के बारे में और पढ़ें।

अन्य पहल:

- बायोटेक-किसान हब: राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी विकास रणनीति 2015-2020 के तहत स्थापित। इसका उद्देश्य किसानों को आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं तक पहुंच प्रदान करना है।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY): प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल के नुकसान की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए 2016 में शुरू की गई। इसका उद्देश्य टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना और किसानों पर जोखिम

का बोझ कम करना है। लिंक में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में और जानें।

अध्याय 4: सतत कृषि विकास में महिलाओं का योगदान

- भारत में कृषि क्षेत्र 45.6 प्रतिशत कार्यबल को रोजगार देता है और सकल मूल्य वर्धित में 17.32 प्रतिशत का योगदान देता है।
- कृषि में लिंग लाभांश (महिलाओं का योगदान) के महत्व को पहचानना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कृषि उत्पादकता को 2.5% तक बढ़ा सकता है और कृषि उपज को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है।

कृषि और संबद्ध सेवाओं में महिलाओं का महत्व

- 'कृषि के नारीकरण' के साथ, महिलाओं की भूमिकाएं बढ़ रही हैं क्योंकि वे वेतनभोगी श्रमिकों, अवैतनिक श्रमिकों (पारिवारिक स्वामित्व वाली भूमि पर) और कृषि उत्पादन और फसल कटाई के बाद के कार्यों में प्रबंधकों के रूप में काम करती हैं।
- महिलाएं भूमि और जल प्रबंधन, पानी, जलाऊ लकड़ी और चारा इकट्ठा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो कृषि के लिए आवश्यक हैं।
- वे पशुधन उत्पादन, सब्जी की खेती, मछली प्रसंस्करण, डेयरी उत्पादन आदि से संबंधित गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला चलाते हैं।

कृषि में ग्रामीण महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ

- मान्यता का अभाव: प्राथमिक उत्पादक के रूप में महिलाओं की भूमिका को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, और उन्हें केवल सामाजिक सेवाओं के उपभोक्ताओं के रूप में माना जाता है।
- यह कठिन परिश्रम, सीमित कौशल विकास और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से बहिष्कार के चक्र को कायम रखता है।
- कौशल विकास: कौशल विकास के सीमित रास्ते महिलाओं को कम-कुशल, समय लेने वाली और नीरस कृषि गतिविधियों में धकेल देते हैं।
- कृषि में बढ़ते मशीनीकरण से उनकी भागीदारी को खतरा है जब तक कि उन्हें मशीनरी चलाने जैसे नए कौशल हासिल करने के अवसर प्रदान नहीं किए जाते।
- भूमि स्वामित्व और रिकॉर्ड: महिलाओं के पास परिचालन हिस्सेदारी का केवल 13.9 प्रतिशत हिस्सा है, जो भूमि स्वामित्व और प्रचलित भूमि विखंडन प्रथाओं में लैंगिक असमानता को दर्शाता है।
- हालांकि हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 2005 बेटियों को पैतृक संपत्ति में समान अधिकार की अनुमति देता है, लेकिन कृषि भूमि के लिए यह सच नहीं है।
- खराब ऋण पहुंच: संपत्ति के स्वामित्व की कमी महिलाओं के लिए ऋण सुविधाओं को दुर्गम बना देती है।
- ग्रामीण वित्तीय संस्थान कठोर आवश्यकताओं और उनके सीमित उधार अनुभव के कारण महिला ग्राहकों को सेवा देने में झिझकते हैं।
- बाज़ार पहुंच में असमानता: लिंग भेदभाव महिलाओं की गतिशीलता को प्रतिबंधित करता है, बाज़ारों तक उनकी पहुंच को सीमित करता है और आर्थिक अवसरों में बाधा उत्पन्न करता है।

महिला किसानों को सशक्त बनाने के लिए सरकार की पहल

- नाबार्ड द्वारा SHG-बैंक लिंकेज कार्यक्रम ने ऋण प्राप्त करने के लिए संपार्श्विक आवश्यकताओं में छूट दी है
- महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना
- किसान उत्पादक संगठनों में महिलाओं की नेतृत्वकारी भूमिकाओं को प्रोत्साहित करना
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत कौशल विकास कार्यक्रम
- प्रधानमंत्री जन धन योजना और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना जैसी वित्तीय समावेशन योजनाएं

अध्याय 5. सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करना

- कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बनी हुई है, जो आधे से अधिक कार्यबल का समर्थन करती है। हालाँकि सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान (1950-51 में 64.64% से 2021-22 में 17.92%) और रोजगार में गिरावट आई है, लेकिन वैश्विक औसत की तुलना में यह महत्वपूर्ण बना हुआ है।

कृषि उत्पादन में रुझान:

Commodity	1950-51	1970-71	1990-91	1910-11	2020-21	2021-22	CAGR (%)
Foodgrains	50.8	108.4	176.4	244.5	310.74	315.62	2.61
Cereals	42.4	96.6	162.1	226.3	285.28	288.31	2.74
Pulses	8.4	11.8	14.3	18.2	25.46	27.3	1.67
Oilseeds	5.2	9.6	18.6	32.5	36.57	37.7	2.83
Sugarcane	57.1	126.4	241	342.4	405.4	431.8	2.89
Cotton@	3.04	4.8	9.8	33	35.25	31.2	3.33
Jute & Mesta#	3.3	6.2	9.2	10.6	9.35	10.32	1.62
Tea	0.28	0.4	0.7	1	1.4*	-	2.36
Coffee	-	0.1	0.2	0.3	0.3*	-	2.22
Rubber	-	0.1	0.3	0.8	0.7*	-	3.97
Potato	-	4.8	15.2	42.3	56.17	53.39	5.01
Milk	17	22	53.9	121.8	210.0	221.1	3.68
Egg (Million No)	1832	6172	21101	63024	122049	129600	6.18
Fish	0.75	1.76	3.84	8.4	14.7	16.2	4.42

भारत में प्रमुख व्यावसायिक फसलें कपास, जूट, चाय, रबर, गन्ना, तिलहन आदि हैं।

वाणिज्यिक फसलों में, 2020-21 से 2021-22 तक आलू में 5.0 प्रतिशत की उच्चतम वार्षिक चक्रवृद्धि दर देखी गई, इसके बाद रबर जो 3.97% और कपास 3.33% है।

बागवानी उत्पादन में रुझान:

- पिछले दो दशकों में, भारत में बागवानी क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।
- बागवानी उत्पादन 2001-02 के 145.79 मिलियन टन से बढ़कर 2021-22 में 342.33 मिलियन टन तक पहुंच गया।
- 2012-13 के बाद से बागवानी फसलों का उत्पादन खाद्यान्न उत्पादन से अधिक हो गया है।
- भारत अब चीन के बाद फलों और सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा वैश्विक उत्पादक है।
- इसके अतिरिक्त, यह मसाला उत्पादन, खपत और निर्यात में शीर्ष स्थान रखता है।

Year	Food Grain	Horticulture	Vegetables	Fruits	Other
2001-02	212.9	145.79	88.62	43.00	14.17
2005-06	208.6	182.8	111.40	55.36	16.04
2010-11	244.5	240.5	146.55	74.88	19.07
2015-16	251.6	286.2	169.06	90.18	26.95
2020-21	310.74	334.60	200.4	102.48	31.68
2021-22	315.62	342.33	204.84	107.24	30.25
CAGR (%)	1.99	4.36	4.28	4.68	3.87

पशुधन उत्पादन में रुझान:

- पशुधन भारत के कृषि और संबद्ध सेवाओं के लगभग 30% उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- भारत पिछले दो दशकों से दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश रहा है।
- पोल्ट्री क्षेत्र में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, अंडा उत्पादन में 6.18% की प्रभावशाली वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर देखी गई है।
- जलीय कृषि और मत्स्य पालन क्षेत्र कुल उत्पादन में 7% का योगदान देता है, भारत 7.58% के साथ मछली उत्पादन में विश्व स्तर पर दूसरे स्थान पर है।
- प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना नीली क्रांति लाने के लिए मत्स्य पालन क्षेत्र में सतत विकास को बढ़ावा देती है।

कृषि व्यापार में रुझान:

Years	Agriculture Exports	Percentage of Agriculture Exports to Total Exports	Agriculture Imports	Percentage of Agriculture Imports to Total Imports	Agriculture Trade Balance
1990-91	6013	18.49	1206	2.79	4807
1995-96	20398	19.18	5890	4.8	14508
2000-01	28657	14.23	12086	5.29	16571
2005-06	45711	10.78	15978	3.26	29733
2010-11	113047	10.28	51074	3.41	61973
2015-16	215396	12.55	140289	5.63	75107
2020-21	308830	14.30	154511	5.30	154319
2021-22	375742	11.94	231850	5.07	143892
ACGR(%)	14.27		18.49		

- भारत के निर्यात पोर्टफोलियो में चावल, दालें, फल, सब्जियां, चाय, कॉफी, तंबाकू, मसाले, चीनी और गुड़, काजू, कच्चा कपास, मछली का मांस और प्रसंस्कृत भोजन जैसे उत्पादों की एक विविध श्रृंखला शामिल है।
- उल्लेखनीय रूप से, कृषि निर्यात 2022-23 में प्रति वर्ष 14.27% की दर से लगातार बढ़ रहा है।
- भारत वैश्विक स्तर पर कृषि उत्पादों का 7वां सबसे बड़ा निर्यातक बनकर उभरा है।
- भारत के कृषि और संबद्ध उत्पादों को बांग्लादेश, चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, ईरान, जापान, नेपाल, पाकिस्तान, नीदरलैंड, थाईलैंड, ब्रिटेन, अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में प्रमुख निर्यात बाजार मिलते हैं।
- अपनी विशाल कृषि क्षमता के बावजूद, भारत का कृषि निर्यात वर्तमान में वैश्विक कृषि व्यापार का 2.5% और विश्व के कुल निर्यात का 1.7% से भी कम है।

- अपने कृषि निर्यात हिस्सेदारी को बढ़ाने के लिए, एकीकृत बागवानी विकास मिशन (MIDH) शुरू किया गया था।
- इसके अतिरिक्त, बागवानी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए, एपीडा की सहायता से खराब होने वाले कार्गो और फसल के बाद के भंडारण सुविधाओं के लिए कई केंद्र स्थापित किए गए हैं।

अध्याय 6. शुष्क भूमि खेती

शुष्क भूमि पर खेती एक चुनौतीपूर्ण अभ्यास है जिसके लिए स्थानीय जलवायु और मिट्टी की स्थितियों को समझने, उपयुक्त फसलों का चयन करने और उचित प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। यह लेख भारत में शुष्क भूमि खेती के महत्व, सामना की जाने वाली बाधाओं और स्थायी खाद्य सुरक्षा की संभावनाओं की पड़ताल करता है।

शुष्क भूमि खेती:

- शुष्क खेती, शुष्क भूमि खेती और वर्षा आधारित खेती में अंतर करना:
- शुष्क खेती: 750 मिमी से कम वार्षिक वर्षा और 200 दिनों से कम फसल उगाने के मौसम वाले क्षेत्रों में की जाती है।
- शुष्क भूमि खेती: अर्ध-शुष्क क्षेत्रों सहित 750 मिमी से 1150 मिमी तक वर्षा वाले क्षेत्रों में खेती।
- वर्षा आधारित खेती: लगभग 1150 मिमी वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई के बिना फसल की खेती, मुख्य रूप से आर्द्र और उप-आर्द्र क्षेत्रों में।

शुष्क भूमि कृषि में प्रमुख फसलें

- बाजरा, तिलहन, दालें, मक्का, अनाज और कपास महत्वपूर्ण फसलें हैं।
- बाजरा सूखा प्रतिरोधी, जलवायु-लचीला और पर्यावरण-अनुकूल फसलें हैं।
- तिलहन और दालें वर्षा आधारित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वनस्पति तेल उत्पादन और मिट्टी के स्वास्थ्य में योगदान करते हैं।
- सहायक योजनाएँ:
- प्रति बूंद अधिक फसल, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और परम्परागत कृषि विकास योजना शुष्क भूमि कृषि सुधार में योगदान करती है।

शुष्क भूमि खेती का महत्व:

- विविध कृषि-जलवायु क्षेत्र: भारत की अद्वितीय भौगोलिक स्थिति के परिणामस्वरूप पूरे देश में विभिन्न जलवायु परिस्थितियाँ और फसल पैटर्न होते हैं।
- जलवायु परिवर्तन को संबोधित करना: शुष्क भूमि खेती जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने में मदद करती है और स्थायी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

शुष्क भूमि खेती से जुड़ी चुनौतियाँ

- वर्षा पर निर्भरता: शुष्क भूमि की खेती प्राकृतिक वर्षा पर निर्भर करती है, जिससे यह अनियमित और अनिश्चित वर्षा पैटर्न के प्रति संवेदनशील हो जाती है।
- मिट्टी और पोषक तत्वों की कमी: शुष्क भूमि वाले क्षेत्रों में अक्सर कम जल धारण क्षमता और पोषक तत्वों की कमी के साथ खराब या ख़राब मिट्टी होती है।
- सूखे के प्रति संवेदनशीलता: शुष्क भूमि वाले क्षेत्र सूखे और गिरते भूजल स्तर के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं।
- छोटी भूमि जोत: खंडित और छोटी भूमि जोत के कारण शुष्क भूमि पर खेती चुनौतीपूर्ण है।

सतत शुष्क भूमि खेती के लिए रणनीतियाँ:

- एकीकृत खेती: शुष्क भूमि के किसान कई फसलों के साथ एकीकृत कृषि मॉडल अपनाकर उत्पादकता बढ़ा सकते हैं।
- फसल चयन: शुष्क भूमि की स्थिति में उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल उपयुक्त फसलों का चयन करना आवश्यक है।
- प्रौद्योगिकी को अपनाना: ड्रिप सिंचाई, जल संचयन और सटीक खेती का उपयोग करने से जल-उपयोग दक्षता और पैदावार में सुधार होता है।
- मृदा संरक्षण: समोच्च जुताई, सीढ़ीदार और मल्चिंग जैसी प्रथाओं के माध्यम से कटाव को कम करें और मिट्टी की नमी बनाए रखें।
- क्षमता निर्माण: शुष्क भूमि खेती तकनीकों पर प्रशिक्षण और ज्ञान हस्तांतरण के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाना।
- बाज़ार समर्थन: लाभप्रदता और बाज़ार पहुंच बढ़ाने के लिए बाज़ार के बुनियादी ढांचे और मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करें।
- अनुसंधान और विकास: शुष्क भूमि पर खेती के लिए फसल की किस्मों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

अध्याय 7. जैविक खेती: स्थिति और संभावनाएँ

जैविक उत्पादन के राष्ट्रीय मानक (NSOP) जैविक कृषि को एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए कृषि डिजाइन और प्रबंधन की एक प्रणाली के रूप में परिभाषित करते हैं जो रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे कृत्रिम ऑफ-फार्म इनपुट के उपयोग के बिना स्थायी उत्पादकता प्राप्त कर सकता है। यह एक जलवायु-अनुकूल अभ्यास है जो खेती में सिंथेटिक्स के उपयोग को कम करता है और कम बाहरी इनपुट उपयोग, रीसाइक्लिंग और पुन: उपयोग को बढ़ावा देता है।

जैविक खेती का अवलोकन:

- 2021 FiBL सर्वेक्षण के अनुसार, 187 देशों में जैविक खेती की जाती है, जिसमें ऑस्ट्रेलिया (35.69 मीटर हेक्टेयर), अर्जेंटीना (3.63 मीटर हेक्टेयर), और स्पेन (2.35 मीटर हेक्टेयर) में सबसे अधिक जैविक कृषि भूमि है।
- भारत दुनिया के 30% जैविक उत्पादकों का घर है, लेकिन देश के कुल शुद्ध बोए गए क्षेत्र का केवल 2% ही जैविक खेती के अंतर्गत है।

- भारत में जैविक कृषि भूमि के मामले में मध्य प्रदेश अग्रणी है, यहां 0.76 मिलियन हेक्टेयर में जैविक खेती की जाती है, जो कुल जैविक खेती क्षेत्र का 27% है।
- भारत में जैविक खेती के अंतर्गत आधे क्षेत्र में मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र का योगदान है।
- सिक्किम भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बन गया है, जिसने अपनी सभी खेती योग्य भूमि को जैविक प्रमाणीकरण के तहत परिवर्तित कर दिया है।

Organic agricultural products exported during last 3 years

S. No.	Year	Exported Qty (In MT)	Value (In Cr)	Value (In USD Million)
1.	2021-22	460320	5249.32	771.96
2.	2020-21	888179	7078.50	1040.96
3.	2019-20	638998	4686.00	689.10

भारत से जैविक खाद्य का निर्यात:

- कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) एक नोडल एजेंसी है जो जैविक उत्पादों सहित कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देती है।
- भारतीय जैविक उत्पादों के प्रमुख निर्यात स्थलों में संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ, कनाडा, UK, तुर्की, ऑस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैंड, इक्वाडोर और जापान शामिल हैं।
- भारत के प्राथमिक जैविक उत्पाद निर्यात में सोया भोजन (61%), तिलहन (12.58%), अनाज और बाजरा (12.71%), चीनी (4.77%), और वृक्षारोपण फसलें (2.16%) शामिल हैं।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल:

- परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट किसानों को उत्पादन, प्रसंस्करण, प्रमाणन, विपणन और फसल के बाद के प्रबंधन को कवर करते हुए व्यापक सहायता प्रदान करते हैं।

परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY)

- PKVY के तहत, किसानों को किसान उत्पादक संगठन (FPO) स्थापित करने, जैविक इनपुट प्राप्त करने और प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और प्रमाणन से गुजरने के लिए 3 साल के लिए 50,000 रुपये प्रति हेक्टेयर मिलते हैं।
- इसके अतिरिक्त, मूल्य संवर्धन और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 1000 हेक्टेयर के क्लस्टर के लिए 20 लाख रुपये प्रदान किए जाते हैं।
- 2015-16 से, 11.85 लाख हेक्टेयर भूमि को जैविक खेती के तहत लाया गया है, 2026 तक 6 लाख हेक्टेयर भूमि को और बढ़ाने का लक्ष्य है।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए मिशन जैविक मूल्य श्रृंखला विकास (MOCED-NIR)
- MOVCD-NER किसानों को एफपीओ स्थापित करने, जैविक इनपुट प्राप्त करने और प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और प्रमाणीकरण से गुजरने के लिए 3 साल के लिए 46,575 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रदान करता है।
- इसके अतिरिक्त, एकीकृत प्रसंस्करण इकाइयों, संग्रह और ग्रेडिंग इकाइयों, पैक हाउस और प्रशीतित वाहनों की स्थापना के लिए आवश्यकता-आधारित सहायता भी प्रदान की जाती है।
- 2015-16 से इस मिशन के माध्यम से 1.73 लाख हेक्टेयर भूमि को जैविक खेती में परिवर्तित किया गया है।

जैविक प्रमाणीकरण योजना:

- राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP) प्रमाणन प्रणाली: यह एक स्वतंत्र संगठन के माध्यम से संपूर्ण उत्पादन, प्रसंस्करण, हैंडलिंग, भंडारण और परिवहन की समीक्षा करके जैविक मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।
- कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत भागीदारी गारंटी प्रणाली, जैविक उत्पादों को प्रमाणित करती है, यह गारंटी देती है कि उत्पादन निर्धारित गुणवत्ता मानकों का पालन करता है।
- किसानों को उनकी जैविक उपज के लिए बेहतर मूल्य सुरक्षित करने में मदद करने के लिए समर्पित वेब पोर्टल, www.jaivikkhiti.in स्थापित किया गया है।

अध्याय 8. सतत कृषि: चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

टिकाऊ कृषि पारंपरिक इनपुट-सघन कृषि का एक बहुत जरूरी विकल्प है, जो लंबे समय में ऊपरी मिट्टी को ख़राब करती है, जिसके परिणामस्वरूप भूजल स्तर में गिरावट आती है और जैव विविधता कम हो जाती है।

सतत कृषि के तीन स्तंभ:

- अर्थव्यवस्था: यह व्यवहार्य संसाधनों के कुशल उपयोग के माध्यम से किसानों के लिए व्यवसाय की वृद्धि और लाभप्रदता सुनिश्चित करता है।
- समाज: यह स्तंभ दुनिया की बढ़ती आबादी के लिए पर्याप्त भोजन और स्थानीय समुदाय के लिए उचित रोजगार और मुआवजे के अवसर सुनिश्चित करता है।
- पर्यावरण: यह स्तंभ पारिस्थितिक रूप से सुदृढ़ कृषि पद्धतियों और पुन:पूर्ति योग्य संसाधनों के कम उपयोग के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

प्रमुख सतत कृषि पद्धतियाँ:

- फसल चक्र और फसल विविधता: मोनोकल्चर मिट्टी को ख़राब करता है और कीटों के प्रति संवेदनशील होता है। विभिन्न प्रकार की फसलें लगाने से बेहतर कीट नियंत्रण सहित कई लाभ होते हैं।
- जल और ऊर्जा-कुशल सिंचाई तकनीकें
- जुताई कम करना: बिना जुताई या कम-भरण विधियों में बीज को सीधे बिना विक्षोभित मिट्टी में डालना शामिल है, जो कटाव को कम कर सकता है और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है।
- पशुधन और फसलों को एकीकृत करना: पशुधन खेतों के उप-उत्पादों पर भोजन कर सकते हैं और फसलों को प्रचुर मात्रा में समृद्ध प्राकृतिक उर्वरक और खाद प्राप्त हो सकता है।
- कृषि वानिकी को अपनाना: फसलों के साथ पेड़ लगाने से न केवल मिट्टी का आवरण और स्थानीय जल संसाधनों का संरक्षण होता है बल्कि किसानों को आय का एक अतिरिक्त स्रोत भी मिलता है।
- कवर फसलें उगाएं: ऑफ-सीजन कवर फसलें बोकर, किसान अपने खेतों को मिट्टी के कटाव और मिट्टी के क्षरण से बचा सकते हैं। यह फसलों के लिए हरी खाद का काम करता है।
- एकीकृत कीट प्रबंधन: इसका उद्देश्य कीटों के हमलों को कम करके खेतों पर फसल कवर की दीर्घकालिक सुरक्षा करना है।

भारत में सतत कृषि

- अधिकांश स्थायी कृषि पद्धतियों (SAP) को सभी भारतीय किसानों में से 50 लाख (या चार प्रतिशत) से भी कम द्वारा अपनाया जा रहा है।
- भारत में फसल चक्र सबसे लोकप्रिय है, जिसमें लगभग 30 मिलियन हेक्टेयर (MHA) भूमि और लगभग 15 मिलियन किसान शामिल हैं।
- कृषि वानिकी, जो मुख्य रूप से बड़े किसानों के बीच लोकप्रिय है, और वर्षा जल संचयन में क्रमशः 25 MHA और 20-27 MHA की अपेक्षाकृत उच्च कवरेज है।
- जैविक खेती वर्तमान में भारत के 140 MHA के शुद्ध बोए गए क्षेत्र का केवल 2% कवर करती है।
- प्राकृतिक खेती भारत की सबसे तेजी से बढ़ती टिकाऊ कृषि पद्धति है और इसे लगभग 800,000 किसानों ने अपनाया है।
- एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) ने दशकों के निरंतर प्रचार के बाद 5 MHA का कवरेज क्षेत्र हासिल किया है।
- फ्लोटिंग फार्मिंग, पर्माकल्चर आदि जैसी प्रथाओं का प्रभाव और कवरेज नगण्य है।

सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन

- एकीकृत खेती, जल उपयोग दक्षता, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और संसाधन संरक्षण के समन्वय पर ध्यान केंद्रित करते हुए विशेष रूप से वर्षा आधारित क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता को बढ़ाना है।

मुख्य उद्देश्य:

- कृषि को अधिक उत्पादक, टिकाऊ, लाभकारी और जलवायु-लचीला बनाना
- व्यापक मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन प्रथाओं को अपनाना
- 'प्रति बूंद अधिक फसल' प्राप्त करने के लिए कवरेज का विस्तार करने के लिए कुशल जल प्रबंधन के माध्यम से जल संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करना,
- किसानों एवं हितधारकों की क्षमता का विकास करना

प्रमुख घटक:

- वर्षा आधारित क्षेत्र विकास (RAD): यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए क्षेत्र-आधारित दृष्टिकोण विकसित करता है, और मिट्टी के पोषक तत्वों को नियंत्रित करता है। सामान्य संसाधन विकसित किए जाते हैं जैसे अनाज के लिए बैंक, चारा, बायोमास के लिए श्रेडर और एक संयुक्त विपणन पहल।
- ऑन-फार्म जल प्रबंधन (OFWM): उन्नत ऑन-फार्म जल संरक्षण उपकरण और प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देकर पानी के इष्टतम उपयोग के लिए।
- मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन: यह स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देता है जो एक विशिष्ट स्थान और फसलों के प्रकार के आधार पर मिट्टी के स्वास्थ्य को संरक्षित करता है।

सतत कृषि में प्रमुख चुनौतियाँ:

- NMSA को बजटीय आवंटन कम है। यह कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कुल बजट का केवल 0.8 प्रतिशत है।
- SAP ज्ञान-गहन तकनीकें हैं जिनके लिए किसानों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान की आवश्यकता होती है।
- विभिन्न प्रकार के किसानों के बीच क्षमता निर्माण।
- SAPS श्रम प्रधान हैं और मध्यम से बड़े किसानों द्वारा अपनाना कठिन है।

RAO'S ACADEMY

for Competitive Exams

BHOPAL | INDORE

DR. M. MOHAN RAO
IAS (Retd)
CHAIRMAN

M. ARUNA MOHAN RAO
IPS (Retd)
DIRECTOR (ACADEMICS)

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of **RACE**)

Coming Soon in INDORE

EMAIL: office@raosacademy.in | WEBSITE: www.raosacademy.in

Bhopal Branch: Plot No. 132, Near Pragati Petrol Pump, Zone II, M.P. Nagar, Bhopal(M.P.) 462011
95222 05553 , 95222 05554

Indore Branch: 10,Vishnupuri, A.B.Road, Near Medi-Square Hospital Bhawar Kuwar Square, Indore (M.P.)-452001
95222 05551, 95222 05552

" विद्याधनं सर्व धनं प्रधानम् "

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of **RACE**)

"YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
आपकी सफलता हमारी प्राथमिकता"

BHOPAL CENTRE

Plot No. 132,
Near Pragati Petrol Pump,
Zone II, Maharana Pratap
Nagar, Bhopal (M.P) - 462011

Contact:-
95222-05553, 95222-05554

INDORE CENTRE

10, Vishnupuri Colony,
Bhanwarkua Square,
A.B. Road, Near Medi-Square
Hospital, Indore - 452001

Contact:-
95222-05551, 95222-05552

Email Id:- office@raosacademy.in | Website:- www.raosacademy.in

raosacademybhopal | raosacademyforcompetitiveexams | raosacademyforcompetitiveexams